Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ पद्मपुराणोक्तं माघमाससमाहात्म्यं भाषाटीकासमेतं प्रारभ्यते ॥

यह पुस्तक सन् [illegible] के आक्ट [illegible] के मुजब रजिस्टर करके सर्व प्रकारका हक "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

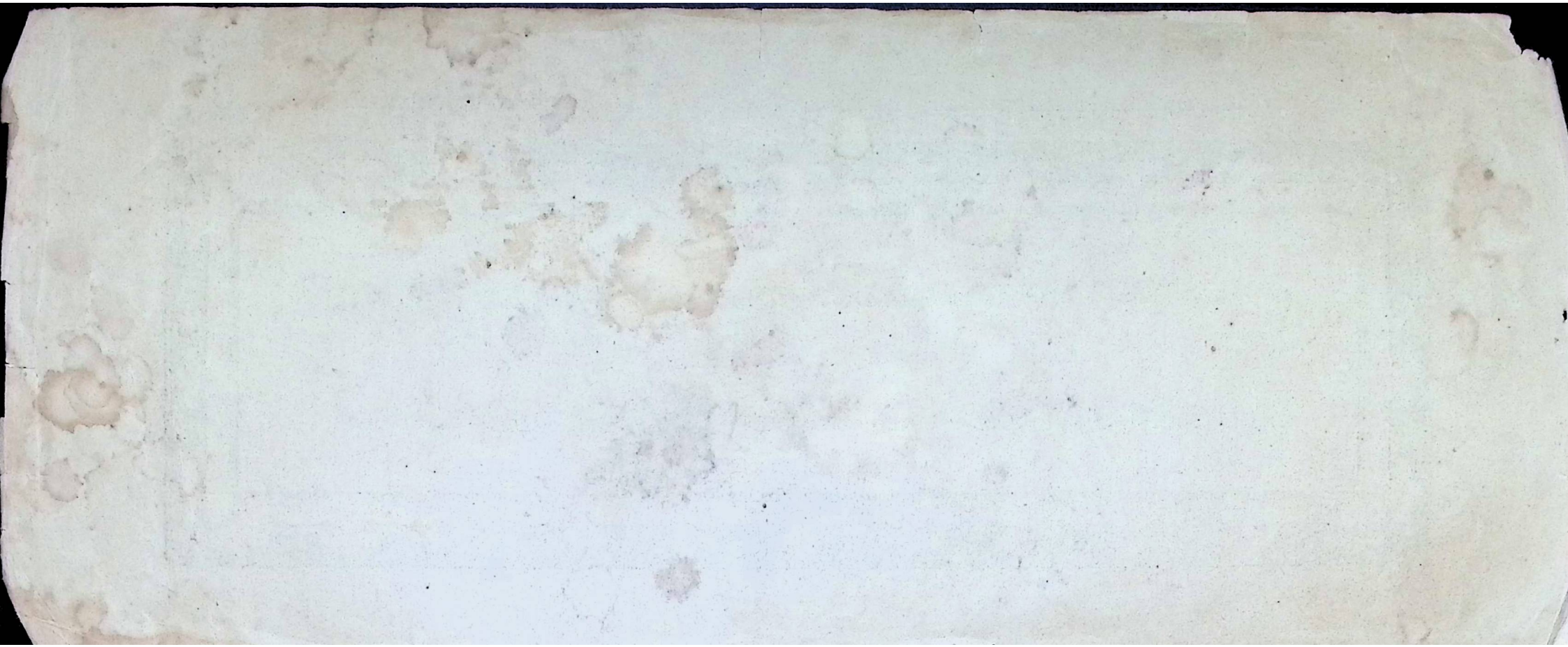

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिका ।

प्रिय पाठक ! संसार सागरसे पार होने को वेदशास्त्र पुराणों में अनेक उपाय कथन किये हैं यदि उनमें से एक भी अवलम्बन किया जाय तो सहजमें निस्तारा हो सकता है ! आज पुराणोक्त माघ स्नान का फल कथन करने को माघमाहात्म्य का भाषाटीका आप के सन्मुख उपस्थित है, कर्म भूमि में धर्म की लूट है यदि जप तप व्रत नहीं बने तो एक बार माघ स्नान करकेही अपना जन्म सफल करें इस से और क्या अधिक है आप के एक बार इस से पढ़ने और श्रोताओं को सुनाने से परिश्रम सफल है ॥

यह पुस्तक सर्व प्रकार के स्वत्व सहित जगद्विख्यात "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी के करकमल में अर्पित है ॥

पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र, दीनदारपुरा-मुरादाबाद.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ मंगलमूरति सुखसदन, ऋद्धिसिद्धिदातार । द्विजज्वालाप्रसाद पर, रीझहु नंदकुमार ॥ ॥ नारायण नरोत्तम नरदेवी सरस्वती और व्यासजीको प्रणाम कर जयनामक ग्रंथका उच्चारण करना चाहिये ॥ १ ॥ ऋषि बोले हे महाभाग सूतजी ! आपने लोकोंके मंगलके निमित्त भुक्ति मुक्तिका देनेवाला कार्तिकाख्यान वर्णन किया ॥ २ ॥ हे लोमहर्षण अब आप हमसे माघस्नानका माहात्म्य वर्णन कीजिये, जिसके सुननेसे लोकोंका

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीमद्वेङ्कटेशायनमः ॥ ॥ नारायणंनमस्कृत्यनरंचैवनरोत्तमम् ॥ देवींसरस्वतींव्यासंततोजयमुदीरयेत् ॥ १॥ ॥ ऋषयऊचुः ॥ ॥ सूतसूतमहाभागत्वयालोकहितैषिणा ॥ कथितंकार्तिकाख्यानंभुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ २ ॥ अधुनामाघ माहात्म्यंवदनोलोमहर्षणे ॥ श्रुतेनयेनलोकानांसंशयःक्षीयतेमहान् ॥ ३ ॥ पुराकेनमहाभागलोकेस्मिन्संप्रकाशितम् ॥ माघस्नानस्य माहात्म्यंसेतिहासंतदादिश ॥ ४ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ साधुसाधुमुनिश्रेष्ठायूयंकृष्णपरायणाः ॥ यत्पृच्छथमुदायुक्ताभक्त्याकृष्णक थासुहुः ॥ ५ ॥ कथयिष्यामिमाघस्यमाहात्म्यंपुण्यवर्धनम् ॥ पापघ्नंशृण्वतांपुंसांस्नातानांचारुणोदये ॥ ६ ॥ एकदापार्वतीवि प्राःशंकरंलोकशंकरम् ॥ पप्रच्छविनयोपेतास्पृष्ट्वातच्चरणांबुजम् ॥ ७ ॥

महान् संदेह दूर होता है ॥ ३ ॥ हे महाभाग ! लोकमें प्रथम किसने इसको प्रकाशित किया, इतिहास सहित माघस्नानका माहात्म्य कहो ॥ ४ ॥ सूतजी बोले हे मुनियों ! तुम धन्य और कृष्णपरायण हो, जो प्रेमभक्तिसे तुम वारंवार कृष्णकी कथा पूँछते हो ॥ ५ ॥ पुण्यका बढानेवाला माघस्नानमाहात्म्य कहताहूं, जो श्रवण करनेसे अरुणोदयमें स्नान करनेवाले पुरुषोंका पाप दूर करता है ॥ ६ ॥ हे ब्राह्मण ! एक समय लोकके आनंद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करनेवाले शंकरके चरणोंको स्पर्शकर विनययुक्त हो पार्वती पूंछने लगी ॥ ७ ॥ पार्वती बोली हे देवदेव महादेव भक्तोंको अभय देनेवाले स्वामिन् विश्वपति प्रसन्न हूजिये, जो मैं पूंछती हूँ सो कहिये ॥ ८ ॥ हे प्रभो ! पूर्वमें मैंने आपसे अनेक धर्म सुने हैं, अब माघके स्नानका माहात्म्य सुननेकी इच्छा करतीहूं सो आप मुझसे कहिये ॥ ९ ॥ यह पहले किसने किया, इसकी विधि और देवता क्या है, वह सब विस्तारसे कहो कारण कि

॥ पार्वत्युवाच ॥ ॥ देवदेवमहादेवभक्तानामभयप्रद ॥ प्रसीदनाथविश्वेशयत्पृच्छेतद्वदाधुना ॥ ८ ॥ श्रुतानानाविधाधर्मास्त्वत्तः पूर्वंमयाविभो ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिमाहात्म्यंमाघजंवद ॥ ९ ॥ तत्तुकेनपुराचीर्णकोविधिःकाचदेवता ॥ तत्सर्वंविस्तराद्ब्रूहियत स्त्वंभक्तवत्सलः ॥ १० ॥ ॥ महेशउवाच ॥ ॥ अध्वराऽवभृथस्नातऋषिभिःकृतमंगलः ॥ पूजितोनागरैःसर्वैःस्वपुरान्निर्गतो बहिः ॥ ११ ॥ दिलीपोभूभृतांश्रेष्ठोमृगयारसिकोनृपः ॥ कौतूहलसमाविष्टआखेटव्यूहसंवृतः ॥ १२ ॥ उपानद्गूढपादस्तुनीलोष्णी षउरच्छदी ॥ बद्धगोधांगुलित्राणोधनुष्पाणिःसरीसृपः ॥ १३ ॥ बद्धक्षुद्रासिधानुष्कैस्तथाभूतैश्चपत्तिभिः ॥ गांधारेषुसुरम्येषुवने षुविपुलेषुच ॥ १४ ॥

तुम भक्तवत्सल हो ॥ १० ॥ शंकर बोले यज्ञान्त अवभृथ स्नानकर ऋषियोंसे मंगलाचारको प्राप्त हो अपने नगरवासियोंसे पूजित हो नगर के बाहर निकल ॥ ११ ॥ राजोंमें श्रेष्ठ मृगया खेलनेमें रसिक राजा दिलीप, कौतूहलको प्राप्त हो सिकारकी सामग्री लिये ॥ १२ ॥ चरणोंमें जूता पहरे नील पगडी बांधे बख्तर धारे अंगुलीमें गोधाचर्म बांधे, धनुष धारण कर चलता हुआ ॥ १३ ॥ क्षुद्र तलवार धनुषधारी प्यादोंको साथ

१ कांतारेषु-इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिये मनोहर वन उपवनमें विचरते ॥ १४ ॥ सिंहकी समान विक्रमी अनेक नदीसरोवरोंको उल्लंघन करते कुंजोंमें मृगोंको ढूंढते उनके साथ क्रीडा करते थे ॥ १५ ॥ मारो मारो यह मृग भागा जाताहै ऐसा २ अपने भृत्योंके कहने पर यह स्वयं जाकर उसको मारता ॥ १६ ॥ फिर इधर उधर जाते तभी वनस्थलीको देखता कहीं पेडों पर उड उडकर मोरोंको बैठता हुआ देखता ॥ १७ ॥ कहीं हरिणी जनोंके समूह वित्रस्त होते हैं हरिणोंके बच्चे

उल्लंघितमहास्रोतायुवापंचास्यविक्रमः ॥ मुदाक्रीडतितैःसार्द्धंकुंजेषुमृगयन्मृगान् ॥ १५ ॥ हन्यतांहन्यतामेषमृगोवैषपलायते ॥ इतिजल्पन्स्वभृत्येषुस्वयमुत्पत्यहंतिच ॥ १६ ॥ इतस्ततःपुनर्यातिक्वचित्पश्यन्वनस्थलीम् ॥ विटपोड्डीनसंत्रस्तलीनकेकिकुलाकुलाम् ॥ १७ ॥ हरिणीगणवित्रस्तांधावच्छावकदिङ्मुखाम् ॥ क्वचित्फेरवफेत्कारतारारावविभीषणाम् ॥ १८ ॥ खड्गयूथैःक्वचिल्लक्ष्मींदधानामिवदंतिनाम् ॥ क्वचित्कोटरसंदृष्टोलूकनादविनादिनीम् ॥ १९ ॥ मृगारिपदमुद्राभिर्मुद्रितांचक्वचित्क्वचित् ॥ शार्दूलनखनिर्भिन्नरोहिद्रक्तारुणांक्वचित् ॥ २० ॥ पीवरस्तनभारार्तसुस्निग्धमहिषीगणैः ॥ अवरोधाजिरक्षोणींसूचयंतींमनःक्वचित् ॥ २१ ॥

दिशाओंमें धावमान होते हैं कहीं गीदडोंकी फेतकार और ऊंचेस्वरसे भयंकर शब्द करना ॥ १८ ॥ कहीं खड्ग जातिवाले मृगोंके समूह हाथियोंकी शोभा धारण किये थे, कहीं कोटरमें बैठे हुए उलूकगण अपना शब्द करतेथे ॥ १९ ॥ कहीं सिंहके चरणोंके शब्द दिखाई देतेथे, कहीं शार्दूलके नखसे भिन्न रोहितमृगका रुधिर पडाथा, उससे पृथ्वी लाल थी ॥ २० ॥ कहीं पीवरऐनके भारसे व्याप्त भैंसे फिरतीं थीं जो रणवासके आंगकी भूमिकी समान

१ धावच्छापदादिङ्मुखाम्—इ०पा० । २ संलीनोलूकीनाद—इ०पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनको विदित होती थीं ॥ २१ ॥ कहीं वृक्षोंकी घनी सुगंधितसे वन व्याप्त था, कहीं लतागृहों पर भौंरे गुंजार कर रहेथे ॥ २२ ॥ कहीं सर्पोंकी कैंचली विलसे आधी निकल रही थी, बिलोंमें अजगर लीन थे बाहर उनकी कैंचली पड़ी थी ॥ २३ ॥ कहीं दावानल लगी हुई है शिलाओं पर उसकी ज्योति पड़ती है कहीं मृग व्याघ्रोंका फूत्कार शब्द हो रहा है ॥ २४ ॥ कहीं खरगोशों पर कुत्तोंका समूह छोडा है कहीं छोटे सरोवरों पर विश्राम

क्वचिद्वृक्षघनच्छन्नांवन्यपुष्पसुगंधिनीम् ॥ क्वचिल्लतागृहद्वारांभृंगशब्दसुशोभनाम् ॥२२॥ अर्धनिःसृतनिर्मोकनागभीमबृहद्बिलाम्॥ बिलेषुलीनाजगरैर्भीमांनिर्मोकसर्पिणीम् ॥ २३ ॥ क्वचिद्दावानलज्वालांशिलाज्योतिःसुशोभनाम् ॥ फूत्कारशब्दसंपूर्णांमृगव्याघ्रसमाकुलाम् ॥ २४ ॥ प्रविमुंचच्छुनांयूथंशशकेषुक्वचित्क्वचित् ॥ पल्वलेषुचविश्रम्यपुनर्यातिवनान्तरम् ॥ २५ ॥ एवंव्रजतिराजेन्द्रेव्याधवर्गेचवल्गति ॥ कुर्वन्कोलाहलंतत्रसारंगोनिर्गतोवनात् ॥२६॥ स्फालवेगक्रमाक्रांतदुर्गमार्गमहीतलः ॥ कदाचिद्वगनारूढः कदाचिद्भूमिगोचरः ॥ २७ ॥ वक्रस्रोतोतिगंभीरंकण्टकद्रुमसंकुलम् ॥ प्रविष्टोविषमारण्यंराजासौतत्पदानुगः ॥ २८ ॥ दूरादूरतरं गत्वादेशाद्देशंचनिर्जनम् ॥ मृगादर्शनसंरम्भसंशुष्कगलकन्धरः ॥ २९ ॥

करके दूसरे वनमें जाते ॥ २५ ॥ इस प्रकार व्याधवर्गोंके कहने और राजाके वनमें फिरनेसे कोलाहल कर्ता हुआ एक सारंग मृग वनसे निकला ॥ २६ ॥ अपनी तीक्ष्ण चौंकडीसे पृथ्वीको आक्रमण करता हुआ कभी आकाश और कभी भूमिपर दीखताथा ॥ २७ ॥ टेढे गंभीर सोते और कंटीले वृक्षवाले महावनमें प्रवेश करगया और राजा भी उसके पीछे चला ॥ २८ ॥ वह एक देशसे दूसरे देश और वनसे दूसरे निर्जन वनको गया, मृगके न

१ क्वचिल्लतागृहद्वारं भृंगघोरणतोरणम्—इ० पा० । २ फालवेग० इत्यपिपाठान्तरम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देखनेसे संभ्रम और प्यासके कारण राजाका गला सूख गया ॥ २९ ॥ लाल तालू होगया, मुखपर पसीना आगया, प्यादे थकगये, घोडोंकी गति रुकी, बडा मार्ग अतिक्रमण करनेके कारण मध्याह्न समय बड़ा प्यासा हुआ ॥ ३० ॥ आगे जलकी इच्छा करते मृगको देखा जो कि घने वृक्षके नीचे सरोवरके तट पर स्थित था ॥ ३१ ॥ जिसमें विशाल कमल खिले हुए भौंरे गुंजार रहे, कमलिनीसे व्याप्त मानों मरकत मणिसे व्याप्त है ॥ ३२ ॥ स्वच्छंदतासे मछली जिसमें कूद रहीं जिसका जल साधुओंके मनकी समान निर्मल चलायमान जलचर और जलकी लहरोंसे युक्त ॥ ३३ ॥ भीतर

ताम्रतालुमुखःस्विन्नःश्रांतपत्तिःस्खलद्ध्वनिः ॥ अतीत्यदीर्घमार्गान्सतृषार्तोमध्यगेरवौ ॥ ३० ॥ ददर्शाग्रेतुकासारंस्पर्धयंतमपां पतिम् ॥ घनपादपतीरस्थंसुतीर्थविमलंशुभम् ॥ ३१ ॥ विशालंविकचांभोजंमधुमत्तमधुव्रतम् ॥ पद्मिनीपत्रपालाशच्छन्नं मरकतैरिव ॥ ३२ ॥ स्वच्छंदमुच्छलन्मत्स्यंस्वच्छंसाधुमनोयथा ॥ चलज्जलचरैर्मिश्रंवीचिराजिविराजितम् ॥ ३३ ॥ अंतर्ग्राहगणक्रूरंखलानामिवमानसम् ॥ क्वचिच्छैवालदुर्गम्यंकृपणस्येवमंदिरम् ॥ ३४ ॥ नानाविहङ्गसर्वार्तिंशमयंतंदिवानिशम् ॥ दातारमिवसर्वस्वैरापन्नार्तिंप्रणाशनम् ॥ ३५ ॥ तर्पयंतंनिजांभोभिःश्वापदान्स्वपितॄनिव ॥ हरंतंसर्वसंतापंहिमांशुरिवचाह्निकम् ॥ ३६ ॥ तंदृष्ट्वाभूद्गतग्लानिश्चातकोजलदंयथा ॥ तत्रपीतजलोराजाकृतमाध्याह्निकक्रियः ॥ ३७ ॥

क्रूर ग्राहोंसे आकीर्ण जैसे खलोंका मन, कहीं कृपणके घरकी समान शैवालसे व्याप्त ॥ ३४ ॥ रात दिन सब प्रकारके पक्षियोंका सब पुकारका ताप दूर करनेवाला, मानो शरणमें आये हुओंको दाता लोग सर्वस्व प्रदान करते हों ॥ ३५ ॥ अपने जलोंसे हिंसक जन्तु ओंको पितरोंकी समान तृप्त करता हुआ चन्द्रमाकी समान दिनका सब संताप दूर करनेवाला ॥ ३६ ॥ उसको देखतेही राजाका श्रम इस प्रकार दूर हुआ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जैसे मेघको देख चातककी ग्लानि मिटती है, वहां जलपानकर राजाने माध्याह्न संध्या की ॥ ३७ ॥ अपनी सहाय सहित आखेटके मांसादि खाकर उस सरोवरहीके तटपर चित्र विचित्र कथा कहते स्थित हुआ ॥ ३८ ॥ धनुषपर बाण चढाय रात्रिको तरुके नीचे स्थित रहे व्याधे लोग संधानको प्राप्त हो दिशाओंका मार्ग रोकते हुए ॥ ३९ ॥ इस प्रकार वनमें जाल विस्तारकर वीरोंके वनमें स्थित होनेमें अर्ध रात्रिको

भुक्त्वाखेटकमांसानिसहायैःसहितोनृपः॥ उवाससरसस्तीरेसुरम्यांकथयन्कथाम् ॥३८॥ ततःशरासनेबाणंकृत्वारात्रौस्थितस्तरौ॥ व्याधाःसंधानमास्थायरुरुधुःककुभांपथः ॥ ३९ ॥ एवंस्थितेषुवीरेषुवनेविस्तार्यवागुराम् ॥ निशार्धेनिर्गतंयूथंसूकराणांतटेतटे ॥ ॥ ४० ॥ चरित्वासरसीकंदान्पपातव्याधसंकुले ॥ राज्ञाविद्धश्चतेक्रोडाव्याधैश्चबहवोहताः ॥ ४१ ॥ क्षणेनैववराहास्तेविद्धाःपेतुर्महीतले ॥ तान्दृष्ट्वातुमुलंनादंव्याधाश्चक्रुःसुदर्पिताः ॥ ४२ ॥ धावंतःप्रमुदायुक्तामिलितायत्रभूपतिः ॥ तानादायभटैर्भूयोनिःसृतः सरसीतटात् ॥ ४३ ॥ स्वपुरंगंतुकामोसौदृष्टवान्पथितापसम् ॥ ब्राह्मणंवृद्धहारीतंशंखचक्रसुशोभितम् ॥ ४४ ॥

शूकरोंका यूथ तटतटसे निकला ॥ ४० ॥ कमलके कंद खानेपर बहुतोंको राजाने और बहुतोंको व्याधोंने मार डाला ॥ ४१ ॥ क्षणमात्र में वे सब शूकर विद्धहो पृथ्वीमें गिरे, उनको देख दर्पित हो व्याध बड़ा शब्द करने लगे ॥ ४२ ॥ प्रमोदसे दौडते हुए राजासे मिले उन योद्धाओंको लेकर राजा सरोवर के तटसे चला ॥ ४३ ॥ और अपने पुरको जानेकी इच्छा करने लगा, मार्गमें एक तपस्वी देखा यह ब्राह्मण वृद्ध हारीत

१ खेटकसंपन्नम्–इ० पा० । २ स्थितस्तटे–इ० पा० । ३ वैखानसमवेस्थितमिति पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैखानसके मतमें स्थित थे, हाथकी उंगलियों में शंखचक्रसे शोभित ॥ ४४ ॥ दुष्कर और उग्र नियमोंसे जिनका शरीर कृश हो रहा, अस्थि मात्र शेष बडे चतुर कर्कश शरीर ॥ ४५ ॥ हरिणका चर्म धारण किये मृदुवल्कल वस्त्र पहरे, नख लोम जटाधारे निगमजप करते ॥ ४६ ॥ वनके आश्रमीको देखकर राजाने उनको मार्ग दिया, प्रणाम कर हाथ जोड सन्मुख स्थित हुआ ॥ ४७ ॥ तब ब्राह्मणने अहंकार वेषसे इसको

नियमैर्दुष्करैरुग्रैःपरिक्षीणकलेवरम् ॥ अस्थिशेषंमहद्गांतंविस्फुरत्कर्कशत्वचम् ॥ ४५ ॥ दधानंहारिणंचर्मवसानंमृदुवल्कलम् ॥ कुर्वाणंनैगमंजाप्यंनखलोमजटाधरम् ॥ ४६ ॥ तंवनाश्रमिणंदृष्ट्वामार्गंदत्त्वाससंभ्रमः ॥ प्रणम्यशिरसाराजाकृतपद्मांजलिः स्थितः ॥ ॥ ४७ ॥ अथचैनमलंकारैर्द्विजोनिश्चित्यभूमिपम् ॥ उवाचश्रेयसेहेतोःपरोपकृतिवांच्छया ॥ ४८ ॥ किमर्थंगम्यतेराजन्कालेपुण्य तमेशुभे ॥ माघमासेविहायैवप्रातःस्नानंसरोवरे ॥ ४९ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमासमाहात्म्येदिलीपमृगयागमोनामप्रथमो ऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ प्रत्युवाचततोराजानाहंजानेद्विजोत्तम ॥ माघस्नानफलंकीदृक्तन्मेकथयविस्तरात् ॥ १ ॥

राजा जानकर परोपकारकी वांच्छासे कल्याणके निमित्त कहा ॥ ४८ ॥ हे राजन् ! इस पुण्य पवित्र कालमें कहां जाते हो, माघ महीनेमें प्रातः सरोवरका स्नान कैसे छोडते हो ॥ ४९ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे माघमाहात्म्ये पं०—ज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ सूतजी बोले, तब राजाने कहा हे द्विजश्रेष्ठ ! यह तो मैं नहीं जानता माघस्नानका फल किस प्रकार है सो विस्तारसे कहिये ॥ १ ॥

१ तपसाकृशदेहंतं विस्फुटत्—इ० पा० । २ विधायैव—इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस प्रकार राजाके वचन सुनकर वे वैखानस मुनि बोले कि, शीघ्रही भगवान् सूर्य अब उदय हुआ चाहते हैं ॥ २ ॥ सो यह हमारे स्नानका समय है कथाका अवसर नहीं है तुम स्नान कर जाओ और अपने कुलगुरु वसिष्ठजीसे प्रश्न करना ॥ ३ ॥ ऐसा कह वे मौनी तपस्वी प्रातःस्नान करनेको गये दिलीपभी पीछेको लौटे और यथाविधि स्नान करके ॥ ४ ॥ फिर प्रसन्न हो अपनी नगरीको चले गये और उन वानप्रस्थ ऋषिकी कथा अन्तः

इतिभूपवचःश्रुत्वाप्राहवैखानसोमुनिः ॥ भगवान्द्युमणिःशीघ्रमभ्युदेतितमोपहा ॥ २ ॥ स्नानकालोयमस्माकंनकथावसरोनृप ॥ स्नात्वागच्छवसिष्ठंतंपृच्छस्वस्वकुलप्रभुम् ॥ ३ ॥ इत्युक्त्वातापसोमौनीप्रातःस्नानायनिर्गतः ॥ प्रत्यावृत्यदिलीपोपितत्रस्नात्वा यथाविधि ॥ ४ ॥ पुनःस्वनगरींवीरोगतोसौहर्षपूरितः ॥ अन्तःपुरेनिवेद्याथवानप्रस्थकथांपुनः ॥ ५ ॥ श्वेताश्वरथमारुह्यसुश्वे तच्छत्रचामरः ॥ सालंकारःसुवासाश्चसंवृत्तोमंत्रिभिःसह ॥ ६ ॥ जयशब्दान्पुनःशृण्वन्स्तुतोमागधबंदिभिः ॥ वसिष्ठस्याश्रमं यातऋषिवाक्यमनुस्मरन् ॥ ७ ॥ तत्रैवनत्वाब्रह्मर्षिंविनयाचारपूर्वकम् ॥ दत्तासनोगृहीतार्घ्यआशीर्भिःसमलंकृतः ॥ ८ ॥ सानं दंमुनिनापृष्टःकुशलंभूपतिर्यदा ॥ तदाब्रवीद्वचोराजाहर्षयन्मुनिमानसम् ॥ ९ ॥

पुर रनवासमें कही ॥ ५ ॥ श्वेत घोडोंके रथमें बैठकर श्वेतही छत्रसे शोभायमान श्वेत चंवर अलंकार सुवस्त्र धारण किये मंत्रियोंसे संयुक्त ॥ ६ ॥ जय शब्द सुना हुआ मागध बंदियोंसे स्तुतियोंको प्राप्त ऋषिके वाक्य स्मरण करते वसिष्ठके आश्रममें आये ॥ ७ ॥ विनय आचार पूर्वक ब्रह्मर्षिको प्रणाम कर आसन पर अर्घ आशीर्वादको स्वीकार कर बैठे ॥ ८ ॥ तब मुनिने आनंदपूर्वक राजासे कुशल पूछी, तब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राजा मुनिराजका मन प्रसन्न करते हुए बोले ॥ ९ ॥ और वह भी वैखानसके वचनको मधुर स्वरसे पूंछने लगे, दिलीप बोले भगवन् आपके प्रसाद से मैंने विस्तारसे सुना ॥ १० ॥ आचार धर्म नीति और राजधर्म सुने, चार वर्णाचार आश्रम की क्रिया ॥ ११ ॥ दान उनके विधान और यज्ञ आपके कथन किये व्रत विष्णु भगवानका आराधन सुना है ॥ १२ ॥ अब वह सुननेकी इच्छा है जो फल माघस्नान करनेसे होता

सोपिवैखानसेनोक्तंपप्रच्छमधुराकृतिः ॥ ॥ दिलीपउवाच ॥ ॥ भगवंस्त्वत्प्रसादेनश्रुताविस्तरतोमया ॥ १० ॥ आचारोदंडनीतिश्चराजधर्माश्चयेपरे ॥ चतुर्णामपिवर्णानामाश्रमाणांचयाःक्रियाः ॥ ११ ॥ दानानितद्विधानानियज्ञाश्चविधयस्तथा ॥ व्रतानितत्प्रदिष्टानिविष्णोराराधनंतथा ॥ १२ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिमाघस्नानेचयत्फलम् ॥ विधेयंयद्विधानेनतन्मेब्रह्मन्मुने वद ॥ १३ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ सम्यगुक्तंपरंश्रेयोलोकत्रयहितावहम् ॥ निर्मलीकरणंतेनमुनिनावनवासिना ॥ १४ ॥ कटाक्षैःकामिनीनांतेप्रत्यासन्नमखंडिताः ॥ कामयंतेमृगार्केतेस्नोतासिस्नातुमेवच ॥ १५ ॥ विनावह्निंविनायज्ञामिष्टापूर्तंविनाप्रिये ॥ वांच्छंतिसद्गतिंस्नातुंप्रातर्माघेबहिर्जले ॥ १६ ॥

है, किस विधानसे करना चाहिये हे मुनिराज सो कथन कीजिये ॥ १३ ॥ वसिष्ठजी बोले बहुत अच्छा पूछा इसमें त्रिलोकीका हित होता है, और उस वनवासीने निर्मल करने ही के निमित्त तुमसे ऐसा कहा है ॥ १४ ॥ धीरे रहकर भी जो स्त्रियोंके नेत्रोंके कटाक्षसे खंडित नहीं हुए हैं वह मकर मासमें स्नान करनेकी इच्छा करते हैं ॥ १५ ॥ विना अग्नि विना यज्ञ बावडी कूप बनवाये वह सद्गतिकी

१ व्रतानि तत्प्रतिष्ठाश्च–इ०पा० । २ निर्मलीकरणं लोके मुनीनां वनवासिनाम् इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इच्छासे माघमें बाहर जलमें स्नानकी इच्छा करते हैं ॥ १६ ॥ जो भूमि सुवर्ण माणिक्य जो धेनु आदि हैं, विना दान किये जो इनका फल चाहते हैं हे राजन्! वे माघ स्नान करैं ॥ १७ ॥ त्रिसप्ताह व्रत कृच्छ्र व्रत पराक व्रतों द्वारा अपना शरीर विना शुष्क किये जो फलकी इच्छा करते हैं, हेराजन्! वे माघस्नान करें ॥ १८ ॥ वैशाखमें हरिकी पूजा, कार्तिकमें तप और पूजा है और तप होम तथा दान यह तीनवस्तु माघमें करनी श्रेष्ठ हैं ॥ १९ ॥ निरन्तर ऐसा करनेसे वह पुरुष भूमिपति होताहै, वह मुक्तिकी उत्पन्न करनेवाली बुद्धि प्रगट

गोभूंहिरण्यमाणिक्यस्वर्णधेन्वादिकानिये ॥ अदत्त्वेच्छंविचैणार्केमाघंस्नातानराधिप ॥ १७ ॥ त्रिःसप्ताहव्रतैःकृच्छ्रैःपराकैश्चनिजांतनुम् ॥ अशोष्येच्छंतियेस्वर्गंतपसिस्नांतुतेसदा॥ १८॥हरेःपूजाचवैशाखेतपःपूजाचकार्तिके॥ तपोहोमस्तथादानंत्रयंमाघेविशिष्यते ॥ ॥ १९ ॥ सानुबंधोतिपर्याप्तोधराधीशोभवेद्ध्रुवम् ॥ कैवल्योत्पदिकाबुद्धिर्ययावानभवेत्पुनः ॥२०॥ पदध्यावरिवस्यासाविहितादिव्य लोचनैः ॥ तदनन्नंतपोदानंमाघेमासिनृपोत्तम ॥ २१ ॥ सकामोवाप्रजायैवाहरयेतद्विनापिवा ॥ कायशुद्धिर्व्रतीभूत्वाचतुर्द्धास्नानजं फलम् ॥२२॥ निरन्नाअदितिःसस्नौमाघेद्वादशवत्सरे ॥ पुत्रांश्चद्वादशादित्याँल्लेभेत्रैलोक्यदीपकान् ॥ २३ ॥

करता है, जिससे फिर जन्म नहीं लेता ॥ २० ॥ दिव्य दृष्टिवालोंने यह कहाहै कि माघमासमें तप या दान करनेसे अनन्त फल हो ताहै ॥ २१ ॥ सकाम हो चाहे प्रजाकी इच्छा वाला हो नारायणके निमित्त वा अन्य प्रकार कायशुद्ध कर जो व्रती हो उसको चार प्रकारसे स्नानका फल मिलताहै ॥ २२ ॥ माघको बारह वर्ष अदितिने विना अन्नके स्नान किया, उसके फलसे त्रिलोकीके दीपक बारह पुत्रोंको प्राप्त किया ॥ २३ ॥

१ गोभूमितिलवासांसि स्वर्णधान्यानिकानिच । अदत्त्वेच्छंति येनांतेमाघे स्नातुमुद्यताः । इ० पाठान्तरम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माघ स्नानसेही रोहिणी सुभगा और अरुंधती दानशीला है और सत महलेस्थानमें इसी स्नानसे शची रूपसम्पन्न है ॥ २४ ॥ जो शोभासे भरपूर, निर्मल, जिसके आंगनमें नृत्य करनेवालियोंसे शोभा हो रही है जहां अनेक दीपक बल रहे रूपवान् स्त्रियोंसे संकुल ॥ २५ ॥ गीत बाजोंके शब्दसे युक्त मंगलाचारसे शोभित, वेद ध्वनिमें तत्पर ब्राह्मणोंसे युक्त, ॥ २६ ॥ देवार्चनमें तत्पर मनोहर सदा अतिथियोंसे शोभित स्थानमें मकर रविमें स्नान करनेवाले प्राप्त होते हैं ॥ २७ ॥ जिसने माघ मास में बहुत दान दिया, तथा भगवानकी पूजा कीहै स्तुति कीहै, इष्ट वस्तुका दान और व्रत नियम

सुभगारोहिणीमाघाद्दानशीलात्वरुंधती ॥ शचीचरूपसंपन्नाप्रासादेसप्तभूमिके ॥ २४ ॥ विमलीकृतशोभाढ्येनर्तकीललिताजिरे ॥ द्वीपवर्णसमुच्छिन्नेरुपवत्स्त्रीजनाकुले ॥ २५ ॥ गीतवादित्रनिर्घोषेमंगलाचारशोभिते ॥ वेदध्वनिपवित्रेचविद्वद्द्विप्रैरलंकृते ॥ २६ ॥ सुरार्चनरतेरम्येसदातिथिनिषेविते ॥ मुदितास्तेवसंतीहयैःस्नातंमकरेरवौ ॥ २७ ॥ यैर्दत्तंबहुमाघेचमुरारिश्चार्चितःस्तुतः ॥ इष्टवस्तुपरित्यागान्नियमस्यतुपालनात् ॥ २८ ॥ धर्मसूतिःसदामाघःपापमूलंनिकृंतति ॥ काममूलःफलद्वारानिष्कामोज्ञानदःसदा ॥ २९ ॥ येलोकाज्ञानशीलानांयेलोकाविपिनौकसाम् ॥ येलोकाविष्णुभक्तानांतेमाघस्नायिनांसदा ॥ ३० ॥ देवलोकान्निवर्ततेपुण्यैरन्यैःपरंतप ॥ कदाचिन्नानिवर्ततेमाघस्नानरतानराः ॥ ३१ ॥

का पालन कियाहै वह श्रेष्ठ है ॥ २८ ॥ माघ मास सदा धर्मका प्रसव करनेवाला और पापका नाशक है,फल देने से काममूल और निष्काम होनेसे ज्ञान देनेवाला है ॥ २९ ॥ जो लोक ज्ञानी और वनमें रहकर तप करनेवालों को मिलते हैं, जो लोक विष्णुभक्तों को मिलते हैं वह लोक सदा माघ स्नान करनेवालों को मिलतेहैं ॥ ३० ॥ और पुण्यों के क्षीण होने से देवलोक से यहां आना होताहै परन्तु माघ स्नान करनेवाले वैकुण्ठ से फिर नहीं आते ॥ ३१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माघ स्नान कर जो मनुष्य दुधारी गाय किसीको देते हैं, हे राजन् ! उसके शरीर में जितने रोम हैं ॥ ३२ ॥ उतनेही सहस्र वर्षतक वह स्वर्ग लोक में स्थित होताहै, माघ स्नान करके जो गुड तिल दान करताहै ॥ ३३ ॥ उसके पाप दूर होकर वह मनुष्य निर्मल हो जाताहै, सब धानों में तिल विशेष कर पापके नाश करने वाले हैं ॥ ३४ ॥ इस कारण यत्नपूर्वक माघ मासमें तिल दान करे माघ स्नान करके ब्राह्मणोंको भोजन करावे ॥ ३५॥

माघेस्नात्वातुयोधेनुंदद्यान्मर्त्यःपयस्विनीम् ॥ तस्यायावंतिरोमाणिसर्वांगेचनृपोत्तम ॥३२॥ तावद्वर्षसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते ॥ माघस्नानंप्रकुर्वाणोयोदद्यात्सगुडांस्तिलान् ॥ ३३ ॥ पातकंतस्यप्रक्षाल्यनिर्मलोभातिवैनरः ॥ सर्वेषांधान्यराशीनांतिलाःपापप्रणाशनाः ॥ ३४ ॥ तस्मान्माघेप्रयत्नेनतिलादेयानृपोत्तम ॥ माघस्नानंप्रकुर्वाणोदद्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ३५ ॥ पितॄन्संतर्प्यशुद्धात्मायातिविष्णोःपरंपदम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनमाघोदानेननीयते॥ ३६ ॥ अदानंनक्षिपेन्माघंसर्वदानृपसत्तम ॥ वित्तानुसारंज्ञात्वावैमाघेदानंसदाददेत् ॥ ३७ ॥ माघस्नानंतुयःकुर्यादुपानहकमंडलून् ॥ ददातिब्राह्मणेभ्यश्चसस्वर्गेतिष्ठतिध्रुवम् ॥ ३८ ॥ माघस्नानमयंराजन्कुर्वाणस्तपउत्तमम् ॥ दानंविनाक्षिपेन्नैवदानात्स्वर्गमवाप्यते ॥ ३९ ॥

तो यह अपने पितरोंको तृप्तकर शुद्ध हो विष्णुलोक को जाताहै इस कारण सब प्रयत्न से माघ मासमें दान करे ॥ ३६ ॥ हे राजन् ! किसी प्रकार भी दान के विना माघ स्नान को न जानेदे वित्तके अनुसार जान कर सदा माघ में दान करना चाहिये ॥ ३७ ॥ जो माघ स्नान करके उपानह कमंडलु ब्राह्मणों को देताहै उसकी अवश्य स्वर्गमें प्रतिष्ठा होतीहै ॥ ३८ ॥ हे राजन् ! जो माघ मास में स्नानमय तप करते हैं और दानके विना नहीं विताते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उनको इस दान के करने से स्वर्गकी प्राप्ति होतीहै ॥ ३९ ॥ दान से स्वर्ग और दान सेही सुख प्राप्त होताहै दान से पाप और महापातक दूर होतेहैं ॥ ४० ॥ विना दान के तपकी शोभा नहीं होती जैसे सूर्य के विना आकाश अथवा जैसे संतान के विना कुल और आचार के विना गृह शोभा नहीं पाता ॥ ४१ ॥ इससे अधिक कोई पवित्र और पाप नाशक नहींहै यह बात भृगुजीने मणिपर्वत पर विद्याधरों से कहीहै ॥ ४२ ॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायां माघमाहात्म्ये दिलीपवसिष्ठसंवादो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ राजा बोले हे

दानेनप्राप्यतेस्वर्गोदानेनप्राप्यतेसुखम् ॥ दानेनहीयतेपापंमहापातकजंनृप ॥ ४० ॥ अदानंनतपोभातिह्यसूर्यंगगनंयथा ॥ असंततिकुलंयद्वाचाचारेणविनागृहम् ॥ ४१ ॥ नातःपरतरंकिंचित्पवित्रंपापनाशनम् ॥ विद्याधरायसंगीतंभृगुणामणिपर्वते ॥ ४२ ॥

इति श्रीपाद्मेमाघमासमाहात्म्येदिलीपवसिष्ठसंवादोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ ब्रह्मन्कदाभृगुर्विप्रोनिजगादमहीधरे ॥ तस्मैधर्मोपदेशंचकथ्यतांमेकुतूहलात् ॥ १ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ द्वादशाब्दंपुराराजन्नववर्षबलाहकः ॥ तेनोद्विग्नाःप्रजाःक्षीणागताःसर्वादिशोदश ॥ २ ॥ खिलीभूतेतदामध्येहिमवद्विंध्ययोर्नृप ॥ स्वाहास्वधावषट्कारवेदाध्ययनवर्जिते ॥ ३ ॥ सोपप्लुवेतदालोकेलुप्तधर्मचनिष्प्रभे ॥ फलमूलान्नपानीयशून्येवैभूमिमंडले ॥ ४ ॥

ब्रह्मन् ! भृगुजीने किस समय महीधर से ज्ञान उपदेश किया था सो आप कुतूहलपूर्वक मुझ से कहिये ॥ १ ॥ वसिष्ठजी बोले हे राजन् ! बारह वर्ष तक एक समय मेघ नहीं वर्षा, उससे उद्विग्न हो सब दशोंदिशा क्षीण होगईं ॥ २ ॥ हे राजन् ! मध्य देश हिमालय और विन्ध्याचलके खिन्न होने में तथा स्वाहा स्वधा वषट्कार और वेदाध्ययन से वर्जित होनेसे ॥ ३ ॥ लोकके उपद्रव ग्रस्त होनेमें तथा धर्मके लुप्त और प्रभाहीन होनेमें फल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मूल पानी से महिमण्डल के शून्य होनेमें ॥ ४ ॥ विन्ध्य पर्वत रेवाके तटवर्ती होने से वृक्षों से आच्छादित था तब भृगु शिष्यों सहित वहां से चलकर हिमालय को गये ॥ ५ ॥ कैलास गिरिके पश्चिम ओर मणिकूट नाम एक हेम तथा सुवर्णका पर्वत है, ॥ ६ ॥ नीचे नीचे श्वेत स्फटिक और मध्यमें नील शिलाओं से युक्त है,विभूति से सब ओर से शुक्ल नी लकंठकी समान शोभित हुआ॥ ७॥सब ओर नीलशिलावाला कहीं कहीं सुवर्णकी

विंध्यपादतरुच्छन्नरम्यरेवातटाश्रमात् ॥ सहशिष्यैश्चनिर्गम्यहिमाद्रिंसगतोभृगुः ॥ ५ ॥ तत्रातिष्ठतिकैलासगिरेःपश्चिमतोगिरिः ॥ मणिकूटइतिख्यातोहेमरत्नशिलोच्चयः ॥ ६ ॥ अधोधःस्फटिकश्वेतोमध्येनीलशिलोगिरिः ॥ भूतिभिःसर्वतःशुक्लोनीलकंठइवाव भौ ॥ ७ ॥ सर्वत्रासौनीलशिलोहेमरेखांतरांतरः॥ स्फुरद्विद्युल्लतःकृष्णोजीमूतइवराजते ॥ ८ ॥ मूर्ध्निनीलशिलःशैलअधःकांचनमे खलः ॥ नारायणइवाभातिपरिवीतइवांबरः ॥ ९ ॥ अमेखलासुनीलाभोमध्येमध्येसितोपलः ॥ सतारकमिवव्योमशुशुभेसमही धरः ॥ १० ॥ लब्ध्वात्मनस्तनुंशुभ्रांदीप्तदिव्यौषधीधरः ॥ बहुद्योतकरोभातिद्वितीयइवचंद्रमाः ॥ ११ ॥

रेखासे युक्त कृष्णमेघमें स्फुरायमान विजली की रेखाकी समान शोभित होता है ॥ ८ ॥ शिखर पर नील शिलाका पर्वत नीचे सुवर्णकी मेखलावाला पीतवस्त्र पहरे नारायणकी समान शोभित होता है ॥ ९ ॥ मेखलाको त्यागकर नीलवर्ण मध्यमध्यमें श्वेतपत्थरोंसे युक्त तारे सहित आकाशकी समान उस पहाड़की शोभा हो रही ॥ १० ॥ अपने शरीरसे शोभायमान दिव्यौषधीसे दीप्त दूसरे चन्द्रमाकी समान बहुत प्रकाशमान ॥ ११ ॥

१ सर्वनीलशिलाढ्यश्च । २ बहुदीप्तिवृतोद्द्योतविवस्वानिवभातिसः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अधित्यकाओंमें किन्नर कीचक गान करते हैं रंभापत्र और पताकाओंसे वह पर्वत सदा शोभित होता है ॥ १२॥ हरितवर्णके उपल वैदूर्य मणी पद्मराग श्वेतप्रस्तर श्वेतकिरण मण्डलसे इन्द्र धनुषकी समान शोभायमान ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण धातु युक्त सुवर्ण और अनेक प्रकारके रत्नोंसे शोभायमान, अग्नि ज्वालावाले ऊंचे शृंगोंसे सब ओरसे शोभित और वेष्टित ॥ १४ ॥ उसके प्रान्त भाग और तृणयुक्त शिलाओंमें कामसे पीडित होकर विद्याधरी शयन

अधित्यकासुसंगीतैःकिन्नरीणांसकीचकैः ॥ रंभापत्रपताकाभिःशोभतेससदाऽचलः॥१२॥ हरितोपलवैदूर्यपद्मरागशिताश्मनाम्॥रुग्र श्मिमंडलैःसोगइंद्रचापैरिवावृतः॥१३॥सर्वधातुमयैर्हेमैर्नानारत्नैःप्रशोभितः॥ सोग्निज्वालैरिवात्युच्चैःशृंगैःसर्वत्रवेष्टितः ॥१४॥ तस्या गत्यनितंबेषुसतृणासुशिलासुच ॥विद्याधर्यःप्रसेवंतेस्वपतीन्कामविक्लवाः ॥ १५॥ निरुद्धांतर्मरुन्मार्गाजितक्लेशाविरागिणः ॥ ध्यायं त्यहर्निशंब्रह्मरम्यसानुगुहासुच॥१६॥साक्षसूत्रकराःसिद्धाअर्धोन्मीलितलोचनाः॥आराधयंतिभूतेशंसुंदरीषुदरीषुच ॥१७॥ मंदारकु सुमामोदसुरभीकृतदिङ्मुखः॥एषनिर्झरिणीवारिझंकारमुखरःसदा॥१८॥ उपत्यकासुखेलद्भिर्वनस्थैःकलभैर्गजैः ॥ कस्तूरीमृगयूथै श्चचारुचित्रमृगैस्तथा ॥ १९ ॥

करती हैं ॥ १५ ॥ अन्तर वायुके रोकनेवाले क्लेश जीतनेवाले विरागी उसकी गुहाओंमें निरन्तर ब्रह्मका ध्यान करते हैं ॥ १६ ॥ हाथमें रुद्राक्ष लिये सिद्ध अर्धनेत्र मींचे हुए सुन्दर गुहाओंमें शिवजीका ध्यान करते हैं ॥ १७ ॥ मंदारके फूलोंकी सुगंधिसे दिशा सुवासित हो रहीं झरनोंके पानी झरने से जहां शब्द हो रहा, वनमें स्थित हाथियोंके बच्चे और हाथी ॥ १८ ॥ उपत्यका आमें खेल रहे कस्तूरीवाले मृगयूथ तथा सुंदर चित्र

१ साग्निज्वालैरिवोच्चैः स इति पाठः । २ विद्याधराहि सेवंते स्वपत्नीःकामविह्वलाः इ० पा ० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रंगवाले मृगोंके यूथ ॥ १९ ॥ चंवरी गाय फिरती हुई विचित्र श्वापदोंसे युक्त पारावत और चकोर कोकिलके शब्दोंसे व्याप्त ॥ २० ॥ राजहंस और मोरोंसे सदा रमणीय सदा देवता गुह्यक और अप्सराओंसे व्याप्त तथा ॥ २१ ॥ राजा बोले यह पर्वत अनेक आश्चर्योंसे युक्त सब सिद्धोंका आश्रयवाला है हे भगवन् ! वह कितना लम्बा और कितना चौडा है ॥ २२ ॥ ऋषि बोले ३६ योजन का ऊंचा मस्तकमें दशयोजनवाला चौडा व विस्तारमें मूलमें सोलह योजनवाला है ॥ २३ ॥ हरिचंदन मंदार और आमके वृक्षोंसे शोभित देवदारु सरल

विलसच्चामरीवृंदैर्विचित्रैःश्वापदैस्तथा ॥ नदत्पारावतैश्चैवचकोरैश्चापिकोकिलैः ॥ २० ॥ राजहंसमयूरैश्चसदारम्यःसपर्वतः ॥ सेव्यमानःसदादेवैर्गुह्यकैरप्सरोगणैः ॥ २१ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ बह्वाश्चर्यमयःशैलःसर्वसिद्धिसमाश्रयः ॥ भगवन्कि यदुच्छ्रायःकियदायामविस्तरः ॥ २२ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ षट्त्रिंशद्योजनोच्छ्रायोमस्तकेदशयोजनः ॥ आयामविस्तरा भ्यांसमूलेषोडशयोजनः ॥ २३ ॥ हरिचंदनमंदारचूतराजिविराजितः ॥ देवदारुद्रुमाकीर्णःसरलार्जुनशोभितः ॥ २४ ॥ काला गरुलवंगैश्चनिकुंजैश्चलतागृहैः ॥ विराजतेगिरिश्रेष्ठःसदापुष्पफलप्रदः ॥ २५ ॥ तंदृष्ट्वापर्वतंरम्यंतदादुर्भिक्षपीडितः ॥ भृगुश्चकारत त्रैववसतिंहृष्टमानसः ॥ २६ ॥ तस्मिन्मनोहरेशैलेकंदरेषुवनेषुच ॥ चिरकालंतपस्तेपेतपःसुनिरतोभृगुः ॥ २७ ॥ ॥ इति श्रीपद्म पुराणेमाघमासमाहात्म्येमणिशैलवर्णनंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥

अर्जुनके सरलके वृक्षोंसे युक्त ॥ २४ ॥ काल अगरु लवंग निकुंजलतागृहोंसे विराजित, सदा पुष्प फलोंसे शोभायमान है ॥ २५ ॥ उस मनोहर पर्वतको देखकर दुर्भिक्ष पीडित भृगुही निवास करनेकी इच्छा करने लगे ॥ २६ ॥ उस मनोहर पर्वत की कंदरा और वनोंमें भृगुंजी बहुत कालतक तप करते रहे ॥ २७ ॥ ॥ इति श्रीपाद्मे माघमासमाहात्म्ये भाषाटीकायां मणिशैलवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋषि बोले हे राजन् ! इस प्रकार आश्रमवासी ब्राह्मणोंके स्थित होनेमें उसपर्वतसे दो विद्याधर (स्त्रीपुरुष) उतर कर गये ॥ १ ॥ और आकर मुनिको नमस्कार कर दुःखी हो स्थित हुए इस प्रकार उनको देख ब्राह्मण कोमलवाणीसे बोले ॥ २ ॥ हे विद्याधर ! प्रसन्न होकर कहो तुम अति दुःखी क्यों हो उन मुनिके वाक्य सुनकर विद्याधर ब्राह्मणसे बोले ॥ ३ ॥ हे तापस श्रेष्ठ ! आप हमारे दुःखका कारण सुनो, पुण्यका फल

॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ एवंतिष्ठतिराजेंद्रद्विजेस्वाश्रमवासिनि ॥ अवतीर्यागतौशैलाद्दौविद्याधरदंपती ॥ १ ॥ समागम्यमुनिंनत्वा स्थितौतावतिदुःखितौ ॥ तथाविधौचतौदृष्ट्वामंजुवाक्यंद्विजोब्रवीत् ॥ २ ॥ वदविद्याधरप्रीत्यायुवांकिमतिदुःखितौ ॥ श्रुत्वात स्यमुनेर्वाक्यंप्राहविद्याधरोद्विजम् ॥ ३ ॥ शृणुतांतापसश्रेष्ठममदुःखस्यकारणम् ॥ सुकृतस्यफलंप्राप्यप्रातोस्मित्रिदशालयम् ॥४॥ लब्ध्वाऽपिदेवतादेहंमुखंव्याघ्रस्यमेभवत् ॥ नजानेकर्मणःकस्यविपकोयमुपस्थितः ॥ ५ ॥ इतिसंस्मृत्यसंस्मृत्यनलेभेशर्ममे मनः ॥ अन्यच्चशृणुतांविप्रयेनमेह्याकुलंमनः ॥ ६ ॥ जायेयंममकल्याणीमधुवाणीसुरूपिणी ॥ नृत्यगीतकलाभिज्ञासर्वसद्गुणशा लिनी ॥ ७ ॥ यस्मिन्कालेकुमारीयंतदाचाऽमलयानया ॥ विपंचींपरिवादिन्यातंत्रीभिःसप्तभिर्भृशम् ॥ ८ ॥

प्राप्तहोनेसे मुझको स्वर्ग मिलाहै ॥ ४ ॥ देवता देहभी प्राप्त होकर व्याघ्रकी समान हमारामुख हो रहाहै नहीं जानते हमको यह किस कर्म का फल मिलाहै ॥ ५ ॥ इस प्रकार वारंवार विचार करके मेरे मनमें शान्ति नहीं होती, हे ब्राह्मण ! और भी सुनो जिस कारण मेरा मन व्याकुल है॥ ६ ॥ यह मेरी स्त्री मधुर वाणी बोलनेवाली स्वरूपवान् है ॥ ७ ॥ नृत्यगीत कलाकी ज्ञाता सम्पूर्ण सद्गुणसे युक्त है, जिस समय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह कुमारी थी उस समय इस निर्मल मनवालीने सात स्वर युक्त वीणाको बजाकर ॥ ८ ॥ वीणा वादन करे सज्ञाता नारद मुनिको सन्तुष्ट किया मुग्ध भाव से भी मनोहर कंठ से गाती हुई इसने ॥ ९ ॥ विचित्र स्वर और नादके ज्ञाता नारद मुनिको संतुष्ट किया तथा इस कौतुक से भिन्नांगवालीने वीणाबजाते हुए ॥ १० ॥ अनेक प्रकारकी वक्र गति से स्निग्ध उसकी पंचम धुनि को सुनकर रोम खडे हो जाने से शिवजी

वीणावादरसाभिज्ञस्तोषितोनारदोमुनिः ॥ मुग्धभावेपिगायंत्यात्वनयारक्तकंठया ॥ ९ ॥ विचित्रस्वरनादज्ञोदेवराजोपितोषितः ॥ अस्याःकौतुकभिन्नांग्यावादयंत्याविपंचिकाम् ॥ १० ॥ नानावक्रगतिस्निग्धंश्रुत्वातंपंचमध्वनिम् ॥ तुतोषोद्भिन्नरोमांचोधुन्वन्मौलिंमहेश्वरः ॥ ११ ॥ शीलौदार्यगुणग्रामरूपयौवनसंपदा ॥ नानयासदृशीनाकेकाचिदस्तिनितंबिनी ॥ १२ ॥ क्वेयंदेवसुखीरामा क्वाहंव्याघ्रमुखःपुमान् ॥ इतिब्रह्मन्सदाचिंत्यदध्यामिहृदिसर्वदा ॥ १३ ॥ इतिविद्याधरप्रोक्तंश्रुत्वाचेक्ष्वाकुनंदनः ॥ त्रिकालज्ञोभृगुः प्राहप्रहसन्दिव्यलोचनः ॥ १४ ॥ शृणुविद्याधरश्रेष्ठविचित्रंकर्मणांफलम्॥प्राप्यप्राज्ञानमुह्यंतिमुह्यंत्यज्ञानचेतसः ॥ १५ ॥

प्रसन्न होगये ॥ ११ ॥ शील उदारता गुणोंके समूहसे युक्त रूप यौवनकी संपदावाली इसकी समान अन्य कोई स्त्री नहीं है ॥ १२ ॥ कहां तो यह देव मुखी और कहां मैं व्याघ्र मुखवाला हूं इस प्रकार से सदा मैं हृदयमें विचार करताहूं ॥ १३ ॥ इस प्रकार विद्याधरों के वचनको श्रवणकर त्रिकालज्ञ भृगुजी हँसकर बोले ॥ १४ ॥ हे श्रेष्ठ विद्याधर सुनो कर्मके विचित्र फल हैं उसको प्राप्त हो बुद्धिमान् मोहित नहीं

१ गुणारामा इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होते अज्ञानी मोहित होजाते हैं ॥ १५ ॥ मक्खीके चरणमात्र भी जैसे विष विष है इसी प्रकार कर्मका दारुण फल है ॥ १६ ॥ तेने माघमास में एकादशीका व्रत करके तेल शरीरमें लगाया था और द्वादशी तबतक प्राप्त नहीं हुईथी इस कारण तुम्हारा व्याघ्र मुख हुआ ॥ १७ ॥ एकादशीके दिन व्रत रह कर और द्वादशीको तेल लगानेसे प्रथम पुरूरवाको कुरूपकी प्राप्ति हुई थी ॥ १८ ॥ तब वह अपनी कुकाया देख कर उस दुःखसे दुःखी हुआ; वह सरोवरके तट गिरिराजके समीप प्राप्त होकर ॥ १९ ॥ स्नान कर परमप्रीतिसे पवित्र हो स्नानकर कुशासन

मक्षिकापदमात्रंतुयथाहिविषमंविषम् ॥ क्रियात्वविहितालपापिविपाकेदारुणातथा ॥ १६ ॥ उपोष्यैकादशींमाघेतैला भ्यंगःकृतस्त्वया ॥ द्वादश्यांप्राग्भवेदेहेतेनव्याघ्रमुखोभवान् ॥ १७ ॥ उपोष्यैकादशींपुण्यांद्वादश्यांतैलसेवनात् ॥कुरूपंप्राप्तवा न्देहंपुराह्येवंपुरुरवाः ॥ १८ ॥ दृष्ट्वात्मनःकुकायंसतेनदुःखेनदुःखितः ॥ गिरिराजंसमागम्यदेवतासरससस्तटे ॥ १९ ॥ स्थित्वा त्रपरमप्रीत्याशुचिःस्नातःकुशासने ॥ नवनीलघनश्यामंनलिनायतलोचनम् ॥ २० ॥ शंखचक्रगदापद्मधरंपीतांवरावृतम् ॥ कौस्तुभेनविराजंतंवनमालाधरंहरिम् ॥ २१ ॥ चिंतयन्हृदयेराजानिगृहीताखिलेंद्रियः ॥ मासत्रयंनिराहारस्तपस्तेपेसुदारुणम् ॥ ॥ २२ ॥ अल्पेनतपसातुष्टःसप्तजन्मकृतार्चनः ॥ संस्मरंस्तस्यभूपस्यतदाप्रादुरभूत्स्वयम् ॥ २३ ॥

पर बैठे नवीन नील मेघकी समान घनश्याम कमललोचन ॥ २० ॥ शंख चक्र गदा पद्म लिये पीताम्बरधारी कौस्तुभधारे वनमाला पहरे हरिको ॥ २१ ॥ राजाने सम्पूर्ण इन्द्रियसमूहको वश कर मनमें विचार करते हुये तीन महीने निराहार रहकर दारुण तप किया ॥ २२ ॥ सात जन्मके पूर्व अर्चन होनेसे थोडेही समय में भगवान् उनसे प्रसन्न होगये उस राजा की प्रीति विचार कर प्रगट हुए ॥ २३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माघके शुक्ल पक्ष द्वादशी मकरके सूर्यमें भगवान् ने अपने शंखसे राजाका अभिषेक किया ॥ २४ ॥ और उसके तेल लगानेकी चेष्टाको स्मरण कराते भगवान् ने उसको सुन्दर रूप दिया ॥ २५ ॥ जिसको देख उर्वशी अप्सरा ने उसकी इच्छा की, इस प्रकार वर पाय कृतकृत्य हो राजा अपने पुर को गया ॥ २६ ॥ हे किन्नर इस प्रकार कर्म की गति जानकर क्यों खेद करते हो, जो तुम यह दानवकी रूपता हरण की इच्छा करते हो ॥ २७ ॥

माघस्यशुक्लपक्षेतुद्वादश्यांमकरेरवौ ॥ शंखाद्भिरभिषिच्याशुमुदातंचक्रवर्तिनम् ॥ २४ ॥ वासुदेवोददौतस्मैस्मारयंस्तैलचेष्टितम् ॥ अतीवसुंदरंरूपंकमनीयंमनोहरम् ॥ २५ ॥ येनतंचकमेदेवीउर्वशीदेवनायिका ॥ इत्थंलब्धवरोराजाकृतकृत्यःपुरंगतः ॥ २६ ॥ इति कर्मगतिंज्ञात्वाकिंविद्याधरखिद्यते ॥ भवान्परिजिहीर्षुश्चेद्दानवस्यविरूपताम् ॥ २७ ॥ शीघ्रंमद्वचनादेवप्राचीनाघविनाशनम् ॥ माघमासेकुरुस्नानंमणिकूटनदीजले ॥ २८ ॥ मुनिसिद्धसुरैर्जुष्टेकथयिष्यामितद्विधिम् ॥ तवभाग्यवशान्माघोनिकटःपंचमेहनि ॥ ॥ २९ ॥ पौषस्यैकादशींशुक्लामारभ्यस्थंडिलेशयः ॥ माससमेकंनिराहारस्त्रिकालंस्नानमाचर ॥ ३० ॥ त्रिकालमर्चयन्विष्णुं त्यक्तभोगोजितेंद्रियः ॥ माघस्यैकादशीशुक्लायावद्विद्याधरोत्तम ॥ ३१ ॥

तो शीघ्र मेरे वचन से प्राचीन पापके नाशक मणिकूटनदी के जलमें माघमासमें स्नान करो ॥ २८ ॥ जो मुनि सिद्ध देव समूहसे व्याप्तहै मैं इस विधान को कहूंगा, तेरे भाग्यवश से पांचवेंही दिन माघ प्रारंभ होगा ॥ २९ ॥ पौषकी शुक्ल एकादशीसे आरंभ कर भूमिपर शयनकर एक महीने निराहार रहकर त्रिकाल स्नानकर ॥ ३० ॥ भोग त्यागनकर तीन काल विष्णु भगवान् का पूजनकर हे विद्याधर जबतक माघ शुक्ल एकाशी आवे ॥ ३१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तब तू पाप रहित होकर पवित्रहो शुक्ल द्वादशीके दिन मंगल के पवित्र जलोंसे स्नानकर ॥ ३२॥ हम तुम्हारा मुख काम देव की समान कर देंगे हे विद्याधरश्रेष्ठ तुम देवता के मुख होकर॥ ३३॥इस वरवर्णिनिके साथ सुख पूर्वक क्रीडा करो, माघके प्रभाव को जानकर सदा माघस्नान करो ॥ ३४॥ जिसप्रकार तुम्हारी सदा मनोरथ की प्राप्ति होगी, इस प्रकार महात्मा सर्वज्ञ भृगुजीने ॥ ३५॥ हेराजन्! विद्याधर के निमित्त फिर गाथा कही कि माघ स्नानसे

ततोनिर्दग्धपापंत्वांद्वादश्यांपुण्यवासरे ॥ अभिषिच्यशिवैस्तोयैर्मंत्रपूतैरहंसुर ॥ ३२ ॥ कामवक्त्रोपमंवक्त्रंकरिष्यामितवानघ ॥ देवतावदनोभूत्वात्वंविद्याधरसत्तम ॥ ३३ ॥ अनयावरवर्णिन्यासार्द्धंक्रीडयथासुखम् ॥ ज्ञातमाघप्रभावस्त्वंमाघस्नानंसदाकुरु ॥ ३४ ॥ यथामनोरथावाप्तिर्जायतेतवसर्वदा॥इत्युक्तंभृगुणातस्मैसर्वज्ञेनमहात्मना ॥ ३५ ॥ विद्याधरायराजेंद्रपुनर्गाथाउदाहृता॥ माघस्नानैर्विपन्नाशोमाघस्नानैरघक्षयः ॥ ३६ ॥ सर्वयज्ञाधिकोमाघःसर्वदानफलप्रदः ॥ माघोगर्जतियज्ञेभ्योमाघोयोगाच्चगर्जति ॥ ॥ ३७ ॥ तीव्राच्चतपसोमाघोभोविद्याधरगर्जति ॥ पुष्करेचकुरुक्षेत्रेब्रह्मावर्तेपृथूदके ॥ ३८ ॥ अविमुक्तेप्रयागेचगंगासागरसंगमे ॥ यत्फलंदशभिर्वर्षैःप्राप्यतेनियमैर्नरैः॥३९॥तत्फलंप्राप्यतेमाघेत्र्यहस्नानान्नसंशयः ॥ स्वर्गलोकेचिरंरागोयेषांमनसिवर्तते ॥ ४० ॥

विपत्ति का नाश और माघ स्नानसे पापका क्षय होताहै॥ ३६॥माघ सम्पूर्ण यज्ञों में अधिक और सब दान के फल का देनेवाला है माघ यज्ञों से गर्जताहै माघ यज्ञसे अधिकता में गर्जता है॥ ३७॥हे विद्याधर माघ अधिकाई में तीव्र तपसे भी गर्जताहै पुष्कर कुरुक्षेत्र ब्रह्मावर्त पृथूदक ॥ ३८॥ काशी प्रयाग गंगा सागर का संगम यहां दशवर्ष नियम करनेसे जो फल मिलता है॥ ३९॥वह फल माघमें तीन दिन स्नान करनेसे प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं जिनके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनमें बहुतकाल तक स्वर्गमें रहनेकी इच्छा है ॥४०॥उनको कहीं जलमें मकरके सूर्यमें स्नान करना चाहिये इससे आयु आरोग्य सम्पत्ति रूप सौभाग्यतादिगुणोंकी प्राप्ति होती है॥४१॥जिनके ऐसे मनोरथ हैं उनको माघस्नान कभी त्यागना न चाहिये, जो नरक और दरिद्रसे डरते हैं॥४२॥ वह सदा प्रयत्नपूर्वक माघस्नान करे, दारिद्र पाप दुर्भाग्यरूपी कीच धोनेको माघस्नानकी समान अन्य कोई उपाय नहीं है, श्रद्धाहीन कर्म अल्प फलवाले हैं ॥४३॥४४॥ परन्तु चाहे जैसे माघस्नान करै पूर्ण फल प्राप्त होता है, अकाम हो या सकाम कहीं बाहर जलमें ॥ ४५ ॥ माघस्नान करनेवाला

यत्रक्वापिजलेतैस्तुस्नातव्यंमकरेरवौ ॥ आयुरारोग्यसंपत्तिरूपसौभाग्यतागुणाः ॥४१॥ येषांमनोरथस्तैस्तुनत्याज्यंमाघमज्जनम् ॥
येचबिभ्यतिनरकाद्येदरिद्राच्चसंचितात् ॥४२॥ सर्वथातैःप्रयत्नेनमाघेकार्यंनिमज्जनम् ॥ दारिद्र्यपापदौर्भाग्यपंकप्रक्षालनायच॥४३॥
माघस्नानान्नचान्योस्तिउपायोराजसत्तम ॥ श्रद्धाहीनानिकर्माणितथात्यल्पफलानिवै ॥४४॥ फलंददातिसंपूर्णमाघस्नानंयथातथा॥
अकामोवासकामोवायत्रक्वापिवहिर्जले ॥ ४५ ॥ इहामुत्रचदुःखानिमाघस्नायीनविंदति ॥ पक्षद्वयेयथाचंद्रोवर्द्धतेक्षीयतेतथा ॥४६॥
पातकंक्षीयतेमाघेपुण्यराशोश्चवर्धते ॥ यथाचखन्याजायंतेरत्नानिविविधानिच ॥४७॥ स्नानात्पुण्यानिजायंतेनराणांमाघतस्तथा ॥
आयुर्वित्तंकलत्रादिसंपदःप्रभवंतिच॥४८॥कामधेनुर्यथाकामंचिंतामणिस्तुचिंतितम्॥माघस्नानंददातीहतद्वत्सर्वान्मनोरथान्॥४९॥

दोनों लोकमें दुःख नहीं पाता, जिस प्रकार दोनों पक्षमें चन्द्रमा घटता बढता है ॥ ४६ ॥ इस प्रकार माघमें स्नान करनेसे पाप नष्ट होता और पुण्य बढता है जैसे खानोंसे अनेक प्रकारके रत्न प्रगट होते हैं ॥ ४७ ॥ इसी प्रकार माघस्नानसे विविध प्रकारके पुण्य होते हैं, आयु वित्त कलत्र सम्पत्ति होती है ॥ ४८ ॥ जैसे कामधेनु कामना, चिन्तामणी मन चिन्तित फल देती हैं इसी प्रकार माघस्नान सब मनोरथ देता है ॥ ४९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्युगमें तपपर ज्ञान त्रेतामें यज्ञ द्वापरकलिमें ज्ञान और माघस्नान सब युगोंमें है ॥ ५० ॥ हे राजन् ! सब वर्ण और आश्रमोंको माघस्नान मनो रथकी धाराओंसे वर्षा करता है ॥ ५१ ॥ वशिष्ठजी बोले यह वाक्य भृगुजीके सुनकर वह विद्याधर माघमासमें भृगुके साथही पर्वतके झरनेमें ॥ ५२ ॥ भार्याके साथ यथोक्त विधिसे स्नान करता हुआ भृगुके अनुग्रह से उसको मनोरथ की प्राप्तिहुई ॥ ५३ ॥ देवमुख होकर मणिपर्वत पर आनंद करने लगा, और उसपर अनुग्रह कर प्रसन्न भृगुजी विन्ध्य पर्वत पर आये ॥ ५४ ॥ मणिमय गिरिराजमें माघमें स्नानमात्र सेही विद्याधर काम

कृतेतपःपरंज्ञानंत्रेतायांयजनंतथा ॥ द्वापरेतुकलौज्ञानंमाघःसर्वयुगेषुच ॥ ५० ॥ सर्वेषामेववर्णानामाश्रमाणांचभूपते ॥ माघस्नानं तुधर्मस्यधाराभिरभिवर्षति ॥ ५१ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ इतिवाक्यंभृगोःश्रुत्वातस्मिन्नेवाश्रमेसुरः ॥ सहैवभृगुणामाघेगिरौ निर्झरिणीतटे ॥ ५२ ॥ यथोक्तविधिनास्नानमकरोद्भार्ययासह ॥ भृगोरनुग्रहात्सोथसंप्राप्यमनसेप्सितम् ॥ ५३ ॥ देवतावदनो भूत्वामुमुदेमणिपर्वते ॥ आजगामभृगुर्विंध्यंतमनुग्राह्यहर्षितः ॥ ५४ ॥ मणिमयगिरिराजेस्नानमात्रेणमाघेमदनवदनरूपस्तत्र विद्याधरोऽभूत् ॥ क्षपितनियमदेहोविंध्यपादावतीर्णोभृगुरपिसहशिष्यैराजगामाथरेवाम् ॥ ५५ ॥ अखिलभुवनसारंमाघमाहात्म्यमे तद्द्विजवरभृगुणोक्तंभूपविद्याधराय ॥ विविधफलविचित्रंयःशृणोतीहनित्यंरुचिरसकलकामान्देववत्प्राप्नुयात्सः ॥ ५६ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

रूप हो गया, और नियमादि से निश्चित हो पर्वत से उतर भृगुजी रेवा तटमें आये ॥ ५५ ॥ यह माघमाहात्म्य सब भुवनका सार है, सो भृगुजीने विद्याधरसे कहा, जो नित्य इसको सुनते हैं उसको अनेक प्रकारके विचित्र फल और देववत् सब काम प्राप्त होते हैं ॥ ५६ ॥

॥ इति श्रीपाद्मे माघमासमाहात्म्ये वशिष्ठदिलीपसंवादे पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वसिष्ठजी बोले हेराजन्! अब तुमसे माघमाहात्म्य कहताहूं जो कार्तवीर्यके पूँछनेपर दत्तात्रेयने कथन कियाहै॥ १ ॥साक्षात् हरिरूप दत्तात्रेयजी जब सह्य पर्वतपर निवासकरतेथे, तब माहिष्मतीके राजाने उनसे जाकर पूँछाथा॥ २॥सहस्रार्जुन बोले हेभगवन् योगिश्रेष्ठ! हमने सब धर्म सुने सो कृपाकरके अब माघ स्नानका फल कहो ॥ ३ ॥ दत्तात्रेय बोले राजन् इस प्रश्नका उत्तर सुनो, जो पहले महात्मा नारदजीके प्रति ब्रह्माजीने कहा है ॥४॥ वह सब

॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ अधुनामाघमाहात्म्यंप्रवक्ष्यामिनृपोत्तम ॥ पृच्छतेकार्तवीर्यायदत्तात्रेयेणभाषितम् ॥ १ ॥ दत्तात्रेयंहरिं साक्षाद्वसंतंसह्यपर्वते ॥ पप्रच्छतंद्विजंगत्वाराजामाहिष्मतीपतिः ॥ २ ॥ ॥ सहस्रार्जुनउवाच ॥ ॥ भगवन्योगिनांश्रेष्ठसर्वेधर्माः श्रुतामया ॥ माघस्नानफलंब्रूहिकृपयाममसुव्रत ॥ ३ ॥ ॥ दत्तात्रेयउवाच ॥ ॥ शृयतांनृपशार्दूलएतत्प्रश्नोत्तरंशुभम् ॥ ब्रह्मणो क्तंपुराह्येतन्नारदायमहात्मने ॥ ४ ॥ तत्सर्वंकथयिष्यामिमाघस्नानफलंमहत् ॥ यथादेशंयथातीर्थंयथाविधियथाक्रियम् ॥ ५ ॥ अस्मिन्वैभारतेवर्षेकर्मभूमौविशेषतः ॥ अमाघस्नायिनांनृणांनिष्फलंजन्मकीर्तितम् ॥ ६ ॥ असूर्यंगगनंयद्वदचन्द्रमुडुमंडलम् ॥ तद्वन्नाभातिसत्कर्ममाघस्नानंविनानृप ॥ ७ ॥ व्रतैर्दानैस्तपोभिश्चनतथाप्रीयतेहरिः ॥ माघमज्जनमात्रेणयथाप्रीणातिकेशवः ॥८॥ नसमंविद्यतेकिंचित्तेजःसौरेणतेजसा ॥ तद्वत्स्नानेनमाघस्यनसमाःक्रतुजाःक्रियाः ॥ ९ ॥

माघस्नानका महाफल कहताहूं यथा देश यथा तीर्थ यथा विधि यथा क्रिया ॥ ५ ॥ इस भारतवर्ष और विशेषकर कर्म भूमिमें माघस्नान न करने वालोंका निष्फल जन्म कहा है ॥ ६ ॥ जैसे सूर्यके विना आकाश, चन्द्रमाके विना नक्षत्र शोभित नहीं होते, इस प्रकार माघस्नानके विना सत्कर्मकी शोभा नहीं होती ॥ ७ ॥ तप दान तीर्थोंसे भगवान् ऐसे प्रसन्न नहीं होते जैसे माघके मज्जनसे प्रसन्न होते हैं ॥ ८ ॥ जैसे सूर्यकी समान कोई तेज

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं है इसी प्रकार माघमासकी समान यज्ञ क्रिया सफल नहीं होती ॥ ९ ॥ भगवान्‌की प्रीति और सब पाप दूर होनेके निमित्त तथा स्वर्ग प्राप्तिके निमित्त मनुष्य माघस्नान करें ॥ १० ॥ पुष्ट बलवान् देहकी रक्षासे क्या है अशुचि और अध्रुव माघस्नानके विना देह होजाती है ॥ ११ ॥ अस्थियोंका स्तंभ, नसोंसे बंधा, मांसादिका लेप, चर्मसे मढा, दुर्गन्धिसे युक्त, मूत्रपुरीषका पात्र ॥ १२ ॥ जरा शोक विपत्तिसे व्याप्त, रोगका मंदिर, आतुर

प्रीतयेवासुदेवस्यसर्वपापापनुत्तये ॥ माघस्नानंप्रकुर्वीतस्वर्गलाभायमानवः ॥ १० ॥ किंरक्षितेनदेहेनसुपुष्टेनबलीयसा ॥ अध्रुवेणाप्यशुचिनामाघस्नानंविनाभवेत् ॥ ११ ॥ अस्थिस्तंभंस्नायुबद्धंमांसक्षतजलेपनम् ॥ चर्मावनद्धंदुर्गंधंपात्रंमूत्रपुरीषयोः ॥१२॥ जराशोकविपद्व्याप्तंरोगमंदिरमातुरम् ॥ रजस्वलमनित्यंचसर्वदोषसमाश्रयम् ॥ १३ ॥ परोपतापितापार्तंपरद्रोहिपरंविषम् ॥ लोलुपंपिशुनंक्रूरंकृतघ्नंक्षणिकंतथा ॥ १४ ॥ दुष्पूरंदुर्धरंदुष्टंदोषत्रयसमन्वितम् ॥ अशुचिस्रावसच्छिद्रंतापत्रयविमोहितम् ॥१५॥ निसर्गतोऽधर्मरतंतृष्णाशतसमाकुलम् ॥ कामक्रोधमहालोभनरकद्वारसंस्थितम् ॥ १६ ॥ क्रिमिविड्भस्मभवतिपरिणामेशुनां हविः ॥ ईदृक्छरीरंव्यर्थंहिमाघस्नानविवर्जितम् ॥ १७ ॥

रजस्वल अनित्य संम्पूर्ण दोषोंका आश्रय ॥ १३ ॥ पराये तापसे दुःखी परद्रोही परम विष लालची पिशुन क्रूर कृतघ्न क्षणिकबुद्धि ॥ १४ ॥ दुष्पूर दुर्धर दुष्ट तीनों दोषोंसे युक्त अपवित्र वस्तुका निकालने वाला छिद्र युक्त तीन तापसे मोहित ॥ १५ ॥ स्वभावसे अधर्ममें रत सैंकडो तृष्णासे व्याप्त कामक्रोध लोभ युक्त नरकद्वारसे व्याप्त ॥ १६ ॥ कृमिकीडोंसे युक्त परिणाममें भस्महोकर कुत्तोंकी हवि होता है माघस्नानके विना इस प्रकारका

१ कृमिवर्चस्कभस्मास्थिपारिपाकसमाकुलम्—इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शरीर व्यर्थही है ॥ १७ ॥ जलके बुद्बुदोंकी समान जन्तुओंमें पूतिका (जन्तुविशेषदीमक) की समान माघस्नानके विना मनुष्य मरणकेही निमित्त है ॥ १८ ॥ ब्राह्मण होकर भगवान् नारायणको न माने तो ब्राह्मण हत है, अयोगी श्राद्ध हत है, अब्रह्मण्य क्षेत्र हत है और २ अनाचारसे कुल नष्ट है ॥ १९ ॥ दंभसे धर्म क्रोधसे तप हत होजाता है, दृढताके विना ज्ञान और प्रमादसे शास्त्र नष्ट होजाता है ॥ २० ॥ अपने गुरुजनोंका मान्य

बुद्बुदाइवतोयेषुपूतिकाइवजंतुषु ॥ जायंतेमरणायैवमाघस्नानविवर्जिताः ॥ १८ ॥ अवैष्णवोहतोविप्रोहतंश्राद्धमयोगिच ॥ अब्रह्मण्यंहतंक्षेत्रमनाचारंहतंकुलम् ॥ १९ ॥ सदंभश्चहतोधर्मःक्रोधेनैवहतंतपः ॥ अदृढंचहतंज्ञानंप्रमादेनहतंश्रुतम् ॥ २० ॥ गुर्वभक्ता[1] हतानारी ब्रह्मचारीतयाहतः ॥ अदीप्तेग्नौहतोहोमोहुताभुक्तिरसाक्षिका[2] ॥ २१ ॥ उपजीव्याहताकन्यास्वार्थेपाकक्रियाहता ॥ शूद्रभिक्षोहतोयागःकृपणस्यहतंधनम् ॥ २२ ॥ अनभ्यासाहताविद्याहतोराजाविरोधकृम् ॥ जीवनार्थेहतंतीर्थंजीवनार्थेहतंव्रतम् ॥ ॥ २३ ॥ असत्याचहतावाणीतथापैशुन्यवादिनी ॥ संदिग्धश्चहतोमंत्रोव्यग्रचित्तोहतोजपः ॥ २४ ॥

न करनेसे नारी तथा ब्रह्मचारी हत होते हैं, अदीप्त अग्निमें होम हत, साक्षी रहित भुक्ति हत है ॥ २१ ॥ उपजीविकाके निमित्त कन्था हत है, अपने निमित्तही भोजन हत है, शूद्रके घरकी भिक्षासे यज्ञ और कृपणका धन हत है, ॥ २२ ॥ विना अभ्यासके विद्या, विरोधी राजा और जीवनके निमित्त तीर्थ हत है और निःसन्देह जीवनहीके निमित्त व्रत हत है ॥ २३ ॥ असत्यसे वाणी हत है, तथा चुगलीसे हत है, सन्दिग्ध होनेसे मंत्र

१ दुर्भगाचेतिपाठः । २ हताशक्तिरसात्विकी—इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हत है, व्यग्रचित्त होनेसे जप हत है ॥ २४ ॥ अश्रोत्रियको दान देना हत है, नास्तिकसे लोक हत है, और श्रद्धाके विना कीहुई सब पारलौकिक क्रिया हत है ॥ २५ ॥ हे राजन्! इस लोकमें जैसे प्राणी दरिद्रसे हत हैं, इसी प्रकार माघस्नानके विना मनुष्यका जन्म हत है ॥ २६ ॥ मकरके सूर्यमें जो प्रभात समय स्नान नहीं करता वह किसप्रकार पापसे छूटे और कैसे स्वर्गको जाय ॥ २७ ॥ ब्रह्महत्यारा सुवर्णका चुरानेवाला, मद्य पीने वाला, सुरापायी गुरुकी सेज पर चढनेवाला, यह पाप करनेवाला और पांचवां इन संसर्ग करनेवाला यह सब माघस्नान करनेसे पवित्र होजाते

हतमश्रोत्रियेदानंहतोलोकश्चनास्तिकः ॥ अश्रद्धयाहतंसर्वंकृतंयत्पारलौकिकम् ॥ २५ ॥ इदलोकोहतोनृणांदरिद्राणांयथानृप ॥ मनुष्याणांतथाजन्ममाघस्नानंविनाहतम् ॥ २६ ॥ मकरस्थेरवौयोहिनस्नात्यनुदितेरवौ ॥ कथंपापैःप्रमुच्येतकथंसात्रिदिवंव्रजेत् ॥ २७ ॥ ब्रह्महाहेमहारीचसुरापोगुरुतल्पगः ॥ माघस्नायीविपापःस्यात्तत्संसर्गीचपंचमः ॥ २८ ॥ माघमासेरटंत्यापःकिंचिदभ्युदितेरवौ ॥ ब्रह्मघ्नंवासुरापंवाकंपतंतंपुनोमहे ॥ २९ ॥ उपपापानिसर्वाणिपातकानिमहांत्यपि ॥ भस्मीभवंतिसर्वाणिमाघस्नायिनिभानवे ॥ ३० ॥ कंपंतिसर्वपापानिमाघस्नानसमागमे ॥ नाशकालोयमस्माकंयदिस्नास्यतिवारिणि ॥ ३१ ॥ एवंक्रोशंतिपापानिदृष्ट्वास्नानोद्यतंनरम् ॥ पावकाइवदीप्यंतेमाघस्नानैर्नरोत्तमाः ॥ ३२ ॥

हैं ॥ २८ ॥ माघमासमें किंचित् सूर्यके उदय होने पर जल कहते हैं ब्रह्महत्यारा सुरापानकरनेवाला और पतित हुएको हम पवित्र करेंगे ॥ २९ ॥ सब उपपातक और महापातकभी माघस्नान सुरू करनेसे भस्म होजाते हैं ॥ ३० ॥ माघस्नानके आतेही पाप कंपित होने लगते हैं, यदि यह पुरुष स्नानकर लेगा तो हमारा नाश होगा ॥ ३१ ॥ इस प्रकार स्नान करनेको उद्यत हुए पुरुषको देखकर पाप दुखी होते हैं माघस्नानी मनुष्य अग्निकी समान दीखने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लगते हैं ॥ ३२ ॥ वे पापोंसे विमुक्त होकर इस प्रकार दीप्त होतेहैं जिस प्रकार मेघोंसे मुक्त होकर चन्द्रमा दीप्त होता है, गीला सूखा लघुवाणी मनसे जो पाप किया है ॥ ३३ ॥ वह सब पाप माघस्नानसे इस प्रकार दूर होजाते हैं जैसे अग्निमें समिधा, जो प्रमाद वा अज्ञान जानमें वा अजानमें पाप किया है ॥ ३४ ॥ वह मकरके सूर्य होनेमें स्नान मात्रसे नष्ट होजाता है, पापरहित स्वर्गको जाते, पापिष्ठी शुद्ध होजाते हैं ॥ ३५ ॥ हे राजन् ! माघस्नान विषयमें सन्देह न करना चाहिये, हे राजन् ! माघके स्नानमें सबही अधिकारी हैं, जैसे भगवानके भक्तिमें सब अधिकारी हैं ॥ ३६ ॥

विमुक्ताःसर्वपापेभ्योमेघेभ्यइवचंद्रमाः ॥आर्द्रंशुष्कंलघुस्थूलंवाङ्मनःकर्मभिःकृतम्॥३३॥ माघस्नानंदहेत्पापंपावकःसमिधोयथा ॥ प्रामादिकंचयत्पापंज्ञानाज्ञानकृतंचयत् ॥ ३४ ॥ स्नानमात्रेणतन्नश्येन्मकरस्थेदिवाकरे ॥ निष्पापास्त्रिदिवंयांतिपापिष्ठायां तिशुद्धताम् ॥ ३५ ॥ संदेहोनात्रकर्तव्योमाघस्नानेनराऽधिप ॥ सर्वेधिकारिणोमाघेविष्णुभक्तौयथानृप ॥ ३६ ॥ सर्वेषांस्वर्गदो माघःसर्वेषांपापनाशनः ॥ एषएवपरोमंत्रोह्येतदेवपरंतपः ॥ ३७ ॥ प्रायश्चित्तंपरंचैतन्माघस्नानमनुत्तमम् ॥ नृणांजन्मांतराभ्यासा न्माघस्नानेमतिर्भवेत् ॥ ३८ ॥ अध्यात्मज्ञानकौशल्यंजन्माभ्यासाद्यथानृप ॥ संसारकर्दमालेपप्रक्षालनविशारदम् ॥ ३९ ॥ पावनंपावनानांचमाघस्नानंपरंनृप ॥ स्नांतिमाघेनयेराजन्सर्वकामफलप्रदे ॥ ४० ॥

माघ सबहीको स्वर्ग देनेवाला और सबहीका पाप नाशक है यही परं मंत्र और यही परं तप है ॥ ३७ ॥ माघस्नानका करना परमोत्तम प्रायश्चित्त है जन्मान्तरोंके अभ्याससे मनुष्योंकी माघस्नानमें भक्ति होती है ॥ ३८ ॥ जिस प्रकार जन्मान्तरोंके अभ्याससे अध्यात्म ज्ञानकी प्राप्ति होती है, संसाररूपी कर्दमका इसीसे प्रक्षालन होता है ॥ ३९ ॥ हे राजन् ! यह माघस्नान पवित्रोंका पवित्र करनेवाला है हे राजन् ! जो सब काम फल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देनेवाले माघमें स्नान नहीं करते हैं ॥ ४० ॥ वे चन्द्र सूर्यकी समान बडे भोग किस प्रकारसे भोग कर सकते हैं, हे राजन् ! माघस्नानके प्रभाव से उत्पन्न हुआ महा आश्चर्य सुनो ॥ ४१ ॥ एक भृगुवंशमें उत्पन्न हुई कुञ्जिका नाम कल्याणी ब्राह्मणी थी, वह बालवैधव्यसे दुःखी हो घोर तप करने लगी ॥ ४२ ॥ विन्ध्याचलपर्वतके महा क्षेत्रमें जहां रेवाकपिलका संगम हुआ है वहां वह व्रतिनी होकर नारायणपरायण हुई ॥ ४३ ॥

कथंतेभुंजतेभोगांश्चंद्रसूर्यग्रहोपमान् ॥ शृणुराजन्महाश्चर्यंमाघस्नानप्रभावजम् ॥ ४१ ॥ कुञ्जिकानामकल्याणीब्राह्मणीभृगुवंशजा ॥ बालवैधव्यदुःखार्तातपस्तेपेसुदुस्तरम् ॥ ४२ ॥ विंध्यपादेमहाक्षेत्रेरेवाकपिलसंगमे ॥ तत्रसाव्रतिनीभूत्वानारायणपरायणा ॥ ४३ ॥ सदाचारवतीनित्यंनित्यंसंगविवर्जिता ॥ जितेंद्रियाजितक्रोधासत्यवागल्पभाषिणी ॥ ४४ ॥ सुशीलादानशीलाचदेहशोषणशालिनी ॥ पितृदेवद्विजेभ्यश्चदत्त्वाहुत्वातथानले ॥ ४५ ॥ षष्ठेकालेचसाभुङ्क्तेह्युञ्छंवृत्तिःसदानृप ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रपाराकतप्तकृच्छ्रादिभिर्व्रतैः ॥ ४६ ॥ पुण्यान्नयतिसामासान्नर्मदायाश्चारोधसि ॥ एवंतयातपस्विन्यावल्कलिन्यासुशीलया ॥ ४७ ॥

सदा सदाचारसे युक्त सम्पूर्ण संगसे वर्जित जितेन्द्रिय जितक्रोध सत्यवाक् अल्प भाषण करनेवाली ॥ ४४ ॥ सुशीला दानशीला अपने देहको शोषनेवाली पितृदेवताओंको देकर अग्निमें आहुति देनेवालीथी ॥ ४५ ॥ हे राजन् ! वह उञ्छ वृत्ति करनेवाली सदा छठे कालमें भोजन करती कृच्छ्र अतिकृच्छ्र और तप्तकृच्छ्र व्रतका सदा अनुष्ठान करती ॥ ४६ ॥ पुण्यसेही वह नर्मदाके तटमें अपना समय व्यतीत करतीथी, इस

१ कुक्षौ—इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकार वल्कल वस्त्रधारिणी उस सुशीलाने ॥ ४७ ॥ महासत्वतासे युक्त धैर्य और सन्तोषसे युक्त रेवाकपिलके संगममें साठ माघस्नान किये ॥४८॥ हे राजन् ! तब वह तपसे क्षीण होकर उस क्षेत्रमें मृतक होगई तब वह माघस्नानके पुण्यसे उस वैष्णवपुरमें ॥ ४९ ॥ प्रसन्न होकर सहस्र चतुर्युगी निवास करती हुई सुन्दउपसुन्दके नाश करनेको पद्मभवसे प्रगट हुई ॥ ५० ॥ तिलोत्तमा नाम होकर ब्रह्मलोकमें रही और उस पुण्यके शेषसे

सुमहासत्त्वशालिन्याधृतिसंतोषयुक्तया ॥ षष्टिर्माघास्तयास्नातारेवाकपिलसंगमे ॥४८॥ ततःसातपसाक्षीणातस्मिंस्तीर्थेमृतानृप ॥ माघस्नानजपुण्येनतेनसावैष्णवेपुरे ॥ ४९ ॥ उवासप्रमुदायुक्ताचतुर्युगसहस्रकम् ॥ सुंदोपसुंदनाशायपश्चात्पद्मभवात्पुनः ॥ ५० ॥ तिलोत्तमेतिनाम्नासाब्रह्मलोकेवतारिता ॥ तेनपुण्यस्यशेषेणरूपस्यैकायनंययौ ॥ ५१ ॥ अयोनिजावलारत्नंदेवानामपिमोहिनी ॥ लावण्यह्रदिनीतन्वीसाभूदप्सरसांवरा ॥ ५२ ॥ निपुणस्यविधेःस्रष्टुर्नूनभाश्चर्यकारिणी ॥ तामुत्पाद्यविधातावैतुष्टोनुज्ञांतदाददौ ॥ ५३ ॥ एणशावाक्षिगच्छत्वंदैत्यनाशायसत्वरम् ॥ ततःसाब्रह्मणोलोकाद्वीणामादायभामिनी ॥ ५४ ॥ गतापुष्करमार्गेणयत्रतौ देववैरिणौ ॥ तत्रस्नात्वातुरेवायाःपवित्रेनिर्मलेजले ॥ ५५ ॥

महा रूपवती हुई ॥ ५१ ॥ वह अयोनिजस्त्रियोंमें रत्न देवताओंकी मोहनेवाली हुई सुन्दर नाभिवाली मनोहर अप्सरा होती हुई ॥ ५२ ॥ विधाताकी चातुरीका मानो आश्चर्य करनेवाली उसको उत्पन्नकर विधाताने प्रसन्न हो आज्ञादी ॥ ५३ ॥ हे मृगलोचनी शीघ्रही तुम दैत्योंके नाश के निमित्त गमन करो तब वह भामिनी वीणा लेकर ब्रह्माजीके लोकसे ॥५४ ॥ पुष्कर मार्ग से गई जहां वे दोनों दैत्य स्थित थे वहां रेवाके पवित्र निर्मल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जल में स्नानकर॥५५॥वधूक पुष्पकी समान लाल वस्त्र धारण कर शब्दायमान कंकण और मेखला नुपुर धारण किये ॥५६॥ चलाय मान मुक्तावली कंठी चलायमान कुंडलोंसे शोभित चमेली के फूलों को जूड़े में गूथे अशोक वृक्ष के नीचेस्थित॥५७॥मधुर स्वर से गाती वीणा को बजाती छः ओंसुरों की तान लेती, सुस्निग्धकोमल शब्द से युक्त॥५८॥ इस प्रकार तिलोत्तमाबाला अशोक वृक्ष के नीचे स्थित हुई दैत्यके सेवकों ने उसको मनकी आनंद

परिधायांबरंरक्तंबंधूककुसुमप्रभम् ॥ रणद्वलयिनीचारुसिंजन्मेखलनूपुरा ॥ ५६ ॥ लोलमुक्तावलीकंठीचलत्कुंडलशो भना ॥ माधवीकुसुमापीडाकंकेलीविटपेस्थिता ॥ ५७ ॥ गायंतीसुस्वरंसापिपीडयंतीतुवल्लकीम् ॥ मूर्च्छयंतीस्वरषट्कंसुस्नि ग्धंकोमलंकलम् ॥ ५८ ॥ इत्थंतिलोत्तमाबालातिष्ठंत्यशोककानने ॥ दृष्ट्वादैत्यभटैरिंदोःकलेवसुखदाहृदि ॥ ५९ ॥ तांदृष्ट्वाविस्मि तैराजन्सानंदैःसैनिकैर्भृशम् ॥ त्वरमाणैरदृष्ट्वैवगत्वासुंदोपसुंदयोः ॥ ६० ॥ कथितासंभ्रमेणैववर्णयित्वापुनःपुनः ॥ हेदैत्योनविजानी मोदेवीवादानवीनुकिम् ॥ ६१ ॥ नागांगनाथवायक्षीस्त्रीरत्नंसर्वथातुसा ॥ युवांरत्नभुजौलोकेरत्नभूताहिसाबला ॥ ६२ ॥ वर्ततेना तिदूरेग्रेअशोकेशोकहारिणी ॥ गत्वातांपश्यतंशीघ्रंमन्मथस्यापिमोहिनीम् ॥ ६३ ॥

देनेवाली चन्द्रमाकी कलाकी समान देख कर॥५९॥उसको देख विस्मित हो आनंदित हो सेनाके बडी लोंगों ने शीघ्रता से सुन्दउपसुन्दके समीप जाकर ॥६०॥वारंवार उसका वर्णन करके संभ्रम सेकहा हे दैत्य, हम नहीं जानते कि वह एक स्त्री देवी वा दानवी है॥६१॥ नागस्त्री यक्षिणी कौन है सर्वथा वह स्त्री रत्न है आप लोकमें रत्न भोगी हो और वह अबला रत्नभूत है ॥ ६२ ॥ वह शोककी हरनेवाली थोडी ही दूरपर स्थित है, उसको

१ मालती इति पा० । २ कंकेली अशोकवृक्षः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाकर शीघ्र देखो कामकी भी मोहित करनेवाली है ॥ ६३ ॥ इस प्रकार वे दोनों सेनापतियों की मनोहर वाणी सुनकर सीधु मधुके कटोरे को त्याग तथा जल सेचनको त्यागकरके ॥ ६४ ॥ सहस्रों उत्तम स्त्रियोंको छोड उस जलाशयसे निकल सौभारकी बनी लोहेकी कालदण्डकी समान गदालेकर ॥ ६५ ॥ भिन्न २ दोनों गदाओंको लेकर बडे वेगसे चले, जहां वह शृंगार किये चंडीकी समान इनको मारनेको स्थित थी

इतिसेनापतीनांतौश्रुत्वावाचंमनोहराम् ॥ चषकंसीधुनस्त्यक्त्वाविहायजलसेचनम् ॥ ६४ ॥ उत्तमस्त्रीसहस्राणित्यक्त्वातस्मा ज्जलाशयात् ॥ शतभारायसींक्रूरांकालदंडोपमांगदाम् ॥ ६५ ॥ भिन्नांभिन्नांगृहीत्वातुजवेनाभिप्रतंगतौ ॥ यत्रशृंगारस ज्जासाहंतुंचंडीवसंस्थिता ॥ ६६ ॥ राजन्संधुक्षयंतीवदैत्ययोर्मन्मथानलम् ॥ स्थित्वातस्याःपुरोजाल्मौतद्रूपेणविमोहितौ ॥ ६७ ॥ विशेषान्मधुनामत्तावूचतुस्तौपरस्परम् ॥ भ्रातर्विरमभार्येयंममास्तुवरवर्णिनी ॥ ६८ ॥ त्वमेवार्यत्यजैतांमेभार्यांतुमदिरेक्षणाम् ॥ इत्याग्रहेणसंरब्धौमातंगाविवसोन्मदौ ॥६९॥ अन्योन्यंकालनिर्दिष्टौगदयाजघ्नतुस्तदा ॥ परस्परप्रहारेणगतासूपतितौभुवि ॥७०॥

॥ ६६ ॥ हे राजन् ! वह उन दोनों दैत्योंकी कामाग्नि प्रदीप्त करती हुई स्थित थी उसके रूप से मोहित हो दोनों उसके आगे स्थित होते हुए ॥ ६७ ॥ और मदसे विशेष मत्त हो परस्पर कहने लगे हे भ्राता तुम इससे विरामको प्राप्त हो इसको मैं अपनी भार्या बनाऊंगा ॥ ६८ ॥ तुम इसको छोडो यह मेरी भार्या होगी इस प्रकार मातंगकी समान मत्त हो परस्पर दोनों कहने लगे ॥ ६९ ॥ कालके वशीभूत हो दोनोंने परस्पर

१ शीघ्रत इ०पा० । २ स्थित्वादैत्यौ पुरस्तस्या इति पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गदा घात किया और परस्पर के प्रहारसे प्राण रहित हो पृथ्वीपर गिरे ॥ ७० ॥ इनको मरा देखकर सेनाके लोगोंने बडा कोलाहल किया यह कालरात्रिकी समान कौन है यह क्या वार्ता उपस्थित हुई ॥ ७१ ॥ सेनाके ऐसा कहने पर सुन्द उपसुन्द दैत्योंको मनोहारिणी तिलोत्तमा पर्वत शृंगपर पातित करके ॥ ७२ ॥ दशौं दिशाओंको प्रकाश करती आकाश को गई, और देवकार्य करके ब्रह्माजीके आगे आकर

तौमृतौसैनिकैर्दृष्ट्वाकृतःकौलाहलोमहान् ॥ कालरात्रिसमाकेयंहाकिमेतदुपास्थितम् ॥ ७१ ॥ एवंवदत्सुसैन्येषुदैत्यौसुंदोपसुंदकौ ॥ पातयित्वागिरेःशृंगेह्लादिनीवतिलोत्तमा ॥ ७२ ॥ प्रस्थितागगनंशीघ्रंद्योतयंतीदिशोदश ॥ देवकार्यततःकृत्वाआगताब्रह्मणःपुरः ॥ ७३ ॥ ततस्तुष्टेनदेवेनविधिनासानुमोदिता ॥ स्थानंसूर्यरथेदत्तंतवचंद्राननेमया ॥ ७४ ॥ भुंक्ष्वभोगाननेकांस्त्वंयावत्सूर्योंबरेस्थितः ॥ इत्थंसाब्राह्मणीराजन्भूत्वाचाप्सरसांवरा॥७५॥भुंक्तेद्यापिरवेर्लोकेमाघस्नानफलंमहत् ॥ तस्मात्प्रयत्नतोराजञ्छ्रद्दधानैःसदानरैः ॥ ७६ ॥ स्नातव्यंमकारादित्येवांच्छद्भिःपरमांगतिम् ॥ नांनवातोव्रतस्यास्तिपुरुषार्थोहिकश्चन ॥ ७७ ॥

स्थित हुई ॥ ७३ ॥ तब संतुष्ट होकर ब्रह्माजीने उसका अनुमोदन किया हे चंद्रानने! मैंने तुमको सूर्य के रथपर स्थान दिया ॥ ७४ ॥ जबतक सूर्य आकाश में स्थित है, तबतक तू अनेक प्रकार के भोगोंको भोग, हे राजन् ! इस प्रकार यह ब्राह्मणी श्रेष्ठ अप्सरा होकर ॥ ७५ ॥ अबतक सूर्यलोकमें माघस्नानका बडा फल भोगती है हे राजन् ! इस कारण श्रद्धावाले मनुष्योंको सदा यत्नपूर्वक ॥ ७६ ॥ परमगति चाहने

१ स्नातांवाङ्मात्रतश्चास्ति इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वालोंको माघस्नान करना चाहिये उस ने कौनसे पुरुषार्थकी प्राप्ति न करी वा उसको कौनसे पापक्षीण न हुए ॥ ७७ ॥ जो मनुष्य माघमासमें स्नान करता है दक्षिणा सहित सब यज्ञ इसकी बराबरी नहीं करसकते ॥ ७८ ॥ हे राजन् ! माघस्नान और विशेष कर तीर्थ सेवन से ऐसा पापनाशक और स्वर्ग का देनेवाला कोई कर्म नहीं है ॥ ७९ ॥ माघस्नानकी समान भूमि में और कोई मोक्ष देनेवाला नहीं है ॥ ८० ॥ इति श्रीपद्मपुराणे माघमाहात्म्ये वसिष्ठ दिलीप संवादे पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकायां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ दत्तात्रय बोले

नाक्षीणंपातकंकिंचिन्माघेमज्जतियोनरः ॥ तुलयंतिनतेनात्रयज्ञाःसर्वेसदक्षिणाः ॥ ७८ ॥ माघस्नानेनराजेंद्रतीर्थैश्चैवविशेषतः ॥ नचान्यत्स्वर्गदंकर्मनचान्यत्पापनाशनम्॥७९॥नचान्यन्मोक्षदंयस्मान्माघस्नानसमंभुवि॥८०॥ ॥इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्ये वसिष्ठदिलीपसंवादेमाघस्नानप्रशंसायांसुंदोपसुंददैत्यवधोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ छ ॥ ॥ दत्तात्रेयउवाच ॥ ॥ अत्रतेकथयिष्यामिइतिहासंपुरातनम् ॥पुराकृतयुगेराजन्नैषधेनगरेवरे ॥ १ ॥ आसीद्वैश्यःकुबेराभोनामतोहिमकुण्डलः ॥ कुलीनःसत्क्रियोदांतोद्विजवह्निसुरार्चकः ॥२॥ कृषिवाणिज्यकर्तासौबहुधाक्रयविक्रयी ॥ गोघोटकमहिष्यादिपशुपोषणतत्परः ॥ ३ ॥ पयोदधीनितक्राणिगोमयानितृणानिच ॥ काष्ठानिफलमूलानिलवणानिचपिप्पलीम् ॥ ४ ॥ धान्यानिशाकतैलानिवस्त्राणिविविधानिच ॥ धातूनीक्षुविकारांश्चविक्रीणीतेचसर्वदा ॥ ५ ॥

इस में एक और भी पुरातन इतिहास आप से कहते हैं॥ १ ॥हे राजन् ! पहले सतयुगमें निषध नगर में कुबेरके समान धनी एक वैश्य हिमकुंडल नामवाला था कुलीन सत्क्रियावाला चतुर द्विज अग्नि देवताओंका पूजन करनेवाला ॥ २ ॥ कृषिवाणिज्यका करनेवाला अनेक प्रकार क्रय विक्रयके कार्य कर्ता गौ घोडे महिषी आदि पशु पालन करता ॥ ३ ॥ दूध दही मट्ठा गोमय तृण काष्ठ फल मूल लवण पिप्पल धान्य शाक तैल और अनेक प्रकारके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वस्त्र धातु खांड मिठाई आदि सदा बेचता ॥ ४ ॥ ५ ॥ इस प्रकार वह वैश्य नानाप्रकार के उपायोंसे सुवर्ण की आठ करोड अशरफी उपार्जन करता हुआ ॥ ६ ॥ इस प्रकार उस महाधनीकी कर्ण पर्यन्त वृद्धता प्राप्त हुई पीछे अपने मनमें विचार करकै कि यह संसार क्षणिक है ॥ ७ ॥ उस धनके छठे अंश से उसने धर्म कार्य किया ठाकुरद्वारा और शिवजीका मन्दिर बनवाया ॥ ८ ॥ और सागरकी समान एक बडा सरोवर खुदवाया

इत्थंनानाविधैर्वैश्यउपायैःपरमैस्तदा ॥ द्रव्याण्युपार्जयामासअष्टौहाटककोटयः ॥ ६ ॥ एवंमहाधनःसोथआकर्णपलितोभवत् ॥ पश्चाद्विचार्यसंसारक्षणिकत्वंस्वचेतसि ॥ ७ ॥ तद्धनस्यषडंशेनधर्मकार्यंचकारसः ॥ विष्णोरायतनंचक्रेचक्रेगेहंशिवस्यच ॥ ८ ॥ तडागंखानयामासविपुलंसागरोपमम् ॥ वाप्यश्चपुष्करिण्यश्चबहुशस्तेनकारिताः ॥ ९ ॥ वटाश्वत्थाम्रकंकोलजंबूनिंबादिकानम् ॥ आरोपितंसुसत्वेनतथापुष्पवनंशुभम् ॥ १० ॥ उदयास्तमनंयावदन्नदानंचकारसः ॥ पुराद्बहिश्चतुर्दिक्षुप्रपाश्चक्रेसुशोभनाः ॥ ११ ॥ पुराणेषुप्रसिद्धानिप्रपादानानिभूतले ॥ ददौसतानिधर्मात्मानित्यंदानरतस्तथा ॥ १२ ॥ यावज्जीवंकृतेपापे प्रायश्चित्तमथाकरोत् ॥ देवपूजारतोनित्यंनित्यंचातिथिपूजकः ॥ १३ ॥

बावडी और पुष्करिणी उसने बहुतसी बनवाई ॥ ९ ॥ वड अश्वत्थ आम्र कंकोल जामुन नीम आदिके वन पुष्पवाटिका यह उसने प्रेमसे लगाई ॥ १० ॥ उदयसे अस्त पर्यन्त उसने अन्नदान किया पुरके बाहर चारों ओर उसने परकोटा बनवाया ॥ ११ ॥ पुराणों में भूमि में जितने प्रपा पौसेरे दान स्थित हैं उस धर्मात्माने वह सब दान दिये ॥ १२ ॥ फिर जन्म पर्यन्त तक किये पापोंका उसने प्रायश्चित्त किया सदादेवता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अतिथिका पूजन करता ॥ १३ ॥ इस प्रकार कर्म करते उसके दो पुत्र हुए वह श्रीकुंडल विकुंडल नामसे प्रसिद्ध थे ॥ १४ ॥ उन बालकोंको घर सोंपकर वैश्य नारायणका भजन करने वनको गया वहां गोविन्द प्रभुका आराधन कर ॥ १५ ॥ तपसे शरीरको क्लेश देता सदा वासुदेवमें मन लगाये वैष्णव लोकको प्राप्त हुआ जहां जाकर फिर शोच नहीं करता ॥ १६ ॥ हे राजन् ! तब उसके पुत्र धन मानसे मत्त होकर

तस्येत्थंवर्तमानस्यसंजातौद्वौसुतौनृप ॥ तौतुप्रसिद्धनामानौश्रीकुंडलविकुंडलौ ॥ १४ ॥ तयोर्मूर्ध्निगृहंत्यक्त्वाजगामतपसे वनम् ॥ तत्राराध्यपरंदेवंगोविंदंवरदंप्रभुम् ॥ १५ ॥ तपःक्लिष्टशरीरोसौवासुदेवमनाःसदा ॥ आप्तवान्वैष्णवंलोकंयत्रगत्वानशोचति ॥ १६ ॥ अथतस्यसुतौराजन्धनमानमदान्वितौ ॥ तरुणौरूपसंपन्नौधनगर्वेणगर्वितौ ॥ १७ ॥ दुःशीलौव्यसनासक्तौ धर्मकर्मविदूरगौ ॥ नवाक्यंशृणुतोमातुर्वृद्धानांवचनंतथा॥१८॥ उन्मार्गगौदुरात्मानौपितृमित्रनिषेधकौ ॥ अधर्मनिरतौदुष्टौपरदाराभिगामिनौ ॥ १९ ॥ गीतवादित्रनिरतौवीणावेणुनिनादिनौ ॥ वारस्त्रीशतसंयुक्तौगायंतौचेरतुःसदा ॥ २० ॥ चाटुवाचिनरैर्युक्तौ विटगोष्ठीविशारदौ ॥ सुवेषौचारुवसनौचारुचंदनभूषितौ ॥ २१ ॥

तरुण रूप सम्पन्न धनके गर्वसे गर्वित होकर ॥ १७ ॥ दुःशील व्यसनमें आसक्त धर्म कर्मसे रहित हुए माता तथा वृद्ध जनोंके वचन नहीं मान्ते हुए ॥ १८ ॥ वे दुरात्मा पितृ मित्रोंका निषेध करनेवाले उन्मार्ग अधर्म में निरत दुष्ट पराई स्त्रियोंको ताकनेवाले तथा गमन करनेवाले ॥ १९ ॥ गीत बाजों में निरत वीणा वेणुको बजाते सैकडों वेश्या साथ लिये सदा गाते फिरते थे ॥ २० ॥ बनावटी खुशामदी मनुष्योंसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

युक्त धूर्तोंकी गोष्ठी में चतुर सुन्दर वेष सुन्दर वस्त्र सुन्दर चंदनसे विभूषित ॥ २१ ॥ सुगन्धित माला ओंसे युक्त कस्तूरीके चिह्नोंसे सेवित अनेक आभूषणोंसे शोभित मोतीके श्रेष्ठ हार पहरे ॥ २२ ॥ हाथी घोडेरथोंके समूह से युक्त इधर उधर क्रीडा करते हुए मधुपान किये वेश्या संग लिये ॥ २३ ॥ पिताका द्रव्य नाश करते सहस्रों सैकडों धन लुटाते नित्य भोग परायण अपने घर में निवास करते थे ॥ २४ ॥ इस प्रकार वह धन उन्होंने असन्मार्गमें व्यय किया वेश्या जार शैलूष पहलवान् भाट बनावटी श्लाघा करने वाले जनोंमें ॥ २५ ॥ अर्थात् अपात्रोंमें

सुगंधमाल्यमालाढ्यौकस्तूरीलक्ष्मलक्षितौ ॥ नानालंकारशोभाढ्यौमौक्तिकोदारहारिणौ ॥ २२ ॥ गजवाजिरथौघेनक्रीडंतौता वितस्ततः ॥ मधुपानसमायुक्तौवारस्त्रीरतिमोहितौ ॥ २३ ॥ नाशयंतौपितुर्द्रव्यंसहस्रंददतुःशतम् ॥ तस्थतुःस्वगृहेरम्येनित्यंभो गपरायणौ ॥ २४ ॥ इत्थंतुतद्धनंताभ्यांविनियुक्तमसद्व्ययैः ॥ वारस्त्रीविटशैलूषमल्लचारणबंदिषु ॥ २५ ॥ अपात्रेतद्धनंदत्तं क्षिप्तंबीजमिवोषरे ॥ नसत्पात्रेषुतद्दत्तंनब्राह्मणमुखेहुतम् ॥ २६ ॥ नार्चितोभूतभृद्विष्णुःसर्वपापप्रणाशनः ॥ तयोरेवंतुतद्द्रव्यम चिरेणक्षयंययौ ॥ २७ ॥ ततस्तौदुःखमापन्नौकार्पण्यंपरमंगतौ ॥ शोचमानौमुमुह्येतांक्षुत्पीडादुःखदुःखितौ ॥ २८ ॥ तयोस्तु तिष्ठतोर्गेहेनास्तियद्भुज्यतेतदा ॥ स्वजनैर्बांधवैःसर्वैसेवकैरुपजीविभिः ॥ २९ ॥

सब धन इस प्रकार व्यय किया जिस प्रकार ऊषरमें बोया न कभी सत्पात्रोंको दिया न ब्राह्मणोंके मुखमें हवन किया ॥ २६ ॥ न कभी भूतोंके पालक सब पापहारी विष्णुका अर्चन किया इस प्रकार उनका द्रव्य बहुत थोडे कालमें ही क्षय होगया ॥ २७ ॥ तब वे महादुःखी हो परम कृपणताको प्राप्त हुए क्षुधाकी पीडासे दुःखी हो शोचकरते मोहको प्राप्त होगये ॥ २८ ॥ वह घरमें कोई ऐसी वस्तु नहीं देखते हुए जिसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भोजन करें स्वजन बंधु सेवक उपजीवि ॥ २९ ॥ इन सबने द्रव्यके अभाव से उसको त्यागन कर दिया तब पुर में निन्दा होने लगी हे राजन् ! तब उन्होंने उस नगरमें चोरी करनी प्रारंभ की ॥ ३० ॥ तब राजा और लोकोंसे भीत हो अपने पुरसे निकले और सबके ऋणसे पीडित हो वनमें निवास करते हुए ॥ ३१ ॥ और मूढ वहां तीक्ष्ण बाणोंसे अनेक पक्षी वराह हारिण रोहित मृग ॥ ३२ ॥ खरगोश शल्लक गोय अनेक हिंसक जीव मारने लगे वे महाबली भीलोंके संग आखेट करते थे ॥ ३३ ॥ इस प्रकार मांसका आहार करते पापाचरणमें रत रहते एक समय किसी पर्वत पर

द्रव्याभावात्परित्यक्तौनिंद्यमानौततःपुरे ॥ पश्चाच्चौर्यसमारब्धंताभ्यांतन्नगरेनृप ॥ ३० ॥ राजतोलोकतोभीतौस्वपुरान्निःसृतौतदा ॥ चक्रतुर्वनवासंचसर्वेषामृणपीडितौ ॥ ३१ ॥ जघ्नतुःसततंमूढौशितबाणैर्विषार्दितैः ॥ नानापक्षिवराहांश्चहरिणान्रोहितांस्तथा ॥ ॥ ३२ ॥ शशकाञ्छल्लकीगोधाःश्वापदांश्चबहूंस्तथा ॥ महाबलौभिल्लसंगावाखेटकरतौसदा ॥ ३३ ॥ एवंमांसमयाहारौपापाचारौप रंतप॥कदाचिद्भूधरंप्राप्तएकोन्यश्चवनंगतः ॥ ३४ ॥ शार्दूलेनहतोज्येष्ठःकनिष्ठःसर्पदंशितः ॥ एकस्मिन्दिवसेराजन्पापिष्ठौनिधनंगतौ ॥३५॥यमदूतैस्तदाबद्धौपाशैर्नीतौयमक्षयम्॥गत्वाभिजगदुःसर्वेतेदूताःपापिनाविमौ ॥३६॥ धर्मराजनरावेतावानीतौतवशासनात्॥ आज्ञांदेहिस्वभृत्येषुप्रसीदकरवामकिम् ॥ ३७ ॥ आलोक्यचित्रगुप्तेनतदादूताञ्जगौयमः ॥ एकस्तु नीयतांघोरंनिरयंतीव्रवेदनम्॥३८॥

प्राप्त हुए एक उनमें से वनको गया ॥ ३४ ॥ बडेको सिंहने मार लिया और छोटेको सर्पने डस लिया हे राजन् ! एक ही दिन वे दोनों पापी मरणको प्राप्त हुए ॥ ३५ ॥ तब यमदूत उनको पाशोंमें बांधकर यमलोकको लेगये जाकर दूतोंने कहा यह बडे पापी हैं ॥ ३६ ॥ हे धर्मराज ! इन दोनोंको हम आपकी आज्ञा से लाये हैं अपने भृत्योंको शीघ्र आज्ञादो कि अब हम क्या करें ॥ ३७ ॥ चित्र गुप्तके द्वारा उनका लेखा लिया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गया तब यमने कहा एक के तो घोर नरक में जहां तीव्र वेदना होती है लेजाओ ॥ ३८ ॥ दूसरेको उत्तम भोगवाले स्वर्गमें लेजाओ शीघ्रकारी दूतोंने उनकी आज्ञासे वैसाही किया ॥ ३९ ॥ हे राजन् ! बडा तो घोर नरक में भेजा गया तब एक दूत मनोहर वचन बोला ॥ ४० ॥ हे विकुंडल ! मेरे साथ आ मैं तुझे स्वर्ग दूंगा अपने कर्मसे उत्पन्न भोगोंको तू भोग ॥ ४१ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरार्धे माघमाहात्म्ये भाषाटीकायां

अपरःस्थाप्यतांस्वर्गेयत्रभोगाअनुत्तमाः॥तदाज्ञांतुसुसंप्राप्यदूतैस्तैःक्षिप्रकारिभिः॥३९॥ निक्षिप्तोरौरवेघोरेतत्रज्येष्ठोनराधिप॥तेषांदू तवरः कश्चिदुवाचमधुरंवचः ॥४०॥ विकुण्डलमयासार्धमेहिस्वर्गंददामिते ॥ भुंक्ष्वभोगान्सुदिव्यांस्त्वमर्जितान्स्वेनकर्मणा ॥४१॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखंडे माघमासमाहात्म्ये वसिष्ठदिलीपसंवादे विकुण्डलस्वर्गप्राप्तिर्नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ ततोहृष्टमनाःसोपिदूतंपप्रच्छतंपथि ॥ संदेहंहृदिकृत्वातुविस्मयंपरमंगतः ॥ १ ॥ विचारयन्हृदिस्वर्गःक स्यहेतोःफलंमम ॥ ॥ विकुंडलउवाच ॥ ॥ भोदूतवरपृच्छामिसंदेहंत्वामहंपरम् ॥ २ ॥ आवांजातौकुलेतुल्येतुल्यंकर्मतथाकृ तम् ॥ दुर्मृत्युरपितुल्योभूत्तुल्यंदृष्टोयमस्तथा ॥ ३ ॥

वसिष्ठ दिलीप संवादे विकुंडल स्वर्ग प्राप्तिर्नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ऋषि बोले वह प्रसन्न मन हो मार्गमें दूतसे पूछने लगा हृदयमें बडा सन्देह कर परमविस्मयको प्राप्त हुआ ॥ १ ॥ मनमें विचारकर किस पुण्यके प्रभाव से मुझे स्वर्गकी प्राप्ति हुई विकुंडल बोला हे श्रेष्ठ दूत ! मुझे बडा सन्देह है इस कारण तुझसे पूछताहूं ॥ २ ॥ हम दोनोंने तुल्य कुल में जन्म लेकर तुल्यही कर्म किये दुर्मृत्युभी तुल्यही हुई तुल्यही यमराजका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दर्शन हुआ॥ ३॥ फिर तुल्य कर्मा मेरा भाई किस कारण नरकको गया मुझे स्वर्ग कैसे हुआ वह सन्देह तुम दूर करो॥ ४॥ हेदेवदूत ! अपने स्वर्ग आनेका कारण मैं नहीं देखता हूं यह सुन देवदूत विकुंडल से बोला॥ ५॥ यमदूत बोला.हे विकुंडल! माता पिता जाया भगिनी भाई यह संज्ञा तो जन्मका कारण है जन्म कर्मके भोगनेको होता है॥ ६॥ जैसे एक वृक्षपर अनेक पक्षियोंका आगमन होता है इसी प्रकार पुत्र माता पिता आदिका समागम होता है॥ ७॥

कथंसनिरयेक्षिप्तस्तुल्यकर्माममाग्रजः ॥ ममभावीकथंस्वर्गइतित्वंछिंधिसंशयम् ॥ ४ ॥ देवदूतनपश्यामिस्वस्यस्वर्गस्यकारणम् ॥ इतिपृष्टोदेवदूतोविकुंडलमुवाचह ॥ ५ ॥ ॥ यमदूतउवाच ॥ ॥ मातापितासुतोजायास्वसाभ्रातराविकुंडल ॥ जन्महेतुरियंसंज्ञाजन्मकर्मोपभुक्तये ॥ ६ ॥ एकस्मिन्पादपेयद्वच्छकुंतानांसमागमः ॥ पुत्रभ्रातृपितॄणांचतथाभवतिसंगमः ॥ ७ ॥ तेषांयोगोहियत्कर्मकुरुतेपूर्वभावितः ॥ तस्यतस्यफलंभुंक्तेकर्मणःपुरुषःसदा ॥ ८ ॥ सत्यंवदामितेप्रीत्यानरःकर्मशुभाशुभम् ॥ स्वकृतंभुंजतेवैश्यकालेकालेपुनःपुनः ॥ ९ ॥ एकःकरोतिकर्माणिएकस्तत्फलमश्नुते ॥ अन्योन्यंलिप्यतेवैश्यकर्मनान्यस्यकस्यचित् ॥ ॥ १० ॥ अतस्तुनरकेपापेतवभ्रातासुदारुणः ॥ त्वंचधर्मेणधर्मात्मन्स्वर्गंप्राप्स्यसिशाश्वतम् ॥ ११ ॥

उनके योगसे जो यह पूर्व भावित कर्म करता है उस उस कर्मसे यह पुरुष सब कर्मोंको भोग करता है ॥ ८ ॥ हे वैश्य ! प्रीति पूर्वक तुझसे सत्य कहताहूं कि मनुष्य प्रीतिसे शुभाशुभ कर्म अपना किया हुआ कालमें वारंवार भोगता है ॥ ९ ॥ एकही कर्म करता और एकही उसका फल भोगता है हे वैश्य! कोई किसी के कर्मको प्राप्त नहीं होता है ॥ १० ॥ इस कारण तेरा भ्राता घोर नरक में गया हे धर्मात्मन्! तुम धर्मसे स्वर्गको जातेहो॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विकुंडल बोला हम दोनोंने सदा पाप किया, कभी धर्म में मन नहीं लगाया, यदि हमारा पुण्य जान्ते हो तौ कृपाकरके कहो ॥ १२ ॥ यमदूत ने कहा हे वैश्य जो तैंने किया है सो मैं कहताहूं तू सुन मैं सब जान्ताहूं परन्तु तुझको उसकी खबर नहीं ॥ १३ ॥ हरमित्रका पुत्र सुमित्र वेदपारगामी ब्राह्मण है उसका पुण्य आश्रम यमुनाके दक्षिण तटमें है ॥ १४ ॥ हे वैश्यश्रेष्ठ ! वनमें उसके साथ तेरी

॥ विकुंडलउवाच ॥ ॥ आवाभ्यांसमपापेषुनपुण्येषुरतंमनः ॥ यदिजानासिमत्पुण्यंतन्मांत्वंकृपयावद ॥ १२ ॥ ॥ यमदूतउवाच शृणुवैश्यप्रवक्ष्यामियत्त्वयापुण्यमर्जितम् ॥ जानामितदहंसर्वंनत्वंवेत्तिसुनिश्चितम् ॥ १३ ॥ हरमित्रसुतोविप्रःसुमित्रोवेदपारगः ॥ ॥ आसीत्तस्याश्रमःपुण्योयमुनादक्षिणेतटे ॥ १४ ॥ तेनतस्मिन्वनेसख्यंजातंतवविशांवर ॥ सत्संगेनत्वयास्नातं माघमासद्वयंतथा ॥ १५ ॥ कालिंदीपुण्यपानीयेसर्वपापहरेशुभे ॥ तत्तीर्थंलोकविख्यातेसर्वपापप्रणाशने ॥ १६ ॥ एकेनसर्वपापेभ्योविमुक्तस्त्वंविशांवर ॥ द्वितीयमाघपुण्येनप्राप्तःस्वर्गस्त्वयानघ ॥ १७ ॥ त्वंतत्पुण्यप्रभावेणमोदस्वसुचिरंदिवि ॥ नरकेषुतवभ्रातासहतांयमयातनाम् ॥ १८ ॥ छिद्यमानोसिपत्रैश्चभिद्यमानश्चमुद्गरैः ॥ चूर्ण्यमानःशिलापृष्ठैस्तप्तांगारेषुभर्जितः ॥ १९ ॥

मित्रता होगई और उस सत्संगतिके प्रभावसे तैंने माघके महीनेमें दो स्नान किया ॥ १५ ॥ यमुनाके सब पाप हरने वाले पवित्र जलमें जो कि सब पाप दूरकरनेमें लोक विख्यात तीर्थहै ॥ १६ ॥ सो एक वार माघस्नान के कारण तू सब पापसे विमुक्त हुआ और दूसरे के पुण्य से स्वर्गकी प्राप्ति तुझको हुई ॥ १७ ॥ उस पुण्यके प्रभाव से स्वर्गमें आनंद कर और नरकमें तेराभाई यमकी यातना भोगे ॥ १८ ॥ असिपत्र से छेदित और मुद्गरों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

से भेदित पत्थरों के प्रहार सेचूर्णीय अंग अंगारोंसे तापित होगा ॥ १९ ॥ दत्तात्रेय बोले इस प्रकार दूतके वचन सुनकर भाईके दुःखसे दुःखी सब अंगसे पुलकित दीनहो विनय पूर्वक ॥ २० ॥ देवदूतसे मधुरता पूर्वक मधुर वचन बोला हे महात्मन् सत्पुरुषों की सातपदकेही साथ होने से मित्रता होजाती है ॥ २१ ॥ मित्रताका भाव विचारकर तुम मेरे ऊपर कृपाकरो मैं तुमसे सुनेकी इच्छा करताहूं तुम मेरे मत में सर्वज्ञहो ॥ २२ ॥ किस कर्मसे मनुष्य यमलोक का दर्शन नहीं करते जिससे नरकको न जांय सो कृपा करके तुम मुझसे कहो ॥ २३ ॥ यमदूत बोले सौम्य

॥ दत्तात्रेयउवाच ॥ ॥ इतिदूतवचःश्रुत्वाभ्रातृदुःखेनदुःखितः ॥ पुलकांकितसर्वांगोदीनोसौविनयान्वितः ॥ २० ॥ उवाचदे
वदूतंतंमधुरंनिपुणंवचः ॥ मैत्रीसप्तपदीसाधोसतांभवतिसत्फला ॥ २१ ॥ मैत्रीभावंविचिंत्याथमामुपाकर्तुमर्हसि ॥ त्वत्तोहंश्रो
तुमिच्छामिसर्वज्ञस्त्वंमतोमम ॥ २२ ॥ यमलोकंनपश्यंतिकर्मणाकेनमानवाः ॥ गच्छंतियेननिरयंतन्मेत्वंकृपयावद ॥ २३ ॥
॥ यमदूतउवाच ॥ ॥ सम्यक्पृष्टंत्वयासौम्यलुप्तपापोसिसांप्रतम् ॥ विशुद्धहृदयंपुंसांबुद्धिः श्रेयसिजायते ॥ २४ ॥ यद्यप्य
वसरोनास्तिममसेवापरस्यवै ॥ तथापिचतवस्नेहात्प्रवक्ष्यामियथामति ॥ २५ ॥ मनसाकर्मणावाचासर्वावस्थासुसर्वदा ॥ परपी
डांनकुर्वंतिनतेयांतियमालयम् ॥ २६ ॥ नवेदैर्नचदानैश्चनतपोभिर्नचाध्वरैः ॥ कथंचित्सद्गतिंयांतिपुरुषाःप्राणिहिंसकाः ॥ २७ ॥
अहिंसापरमोधर्मोह्यहिंसापरमंतपः ॥ अहिंसापरमंदानमित्याहुर्मुनयः सदा ॥ २८ ॥

भली बात पूछी इस समय तुम पापरहित हो विशुद्ध हृदय होनेमें पुरुषोंकी कल्याण मार्गमें बुद्धि लगती है ॥ २४ ॥ यद्यपि परसेवाके कारण मुझे अवसर नहां है, तथापि तेरी प्रीतिके कारण मैं तुझसे कहताहूं ॥ २५ ॥ सब अवस्थाओंमें मन वचन कर्मसे जो किसीको पीड़ा नहीं देते, वे यमालयको नहीं जाते ॥ २६ ॥ हिंसा करनेवाले पुरुष वेद दान यज्ञ तपसेभी सद्गतिको प्राप्त नहीं होते ॥ २७ ॥ अहिंसाही परम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्म अहिंसाही परम तप अहिंसाही परम दान ऐसा मुनि जनोंने सदा कथन किया है ॥ २८ ॥ मशक डांश खटमल लीख जूंआदिकोभी दयालु पुरुष पीडा देनेकी इच्छा नहीं करते अपनी समान रक्षा करते हैं ॥ २९ ॥ तत्ते अंगारे के बने कीलवाले मार्गमें प्रेतकी तरंगवाली दुर्गति वे पुरुष नहीं देखते हैं तथा कृतान्त का दर्शन नहीं करते हैं ॥ ३० ॥ जो जलथल के प्राणियोंकी हिंसा करते हैं और अपने भोजनके निमित्त करते हैं वे कालकी गतिको प्राप्त नहीं होते ॥ ३१ ॥ वहां उनको उनके शरीरकाही मांस भोजन करनेको मिलता राध रुधिर फेन मज्जा वसा

मशकान्मत्कुणान्दंशान्यूकादिप्राणिनस्तथा ॥ आत्मौपम्येनरक्षंतिमानवायेदयालवः ॥ २९ ॥ तप्तांगारमयंकीलमार्गेप्रेततरंगिणीम् ॥ दुर्गतिंनचपश्यंतिकृतांतस्यचतेनराः ॥ ३० ॥ भूतानियेत्रहिंसंतिजलस्थलचराणिवै ॥ जीवनार्थंहितेयांतिकालसूत्रांचदुर्गतिम् ॥ ३१ ॥ स्वमांसभोजनास्तत्रपूयशोणितफेनपाः ॥ मज्जंतश्चवसापंकंदुष्टाःकीटैरधोमुखाः ॥ ३२ ॥ परस्परंचखादंतोध्वांते चान्योन्यघातिनः ॥ वसंतिकल्पमेकंतेरटंतोदारुणंरवम् ॥ ३३ ॥ नरकान्निःसृतावैश्यस्थावराःस्युश्चिरंतुते ॥ ततोगच्छंतितेक्रूरास्तिर्यग्योनिशतेषुच ॥ ३४ ॥ पश्चाद्भवंतिजात्यंधाःकाणाःकुब्जाश्चपंगवः ॥ दरिद्राअंगहीनाश्चपुरुषाःप्राणिहिंसकाः ॥ ३५ ॥

मिलती वहां औंधेमुख करके डाल दिये जाते हैं कीडे काटते हैं ॥ ३२ ॥ अंधकारमें परस्पर एक दूसरे को खाते हैं इसप्रकार दारुण शब्द करते एक कल्प वहां निवास करना पडता है ॥ ३३ ॥ हे वैश्य ! फिर वे नरकसे निकलकर स्थावर योनिको प्राप्तहोते हैं फिर ये क्रूर अनेक तिर्यग् योनियों में निवास करते हैं ॥ ३४ ॥ हे वैश्य ! फिर वे जाति अंधे काने कुबडे लँगड़े दरिद्री अंगहीन होते हैं जो प्राणियोंकी हिंसा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करते हैं ॥ ३५ ॥ हे वैश्य ! इस कारण पराये द्रोह कर्म मन वाणी से दोनों लोक में सुखकी प्राप्ति करनेवाला कभी नकरै ॥ ३६ ॥ हिंसा करनेवालोंको दोनों लोक में सुख नहीं होता जो किसीकी हिंसा नहीं करते उनको कहीं से भय नहीं होता ॥ ३७ ॥ जिस प्रकार सीधी तथा कुटिलगामिनी नदी समुद्र में प्राप्त होती हैं इसी प्रकार सम्पूर्ण धर्म अहिंसा में प्राप्त होते हैं यह निश्चय है ॥ ३८ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे माघमाहात्म्ये पण्डितज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ यमदूत बोला वह सब तीर्थोंमें स्नान

तस्माद्वैश्यपरद्रोहंकर्मणामनसागिरा ॥ लोकद्वयेसुखप्रेप्सुर्धमज्ञोनसमाचरेत् ॥ ३६ ॥ लोकद्वयेनविंदंतिसुखानिप्रा णिहिंसकाः ॥ येहिंसंतिनभूतानिनतेविभ्यतिकुत्रचित् ॥ ३७ ॥ प्रविशंतियथानद्यःसमुद्रमृजुवक्रगाः ॥ सर्वेधर्माह्यहिं सायांप्रविशंतितथादृढम् ॥ ३८ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखंडे माघमाहात्म्ये दिलीपवसिष्ठसंवादे विकुंडलदूतसंवादोनाम सप्तमोऽ ध्यायः ॥ ७ ॥ छ ॥ ॥ यमदूतउवाच ॥ ॥ सस्नातःसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितः ॥ अभयंयेनभूतेभ्योदत्तमत्रविशांवर ॥ १ ॥ निजांनिजांश्चशास्त्रोक्तान्वर्णधर्मानमिश्रितान् ॥ पालयंतीहयेवैश्यनतेयांतियमालयम् ॥२॥ब्रह्मचारीगृहस्थश्चवानप्रस्थोमतिस्तथा ॥ स्वधर्मनिरताःसर्वेनाकपृष्ठेवसंतिते ॥ ३ ॥ यथोक्तकारिणःसर्ववर्णाश्रमसमन्विताः ॥ नराजितेंद्रियायांतिब्रह्मलोकंचशाश्वतम् ॥४ ॥

करचुका सब यज्ञों में उसने दीक्षा प्राप्त करली हे वैश्य श्रेष्ठ ! जिसने सबको अभय देदिया ॥ १ ॥ अपने २ शास्त्रोक्त धर्मोंको जो यथा योग्य पालन करते हैं वे कभी यमालय का दर्शन नहीं करते ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी अपने धर्म में निरत रहकरही स्वर्गमें निवास करते हैं ॥ ३ ॥ जो वर्णाश्रम धर्मों के यथोक्त कारी हैं और जितेन्द्रिय हैं वे सनातन ब्रह्मलोकको जाते है ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो इष्टापूर्त यज्ञों में रत और पंचयज्ञों में प्रीति करते हैं तथा नित्य दया युक्त हैं वे यमालय का दर्शन नहीं करते॥५॥जो इन्द्रियों के विषयों से पृथक् समर्थ वेदवादी हैं नित्य अग्निहोत्र करते हैं वे ब्राह्मण स्वर्गगामी होते हैं ॥ ६ ॥ दीन वचन न कहनेवाले शूर शत्रुओं से वेष्टित संग्राम में प्राण देनेवाले सूर्य मार्गमें होकर गमन करते हैं ॥ ७ ॥ जो अनाथ स्त्री ब्राह्मण तथा शरणमें आयेके निमित्त प्राण त्यागन करते हैं हे वैश्य ! वे स्वर्गमें सदा आनंद करते हैं ॥ ८ ॥ लँगडे अंधे बालक वृद्ध रोगी अनाथ दरिद्री इनको जो सदा अन्न देते हैं वे स्वर्गसे पतित नहीं होते

इष्टापूर्तरतायेचपंचयज्ञरताश्चये ॥ दयान्विताश्चयेनित्यंनेक्षंतेतेयमालयम् ॥ ५ ॥ इंद्रियार्थैर्निवृत्तायेसमर्थावेदवादिनः ॥ अग्निपूजारतानित्यंतेविप्राःस्वर्गगामिनः ॥ ६ ॥ अदीनवादिनःशूराःशत्रुभिःपरिवेष्टिताः ॥ आहवेषुविपन्नायेतेषां मार्गोदिवाकरः ॥ ७ ॥ अनाथस्त्रीद्विजार्थेचशरणागतपालने ॥ प्राणांस्त्यजंतियेवैश्यतेमोदंतेसदादिवि ॥ ८ ॥ पंग्वंधबाल वृद्धानांरोग्यनाथदरिद्रिणाम् ॥ येपुष्णंतिसदावैश्यनच्यवंतेदिवस्तुते ॥ ९ ॥ गांदृष्ट्वापंकनिर्मग्नांरोगमग्नंद्विजंतथा ॥ उद्धरंतिन रायेतुतेषांलोकोश्वमेधिनाम् ॥ १० ॥ गोग्रासंयेप्रयच्छंतिशुश्रूषंतिचगांसदा ॥ येनारोहंतिगोपृष्ठेतेस्युःस्वर्लोकगामिनः ॥ ॥ ११ ॥ गर्तमात्रंचयेचक्रुर्यत्रगौर्विंतृषीभवेत् ॥ यमलोकमदृष्ट्वैवतेयांतिस्वर्गंतिनराः ॥ १२ ॥

॥ ९ ॥ पंकमें फँसी गौ और रोगमें मग्न ब्राह्मण को देख कर जो मनुष्य उद्धार करते हैं वे अश्वमेधियोंके लोकको जाते हैं ॥ १० ॥ जो गौ ग्रास देकर गौकी शुश्रूषा करते हैं जो बैलके ऊपर नहीं चढते वे स्वर्गगामी होते हैं॥ ११ ॥ जहां गौ जल पीती है वहां जो गर्त मात्र करदेते हैं वे विना यमलोकका दर्शन किये स्वर्गको जाते हैं ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बावडी कूप तडागादिमें धर्म अनन्त होता है जहां स्वेच्छासे स्थल चारी जलपान करते हैं ॥ १३ ॥ स्वेच्छासे मनुष्य जैसे २ जलपान करते हैं हे वैश्य श्रेष्ठ वैसे २ ही उनको धर्मकी वृद्धि और स्वर्गकी प्राप्ति होती है ॥ १४ ॥ प्राणियोंका जीवन और प्राण जलमें स्थित है सो जो पौ लगाते हैं वे सदा स्वर्गमें रहते हैं ॥ १५ ॥ एक पीपल एक रुईका एक न्यग्रोध (वटवृक्ष) तिंतिणी (इमली) के दश कैथ बेल आमलेके तीन

वापीकूपतडागादौधर्मस्यांतोनविद्यते ॥ पिबंतिस्वेच्छयायत्रजलस्थलचराःसदा ॥ १३ ॥ यथायथाचपानीयंपिबंतिस्वेच्छया नराः ॥ तथातथाऽक्षयःस्वर्गोधर्मवृद्धिर्विशांवर ॥ १४ ॥ प्राणिनांजीवनंवारिप्राणावारिणिसंस्थिताः ॥ तत्प्रपांयेप्रयच्छंतिते दीप्यंतेसदादिवि ॥ १५ ॥ अश्वत्थमेकंपिचुमंदमेकंन्यग्रोधमेकंदशतिंतिणीकम् ॥ कपित्थबिल्वामलकत्रयंचपंचाम्रवापीनरकं नपश्येत् ॥ १६ ॥ वरंभूमिरुहाःपंचनतुकोष्ठरुहादश ॥ पत्रैःपुष्पैःफलैर्मूलैःकुर्वंतिपितृतर्पणम् ॥ १७ ॥ नतत्करोत्यग्निहोत्रं सुहुतंयोषितःसुतः ॥ यत्करोतिघनच्छायःपादपःपथिरोपितः ॥ १८ ॥ सदासुखीसवसतिसदादानंप्रयच्छति ॥ तदायज्ञंसयजते योरोपयतिपादपम् ॥ १९ ॥

आमके पांच वृक्ष लगाने से नरकका दर्शन नहीं होता है ॥ १६ ॥ वृक्ष पांच भी अच्छे हैं कुपुत्र दशभी अच्छे नहीं वृक्ष पत्र पुष्प फल मूलोंसे सदा पितृतर्पण करते हैं ॥ १७ ॥ वह स्त्री पुत्र अग्निहोत्र नहीं करता अर्थात् उसे आवश्यकता नहीं जो मार्गमें वृक्ष लगाकर सघन छाया कर देता है ॥ १८ ॥ वह सदा सुखी वसता सदा आनंद देता है वह उसी समय यज्ञ कर रहा है जो वृक्ष लगाता है ॥ १९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अच्छी छायावाले फल पुष्पोंसे युक्त मार्ग में लगाये वृक्ष जो मूर्ख काटते हैं वे नरकको जाते हैं ॥ २० ॥ हे वैश्य! तुलसीका वनरोपण करने से यम का दर्शन नहीं होता सब पाप हरनेवाला परम पवित्र कामना देनेवाला तुलसीका वनहै ॥ २१ ॥ हे वैश्य जिसके घर में तुलसी कानन है वह घर तीर्थरूप है वहां यमके किंकर नहीं जाते ॥ २२ ॥ जो तुलसी लगाते हैं उनके बीजदल जितने हैं तितने कालतक वे स्वर्ग में

सच्छायान्फलपुष्पाढ्यान्पादपान्पथिरोपितान् ॥ येछिंदंतिसदामूढास्तेयांतिनिरयंचिरम् ॥ २० ॥ नपश्यंतियमंवैश्यतुलसी वनरोपणात् ॥ सर्वपापहरंपुण्यंकामदंतुलसीवनम् ॥ २१ ॥ तुलसीकाननंवैश्यगृहेयस्मिंश्चतिष्ठति ॥ तद्गृहंतीर्थभूतंहिनोयांति यमकिंकराः ॥ २२ ॥ तावद्वर्षसहस्राणियावद्बीजदलानिच ॥ वसंतिदेवलोकेतेतुलसींरोपयंतिये ॥ २३ ॥ तुलसीगंधमाघ्राय पितरस्तुष्टमानसाः ॥ प्रयांतिगरुडारूढाभवनंचक्रपाणिनः ॥ २४ ॥ दर्शनंनर्मदायास्तुगंगास्नानंविशांवर ॥ तुलसीवनसंस्प र्शः सममेतत्त्रयंस्मृतम् ॥ २५ ॥ रोपणात्पालनात्सेकादर्शनात्स्पर्शनान्नृणाम् ॥ तुलसीदहतेपापंवाङ्मनःकायसंचितम् ॥ २६ ॥ पक्षेपक्षेतुसंप्राप्तेद्वादश्यांवैश्यसत्तम ॥ ब्रह्मादयोपिकुर्वंतितुलसीवनपूजनम् ॥ २७ ॥

निवास करते हैं ॥ २३ ॥ तुलसी गंध सूंघते ही पितर संतुष्ट होजाते हैं गरुड पर आरूढ हो भगवानके स्थानको जाते हैं ॥ २४ ॥ हे वैश्य श्रेष्ठ नर्मदाका दर्शन गंगाकास्नान तुलसीवनका स्पर्श यह सब समानही है ॥ २५ ॥ इनके लगाने पालने सिंचने तथा दर्शन करने से तुलसी मन वचन कर्म से उत्पन्न हुए पापको दूर करती है ॥ २६ ॥ हे वैश्य श्रेष्ठ! द्वादशीको प्रति पक्षमें ब्रह्मादिक देवता तुलसीका दर्शन पूजन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करते हैं ॥ २७ ॥ मणि कांचनके पुष्प मोती यह तुलसीपत्रसे पूजन करनेकी षोडशी कला भी नहीं है ॥ २८ ॥ सहस्र आम लगाने से सौ पीपल लगाने से जो फल है वह एक तुलसीके विरुए से होता है ॥ २९ ॥ विष्णु पूजनमें संसक्त चित्त जो तुलसीको रोपण करते हैं वह दशसहस्र युग तक स्वर्ग में रहते हैं ॥ ३० ॥ जो तुलसीकी मंजरी से नारायणकी पूजा करते हैं वह गर्भ में नहीं आते सदा मुक्त भागी रहते हैं ॥ ३१ ॥

मणिकांचनपुष्पाणितथामुक्ताफलानिच ॥ तुलसीपत्रपूजायाःकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥ २८ ॥ आम्ररोपसहस्रेणपिप्पलानांशतेनच ॥ यत्फलंहितदेकेनतुलसीविटपेनच ॥ २९ ॥ विष्णुपूजनसंसक्तस्तुलसींयस्तुरोपयेत् ॥ युगायुतंदशैकंचरोपकोरमतेदिवि ॥ ३० ॥ तुलसीमंजरीभिस्तुकुर्याद्धरिहरार्चनम् ॥ नसगर्भगृहंयातिमुक्तिभागीभवेन्नरः ॥ ३१ ॥ पुष्करादीनितीर्थानिगंगाद्याःसरितस्तथा ॥ वासुदेवादयोदेवावसंतितुलसीदले ॥ ३२ ॥ आरोप्यतुलसींवैश्यसंपूज्यतद्दलैर्हरिम् ॥ वसंतिमोदमानास्तेयत्रदेवश्चतुर्भुजः ॥ ३३ ॥ एककालंद्विकालंवात्रिकालंवापियोनरः ॥ समर्चयतिभूतेशंलिंगेरेवासमुद्भवे ॥ ३४ ॥ स्फाटिकेरत्नलिंगेवापार्थिवेवास्वयंभुवि ॥ स्थापितेवाक्वचिद्वैश्यतीर्थेतीर्थैगिरौवने ॥ ३५ ॥

पुष्करादि तीर्थ गंगादि नदी वासुदेवादि देवता सब तुलसीदल में निवास करते हैं ॥ ३२ ॥ जो तुलसीको लगाकर उस से नारायणका पूजन करते हैं वे प्रसन्न होकर भगवानके निकट निवास करते हैं ॥ ३३ ॥ एक काल दोकाल अथवा तीन कालमें जो मनुष्य रेवा नदीमें प्रकट हुए भूतपतिका अर्चन करता है ॥ ३४ ॥ अथवा स्फटिक मणिके रत्न के पार्थिव के वा स्वयं प्रादुर्भूत अथवा कहीं तीर्थ वा वन में स्थापित किये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुएको ॥ ३५ ॥ नमः शिवाय इस मंत्र द्वारा जो जप करता है वह मनुष्य यमलोककी कथाभी श्रवण नहीं करते हैं ॥ ३६ ॥ शिवकी पूजाके प्रभावसे शिवभक्त शिव में तत्पर चौदह इन्द्रपर्यन्त शिवलोक में आनंद करते हैं ॥ ३७ ॥ प्रसंग से भी दंभ मोह वा लोभयुक्त होकर भी जो शिवका दर्शन करते हैं वे यमका दर्शन नहीं करते हैं ॥ ३८ ॥ शिवार्चनकी समान पुण्यकारक पापका नाश करनेवाला सब ऐश्वर्यका देनेवाला त्रिलोकी में नहीं है ॥ ३९ ॥ हे वैश्य शिवभक्ति करनेवाले यदि जनार्दनकी निन्दा करैं अथवा नारायणके भक्त शिवकी निन्दा करैं तो

नमःशिवायमंत्रेणकुर्वंतस्तज्जपंसदा ॥ शृण्वंतियमलोकस्यकथामपिनतेनराः ॥३६॥ शिवपूजाप्रभावेणशिवभक्ताःशिवेरताः ॥ मोदं तेशिवलोकंतेयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ ३७ ॥ प्रसंगेनापिमोहेनदंभेनापिहिलोभतः ॥ येसेवंतेमहादेवंनतेपश्यंतिभास्करिम् ॥ ३८ ॥ शिवार्चनसमंपुण्यंसर्वपापप्रणाशनम् ॥ सर्वैश्वर्यप्रदंवैश्यनास्तिकिंचिज्जगत्त्रये ॥ ३९ ॥ शिवभक्तिंप्रकुर्वाणायेद्विषंतिजनार्दनम् ॥ तेषांनिरयपातस्तुतत्कालेचउदाहृतः ॥ ४० ॥ द्रव्यमन्नंफलंतोयंशिवस्वंनस्पृशेत्क्वचित् ॥ निर्माल्यंनैवसंलंघेत्कूपेसर्वंचत त्क्षिपेत् ॥ ४१ ॥ मक्षिकापादमात्रंहिशिवस्वमुपजीवति ॥ मोहाल्लोभात्सपच्येतकल्पांतंनरकंनरः ॥ ४२ ॥

अवश्य नरकपात होता है और इस में कुछ भी सन्देह नहीं है ॥ ४० ॥ द्रव्य अन्न फल जल जो शिव का धन है उसको ग्रहण न करै तथा उनके निर्माल्यको लंघन न करै कहीं एकांतमें निक्षेप करदे ॥ ४१ ॥ जो मक्खी के पाद मात्र भी शिवका धन लेता है चढावा खाता है वह कल्प पर्यन्त लोभ वा मोह से ऐसा करने से नरक पाता है शिव निर्माल्य योगियोंको ग्राह्य है जो कि लिया करते हैं शिव लिंगपर चढा हुआ ही सर्व

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साधारणको अग्राह्य है अन्य नहीं ॥ ४२ ॥ उन्तालीस से बयालीस श्लोक तक अप्रसंगिक श्लोक होनेसे क्षेपक विदित होते हैं तृण काष्ठ वा पाषाण का जो शिवकी मंदिर बनाते हैं वह मनुष्य शिवके साथ सदा शिवलोक में आनंद करते हैं ॥ ४३ ॥ ब्रह्मा विष्णु महादेव इन तीनों देवताओंमें किसी एक देवताका भी मंदिर बनाने से चिरकाल तक उन उन देवताओंके लोक में निवास करता है ॥ ४४ ॥ जो मार्गमें धर्मशाला मठ वा विश्राममंदिर बनाते हैं हे वैश्य जो यतियोंको स्थानकुटी बनाते हैं दान देते हैं ॥ ४५ ॥ ब्रह्मशाला तथा ब्राह्मणका मंदिर बनाते हैं

तृणैःकाष्ठैश्चपाषाणैर्यैकुर्वंतिशिवालयम् ॥ मोदंतेसहरुद्रेणतेनराःशिवसंनिधौ ॥ ४३ ॥ ब्रह्मविष्णुमहादेवप्रासादंमठमेवच ॥ कृत्वा तुसुचिरंकालंतत्रलोकेवसंतिते ॥ ४४ ॥ येधर्ममठगोशालाःपथिविश्राममंदिरम् ॥ यतीनांसदनंवैश्यदानानांचकुटीरकम् ॥ ४५ ॥ ब्रह्मशालांचविपुलांब्राह्मणस्यचमंदिरम् ॥ सृष्ट्वायांतिविशांश्रेष्ठइंद्रस्यभवनंनराः ॥ ४६ ॥ जीर्णोद्धारेणवैतेषांतत्फलंद्विगुणंभवेत् ॥ तद्भंगंयत्रयःकुर्यात्सगच्छेन्निरयंध्रुवम् ॥ ४७ ॥ देवविप्रयतीनांतुमठलोभविमोहितः ॥ मठाधिपत्यंयःकुर्यात्सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ ४८ ॥ पत्रंपुष्पंफलंतोयंद्रव्यमन्नंमठस्यच ॥ योश्नातिनरकान्घोरान्सेवतेचैकविंशतिः ॥ ४९ ॥ यइच्छेन्नरकंनेतुंसपुत्रपशुबांधवम् ॥ तंदेवेष्वधिपंकुर्याद्द्वेषुचब्राह्मणेषुच ॥ ५० ॥

हे वैश्यश्रेष्ठ वे इन्द्र भवनमें निवास करते हैं ॥ ४६ ॥ और जो इन स्थानोंका जीर्णोद्धार करते हैं उनको दुगुना फल होता है और जो इनको तोडता है वह घोर नरक को जाता है ॥ ४७ ॥ पत्र पुष्प फल द्रव्य अन्न मठ जो पचालेते हैं वे इक्कीस नरकोंका दुःख भोगते हैं॥ ४८॥ जो देव ब्राह्मण यतियोंके मठको लोभसे अपना कर लेता है वह सब धर्मसे बहिष्कृत होता है ॥ ४९ ॥ जो अपने पुत्र पशु बांधवोंको नरक में ले जाने चाहै वह इस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणोंके तथा गौओंके स्थानमें अधिकार करताहै॥ ५०॥ मठधारियोंका अन्न अभोज्य है उसको खाकर चान्द्रायण करै और इन मठाधिकारियोंको स्पर्श करके सवस्त्र स्नान करे ॥ ५१ ॥ आदित्य चंडिका विष्णु रुद्र गणेश्वर इनका अन्न जो अन्यायसे खाते हैं वे नरकगामी होते हैं ॥ ५२ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरकी पूजाके निमित्त जो फुलवारी बनाते हैं वे धन्य हैं और देवलोकमें निवास करते हैं ॥ ५३ ॥ जो सदा देवता पितृ अतिथियोंका

अभोज्यंमठिनामन्नंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् ॥ स्पृष्ट्वामठपतिंवैश्यसवासाजलमाविशेत् ॥ ५१ ॥ आदित्यंचंडिकांविष्णुंरुद्रंचैवगणेश्वरम् ॥ उपभुंजंतियेद्रव्यंतेवैनिरयगामिनः ॥ ५२ ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानांपूजार्थंपुष्पवाटिकाम् ॥ आरोपयंतियेधन्यादेवलोकेवसंतिते ॥ ५३ ॥ येसदापितृदेवांश्चप्रीणयंत्यतिथीन्सदा ॥ प्राजापत्यंहितेयांतिलोकंसर्वोत्तमोत्तमम् ॥ ५४ ॥ मूर्खोवापंडितोवापिश्रोत्रियःपतितोपिवा ॥ ब्रह्मतुल्योतिथिर्वैश्यमध्याह्नेयःसमागतः ॥ ५५ ॥ पथिश्रांतायविप्रायह्यन्यस्मैक्षुधितायच ॥ प्रयच्छंत्यन्नपानीयंतेनाकेचिरवासिनः ॥ ५६ ॥ प्राप्ताह्यदृष्टपूर्वाश्चभोक्तुकामाःक्षुधातुराः ॥ यद्गेहेतृप्तिमायांतिब्रह्मलोकेवसंतिते ॥ ५७ ॥ अतिथिर्विमुखोयस्यसंगच्छेद्गृहमागतः ॥ मध्याह्नेवैश्यसायंवासप्रयातियमालयम् ॥ ५८ ॥

पूजन श्राद्ध और सत्कार करते हैं वह प्रजापतिके सर्वोत्तम लोकोंको प्राप्त होते हैं ॥ ५४ ॥ मूर्ख पंडित श्रोत्रिय वा पतित हे वैश्य ! मध्याह्नमें जो अपने यहां आवे वह ब्रह्मकी तुल्य सत्कार योग्य है ॥ ५५ ॥ मार्गमें श्रान्त ब्राह्मण वा और किसी भूंखेको जो जल देते हैं वे चिरकालतक स्वर्गमें निवास करते हैं ॥ ५६ ॥ जो कभी देखे नहीं ऐसे पुरुष आनकर भूंखे प्राप्त हों तो वे जिसके घर तृप्त होते हैं वे स्वर्गमें निवास करते हैं ॥ ५७ ॥ जिसके घर आया अतिथि निराश होकर चला जाता है हे वैश्य ! सायं वा मध्याह्नमें उलटा लौटजा है वह यमालयको जाता है ॥५८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जब कि नहीं है २ यह वचन सुन अतिथि निराश होकर चला जाता है वह ग्रहस्थीका जन्म संचित पुण्य गृहणकरके ले जाता है ॥ ५९ ॥ अतिथिकी समान बंधु अतिथिकी समान धन अतिथिकी समान धर्म और अतिथिकी समान हितकारी कोई नहीं है ॥ ६० ॥ आतिथ्यकेही प्रभाव से राजा और मुनि ब्रह्मलोकको प्राप्त हुए आजतक निवृत्त नहीं होते हैं ॥ ६१ ॥ हे वैश्य ! जो जन्मसे गृहस्थ कभी प्रमादसे अतिथिको भोजन

नास्तिनास्तिवचः श्रुत्वात्यक्ताशोह्यतिथिर्व्रजेत् ॥ आजन्मसंचितंपुण्यंगृह्णातिगृहमेधिनः ॥ ५९ ॥ नास्त्यतिथिसमोबंधुर्नास्त्यति थिसमंधनम् ॥ नास्त्यतिथिसमोधर्मोनास्त्यतिथिसमोहितः ॥ ६० ॥ आतिथ्यस्यप्रभावेणराजानोमुनयस्तथा ॥ ब्रह्मलोकंगताद्या पिनच्यवंतेविशांवर ॥ ६१ ॥ आजन्मतोगृहस्थोयःप्रमादाद्वाकथंचन ॥ भोजयेदतिथिंनूनंनैवपश्यतिसोंतकम् ॥ ६२ ॥ सुदीप्तेषु विमानेषुभुंक्तेपीयूषमन्नदः ॥ यातिस्वर्गच्युतोवैश्यउत्तरांश्चकुरून्प्रति ॥ ६३ ॥ ततश्चभारतेवर्षेराजाभवतिधार्मिकः ॥ अन्नदोदी र्घमायुश्चविंदतेसुखसंपदः ॥ ६४ ॥ सर्वेषामेवभूतानामन्नेप्राणाःप्रतिष्ठिताः॥ तेनान्नदोविशांश्रेष्ठप्राणदातास्मृतोबुधैः ॥ ६५ ॥ प्राहवै वस्वतोदेवोराजानंकेसरिध्वजम् ॥ च्यवंतंस्वर्गलोकात्तंकारुण्येनविशांपते ॥ ६६ ॥

करादे वह भी यमलोकका दर्शन नहीं करते हैं ॥ ६२ ॥ प्रदीप्त विमानोंमें अमृतवत् अन्नको भोजन करते हैं और स्वर्गसे च्युत होकर उत्तर कुरु-ओंमें जन्म पाते हैं ॥ ६३ ॥ फ़िर भारतवर्षमें धर्मात्मा राजा होता है अन्नका देनेवाला दीर्घायु और सुखसम्पत्तिको प्राप्त होताहै ॥ ६४ ॥ सब भूतोंके प्राण अन्नमें प्रतिष्ठित हैं हे वैश्य इस कारण अन्नका देनेवाला प्राणदाता कहा जाता है ॥ ६५ ॥ यह वैवस्वतदेवने राजा केसरिध्वजसे जब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कि वह स्वर्गलोकसे पतित होताथा करुणाकर कहा ॥ ६६ ॥ हे राजन् ! यदि तुझको स्वर्ग जानेकी इच्छा है तो कर्मभूमिमें जाकर अन्नदान कर ॥ ६७ ॥ हे वैश्य यह बात मैंनें साक्षात् धर्मके मुखसे सुनी है अन्नदानकी समान दूसरा दान नहीं है ऐसा मैंनें निश्चय कर कहा है ॥ ६८ ॥ जो ग्रीष्मऋतुमें जल और हेमन्तमें अन्नदान करते हैं वे यमकी यातनाको नहीं देखते हैं ॥ ६९ ॥ ज्ञात अज्ञात छोटे बडे पापोंका जो छः छः मही

ददस्वान्नंददस्वान्नंददस्वान्नंनराधिप ॥ कर्मभूमौगतोभूयोयदिस्वर्गंत्वमिच्छसि ॥ ६७ ॥ इत्यश्राविमयावैश्यसाक्षाद्धर्मुखादपि ॥ अन्नदानसमंदानमतोनास्तिमयोदितम्॥६८॥ पानीयप्रददेद्ग्रीष्मेहेमंतेचतपोधन ॥ अन्नंचसर्वदादत्त्वागच्छेद्याम्यांनयातनाम्॥६९॥ ज्ञाताज्ञातेषुपापेषुक्षुद्रेषुचमहत्सुच ॥ षट्सुषट्सुचमासेषुप्रायश्चित्तंतुयश्चरेत्॥७०॥ निष्कल्मषोनरोवैश्यसकृतांतंनपश्यति ॥ प्रायश्चित्तंचरेद्यस्तुवाङ्मनःकायकर्मसु ॥ ७१ ॥ सप्राप्नोतिशुभाँल्लोकान्देवगंधर्वशोभितान् ॥ नित्यंजपंतियेवैश्यगायत्रींवेदमातरम् ॥ ॥ ७२ ॥ अन्यद्वावैदिकंजाप्यंनतेलिंपंतिपातकैः ॥ वेदाभ्यासरतानित्यंसायंप्रातर्हुताशने ॥ ७३ ॥ येजुह्वतिद्विजावैश्यतेलभंतेऽक्षयांगतिम् ॥ नित्यंव्रतसमाचारोनित्यंतीर्थोपसेवकः ॥ ७४ ॥

नेमें प्रायश्चित्त करे ॥ ७० ॥ हे वैश्य वह पापरहित होकर कृतान्तको नहीं देखता है जो वाणी मन कर्मसे प्रायश्चित्त करता है ॥ ७१ ॥ वह देवगन्धर्वोंसे शोभित उत्तमलोकोंको प्राप्त होता है हे वैश्य जो वेदमाता गायत्रीका नित्य जप करते हैं ॥ ७२ ॥ वा दूसरा वैदिक जप करते हैं वे पातकोंसे लिप्त नहीं होते हैं जो वेदाभ्यासमें रत होकर प्रातः सायं अग्निमें ॥ ७३ ॥ हवन करते हैं हे वैश्य वे ब्राह्मण शुभ गतिके अधिकारी होते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हैं नित्य व्रत कर्त्ता और नित्य तीर्थसेवी ॥ ७४ ॥ नित्य जितेन्द्रिय पुरुष सत्यही कठिन यमयातनाका दर्शन नहीं करते हैं, दारुण नरकका स्मरण कर परान्नसे प्रीति त्यागन करे ॥ ७५ ॥ जो जिसका अन्न खाता है वह उसका पापही खाता है तथा प्रभातकाल स्नान करनेवाला यमकी यातनाको प्राप्त नहीं होता है ॥ ७६ ॥ प्रभात स्नान करनेसे पापी मनुष्यभी पवित्र हो जाते हैं हे वैश्य प्रभातकाल स्नान करनेसे बाहर भीतरका मल स्वच्छ हो जाता है ॥ ७७ ॥ प्रभातमें स्नान करनेसे पाप रहित हो मनुष्य नरकको नहीं जाता है जो स्नानके विना भोजन करता है वह पाप

नित्यंजितेंद्रियःसत्यंयमंरौद्रंनपश्यति ॥ नरकंदारुणंस्मृत्वापरान्नेचरतिंत्यजेत् ॥ ७५ ॥ योयस्यान्नंसमश्नातितस्याश्नातिचकिल्बिषम् ॥ याम्यंहियातनादुःखंप्रातःस्नायीनविंदति ॥ ७६ ॥ प्रातःस्नानेनपूयंतेअतिपापकरानराः ॥ प्रातःस्नानंहरेद्वैश्यसबाह्याभ्यंतरंमलम् ॥ ७७ ॥ प्रातःस्नानेननिष्पापोनरोननिरयंव्रजेत् ॥ स्नानंविनातुयोभुंक्तेसमलाशीसदानरः ॥ ७८ ॥ अस्नायिनोऽशुचेस्तस्यनिराशाःपितृदेवताः ॥ स्नानहीनोनरःपापःस्नानहीनोऽशुचिःसदा ॥ ७९ ॥ अस्नायीनरकंभुक्त्वापुल्कसादिषुजायते ॥ येपुनस्तपसिस्नानमाचरंतीहपर्वणि ॥८०॥ तेनैवदुर्गतिंयांतिनजायंतेकुयोनिषु ॥ दुःस्वप्नंदुष्टचिंत्यंचवंध्यंभवतिसर्वदा ॥ ८१ ॥ प्रातःस्नानविशुद्धानांपुरुषाणांविशांवर ॥ तिलांश्चतिलपात्रंचतिलपद्मंयथाविधि ॥ ८२ ॥

भोजी है ॥ ७८ ॥ जो स्नान नहीं करता अपवित्र रहता है उसके पितृ देवता निराश होजाते हैं स्नान हीन मनुष्य पापरूप और स्नानहीन सदा अशुचि है ॥ ७९ ॥ स्नान न करनेवाला नरक भोगकर पुक्कस चाण्डालादिकी योनियोंमें जन्म लेता है, और जो तपयुक्त पर्वोंमें स्नान करते हैं ॥ ८० ॥ न उनकी दुर्गति होती न कुयोनियोंमें जन्म होता है दुस्स्वप्न और दुश्चिन्ता सदामोघ हो जाती है ॥ ८१ ॥ हे वैश्य श्रेष्ठ ! प्रभात स्नानसे शुद्ध

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनुष्योंको तिलका पात्र तिलकमल यथाविधिसे दे ॥ ८२ ॥ इसके प्रदान करनेसे फिर मनुष्य यमलोकको कभी नहीं जाते हैं, पृथ्वी सुवर्ण गौ यह षोडश महा दान हैं ॥ ८३ ॥ हे विकुंडल इनके दान करनेसे स्वर्गलोकसे निवृत्ति नहीं होती है बुद्धिमान् पवित्र तिथियोंसे व्यतीपात वा संक्रान्तिमें ॥ ८४ ॥ स्नान दान करनेसे फिर दुर्गतिको प्राप्त नहीं होता, ऐसे दाता दारुण रौरवनरकमें नहीं पडते हैं ॥ ८५ ॥ इस लोकमें फिर धनहीनके यहां उसका जन्म नहीं होता जो मनुष्य सत्यवादी मौनी और प्रियवादी हैं ॥ ८६ ॥ क्रोधहीन क्षमा सारवान बहुत न बोलनेवाले निन्दारहित सदा

दत्वाप्रेतपतेर्भूमिंनव्रजंतिनराःक्वचित् ॥ पृथिवींकांचनंगाश्चमहादानानिषोडश ॥ ८३ ॥ दत्त्वातुननिवर्तंतेस्वर्गलोकाद्विकुंडल ॥ पुण्यासुतिथिषुप्राज्ञोव्यतीपातेचसंक्रमे ॥ ८४ ॥ स्नात्वादत्त्वातुयर्तिकचिन्नैवमज्जतिदुर्गतिम् ॥ नैवाक्रमंतिदातारोदारुणंरौ रवंपथम् ॥ ८५ ॥ इहलोकेनजायतेकुलेधनविवर्जिते ॥ सत्यवादीसदामौनीप्रियवादीचयोनरः ॥ ८६ ॥ अक्रोधनःक्षमासारो नातिवागनसूयकः ॥ सदादाक्षिण्यसंयुक्तःसदाभूतदयान्वितः ॥ ८७ ॥ गोप्ताचपरधर्माणांवक्तापरगुणस्यच ॥ परस्वंतिलमत्रं तुमनसापिनयोहरेत् ॥ ८८ ॥ नपश्यतिविशांश्रेष्ठसवैनरकयातनाम् ॥ परापवादीपापिष्ठःपापेष्वभिरतःसदा ॥ ८९ ॥ पच्यतेनरके घोरेयावदाभूतसंप्लवम् ॥ वक्तापरुषवाक्यानांमंतव्योनरकागतः ॥ ९० ॥ संदेहोनविशांश्रेष्ठपुनर्यास्यतिदुर्गतिम् ॥ नतीर्थैर्नतपो भिश्चकृतघ्नस्याऽस्तिनिष्कृतिः ॥ ९१ ॥

चतुरता युक्त सदा प्राणियों पर दया करनेवाले ॥ ८७ ॥ पराये धर्मोंके रक्षक पराये गुणोंके कथन करनेवाले जो तिलमात्रभी मनसे पराये धनको नहीं लेते हैं ॥ ८८ ॥ हे वैश्य श्रेष्ठ ! वह नरककी यातनाको प्राप्त नहीं होते पराये निन्दक पापी पाप में अनुरक्त पुरुष ॥ ८९ ॥ प्रलय पर्यन्त घोर नरकमें पड़े रहते हैं खोटे वचन कहने वाले को नरक गामी जानना चाहिये ॥ ९० ॥ इसमें सन्देह नहीं कि वह फिर भी नरकगामी होगा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृतघ्न की तीर्थ और तपस्या से निष्कृति नहीं होती ॥ ९१ ॥ वह मनुष्य चिरकालतक नरक में घोर यातनाको प्राप्त होगा पृथ्वीमें जितने तीर्थहैं उन में जो मनुष्य स्नान करताहै॥९२॥जितेन्द्रिय जिताहार होने से वह फिर यमालय को नहीं जाता तीर्थ में पातक न करै तीर्थ में जीविका न करै॥९३॥ जो नराधम गंगाको और तीर्थोंकी समान कहता है हे वैश्य ! वह दारुण रौरव नरक में पड़ता है ॥ ९४ ॥ तीर्थ में दान न ले धर्मका विक्रय न करै तीर्थ में किया पातक दुर्जर है और इसी प्रकार प्रतिग्रहभी दूर नहीं होता ॥ ९५ ॥ तीर्थ के किये सभीपाप दुर्जर हैं इनके करने से नरक होता है

सहतेयातनांघोरांसनरोनरकेचिरम् ॥ पृथिव्यांयानितीर्थानितेषुमज्जतियोनरः ॥ ९२ ॥ जितेंद्रियोजिताहारोनसयातियमालयम् ॥
नतीर्थेपातकंकुर्यात्त्यजेत्तीर्थोपजीवनम् ॥९३॥ अन्यतीर्थसमांगंगांयोब्रवीतिनराधमः ॥ सयातिरौरवंवैश्यनरकंदारुणंभृशम् ॥९४॥
तीर्थेप्रतिग्रहस्त्याज्यस्त्याज्योधर्मस्यविक्रयः ॥ दुर्जरंपातकंतीर्थेदुर्जरश्चप्रतिग्रहः ॥ ९५ ॥ तीर्थेषुदुर्जरंसर्वमेतत्कुन्नरकंव्रजेत् ॥
सकृद्गंगांभसिस्नात्वापूतोगांगेनवारिणा ॥ ९६ ॥ नरोननरकंयातिअपिपातकराशिकृत् ॥ व्रतंदानंतपोयज्ञाःपवित्राणीतराणि
च ॥ ९७ ॥ गंगाबिंद्वभिषेकस्यनसमानीतिविश्रुतम् ॥ धर्मद्रव्यंधर्मबीजंवैकुंठचरणच्युतम् ॥ ९८ ॥ धृतंमूर्ध्निमहेशेनयद्वाङ्गमम
लंजलम् ॥ यद्ब्रह्मैवनसंदेहोनिर्गुणंप्रकृतेःपरम् ॥ ९९ ॥

एक वार गंगा में स्नान करने से पवित्र होकर॥९६॥ कितनेही पाप किये हों परन्तु वह मनुष्य नरकको नहीं जाता व्रत दान तप यज्ञ और जो पवित्र करने वाले हैं॥९७॥वे गंगाके एक बिन्दु अभिषेक की समान नहीं है ऐसा हमने सुना है धर्मद्रव्य धर्म बीज वैकुण्ठनाथकेचरण से च्युत हुई ॥९८॥ फिर शिवजीने शिरपर धारण की इत्यादि कारणोंसे गंगा अनेक प्रकार से निर्मल हुई है जो ब्रह्म निर्गुण प्रकृति से परे है ॥ ९९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्माण्ड गोलक में उसकी समताको किस प्रकार प्राप्त हो सक्ता है गंगा इस नामके ग्रहण करने से सौ योजनसे भी॥ १०० ॥ मनुष्य नरकको प्राप्त नहीं होता नरक देने वाली क्रिया शीघ्र और कार्य से दग्ध नहीं होती ॥ १ ॥ प्रयत्न से गंगाजलमें मनुष्यों को स्नान करना चाहिये जो प्रतिग्रहसे निवृत्त है और प्रतिग्रह में क्षमावाला है ॥ २ ॥ हे वैश्य ! वह ब्राह्मण तारे की समान स्वर्ग में प्रकाशित होता है जो पंक से गौका उद्धार करते हैं जो रोगी

तेनकिंसमतांगच्छेदपिब्रह्मांडगोलके ॥ गंगेतिनामग्रहणाद्योजनानांशतैरपि ॥ १०० ॥ नरोननरकंयातिकिंतयासदृशंभवेत् ॥ नान्येनदह्यतेसद्यःक्रियानरकदायिनी ॥ १ ॥ गंगांभसिप्रयत्नेनस्नातव्यंतैश्चमानुषैः ॥ प्रतिग्रहनिवृत्तोयःप्रतिग्रहक्षमोपिसन् ॥२॥ सद्विजोद्योततेवैश्यतारारूपश्चिरंदिवि ॥ गामुद्धरंतियेपंकाद्येचरक्षंतिरोगिणम् ॥ ३ ॥ म्रियंतेगोगृहेचैवतेस्युर्नभसितारकाः ॥ यमलोकंनपश्यंतिप्राणायामरतानराः ॥ ४ ॥ अपिदुष्कृतकर्माणस्तएवहतकिल्बिषाः ॥ दिवसेदिवसेवैश्यप्राणायामास्तुषोडश ॥ ५ ॥ अपिभ्रूणहताःपुंसांपुनंत्यहरहःकृताः ॥ तपांसियानितप्यंतेव्रतानिनियमाश्चये ॥ ६ ॥ गोसहस्रप्रदानंचप्राणायामास्तुत त्समाः ॥ गंगांभोपिकुशाग्रेणमासमेकंतुयःपिबेत् ॥ ७ ॥

की रक्षा करते हैं ॥ ३ ॥ जो गोशाला में शरीर त्यागते हैं वे आकाश में तारागण होते हैं प्राणायाम करनेवाले यमलोक का दर्शन नहीं करते हैं॥ ४ ॥ दुष्कृत कर्म करनेवाले भी पापहीन होते हैं हे वैश्य ! जो दिन २ सोलह सोलह प्राणायाम करते हैं ॥ ५॥ उनकी भ्रूण हत्या का पाप दूर होता है जो तप करते व्रत नियम धारण करते हैं ॥ ६॥ और सहस्र गोदान करते हैं वह प्राणायाम की बराबर फल है जो कुशाग्र से एक महीने तक गंगाजल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पान करते हैं ॥ ७ ॥ सो सम्वत्सर प्राणायाम करनेकी बराबर उसका फल है महापातक और क्षुद्र उपपातक हैं ॥ ८ ॥ प्राणायाम से क्षणार्ध में भस्म हो जाते हैं जो नरश्रेष्ठ पराई स्त्रियों को माता की समान देखते हैं ॥ ९ ॥ हे वैश्य श्रेष्ठ ! वे कभी यमलोकको नहीं जाते जो मनसे भी पराई स्त्रियोंकी सेवा नहीं करते ॥ १० ॥ उसने दोनों लोक मानो अपने वशमें कर लिये हैं इस कारण सब प्रकार से पराई स्त्रियोंका सेवन न करना चाहिये ॥ ११ ॥ पराई स्त्री इक्कीसवार नरक में प्राप्त करती है जिनका मन दूसरों के मनका लोभी नहीं होताहै ॥ १२ ॥ हे वैश्य श्रेष्ठ ! वे देवलोक को गमन करते हैं

संवत्सरशतंसाग्रंप्राणायामस्तुतत्समः ॥ पातकंतुमहद्यच्चतथाक्षुद्रोपपातकम् ॥ ८ ॥ प्राणायामैःक्षणात्सर्वंभस्मसाच्चविशांवर ॥
मातृवत्परदारान्येसंपश्यंतिनरोत्तमाः ॥ ९ ॥ तेनयांतिविशांश्रेष्ठकदाचिद्यमयातनाम् ॥ मनसापिपरेषांयःकलत्राणिनसेवते ॥ १० ॥
सहिलोकद्वयेदेवस्तेनवैश्यधराधृता ॥ तस्मात्सर्वात्मनात्याज्यंपरदारोपसेवनम् ॥ ११ ॥ नयंतिपरदारास्तुनरकानेकविंशतिम् ॥
नलोभेजायतेयेषांपरद्रव्येषुमानसम् ॥ १२ ॥ तेयांतिदेवलोकेहिनयाम्यंवैश्यसत्तम ॥ सत्सुक्रोधनिमित्तेषुयःक्रोधेननजीयते ॥ १३ ॥
जितस्वर्गःसमंतव्यःपुरुषोऽक्रोधनोभुवि ॥ मातरंपितरंयस्तुआराधयतिदेववत् ॥ १४ ॥ संप्राप्तेवार्धकेकालेनसयातियमालयम् ॥
पितुराधिक्यभावेनयेऽर्चयंतिगुरुंनराः ॥ १५ ॥ भवंत्यतिथयोलोकेब्रह्मणस्तेविशांवर ॥ इहताश्चस्त्रियोधन्याःशीलस्यपरिरक्षणात् ॥ १६ ॥

यमलोक को नहीं जाते जो क्रोध के निमित्त प्राप्त होने में क्रोध को नहीं जीतता है ॥ १३ ॥ उस अक्रोधी पुरुष को स्वर्गका जीतनेवाला जानना चाहिये, जो मातापिताको देवता जानकर आराधना करताहै ॥ १४ ॥ वह वृद्धसेवी यमालय को गमन नहीं करता है जो मनुष्य पिता से अधिक गुरु की शुश्रूषा करते हैं ॥ १५ ॥ हे वैश्य श्रेष्ठ ! वे ब्रह्मलोक को गमन करते हैं इसमें संदेह नहीं शीलकी रक्षा करनेवाली स्त्री धन्य हैं ॥ १६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शील भंगसे स्त्रियोंको दारुण यमलोककी प्राप्ति होती है जो स्त्री दुष्टोंका संग न करके शील की रक्षा करती है ॥ १७ ॥ हे वैश्य ! स्त्रियोंको शीलसेही परम स्वर्ग की प्राप्ति होती है विशुद्ध पाकयज्ञ और निषिद्ध कार्यके न करने से ॥ १८ ॥ हे वैश्य ! स्वर्गकी गति होती है फिर वह नरक को नहीं जाता जो शास्त्रका विचार करते हैं और वेदाभ्यास करते हैं ॥ १९ ॥ जो स्वर्गति प्राप्त कराने वाले पुराणादि सुनाते और पढ़ते हैं जो स्मृतियोंकी व्याख्या करते और धर्म को प्रतिबोधन करते हैं ॥ २० ॥ जो वेदान्त शास्त्र में निपुण हैं उन्होंने इस पृथ्वीको धारण कररक्खाहै उन उनके अभ्यास और माहात्म्य

शीलभंगेननारीणांयमलोकःसुदारुणः ॥ शीलंरक्षंतियानित्यंदुष्टसंगविवर्जनात् ॥ १७ ॥ शीलेनहिपरःस्वर्गःस्त्रीणांवैश्यनसंशयः ॥ विशुद्धपाकयज्ञेननिषिद्धाकरणेनच ॥ १८ ॥ स्वर्गतिर्विहितावैश्यनगतिस्तस्यनारकी ॥ विचारयंतियेशास्त्रंवेदाभ्यासरताश्चये ॥ १९ ॥ स्वर्गतिर्विहितांयेचश्रावयंतिपठंतिच ॥ व्याकुर्वंतिस्मृतियेचयेधर्मप्रतिबोधकाः ॥ २० ॥ वेदांतनिपुणायेवैतैरियंजगतीधृता ॥ तत्तदभ्यासमाहात्म्यैःसर्वेतेहतकिल्बिषाः ॥ २१ ॥ गच्छन्तिब्रह्मणोलोकंयत्रमोहोनविद्यते ॥ ज्ञानमादाययोदद्याद्वेदशास्त्रसमुद्भवम् ॥ २२ ॥ अपिदेवास्तमर्चंतिभवबंधविदारकम् ॥ २३ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेउत्तरखंडेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

से वे पापरहित होगये हैं ॥ २१ ॥ वे ब्रह्मलोक को जाते हैं जहां फिर मोह नहीं होता जो वेदशास्त्र के ज्ञान को दूसरों को देते हैं ॥ २२ ॥ उस संसार के भय दूर करने वाले की देवताभी पूजा करते हैं ॥ १२३ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे माघमासमाहात्म्ये वशिष्ठदिलीपसंवादे पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यमदूत बोले हे वैश्य ! मैं एक अद्भुत रहस्य कहताहूं सुनो जो धर्मराजका संमत और सब लोकका अभय देनेवाला है ॥ १ ॥ यह मैं सत्य कहताहूं भगवान् विष्णुकी भक्ति करनेवाले यम यमदूत घोर दर्शनवालोंका कभी दर्शन नहीं करते हैं ॥ २ ॥ यमुनाके भ्राता यमराजजीने यह हमसे वारंवार कहा है कि विष्णु भक्तोंको कभी तुम हमारे निकट मत लाना ॥ ३ ॥ हे दूतो जो प्रसंग से कभी एक वार भगवानका स्मरण करते हैं

यमदूतउवाच ॥ ॥ श्रूयतामद्भुतंह्येतद्रहस्यंवैश्यसत्तम ॥ संमतंधर्मराजस्यसर्वलोकामृतप्रदम् ॥ १ ॥ नयमंयमदूतंचनदूता न्घोरदर्शनान् ॥ पश्यंतिवैष्णवान्नूनंसत्यमेतन्मयोदितम् ॥ २ ॥ आहास्मान्यमुनाभ्रातासादरंचपुनःपुनः ॥ भवद्भिर्वैष्णवास्त्या ज्यानतेस्युर्ममगोचराः ॥ ३ ॥ येस्मरंतिसकृद्दूताःप्रसंगेनापिकेशवम् ॥ तेविध्वस्ताखिलाघौघायांतिविष्णोःपरंपदम् ॥ ४ ॥ दुराचारोपिदुःशीलःसदापापरतोपिवा ॥ भवद्भिःसर्वदात्याज्योविष्णुंचेद्भजतेनरः ॥ ५ ॥ वैष्णवोयद्गृहेभुंक्तेतेषांवैष्णवसंगतिः ॥ तेपिवःपरिहार्याःस्युस्तत्संगहृतकिल्विषाः ॥ ६ ॥ इतिवैश्यानुशास्तास्मान्देवोदंडधरःसदा ॥ अतोनवैष्णवोयातिराजधानीं यमस्यतु ॥ ७ ॥

वह सब पापरहित हो भगवान विष्णु के लोकको गमन करते हैं ॥ ४ ॥ दुराचारी दुश्शील सदा पापी यदि विष्णुका भजन करता हो तो उसके निकट तुम न जाना ॥ ५ ॥ हरिभक्त जिसके घर भोजन करते हैं जो उनकी संगति करते हैं उनके सत्संगतिसे पाप दूर होगये हैं उसके घर भी तुम गमन न करना ॥ ६ ॥ हे वैश्य ! उन दंडधारी देवने इस प्रकार हमको सदा शिक्षा दी है इस कारण हरिभक्त यमराजकी राजधानीमें गमन नहीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करता है ॥ ७ ॥ हे वैश्य श्रेष्ठ ! हरि भक्तिके विना पापियोंको संसार सागर से तरनेका और उपाय नहीं है ॥ ८ ॥ जो हरिभक्त न हो उस ब्राह्मणको लोक देखने की इच्छा नहीं करते हरिभक्त यदि वर्णबाहर भी हो तो वह सबको हरिभक्तिके प्रभाव से पवित्र करता है ॥ ९ ॥ जो दो कुलके[1] पूर्वज चिरकालसे नरक में मग्न हैं जब उनकी संतान नारायणका पूजन करती है तभी वे स्वर्गको जाते हैं ॥ १० ॥ जो हरिभक्तोंके दास हैं वैष्णव अन्न भोजी हैं हे वैश्य ! वे भी श्रेष्ठ गतिको जाते हैं इस में सन्देह नहीं ॥ ११ ॥ हरिभक्तोंके दिये प्रसाद की यत्नसे इच्छा करै

विष्णुभक्तिविनानृणांपापिष्ठानांविशांवर ॥ उपायोनास्तिनास्त्यन्यःसंततुंनरकांबुधिम् ॥ ८ ॥ श्वपाकमिवनेक्षंतेलोकाविप्रमवैष्णवम् ॥ वैष्णवोवर्णबाह्योपिपुनातिभुवनत्रयम् ॥ ९ ॥ नरकेपिचिरंमग्नाःपूर्वजायेकुलद्वये ॥ तदैवयांतितेस्वर्गंयदार्चंतिसुतोहरिम् ॥ १० ॥ विष्णुभक्तस्ययेदासावैष्णवान्नभुजश्चये ॥ तेपिक्रतुभुजांश्रेष्ठगतिंयांतिनराःकिल ॥ ११ ॥ अर्थयेद्वैष्णवस्यान्नंप्रयत्ने नविचक्षणः ॥ सर्वपापविशुद्धचर्थंतदभावेजलंपिबेत् ॥ १२ ॥ गोविंदेतिजपन्मंत्रंकुत्रचिन्म्रियतेयदि ॥ सनरोनयमंपश्येत्तंचप्रेक्षामहे वयम् ॥ १३ ॥ सांगंसमग्रंसंन्यासंसऋषिच्छंददैवतम्॥तद्दीक्षाविधिसंपन्नंसन्मंत्रंद्वादशाक्षरम् ॥ १४ ॥ अष्टाक्षरंचमंत्रेशंयेजपंतिनरोत्तमाः ॥ तान्दृष्ट्वाब्रह्महाशुद्धस्तेजातावैष्णवाःस्वयम् ॥ १५ ॥

सब पाप इससे दूर होते हैं यदि यह न मिले तो चरणामृतही ग्रहण करे ॥ १२ ॥ गोविन्दाय नमः इस मंत्रको जपता हुआ यदि कहीं मरजाय तो उसको हम वा यमराज नहीं देखते हैं ॥ १३ ॥ अंग सहित समग्र न्यास ऋषि छंद देवताका स्मरण दीक्षा ग्रहण "ओं नमो भगवते वासुदेवाय" यह बारह अक्षरका मंत्र जप ॥ १४ ॥ तथा ओं नमो नारायणाय इस अष्टाक्षर मंत्रका जो जप करते हैं उनके दर्शनसे ब्रह्महत्यारे भी शुद्ध होते हैं वे

१ नानाका कुल और पिताका कुल ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वयं हरिभक्त हैं ॥ १५ ॥ शंख शक्र धारण किये ब्रह्माकी आयु पर्यन्त वनमाली होकर विष्णुरूपसे नारायणके लोकमें निवास करते हैं ॥ १६ ॥ हृदय सूर्य जल स्थंडिल अथवा प्रतिमामें नारायणकी अर्चा करने से हरिभक्त परंपदको प्राप्त होते हैं ॥ १७ ॥ मुक्तिकी इच्छा करनेवालोंको वासुदेवका सदा पूजन करना चाहिये शालिग्राम शिलाचक्रमें कीट विनिर्मित चक्रमें ॥ १८ ॥ विष्णुकी स्थिति है यही सब पापके नाश करनेवाले हैं यह सब पुण्य देनेवाले हैं और सब पापके दूर करनेवाले हैं सबको मुक्तिके देनेवाले हैं ॥ १९ ॥ जो नारायणको चक्र

शंखिनश्चक्रिणोभूत्वाब्रह्मायुर्वनमालिनः ॥ वसंतिवैष्णवेलोकेविष्णुरूपेणतेनराः ॥ १६ ॥ हृदिसूर्येजलेवाथप्रतिमास्थंडिलेषुच ॥ समभ्यर्च्यहरिंयांतिनरास्तेवैष्णवंपदम् ॥ १७ ॥ अथवासर्वदापूज्योवासुदेवोमुमुक्षुभिः ॥ शालिग्रामशिलाचक्रेचक्रेकीटविनिर्मिते ॥ १८ ॥ अधिष्ठानंहितद्विष्णोःसर्वपापप्रणाशनम् ॥ सर्वपुण्यप्रदंवैश्यसर्वेषामपिमुक्तिदम् ॥ १९ ॥ यःपूजयेद्धरिंचक्रेशालिग्रामशिलोद्भवे ॥ राजसूयसहस्रेणतेनेष्टंप्रतिवासरम् ॥ २० ॥ यदानमंतिवेद्यंतंब्रह्मनिर्वाणमच्युतम् ॥ तत्प्रसादोभवेत्तूणांशालिग्रामशिलार्चनात् ॥ २१ ॥ महत्काष्ठस्थितोवह्निर्यथास्थानेप्रकाशते ॥ तथातथाहरिर्व्यापीशालिग्रामेप्रकाशते ॥ २२ ॥ अपिपापसमाचारानकर्मण्यधिकारिणः ॥ शालिग्रामार्चकावैश्यनवैयांतियमालयम् ॥ २३ ॥

शिला अथवा शालिग्राम शिलामें पूजन करते हैं वह सहस्रराज सूर्यकी समान प्रतिदिन फल पाते हैं ॥ २० ॥ जिस समय जानने योग्य ब्रह्म निर्माण अच्युतको प्रणाम करते हैं वह प्रसाद उनको शालिग्रामके पूजनसे होजाता है ॥ २१ ॥ बडे काष्ठ में स्थित अग्नि जैसे स्थान में प्रकाश करती है इसी प्रकारसे सर्वव्यापी नारायण शालिग्राम शिलामें प्रकाश करते हैं ॥ २२ ॥ जो पापी अकर्मी अनधिकारी है वे भी शालिग्राम पूजनसे यमालय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

को नहीं जाते ॥ २३ ॥ भगवान इस प्रकार लक्ष्मी और अपने शरीरमें नहीं रमते हैं जिस प्रकार शालिग्राम शिला और चक्र शिलामें रमण करते हैं ॥ २४ ॥ उसने अग्निहोत्र कर लिया सागरपर्यन्त भूमि दान करली जिसने चक्र शिला और शालिग्राम में नारायणका अर्चन किया है ॥ २५ ॥ जो मनुष्य एक वार भी शालिग्राम शिला में अर्चन करता है उसके पाप इस प्रकार नाश होजाते हैं जिस प्रकार सूर्योदयमें अंधकार ॥ २६ ॥ हे वैश्य

नतथारमतेलक्ष्म्यांनतथास्वपुरेहरिः ॥ शालिग्रामशिलाचक्रेयथासरमतेसदा ॥ २४ ॥ अग्निहोत्रंहुतंतेनदत्तापृथ्वीससागरा ॥ येनार्चितोहरिश्चक्रेशालिग्रामसमुद्भवे ॥ २५ ॥ सकृत्करोतिमनुजःशालिग्रामशिलार्चनम् ॥ पापानिविलयंयांतितमःसूर्योदये यथा ॥ २६ ॥ शिलाद्वादशभोवैश्यशालिग्रामसमुद्भवाः ॥ विधिवत्पूजितायेनतस्यपुण्यंवदामिते ॥ २७ ॥ कोटिद्वादशलिंगै स्तुपूजितैःस्वर्णपंकजैः ॥ यच्चद्वादशकल्पेषुदिनैनैकेनतद्भवेत् ॥ २८ ॥ यः पुनःपूजयेद्भक्त्याशालिग्रामशिलाशतम् ॥ उषित्वा सहरेर्लोकंचक्रवर्तीहजायते ॥ २९ ॥ कामक्रोधैश्चलोभैश्चव्याप्तोयश्चनरोत्तमः ॥ सोपियातिहरेर्लोकंशालिग्रामशिलार्चनात्॥ ३० ॥ यःपूजयतिगोविंदंशालिग्रामेसदानरः ॥ आभूतसंप्लवंयावन्नैवप्रच्यवतेहिसः ॥ ३१ ॥

शालिग्रामसे प्रादुर्भूत बारह शिला जिसने विधिपूर्वक पूजन की उसका पुण्य तुझसे कहता हूं ॥ २७ ॥ बारह कोटि शिवलिंग सुवर्णके कमलसे बारह कल्प पूजनेसे जो फल हैं वह एक दिनमें मिल जाता है ॥ २८ ॥ जो भक्तिसे शालिग्रामकी सौ शिलाका पूजन करता है वह नारायणके लोकमें बहुत काल वसकर चक्रवर्ती होता है ॥ २९ ॥ जो मनुष्य काम क्रोध लोभसे व्याप्त होकर शालिग्राम पूजन करे वह भी हरिलोकको जाता है ॥ ३० ॥ जो मनुष्य शालिग्राम में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोविन्द का पूजन सदा करता है वह प्रलयकालतक स्वर्गसे नहीं गिरता है ॥ ३१ ॥ विना तीर्थ विना यज्ञ विना बुद्धिके शालिग्राम पूजनसे मनुष्य मुक्त हो जातेहैं ॥ ३२ ॥ नरक गर्भवास तिर्यक् योनिमें जन्मको हे वैश्य ! कैसाभी पापीहो शालिग्राम पूजनसे प्राप्त नहीं होता ॥ ३३ ॥ मंत्रका और दीक्षा विधानका जाननेवाला बलिपूजा करता है वह अवश्य विष्णुके लोकको प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३४ ॥ वह सबतीर्थोंमें स्नान करचुका

विनातीर्थैर्विनादानैर्विनायज्ञैर्विनामतिम् ॥ मुक्तिंयांतिनरावैश्यशालिग्रामशिलार्चनात् ॥ ॥ ३२ ॥ नरकंगर्भवासंचतिर्यक्त्वंचकुयोनिषु ॥ नयातिवैश्यपापिष्ठःशालिग्रामाच्युतार्चकः ॥ ३३ ॥ दीक्षाविधानमंत्रज्ञश्चक्रेयोबलिमाहरेत् ॥ सयातिवैष्णवंधामसत्यं सत्यंमयोदितम् ॥ ३४ ॥ सस्नातःसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितः ॥ शालिग्रामशिलातोयैर्योभिषेकंसमाचरेत् ॥ ३५ ॥ गंगागोदावरी रेवानद्योमुक्तिप्रदास्तुयाः ॥ निवसंतिसतीर्थास्ताःशालिग्रामशिलाजले ॥ ३६ ॥ नैवेद्यैर्विविधैःपुष्पैर्धूपैर्दीपैश्चचंदनैः ॥ स्तोत्रवादित्रगीताद्यैःशालिग्रामशिलार्चनम् ॥ ३७ ॥ कुरुतेमानवोयस्तुकलौभक्तिपरायणः ॥ कल्पकोटिसहस्राणिरमतेसन्निधौहरेः ॥ ३८ ॥ लिंगैस्तुकोटिभिर्दृष्टैर्यत्फलंपूजितैःस्तुतैः ॥ शालिग्रामशिलायांतुएकायामपितत्फलम् ॥ ३९ ॥

और सब यज्ञोंमें दीक्षित हो चुका, जिसने शालिग्रामको स्नान कराया ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ नैवेद्य अनेक प्रकारके पुष्प धूप दीप चंदन स्तोत्रबाजे गीतादिसे शालिग्राम शिलार्चन ॥ ३७ ॥ जो मनुष्य भक्तिपरायण होकर कलियुगमें करता है, वह सहस्र कोटिकल्पतक नारायणके समीप निवास करता है ॥ ३८ ॥ कोटि लिंगके दर्शन पूजनका जो फल है तथा स्तुतिका जो फल है वह एक शालिग्रामजीके पूजनसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फल होता है ॥ ३९ ॥ एक बारही शालिग्राम शिलाके पूजन करनेसे सांख्य वर्जित मनुष्यभी अवश्य मुक्तिको प्राप्त होते हैं ॥ ४० ॥ जहां शालिग्राम रूपसे केशव स्थित हैं, वहां यज्ञदेवता सिद्ध चौदह भुवनस्थित हैं ॥ ४१ ॥ जो मनुष्य शालिग्रामके आगे श्राद्ध करता है, उसके पितर सौ कल्पतक तृप्त होकर स्वर्गमें निवास करते हैं ॥ ४२ ॥ जो मनुष्य प्रतिदिन शालिग्रामका जलपान करते हैं, उनको सहस्र पंचगव्यके आचमनसेभी क्या प्रयोजन है ॥ ४३ ॥ जहां शालिग्राम शिला स्थित है, वहां तीन योजनपर्यन्त तीर्थ जानना, वहां दान होम

सकृदभ्यर्चनाल्लिंगेशालिग्रामशिलोद्भवे ॥ मुक्तिंप्रयांतिमनुजानूनंसांख्येनवर्जिताः ॥ ४० ॥ शालिग्रामशिलारूपीयत्रतिष्ठतिकेशवः ॥ तत्रयक्षाःसुराःसिद्धाभुवनानिचतुर्दश ॥ ४१ ॥ शालिग्रामशिलाग्रेतुयःश्राद्धंकुरुतेनरः ॥ पितरस्तस्यतिष्ठंतितृप्ताःकल्पशतंदिवि ॥ ४२ ॥ येपिबंतिनरानित्यंशालिग्रामशिलाजलम् ॥ पंचगव्यसहस्रैस्तुप्राशितैःकिंप्रयोजनम् ॥ ४३ ॥ शालिग्रामशिलायत्रतत्तीर्थंयोजनत्रयम् ॥ तत्रदानंचहोमश्चसर्वंकोटिगुणंभवेत् ॥ ४४ ॥ शालिग्रामशिलातोयंचक्रांकितशिलाजलैः ॥ मिश्रितंपिबतेयस्तुदेहेशिरसिधारयेत् ॥ ४५ ॥ तस्यचक्रांकितोदेहोभवेन्नास्त्यत्रसंशयः ॥ गुप्तंनपश्यतेकोपिलोकेसूर्यसुतंविना ॥ ४६ ॥ अतोन्यवारयद्दूतान्वैष्णवानांगृहोत्तमे ॥ भीतोवैष्णवभक्तानांपादोदकनिषेवणात् ॥ ४७ ॥

करना कोटिगुणा फल करता है ॥ ४४ ॥ शालिग्रामका जल और चक्र अंकित शिलाके जलसे जो मिलाकर पान करते हैं वा देह और शिरपर धारण करते हैं ॥ ४५ ॥ उसका देह विष्णुके चक्रसे स्वयं अंकित होजाता है इसमें संदेह नहीं, वह गुप्त रहता है उसको यमके विना कोई नहीं देख सकता ॥ ४६ ॥ इसकारण हरिभक्तोंके स्थानसे दूतोंको निवारण किया है, हरिभक्तोंके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चरणोदक सेवन से भीत है ॥ ४७ ॥ जो नदी सागरमें नहीं मिलती है वह माघमें स्नान करनेसे त्रिरात्र फल देती है, समुद्रगामिनी एक पखवारेका, सागर एक महीनेका ॥ ४८ ॥ गोदावरी छः महीनेका, गंगा एक वर्षका और भगवानका चरणोदक बारह वर्ष माघस्नान के फलका देनेवाला है ॥ ४९ ॥ करोड सहस्र तीर्थोंके सेवनसे क्या प्रयोजन है, यदि शालिग्राम शिलाके जलकी प्राप्ति होती हो ॥ ५० ॥ जो शालिग्रामका जल एक बिन्दु मात्र पान कर ले वा माताके दुग्धमें मिलाय पान करै तो वह मनुष्य मुक्तिका अधिकारी होता है

त्रिरात्रफलदोमाघोयाःकाश्चिदसमुद्रगाः ॥ समुद्रगास्तुपक्षस्यमासस्यसरितांपतिः ॥४८॥ षण्मासफलदागोदावत्सरस्यतुजाह्नवी ॥ पादोदकंभगवतोद्वादशाब्दफलप्रदम् ॥ ४९ ॥ कोटितीर्थसहस्रैस्तुसेवितैःकिंप्रयोजनम् ॥ तोयंयदिभवेत्पुण्यंशालिग्रामसमुद्भवम् ॥ ५० ॥ शालिग्रामशिलातोयंयःपिबेद्बिंदुमात्रकम् ॥ मातुःस्तन्यरसेनैवसभवेन्मुक्तिभाङ्नरः ॥ ५१ ॥ शालिग्राम समीपेतुक्रोशमात्रंसमंततः ॥ कीटकोपिमृतोयातिवैकुंठभवनंद्दढम् ॥ ५२ ॥ शालिग्रामशिलाचक्रंयोदद्याद्दानमुत्तमम् ॥ भूचक्रंतेनदत्तंस्यात्सशैलवनकाननम् ॥ ५३ ॥ शालिग्रामशिलायास्तुमौल्यंचैवकरोतियः ॥ विक्रेताचानुमंताचयःपरीक्षानुमोदकः ॥५४॥ तेसर्वेनरकंयांतियावदाभूतसंप्लवम् ॥ अतस्तद्वर्जयेद्वैश्यचक्रस्यक्रयविक्रयम् ॥ ५५ ॥

॥ ५१ ॥ शालिग्रामके समीप कोशपर्यन्त यदि कोई कीटभी मरजाय तो वह मुक्तिका अधिकारी हो वैकुंठको जाता है इसमें संदेह नहीं ॥ ५२ ॥ शालिग्राम शिला चक्रका जो उत्तम दान करता है, उसने मानो पर्वत वनसहित भूमिचक्र प्रदान करदीं ॥ ५३ ॥ और जो शालिग्राम शिलाका मूल्य करता है, बेचता वा उसमें सम्मति देता है परीक्षामें अनुमोदन करता है ॥ ५४ ॥ वह प्रलयतक नरकको जाते हैं, हे वैश्य !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इसकारण चक्रका क्रय विक्रय करना उचित नहीं ॥ ५५ ॥ हे वैश्य ! बहुत कहनेसे क्या है पापसे डरने वालेको सब पाप दूर करने वाले वासुदेवका स्मरण नित्य करना चाहिये ॥ ५६ ॥ जो मनुष्य वनमें घोर तप करके जितेन्द्रिय होकर जो फल प्राप्त करता है, वह गरुडध्वजके नामस्मरण करनेसे प्राप्त होता है ॥ ५७ ॥ मोहसे युक्त होकर मनुष्य अनेक प्रकारके पाप करकेभी सब पापहारी हरिको प्रणाम कर फिर नरकको नहीं प्राप्त होता है ॥ ५८ ॥ पृथ्वीमें जितने तीर्थ और पवित्र पुण्य स्थान हैं, वह सब विष्णुके नाम कीर्तन करनेसेही प्राप्त होजाते

बहुनोक्तेनकिंवैश्यकर्तव्यंपापभीरुणा ॥ स्मरणंवासुदेवस्यसर्वपापहरंसदा ॥ ५६ ॥ तपस्तप्त्वानरोघोरमरण्येनियतेंद्रियः ॥ यत्फलं समवाप्नोतितत्स्मृत्वागरुडध्वजम् ॥ ५७ ॥ कृत्वातुबहुधापापंनरोमोहसमन्वितः ॥ नयातिनरकंनत्वासर्वपापहरंहरिम् ॥ ५८ ॥ पृथिव्यांयानितीर्थानिपुण्यान्यायतनानिच ॥ तानिसर्वाण्यवाप्नोतिविष्णोर्नामानुकीर्तनात् ॥ ५९ ॥ देवंशार्ङ्गधरंविष्णुंयेप्रपन्नाः परायणम् ॥ नतेषांयमसालोक्यंनतेवानरकौकसः ॥ ६० ॥ वैष्णवःपुरुषोवैश्यशिवनिंदांकरोतियः ॥ नगच्छेद्वैष्णवंलोकंसयाति नरकंध्रुवम् ॥ ६१ ॥ उपोष्यैकादशीमेकांप्रसंगेनापिमानवः ॥ नयातियातनांयाम्यामितिनोयमतःश्रुतम् ॥ ६२ ॥ नेदृशंपावनं किंचित्त्रिषुलोकेषुविद्यते ॥ तादृशंपद्मनाभस्यदिनंपातकनाशनम् ॥ ६३ ॥

हैं ॥ ५९ ॥ जो लोग शार्ङ्ग धनुषधारी नारायणकी शरणको प्राप्त हुए हैं, वे यमलोकको नहीं जाते, न उनको नरक वास होता है ॥ ६० ॥ हे वैश्य ! जो वैष्णव होकर शिवकी निन्दा करते हैं वह वैष्णव लोकको नहीं जाते और नरकको प्राप्त होते हैं ॥ ६१ ॥ जो मनुष्य प्रसंगसेभी एकादशीका व्रत करता है, वह यमके दुःखको नहीं प्राप्त होता, ऐसा हमने यमराजसे सुना है ॥ ६२ ॥ इसकी समान त्रिलोकीमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पवित्र कोई नहीं है, जैसी यह एकादशी पाप की दूर करने वाली हैं ॥ ६३ ॥ हे वैश्य ! तभीतक देहमें पातक निवास करते हैं, जबतक मनुष्य एकादशीका व्रत नहीं करते हैं ॥ ६४ ॥ हजार अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञका फलभी एकादशीकी षोडश कलाकी समान नहीं है ॥ ६५ ॥ हे वैश्य ! जो मनुष्यने ग्यारह इंद्रियों से पाप किया है, वह एकादशीके पुण्यसे सब नष्ट हो जाता है ॥ ६६ ॥ एकादशीकी समान त्रिलोकीमें कोई पुण्य नहीं है, जो किसी बहानेसेभी करते हैं वह यमलोकको

तावत्पापानिदेहेस्मिन्वसंतीहविशांवर ॥ यावन्नोपवसेज्जंतुःपद्मनाभदिनंशुभम् ॥ ६४ ॥ अश्वमेधसहस्राणिराजसूयशतानिच ॥
एकादश्युपवासस्यकलांनार्हतिषोडशीम् ॥ ६५ ॥ एकादशेंद्रियैःपापंयत्कृतंवैश्यमानवैः ॥ एकादश्युपवासेनतत्सर्वंविलयंव्रजे
त् ॥ ६६ ॥ एकादशीसमंकिंचित्पुण्यंलोकेनविद्यते ॥ व्याजेनापिकृतायैस्तुतेपियांतिनभास्करिम् ॥ ६७ ॥ सर्वभोग
प्रदाह्येषाशरीरारोग्यदायिनी ॥ सुकलत्रप्रदाचैषाजीवपुत्रप्रदायिनी ॥ ६८ ॥ नगंगानगयावैश्यनकाशीनचपुष्करम् ॥ नचा
पिकौरवंक्षेत्रंनरेवानचवेणिका ॥ ६९ ॥ यमुनाचंद्रभागाचदिनेननसमाहरेः ॥ अनायासेनयेनात्रप्राप्यतेवैष्णवंपदम् ॥ ७० ॥
रात्रौजागरणंकृत्वासमुपोष्यहरेर्दिनम् ॥ दशवैपैतृकेपक्षेमातृकेदशपूर्वजान् ॥ ७१ ॥

प्राप्त नहीं होते हैं ॥ ६७ ॥ यह सब भोगकी देनेवाली शरीरमें आरोग्यकी दाता है, अच्छी स्त्री और दीर्घायु पुत्रकी देनेवाली है ॥ ६८ ॥ हे वैश्य ! गंगा गया काशी पुष्कर कुरुक्षेत्र रेवा वेनी ॥ ६९ ॥ यमुना चन्द्रभागाका स्नान कोईभी काशीके समान नहीं है, वे मनुष्य अनायाससे वैष्णव पदको प्राप्त होते हैं ॥ ७० ॥ रात्रिमें जागरण करके एकादशीके दिन व्रत करके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पैतृक पक्षमें दश माताके पक्ष में दश ॥ ७१ ॥ प्रियके पक्षके भी दश सन्तानोंको उद्धार करता है इस में सन्देह नहीं वह सब संगसे निर्मुक्त होकर भगवानके लोकको प्राप्त होता है ॥ ७२ ॥ माला पितांबरधारी हरि मंदिरको प्राप्त होते हैं बालक पन यौवन और बुढापा ॥ ७३ ॥ इनमें एकादशीके व्रतकरनेवाले पापसे दुर्गतिको प्राप्त नहीं होते तीन रात व्रतकरके और तीर्थमें मज्जन करके ॥ ७४ ॥ सुवर्ण तिल गोदान करकै मनुष्य स्वर्गको प्राप्त होते हैं। हे वैश्य ! जो तीर्थमें स्नान नहीं करते जिन्होंने सुवर्णका दान नहीं किया ॥ ७५ ॥ अथवा जिन्होंने कुछ तप

प्रियायादशवैश्यैतान्समुद्धरतिनिश्चितम् ॥ तएवसंगनिर्मुक्तानागारिकृतकेतनाः ॥ ७२ ॥ स्रग्विणःपीतवस्त्राहिप्रयांतिहरिमंदिरम् ॥
बालत्वेयौवनेवापिवृद्धत्वेवाविशांवर ॥ ७३ ॥ उपोष्यैकादशींनूनंनैतिपापोपिदुर्गतिम् ॥ उपोष्येहत्रिरात्राणिकृत्वातीर्थेचमज्जनम् ॥
॥ ७४ ॥ दत्वाहेमतिलान्गाश्चस्वर्गतिंयांतिमानवाः ॥ तीर्थेनस्नांतियेवैश्यनदत्तंकांचनंतुयैः ॥ ७५ ॥ नैवतप्तंतपःकिंचित्तेस्युःसर्व
त्रदुःखिताः ॥ संक्षिप्यवच्मितेधर्मनरकस्यनिवारकम्॥७६॥ अद्रोहःसर्वभूतेषुवाङ्मनःकायकर्मभिः॥इंद्रियाणांनिरोधश्चदानंचहरिसे
वनम्॥ ७७ ॥ वर्णाश्रमाणांधर्माणांपालनंविधितःसदा ॥ स्वर्गार्थीसर्वदावैश्यतपोदानंचकीर्तयेत् ॥७८॥यथाशक्तिसमंदद्यादात्मनो
हितमिच्छता॥उपानच्छत्रवस्त्रादिह्यन्नंमूलंफलंजलम्॥७९॥अवंध्यंदिवसंकुर्यान्नदरिद्रैर्हिमानवैः॥इहलोकेपरेचैवनादत्तमुपतिष्ठति ८०

नहीं किया वे सर्वत्र दुःखी होते हैं मैं आपसे संक्षेपसे नरक निवारक धर्मको कहताहूं ॥ ७६ ॥ जो मन वचन कर्मसे किसीका द्रोह नहीं करते हैं इन्द्रियोंका विरोध और नारायणकी सेवा ॥ ७७ ॥ वर्णाश्रम धर्मका पालन करना तप और दान स्वर्गकी इच्छा करने वाला सदा करै ॥ ७८ ॥ अपने हितकी इच्छा करकै उपानह छत्र वस्त्र अन्न मूल फल जल ॥ ७९ ॥ यह बात निरन्तर आचरण करनी चाहिये दरिद्री यह नहीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर सकते धनी इसको सदा करै इस लोक वा परलोक में विना दिये नहीं मिलता है ॥ ८० ॥ ऐसा जानकर अपनी शक्तिके अनुसार सदा दान करना चाहिये दानी पुरुष यमकी यातनाको नहीं देखते हैं ॥ ८१ ॥ वारंवार दीर्घायु और धनाढ्यताको प्राप्त होते हैं बहुत कहनेसे क्या है अधर्मसे दुर्गतिको प्राप्त होते हैं ॥ ८२ ॥ धर्मसेही मनुष्य स्वर्गको सदा प्राप्त होते हैं इस कारण बालकपनसे लेकरही धर्मका संग्रह करना चाहिये ॥ ॥ ८३ ॥ यह सब मैंने तुमसे कहा और फिर क्या सुननेकी इच्छा करते हो ॥ ८४ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे माघमाहात्म्ये

इतिमत्वासदाचैवदातव्यंतुस्वशक्तितः ॥ दातारोनैवपश्यंतितांतांहियमयातनाम् ॥ ८१ ॥ दीर्घायुषोधनाढ्यास्तेभवंतीहपुनः पुनः ॥ किमत्रबहुनोक्तेनयांत्यधर्मेणदुर्गतिम् ॥ ८२ ॥ आरोहंतिदिवंधर्मैर्नराःसर्वत्रसर्वदा ॥ तेनबालत्वमारभ्यकर्तव्यो धर्मसंग्रहः ॥ ८३ ॥ इतितेकथितंसर्वंकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ ८४ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेउत्तरखंडेमाघमाहात्म्येवसिष्ठ दिलीपसंवादेविकुंडलदूतसंवादेशालिग्रामशिलामहिमावर्णनंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ विकुंडलउवाच ॥ ॥ श्रुत्वातववचः सौम्यप्रसन्नंमममानसम् ॥ गंगेवतापहंसद्यःपापहागीःसतांयतः ॥ १ ॥ उपकर्तुंप्रियंवक्तुंगुणोनैसर्गिकःसताम् ॥ शीतांशुःक्रियतेये नशीतलोमृतमंडलः ॥ २ ॥ देवदूततातोब्रूहिकारुण्यान्ममपृच्छतः ॥ नरकान्निर्गतिःसद्योभ्रातुर्मेजायतेकथम् ॥ ३ ॥

भाषाटीकायां वसिष्ठ दिलीप संवादे शालिग्राम महिमा वर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ विकुंडलबोले हे सौम्य ! तुम्हारा वचन श्रवण कर मेरा मन प्रसन्न हुआ गंगाकी समान ताप रहित होकर सत्पुरुषोंके वचन कहने योग्य हुआहूं ॥ १ ॥ सत्पुरुषोंका स्वाभाविक धर्म है कि श्रेष्ठपुरुषोंका उपकार करते हैं जो चन्द्रमाको शीतल अमृतमय करते हैं ॥ २ ॥ हे दूत ! मेरे पूछनेसे कृपाकरके कहिये मेरे भाईकी नरकसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किस प्रकार निष्कृति होती है ॥ ३ ॥ दत्तात्रेय बोले वह उनके वचन सुनकर देवदूत कहने लगा ज्ञान दृष्टिसे विचारकर उसकी मित्रतासे बंधनको प्राप्त हुआ ॥ ४ ॥ दूत बोला हे वैश्य बीते आठवे जन्ममें जो तैंने पुण्य संचय किया है सो भाईको दीजिये विकुंडल बोला वह क्या पुण्य है कैसे हुआ किसजन्ममें मैं पहले हुआ हे दूत ! वह शीघ्र कहो मैं उस सब पुण्यको दूंगा ॥ ५ ॥ ६ ॥ दूत बोला हे वैश्य ! सुन हेतु सहित

॥ दत्तात्रेयउवाच ॥ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वादेवदूतोजगादह ॥ ज्ञानदृष्ट्याक्षणंध्यात्वातन्मैत्रीरज्जुबंधनः ॥ ४ ॥ ॥ दूतउवाच ॥ ॥ गतेवैश्याष्टमेपुण्यंत्वयाजन्मनिसंचितम् ॥ तद्भ्रात्रेदीयतांशीघ्रंतस्यस्वर्गंयदीच्छसि ॥ ५ ॥ ॥ विकुंडलउवाच ॥ ॥ किंतत्पुण्यंकथंजातंकिंजन्माहंपुराभवम् ॥ तत्सर्वंकथ्यतांदूततच्चदास्यामिसत्वरम् ॥ ६ ॥ ॥ दूतउवाच ॥ शृणुवैश्यप्रवक्ष्यामित्वत्पुण्यंचसहेतुकम् ॥ पुरामधुवनेपुण्येमुनिरासीच्छाकलिः ॥ ७ ॥ तपोध्ययनसंपन्नस्तेजसाब्रह्मणा समः ॥ जज्ञिरेतस्यरेवत्यांनवपुत्राग्रहाइव ॥ ८ ॥ ध्रुवःशशीबुधस्तारोज्योतिष्मानत्रपंचमः ॥ अग्निहोत्रप्रियाह्येतेग्रहधर्मेषु रेमिरे ॥ ९ ॥ निर्मोहोजितमायश्चध्यानकामोगुणातिगः ॥ एतेगृहवियुक्तास्तुचत्वारोद्विजसूनवः ॥ १० ॥ चतुर्थाश्रमसंपन्नाःसर्वकर्मसुनिस्पृहाः ॥ ग्रामैकवासिनःसर्वेनिःसंगानिःपरिग्रहाः ॥ ११ ॥

मैं तेरा पुण्य कहताहूं पहले मधुवनमें एक शाकलि मुनि थे ॥ ७ ॥ तप और वेदपाठसे सम्पन्न तेजमें ब्रह्माकी समान उसकी स्त्री रेवती में ग्रहोंकी समान नौ पुत्र हुए ॥ ८ ॥ ध्रुव, शशी, बुध, तार, ज्योतिष्मान्, यह पांच अग्निहोत्र, प्रिय होके गृहधर्मोंमें रमण करते रहे॥ ९॥ निर्मोह, जितमाय, ध्यानकाम, गुणातिग यह चार पुत्र उस्के विरक्त हुए ॥ १० ॥ संन्यास आश्रममें सम्पन्न सम्पूर्ण कर्मोंमें इच्छा न करनेवाले एकही गांवमें सब निवासकरनेवाले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथा सब कर्मोंमें इच्छा न करनेवाले हुए न विवाह किया ॥ ११ ॥ शिखा उपवीत रहित मट्टी सुवर्ण में एक दृष्टिवाले जिस किसी प्रकार से कुछ वस्त्र धारे ज्यों त्यों कुछ खातेथे ॥ १२ ॥ संध्याकालके समय नित्य ध्यान में परायण थे निद्रा आहार जीते वात शीतके सहनेवाले ॥ १३ ॥ चराचर जगतको विष्णु रूप देखनेवाले मौन धारे पृथ्वी में विचरण करते फिरते थे ॥ १४ ॥ और वे योगी अणुमात्र भी कुछ क्रिया नहीं करते थे दृढज्ञानी सन्देह रहित चित् विचारमें विशारद ॥ १५ ॥ इस प्रकार वे तुम्हारे आठवें जन्ममें विप्ररूपसे पुत्रदार कुटुम्बी हुए मत्स्यदेशमें स्थित थे ॥ १६ ॥

निःशिखानोपवीताश्चसममृष्टाश्मकांचनाः॥येनकेनचिदाच्छंनायेनकेनचिदाशिताः॥१२॥सायंगृहास्तथानित्यंब्रह्मध्यानपरायणाः॥
जितनिद्राजिताहारावातशीतसहिष्णवः॥१३॥पश्यंतेविष्णुरूपेणजगत्सर्वंचराचरम्॥चरंतिलीलयापृथ्वींतेन्योन्यंमौनमास्थिताः १४
नकुर्वंतिक्रियांकिंचिदणुमात्रांहियोगिनः ॥ दृढाज्ञानाअसंदेहाश्चिद्विचारविशारदाः ॥ १५ ॥ एवंततविप्रस्यपूर्वमष्टमजन्मनि ॥
तिष्ठतोमत्स्यदेशेषुपुत्रदारकुटुंबिनः ॥ १६॥ गेहंतावकमाजग्मुर्मध्याह्नेक्षुत्पिपासिताः ॥वैश्वदेवोत्तरेकालेत्वयादृष्टागृहांगणे ॥१७॥
सगद्गदंसाश्रुनेत्रंसहर्षंचससंभ्रमम् ॥ दंडवत्प्रणिपातेनबहुमानपुरःसरम् ॥ १८ ॥ प्रणम्यचरणोस्पृष्ट्वाकृत्वापाणिपुटांजलिम् ॥
तदाभिनंदिताःसर्वेतयासूनृतयागिरा॥१९॥अद्यमेसफलंजन्मसफलंजीवितंमम॥ अद्यविष्णुःप्रसन्नोऽभूत्सनाथोस्म्यद्यपावितः॥ २०॥

तुम्हारे समीप मध्याह्नमें भूंखे प्यासे होकर तुम्हारे स्थान में आये वैश्वदेव करनेके उपरान्त तुमने उनको आंगनमें देखा ॥ १७ ॥ गद्गद कंठ नेत्रोंमें आंसू भरे हर्ष और संभ्रमसे युक्त दंडवतकर बहुत मानसे युक्त ॥ १८ ॥ प्रणाम कर चरण छूकर हाथ जोड मनोहर वाणीसे तुमने सबको आनंदित किया ॥ १९ ॥ आज मेरा जन्म और जीवन सफल हुआ आज विष्णु हमपर प्रसन्न हुए आज मैं सनाथ और पवित्र हुआ ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैं धन्य मेरा घर धन्य आज मेरी स्त्री धन्य है आज हमारे पितर गौ श्रुति (वेद) धन धन्य है ॥ २१ ॥ जो मैंने तीनों तापके दूर करनेवाले तुम्हारे चरणोंका दर्शन किया आपके दर्शनसे हरि दर्शनकी समान सब धन्य है ॥ २२ ॥ इस प्रकार से उनका पूजन कर तुमने चरण धोये और परम श्रद्धा से चरणोंका जल शिरपर धारण किया ॥ २३ ॥ हे वैश्य ! यतिके चरणोंका जल पुराकृत पापोंको दूर करता है सात जन्मके अर्जन किये पाप तत्काल ही दूर होते हैं, जो श्रद्धासे धारण करै ॥ २४ ॥ गंध पुष्प अक्षत धूप नीरांजनसे युक्त उन पतियोंका सत्कार कर परम श्रमसे भोजन कराया ॥ २५ ॥

धन्योस्मिमेगृहंधन्यंधन्यामेऽद्यकुटुंबिनी ॥ ममाद्यपितरौधन्यौधन्यागावःश्रुतंधनम्॥२१॥यद्दृष्टौभवतांपादौतापत्रयहरौमया ॥ भवतां दर्शनंयस्माद्धन्यंसर्वहरेरिव ॥ २२ ॥ एवंसंपूज्यतेषांतुचरणक्षालनंत्वया ॥ धृतंमूर्ध्निचपादोदःश्रद्धयापरयातदा ॥ २३ ॥ यतिपादोदकंवैश्यहंतिपापंपुराकृतम् ॥ सप्तजन्मार्जितंसद्यःश्रद्धयापरयाधृतम् ॥ २४ ॥ गंधपुष्पाक्षतैर्धूपैर्नीराजनपुरःसरम् ॥ संपूज्यसंस्कृतैरन्नैर्भोजितायतयस्त्वया ॥ २५ ॥ तृप्ताःपरमहंसास्तेविश्रांतामंदिरेनिशि ॥ ध्यायंतश्चपरंब्रह्मयज्ज्योतिर्ज्योतिषांवरम् ॥ २६ ॥ तेषामातिथ्यजंपुण्यंजातंतेयद्विशांवर ॥ नतद्वक्त्रसहस्रेणवक्तुंशक्तोस्म्यहंखलु ॥ २७ ॥ भूतानांप्राणिनःश्रेष्ठाःप्राणिनांबुद्धिजीविनः ॥ बुद्धिमत्सुनराःश्रेष्ठानरेषुब्राह्मणाःस्मृताः ॥२८॥ ब्राह्मणेषुचविद्वांसोविद्वत्सुकृतबुद्धयः ॥ कृतबुद्धिषुकर्तारःकर्तृषुब्रह्मवेदिनः॥२९॥

वे परमहंस तृप्त होकर उस रातको तुम्हारे मंदिरमें वसे परब्रह्म ज्योतिस्वरूपको ध्यान करते हुए ॥ २६ ॥ हे वैश्य ! उनके अतिथि सत्कारका जो पुण्य तुझको हुआ मैं उसको सहस्रमुखसे नहीं कह सकता ॥ २७ ॥ भूतोंमें प्राणी श्रेष्ठ प्राणियोंमें बुद्धिसे जीनेवाले श्रेष्ठ, बुद्धिमानोंमें मनुष्य श्रेष्ठ मनुष्योंमें ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं ॥ २८ ॥ ब्राह्मणोंमें विद्वान् विद्वानोंमें कृतबुद्धि कृतबुद्धियोंमें करनेवाले उनमेंभी ब्रह्मवादी श्रेष्ठ हैं ॥ २९ ॥ इस कारण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रिलोकीमें श्रेष्ठ उनका पूजन आवश्य करना चाहिये, हे वैश्य ! श्रेष्ठ उनकी संगति महापातकोंके नाश करनेवाली है ॥ ३० ॥ सतो गुणमें स्थित ब्रह्मवादी गृहस्थियोंके घरमें विश्रामको प्राप्त होकर जन्मके संचित पापोंको एक क्षणमें नाश करते हैं ॥ ३१ ॥ सो आठवें पूर्व जन्मका पुण्य इस प्रकार तैने संचय किया है, सो पुण्य अपने भाईको दे, इससे तेरा भाई नरकसे छूट जायगा ॥ ३२ ॥ इस प्रकार दूतके वचन सुनकर उसने शीघ्रतासे पुण्यप्रदान किया और प्रसन्न मन हो उसका भाई नरकसे निर्गत हुआ ॥ ३३ ॥ और दोनों देवताओंसे पूजित हो स्वर्गको गये, देवता-

अतएवहिपूज्यास्तेयस्माच्छ्रेष्ठाजगत्त्रये ॥ यत्संगतिर्विशांश्रेष्ठमहापातकनाशिनी ॥ ३०॥ विश्रांतागृहिणोगेहेसत्त्वस्थाब्रह्मवादिनः ॥ आजन्मसंचितंपापंनाशंयातिक्षणेनवै ॥३१॥ इतितेसंचितंपुण्यमष्टमेपूर्वजन्मनि ॥ स्वभ्रात्रेदेहितत्पुण्यंनरकाद्येनमुच्यते ॥३२॥इति दूतवचःश्रुत्वादद्यौपुण्यंससंत्वरम् ॥हृष्टेनचेतसाभ्रात्रेनिरयात्सोपिनिर्गतः॥३३॥देवैस्तौपुष्पवर्षेणपूजितौचदिवंगतौ॥ताभ्यांचपूजितः सम्यग्गतोदूतोयथागतम्॥३४॥अखिलजनसुबोधंदेवदूतस्यवाक्यंनिगमवचनतुल्यंवैश्यपुत्रोनिशम्य ॥ स्वकृतसुकृतदानाद्भ्रातरंतारयित्वासुरपतिवरलोकंतेनसार्धंजगाम ॥३५॥ इतिहासमिमंराजन्यःपठेच्छृणुयादपि ॥ सगोसहस्रदानस्यविपापोलभतेफलम् ॥३६॥

॥ इति श्रीपद्मपुराणेउत्तरखंडेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादे श्रीकुंडलविकुंडलयोः स्वर्गगमनंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥

ओंने उनपर फूल वर्षाये और उनसे पूजित हो देवदूत यथायोग्य अपने स्थानोंको गये ॥ ३४ ॥ यह देवदूतके वाक्य सब जनोंको बुद्धिदाता वेद वचनकी समान सुनकर वैश्य पुत्र सुनकर अपने पुण्य देकर भाईको तारकर उसके साथ इन्द्रलोकको गया ॥ ३५ ॥ हे राजन् ! जो इस इतिहासको पढै और सुने वह पापरहित हो सहस्र गोदानका पुण्य प्राप्त करते हैं ॥ ३६ ॥ ॥ इति श्रीमाघमाहात्म्ये भाषाटीकायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कार्तवीर्य बोले हे महर्षे ! किस कारणसे माघस्नानका बड़ा प्रभाव कहा जाता है, सो आप मुझसे कहिये ॥ १ ॥ जो एक माघके स्नानसे पापरहित हो दूसरेके फलसे स्वर्गको गया, माघका पुण्य वैश्यको ऐसा किसप्रकार प्राप्त हुआ यह कुतूहल मुझसे कहिये ॥ २ ॥ दत्तात्रेय बोले हे पुरुष श्रेष्ठ ! स्वभावसेही जल पवित्र निर्मल शुचि और पाण्डुरवर्ण है, मल नाशक द्रावक और दाह नाशक है ॥ ३ ॥ सब प्राणियोंका तारक पुष्टि और जीवन करनेवाला है जल नारायण देवहैं ऐसा सब वेदोंमें पढ़ा जाता है ॥ ४ ॥ ग्रहोंमें जैसे सूर्य नक्षत्रोंमें जैसे चन्द्रमा इसी प्रकार महीनोंमें सब कर्मोंमें

॥ कार्तवीर्यउवाच ॥ हेतुनाकेनविप्रर्षेमाघस्नानेमहाद्भुतः॥प्रभावोवर्ण्यतेनूनंतन्मेकथयसुव्रत॥१॥गतपापोयदेकेनद्वितीयेनदिवंगतः ॥ वैश्योऽसौमाघपुण्येनब्रूहिमेतत्कुतूहलम् ॥ २ ॥ दत्तात्रेयउवाच ॥ निसर्गात्सलिलंमेध्यंनिर्मलंशुचिपांडुरम् ॥ मलहंपुरुषव्याघ्रद्राव कंदाहनाशनम् ॥३ ॥ तारकंसर्वभूतानांपोषणंजीवनंचयत् ॥ आपोनारायणोदेवःसर्ववेदेषुपठ्यते ॥४॥ ग्रहाणांचयथासूर्योनक्षत्राणां यथाशशी ॥ मासानांचतथामाघःश्रेष्ठःसर्वेषुकर्मसु ॥५॥ मकरस्थेरवौमाघेप्रातःकालेतथाऽमले॥गोष्पदेऽपिजलेस्नानंस्वर्गदंपापिनाम पि॥६॥ योगोऽयंदुर्लभोराजंस्त्रैलोक्येसचराचरे॥अस्मिन्योगेत्वशक्तोपिस्नायाद्यदिदिनत्रयम्॥७॥ दद्यात्किंचिदशक्तोपिदरिद्राभाववां च्छया॥त्रिस्नानेनापिमाघस्यधनिनोदीर्घजीविनः॥८॥पंचवासप्तवाऽहानिचंद्रवद्वर्धतेफलम्॥संप्राप्तेमकरादित्येपुण्येपुण्यप्रदेनृणाम्॥९॥

माघ श्रेष्ठ है ॥ ५ ॥ मकरके सूर्य होनेमें माघमासको प्रभातके समय गौके खुर मात्र जलमेंभी स्नान करनेसे पापियोंको स्वर्ग प्राप्त होता है ॥ ६ ॥ हे राजन् ! यह योग माघका त्रिलोकी और चराचरको दुर्लभ है इस योगमें जो कोई तीनदिनभी स्नान करे ॥ ७ ॥ और दरिद्रके अभाव होनेके निमित्त कुछभी दे माघमें तीनबार स्नान करनेसे धनी दीर्घ जीवी होते हैं ॥ ८ ॥ पांच वा सातदिनमें चन्द्रमाकी समान फल बढता है, परमपवित्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुण्य देनेवाले मकरके सूर्य प्राप्त होनेमें मनुष्योंको ॥ ९ ॥ स्नानदानके समय अतिथियोंका सत्कार करना चाहिये कर्ताको अक्षय और शाश्वत पदकी प्राप्ति होती है ॥ १० ॥ इस कारण अपने हितकी इच्छा करके माघमासमें बाहर स्नान करे अब माघस्नानकी विधि कहते हैं ॥ ११ ॥ मनुष्योंको इसमें कोई व्रतरूपी नियम करना चाहिये अति फलकी प्राप्तिके निमित्त पण्डित कुछ भोजन त्यागै ॥ १२ ॥ भूमिमें सोवै घृत तिलका

सत्कार्योस्तिथयःसर्वाःस्नानदानादिकर्मसु ॥ कर्तारंदापयंतीहह्यक्षयंशाश्वतंपदम् ॥ १० ॥ तस्मान्माघेबहिःस्नायादात्मनोहित
काम्यया ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिमाघस्नानविधिंपरम् ॥ ११ ॥ कर्तव्योनियमःकश्चिद्व्रतरूपीनरोत्तमैः ॥ फलातिशयहेतोर्वैकिं
चिद्भोज्यंत्यजेद्बुधः ॥ १२ ॥ भूमौशयीतहोतव्यमाज्यंतिलविमिश्रितम् ॥ त्रिकालंचार्चयेद्विष्णुंवासुदेवंसनातनम् ॥ १३ ॥
दातव्योदीपकोऽखंडोदेवमुद्दिश्यमाधवम् ॥ इंधनंकंबलंवस्त्रमुपानत्कुंकुमंघृतम् ॥ १४ ॥ तैलंकार्पासकोष्ठंचतूलींदू[illegible]टींपटीम् ॥
अन्नंचैवयथाशक्तिदेयंमाघेनराधिप ॥ १५ ॥ सुवर्णरत्तिकामात्रंदद्याद्वेदविदेतथा ॥ तद्दानमक्षयंराजन्समुद्रइवसर्वदा ॥ १६ ॥
परस्याग्निंनसेवेतत्यजेच्चैवप्रतिग्रहम् ॥ माघांतेभोजयेद्विप्रान्यथाशक्तिनराधिप ॥ १७ ॥

हवन करे, तीनों कालमें वासुदेव सनातन विष्णुकी पूजा करे ॥ १३ ॥ भगवान माधवके उद्देश्यसे अखण्ड दीपदान दे इन्धन ऊर्णवस्त्र उपानत् (जूता) कुंकुम घृत ॥ १४ ॥ तैल कपास कोठला रुई तूलवटी (पीनी) वस्त्र और अन्न यथाशक्ति माघमें देना चाहिये ॥ १५ ॥ वेद जाननेवालेको रत्तीमात्र सोना देना उचित है हे राजन् ! वह दान समुद्रकी समान सदा अक्षय होता है ॥ १६ ॥ दूसरेकी अग्नि न सेवे, प्रतिग्रह न ले,

१ परान्नानि न सेवेत इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माघके अन्तमें ब्राह्मणोंको यथाशक्ति भोजन करावे ॥ १७ ॥ अपने कल्याणकी इच्छासे उनको दक्षिणा दे, एकादशीके विधानसे माघका उद्यापन करे ॥ १८ ॥ अक्षयस्वर्गकी इच्छा करके श्रद्धापूर्वक करे, अनन्तपुण्य और विष्णुकी प्रीतिके निमित्त यह सब करे ॥ १९ ॥ मकरके सूर्य माघमें प्राप्त होनेसे "गोविन्दायनमः अच्युतायनमः माधवायनमः" यह मंत्र पाठकर स्नान करनेसे यथोक्त फल मिलता है॥ २०॥यह मंत्र पढकर मौन हो स्नान करे, फिर वासुदेव हरिकृष्ण माधवका स्मरण करे ॥ २१ ॥ और घरमेंभी जलका भरा धरा घडा जिसे रात्रिमें वायुने स्पर्श किया है उसका स्नानभी

देयाचदक्षिणातेभ्यआत्मनःश्रेयइच्छता ॥ एकादशीविधानेनमाघस्योद्यापनंतथा ॥ १८ ॥ कर्तव्यंश्रद्दधानेनह्यक्षय्यस्वर्गवांछ
या ॥ अनंतपुण्यावाप्त्यर्थंविष्णुसंप्रीतिहेतवे ॥ १९ ॥ मकरस्थेरवौमाघेगोविंदाच्युतमाधव ॥ स्नानेनानेनभोदेवयथोक्तफलदो
भव ॥ २० ॥ इतिमंत्रंसमुच्चार्यस्नायान्मौनीसमाहितः ॥ वासुदेवंहरिंकृष्णंमाधवंचस्मरेत्पुनः ॥ २१ ॥ गृहेपिसजलंकुंभंवायुनानि
शिपीडितम् ॥ तत्स्नानंतीर्थसदृशंसर्वकामफलप्रदम् ॥ २२ ॥ तत्रव्रतेनदातव्यंसान्नंचोपस्करान्वितम् ॥ तत्स्नानस्यप्रभावेणनरोनानिर
यंव्रजेत् ॥ २३ ॥ तप्तेनवारिणास्नानंयद्गृहेक्रियतेनरैः ॥षडब्दफलदंतद्धिमकरस्थेदिवाकरे॥२४॥बहिःस्नानंतुवाप्यादौद्वादशाब्दफलं
स्मृतम् ॥ तडागेद्विगुणंराजन्ह्रदांचैवचतुर्गुणम् ॥२५॥शतधादेवखातेषुशतधातुमहानदे॥शतंचतुर्गुणंराजन्महानद्याश्चसंगमे॥ २६॥

तीर्थकी समान सब कामना देनेवाला है ॥२२॥ सामग्री सहित अन्न इसका व्रतकर देना चाहिये, उस स्नानके प्रभावसेभी मनुष्य नरकको नहीं जाते हैं ॥२३॥जिस घरमें मनुष्य तत्ते जलसे स्नान करतेहैं वह मकरके सूर्यका स्नान छः वर्षके स्नानका फल देताहै॥ २४ ॥बाहर बावडीआदिमें स्नान करनेसे बारह वर्षका फल होता है हे राजन् ! तालाबमें दूना और नदीमें चौगुना फल होताहै॥ २५॥ देव ह्रदमें सौगुना महानदमें सौगुना महानदी संगममें चार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सौगुना फल होता है॥ २६ ॥ मकरके सूर्यमें यह फल सहस्रगुण गंगास्नान करनेसे प्राप्त होजाता है॥ २७॥ हेराजन् ! जो माघमासमें गंगास्नान करतेहैं, वह चार सहस्र युगतक स्वर्गसे पतित नहीं होते हैं ॥ २८॥ हे राजन् ! जो दिन २ सहस्र सुवर्ण देनेका फल है वह माघमासमें गंगास्नानका फल है॥ २९॥ हे राजन् ! वह माघमें शत और सहस्र गुण फलकी प्राप्ति करता है जहां गंगा यमुनाका संगम है वहां ऋषियोंने यह पुण्य कहा है ॥ ३० ॥ हे राजन् ! प्रजापतिने पापसमूहोंके नाश करनेके निमित्त प्रजाके हितके निमित्त प्रयागकी रचनाकी है ॥ ३१ ॥ इस सित असित जलके स्थानको पापरूपी जीवों

सहस्रगुणितंसर्वंतत्फलंमकरेरवौ ॥ गंगायांस्नानमात्रेणलभतेमानवोनृप ॥ २७ ॥ गंगायांयेऽवगाहंतिमाघमासेनृपोत्तम ॥ चतुर्युगसहस्रंतुनपतंतिसुरालयात् ॥ २८ ॥ दिनेदिनेसहस्रंतुसुवर्णानांविशांपते ॥ तेनदत्तंतुगंगायांयोमाघेस्नातिमानवः ॥ २९ ॥ शतेनगुणितंमाघेसहस्रंराजसत्तम ॥ निर्दिष्टमृषिभिःस्नानंगंगायामुनसंगमे ॥ ३० ॥ पापौघभूरिभारस्यदाहार्थंचप्रजापतिः ॥ प्रयागंविदधे भूपप्रजानांचहितेस्थितः ॥ ३१ ॥ शृणुस्थानमिदंसम्यक्सितासितजलंकिल ॥ पापरूपपशूनांचब्रह्मणाविहितंपुरा ॥ ३२ ॥ सितासितजलेमज्जेदपिपापशतान्वितः ॥ मकरस्थेरवौमाघेनैवगर्भेषुमज्जति ॥ ३३ ॥ सूनारतोपियोमर्त्यःप्रयागेस्नानमाचरेत् ॥ माघे मासिनरव्याघ्रसयातिपरमंपदम् ॥ ३४ ॥ सितासितातुयाधारासरस्वत्याविगर्भिता ॥ तन्मार्गंविष्णुलोकस्यसृष्टिकर्तासरसर्जवै॥३५॥

के उद्धारके निमित्त प्रथम ब्रह्माजीने निर्माण किया है ॥ ३२ ॥ सैकडों पाप करनेवाला मनुष्य यदि प्रयाग में स्नान करे और माघका महीना हो तो वह पुरुष फिर गर्भमें नहीं आता ॥ ३३॥ असत्यवादी चुगली करनेवाला मनुष्य प्रयाग में स्नान करै हे राजन् ! वह माघमें स्नान करनेवाला परमपदको प्राप्त होता है ॥ ३४ ॥ जो गंगा यमुनाकी धार सरस्वतीके जलसे युक्त है वह ब्रह्माजीने विष्णु लोकका मार्ग कथन किया है ॥ ३५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैष्णवी माया बडी दुस्तर देवताओंको भी दुर्जय है हे राजन् ! वहभी माघमास प्रयाग में स्नान करनेसे नष्ट होती है॥ ३६॥तेजोमय लोकोंमें अनेक भोगोंको भोगकर पीछे माघस्नायी परमात्मामें लीन होजाते हैं॥ ३७॥जोमाघमास मकरकी संक्रान्तिको नाम करके सूर्यमें गंगा यमुनाको स्पर्श करता है चित्र गुप्त उसके पुण्यकी संख्या नहीं कह सकते ॥ ३८ ॥ जो मकरके सूर्य युक्त माघमासमें प्रयागमें स्नान करै उसके पुण्यका माहात्म्य ब्रह्माभी कथन

दुस्तरावैष्णवीमायादेवैरपिसुदुर्जया ॥ प्रयागेदह्यतेसातुमाघेमासिनराधिप ॥३६॥ तेजोमयेषुलोकेषुभुक्त्वाभोगाननेकशः ॥पश्चाच्च क्रिणिलीयंतेप्रयागेमाघमज्जनात् ॥ ३७ ॥ उपस्पृशतियोमाघेमकरार्केसितासिते ॥ नतत्पुण्यंचसंख्यातुंचित्रगुप्तोपिवेत्यलम् ॥३८॥ सन्निमज्जतियोमाघेमकरस्थेसितासिते ॥ तस्यपुण्यस्यमाहात्म्यंवक्तुंब्रह्मापिनक्षमः ॥ ३९ ॥ संवत्सरशतंसाग्रंनिराहारस्ययत्फलम् ॥ प्रयागेमाघमासेतुत्र्यहस्नानस्यतत्फलम् ॥ ४० ॥ स्वर्णभारसहस्रेणकुरुक्षेत्रेरविग्रहे ॥ यत्फलंलभतेमाघेवेण्याःस्नानाद्दिनेदिने ॥ ४१ ॥ राजसूयसहस्रस्यराजन्नविकलंफलम् ॥ सितासितेतुमाघेचस्नानानांभवतिध्रुवम् ॥ ४२ ॥ पृथिव्यांयानितीर्थानिपुर्यःसप्तचयाःपुनः ॥ वेण्यांस्नातुंसमायांतिमाघेमासिनृपोत्तम ॥ ४३ ॥

नहीं कर सकते॥ ३९॥सौ वर्षतक निराहार रहनेका जो फल है प्रयाग में तीन दिन माघस्नानसे वही फल मिलताहै ॥ ४० ॥ सूर्य ग्रहण पर कुरुक्षेत्र में सुवर्णके सहस्रभार दानका जो फल है वह माघमें दिन दिन वेणीके स्नानसे फल होता है ॥ ४१ ॥ हे राजन् ! सहस्र राजसूयका अविकल फल होताहै परन्तु माघमास प्रयागमें स्नान करनेसे निश्चल फल होता है॥ ४२॥ पृथ्वीमें जितने तीर्थ और सात तीर्थ हैं हे राजन् ! वे सब माघ मासमें वेणीके स्नान

१ तस्यपुण्यमसंख्यातं चित्रगुप्तोऽलिखत्फलमिति पाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

को आते हैं ॥ ४३ ॥ पापियोंके संग दोषसे सब तीर्थ कृष्ण होजाते हैं वह प्रयागमें माघस्नान करनेसे शुक्लवर्ण होते हैं ॥ ४४ ॥ कल्पोंके संग्रह किये अनेक जन्मोंमें जो पापमनुष्योंने किये हैं वह माघमें प्रयागस्नानसे भस्म होजाते हैं ॥ ४५ ॥ वाणी मन कायाके पाप मनुष्यके सब विलीन हो जाते हैं जो माघ मास प्रयागमें तीन दिन स्नान करते हैं ॥ ४६ ॥ प्रयाग माघ मासमें जो मनुष्य तीन दिन स्नान करताहै वह पापको सर्प की कैंचली की समान त्याग कर स्वर्ग को जाता है ॥ ४७ ॥ कुरुक्षेत्रकी समान गंगामें जहां कहीं स्नान किया है और जहां विन्ध्यपर्वत से

सर्वतीर्थानिकृष्णानिपापिनांसंगदोषतः ॥ भवंतिशुक्लवर्णानिप्रयागेमाघमज्जनात्॥४४॥आकल्पसंचितंपापंजन्मभिर्यन्नरैर्नृप ॥ तद्भवेद्भस्मसान्माघेस्नातानांचसितासिते ॥ ४५ ॥ वाङ्मनःकायजंपापंनरस्यविलयंव्रजेत् ॥ प्रयागेमाघमासेतुत्र्यहस्नातस्यनिश्चितम् ॥ ॥ ४६ ॥ प्रयागेमाघमासेयस्त्र्यहंस्नातिचमानवः ॥ पापंत्यक्त्वादिवंयातिजीर्णांत्वचमिवोरगः ॥ ४७ ॥ कुरुक्षेत्रसमागंगायत्र कुत्रावगाहिता ॥ तस्माद्दशगुणापुण्यायत्रविंध्येनसंगता ॥ ४८ ॥ तस्माच्छतगुणागंगाकाश्यामुत्तरवाहिनी ॥ काश्याःशतगुणा प्रोक्तागंगायामुनसंगमे ॥ ४९ ॥ सासहस्रगुणातासांभवेत्पश्चिमवाहिनी ॥ याराजन्दर्शनादेवब्रह्महत्यापहारिणी ॥५०॥ यापश्चाद्वाहिनीगंगाकालिंद्यासहसंगता ॥ हंतिकोटिकृतंपापंसामाघेनृपदुर्लभा ॥ ५१ ॥

संगत हुई है उस से दश गुणा अधिक पुण्य देती है ॥ ४८ ॥ काशी में उत्तर वाहिनी उस्से सौगुणा अधिक फल देती है, गंगा यमुना संगम काशी से सौगुणा अधिक फल देती है ॥ ४९ ॥ पश्चिमवाहिनी उससे सहस्र गुण अधिक फल देती है हे राजन् ! जो देखतेही ब्रह्महत्या दूर करतीहै ॥ ५० ॥ जो पश्चिम वाहिनी गंगा कालिन्दी से मिली है, हे राजन् ! वह माघमासमें करोडों पापों को दूर करती है ॥ ५१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे राजन् ! जिसको अमृत कहते हैं भूमि में वह वेणी कहाती है, माघमासमें मुहूर्त मात्रको उस की प्राप्ति देवताओंकोभी दुर्लभ है ॥ ५२ ॥ ब्रह्मा विष्णु महादेव रुद्र आदित्य मरुद्गण गंधर्व लोकपाल यक्ष किन्नर पन्नग ॥ ५३ ॥ अणिमा आदि गुणों से सिद्ध जो और तत्वादि हैं तथा ब्रह्माणी पार्वती लक्ष्मी शची मेना (हिमालय पत्नी) दिति अदिति ॥ ५४ ॥ (वारति) सब देवपत्नी और नागों की स्त्री घृताची मेनका रंभा उर्वशी तिलोत्तमा ॥ ५५ ॥ अप्सराओंके सम्पूर्ण गण पितृगण यह माघमासमें वेणी में सब स्नान करने को आतेहैं ॥ ५६ ॥ सतयुग में अपने स्वरूपसे और

यत्कथ्यतेऽमृतंराजन्सावेणीभुविकीर्तिता ॥ तस्यांमाघेमुहूर्ततुदेवानामपिदुर्लभम् ॥५२॥ ब्रह्माविष्णुर्महादेवोरुद्रादित्यमरुद्गणाः ॥ गंधर्वालोकपालाश्चयक्षकिन्नरपन्नगाः ॥ ५३ ॥ अणिमादिगुणैःसिद्धायेचान्येतत्त्ववादिनः ॥ ब्रह्माणीपार्वतीलक्ष्मीःशचीमेनाऽदितिर्दितिः ॥५४॥ सर्वास्तादेवपत्न्यश्चतथानागांगनानृप ॥ घृताचीमेनकारंभाउर्वशीचतिलोत्तमा ॥ ५५ ॥ गणाह्यप्सरसांसर्वेपितॄणांचगणास्तथा ॥ स्नातुमायांतितेसर्वेमाघेवेण्यांनराधिप ॥ ५६ ॥ कृतेयुगेस्वरूपेणकलौप्रच्छन्नरूपिणः ॥ प्रयागेमाघमासेतुत्र्यहस्नानस्ययत्फलम् ॥ ५७ ॥ नाश्वमेधसहस्रेणतत्फलंलभतेभुवि ॥ त्र्यहस्नानफलंमाघेपुराकांचनमालिनी ॥ राक्षसायददौभूपतेनमुक्तःसपापकृत् ॥ ५८ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेउत्तरखण्डेमाघमाहात्म्येप्रयागस्नानप्रशंसानामएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

कलियुग में प्रच्छन्नरूप से आते हैं, प्रयागमें माघस्नान में जो तीन दिन स्नान का फल है ॥ ५७ ॥ वह फल सहस्र अश्वमेधमे भी भूमि में प्राप्त नहीं होताहै पहले कांचन मालिनी ने माघमास में तीन दिनका फल राक्षसको दिया था उस्से वह पापात्मा मुक्त हुआ ॥ ५८ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखंडे माघमासमाहात्म्ये पण्डितज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकायां प्रयागस्नान प्रशंसानामएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

१ तथा रतिरिति पाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कार्तवीर्य बोले, हे भगवन् ! वह राक्षस कौन और वह कांचनमालिनी कौनथी ॥ १ ॥ किस प्रकार उसने धर्म दिया किस प्रकार उसकी सद्गति हुई हे अत्रिसंतानभास्कर ! यह वार्ता आप हमसे वर्णन कीजिये ॥ २ ॥ यदि आप इसका श्रवण कराना उचित समझें तो मुझे परम कौतूहल है. दत्तात्रेय बोले हे राजन् ! विचित्र पुरातन इतिहासको श्रवण करो ॥ ३ ॥ जिसके स्मरण मात्रसे वाजपेयका फल होता है. कांचनमालिनी बड़ी रूपवती अप्सरा एक थी ॥ ४ ॥ माघमास प्रयागमें स्नानकर शिवमंदिरको आतीथी. जो गिरिराज हिमवान्‌के निकुंजमें गिरिके समान शरीरसे

॥ कार्तवीर्यउवाच ॥ ॥ भगवन्राक्षसःकोऽसौसाकाकांचनमालिनी ॥ १ ॥ कथंदत्तवतीधर्मंकथंवातस्यसद्गतिः ॥ एतत्कथययोगीं द्रअत्रिसंतानभास्कर ॥ २ ॥ यदित्वंमन्यसेश्राव्यंपरंकौतूहलंहिमे ॥ ॥ दत्तात्रेयउवाच ॥ ॥ शृणुराजन्विचित्रंत्वमितिहासंपु रातनम् ॥ ३ ॥ यस्यस्मरणमात्रेणवाजपेयफलंलभेत् ॥ अप्सराऽरूपसंपन्नानाम्नाकांचनमालिनी ॥४॥ प्रयागेमाघमासेसास्नात्वाया तिहरालयम् ॥ निकुंजेगिरिराजस्यतिष्ठतागिरिरूपिणा ॥५॥ दृष्टागगनमारूढातेनवृद्धेनरक्षसा ॥ तेजस्विनीसुहेमाभासुश्रोणीदीर्घलो चना ॥६॥ चंद्राननासुकेशीचपीनोन्नतपयोधरा ॥ तांदृष्ट्वारूपसंपन्नामुवाचराक्षसस्तदा॥७॥कात्वंकमलपत्राक्षिकुतआगम्यतेत्वया॥ आर्द्रंचवसनंकस्मात्साद्रतिकबरीकुतः ॥ ८ ॥ कुत्रआगम्यतेभीरुकुतस्तेखेचरीगतिः ॥ केनपुण्येनवाभद्रेतवतेजोमयंवपुः ॥ ९ ॥

स्थित ॥ ५ ॥ उस वृद्ध राक्षसने उसको जो कि तेजस्विनी सुवर्णकी कान्तिवाली सुश्रोणी दीर्घलोचन थी आकाशमें आरूढ देखकर ॥ ६ ॥ जो कि चन्द्रमुखी सुकेशी उन्नतपीनपयोधरवाली रूपवती थी उसको देखकर वह राक्षस बोला ॥ ७ ॥ हे कमललोचने ! तुम कौनहो ? कहांसे आती हो ? तेरे वस्त्र और केश गीले क्यों हो रहे हैं ? ॥ ८ ॥ हे भीरू ! कहांसे आती हो ? आकाशचारी तुम्हारी गति कैसे है ? हे भद्रे ! किस पुण्यसे तुम्हारा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शरीर तेजोमय हो रहा है ॥ ९ ॥ तुम्हारा रूप अधिक मनोहर है हे सुलोचने ! तुम्हारे वस्त्रसे एक बिन्दुजल मेरे ऊपर गिरा ॥ १० ॥ जो मेरा मन सदा क्रूर था सो क्षणमात्रमें शान्त होगया, यह जलकी महिमा कैसी है ? सो हमसे कहिये ॥ ११ ॥ तुम मुझे शीलवती विदित होती हो; तुम्हारी आकृति निर्गुण नहीं होगी. अप्सरा बोली हे राक्षस ! सुन मैं कामरूपिणी अप्सरा हूं ॥ १२ ॥ मैं प्रयागसे आई हूं, मेरा नाम कांचनमालिनीहै मेरे वस्त्र इस कारण गीले हैं कि मैं अभी प्रयागमें स्नान किये आती हूं ॥ १३ ॥ हे राक्षस ! अब मैं पर्वतश्रेष्ठ कैलासको जाती हूं, वहां सुर

अतीवरूपसंपन्नंसंभूतंचमनोहरम्॥त्वद्वस्त्रविंदुपातेनममामूर्ध्निसुलोचने॥१०॥ क्षणेनह्यगमच्छांतिंक्रूरंमेमानसंसदा॥नीरस्यमहिमाको ऽयमेतद्वचाख्यातुमर्हसि ॥ ११ ॥ त्वंमेशीलवतीभासिनाकृतिर्निर्गुणाभवेत् ॥ अप्सराउवाच ॥ श्रूयतामप्सराश्चाहंभोरक्षःकामरू पिणी॥१२॥प्रयागतश्चागताऽहंनाम्नाकांचनमालिनी ॥ आर्द्रैःपरिकरोमेऽतःसुस्नाताहंसितासिते॥१३॥गंतव्यंतुमयारक्षःकैलासेतुनगो त्तमे ॥ तत्रास्तेपार्वतीनाथःसुरासुरसुपूजितः॥१४॥वेणीवारिप्रभावेणरक्षस्तेक्रूरतागता॥ जाताऽहंयेनपुण्येनगंधर्वस्यसुमेधसः॥१५॥ कन्यकादिव्यरूपातुतत्सर्वंकथयामिते ॥ कलिंगाधिपतेराज्ञस्त्वहमासीच्चवेश्यका ॥ १६ ॥ रूपलावण्यसंपन्नासौभाग्यमदगर्विता ॥ अन्यासांयुवतीनांचतत्पुरेऽहंशिरोमणिः ॥१७॥तज्जन्मनिमयारक्षोभुक्ताभोगान्यथेच्छया॥ मोहितंतत्पुरंसर्वंमयायौवनसंपदा॥१८॥

असुरोंसे पूजित पार्वतीनाथ निवास करते हैं ॥ १४ ॥ वेणीके जबके प्रभावसे हे राक्षस ! तेरी क्रूरता गई, जिस पुण्यसे मैं सुबुद्धि गन्धर्वकी कन्या श्रेष्ठ ॥ १५ ॥ दिव्यरूप कन्या हुई, वह सब तुझसे कहती हूं. मैं कलिंगाधिपति राजाकी वेश्या थी ॥ १६ ॥ रूपलावण्यसे सम्पन्न सौभाग्यके मदसे गर्वित और स्त्रियोंमें वहांमें शिरोमणिथी ॥ १७ ॥ हे राक्षस ! उस जन्ममें मैंने यथेच्छ भोग अपनी इच्छासे भोगे मेरी यौवनसम्पत्तिसे सब पुर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मोहित था ॥ १८ ॥ विचित्ररत्नभूषण धन चित्ररूप वस्त्र कर्पूर अगर चन्दन ॥ १९ ॥ मुझ मोहिनी रूपवालीने यह सब कुछ उपार्जन किया, हे निशाचर ! अपने निवासमें मैंने कभी हिमऋतुका अन्त न जाना ॥ २० ॥ काम पीडित अनेक युवा मेरे चरणोंको सेवन करतेथे, मैंने उनका सर्वस्व मायाजालसे हरण करलिया ॥ २१ ॥ कोई कामी परस्पर स्पर्धा करके मृत्युको प्राप्त हुए इस प्रकार नगरमें मेरी गति थी ॥ २२ ॥ जब

रत्नानिचविचित्राणिभूषणानिधनानिच ॥ वासांसिचित्ररूपाणिकर्पूरागुरुचंदनम् ॥ १९ ॥ एतच्चोपार्जितंसर्वंमयामोहनरूपया ॥ नाहंजानामिहेमंतंस्वनिवासेनिशाचर ॥ २० ॥ संसेवंतेयुवानोमेचरणौकामपीडिताः ॥ मयातेवंचिताःसर्वेसर्वस्वेनतुमायया ॥ ॥ २१ ॥ अन्योन्यस्पर्धाभावेनमृताःकेचित्तुकामिनः ॥ इत्थंतन्नगरेरम्येसकलेमेगतिस्तदा ॥ २२ ॥ प्राप्तेतुवार्द्धेककालेशुशोचहृदयंमम ॥ नदत्तंनहुतंजप्तंनव्रतंचरितंमया ॥ २३ ॥ नाराधितोमयादेवश्चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ नमयापूजितादेवीदुर्गादुर्गतिनाशिनी ॥ २४ ॥ सर्वपापहरोविष्णुर्नस्मृतोभोगलुब्धया ॥ नचसंतर्पिताविप्रानकृतंप्राणिनांहितम् ॥ २५ ॥ अणुमात्रमिदंपुण्यंनकृतंचप्रमादतः ॥ पातकंतुकृतंभद्रतेनमेदह्यतेमनः ॥ २६ ॥

वृद्धावस्था हुई तब मेरे हृदयमें शोच हुआ, न मैंने दान किया, न हवन और न जप किया ॥ २३ ॥ तथा चतुर्वर्गके फल देनेवाले देवका मैंने आराधन न किया- न मैंने दुर्गति नाशिनी दुर्गादेवीका पूजन किया ॥ २४ ॥ भोगके लोभसे सब पापहारी विष्णुका मैंने स्मरण न किया, न ब्राह्मणोंको तृप्त किया, न कुछ प्राणियोंका हित किया ॥ २५ ॥ और प्रमादसे अणुमात्र पुण्यभी न किया. हे भद्र! पापही किये इससे मेरा मन

१ धर्मंवै स्वनिवासे स्थितासती ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भस्म होने लगा ॥ २६ ॥ इस प्रकार मैं बहुत विलापकर ब्राह्मणकी शरण गई, वह विद्वान् ब्राह्मण उस राजाका पुरोहित था ॥ २७ ॥ हे राक्षस! उससे मैंने पूछा कि मेरा निस्तार कैसे होगा? हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! इस पापसे छूटकर मेरी सद्गति कैसे होगी?॥ २८॥ अपने कर्मसे तापित हुई वशकी दीनमन पापरूपी कीचमें पड़ी मुझको बाल ग्रहणकर उद्धारकरो ॥ २९ ॥ हे ब्राह्मण! हर्षकी दृष्टिसे मेरे ऊपर करुणाका जल वर्षाओ साधु महात्मा भले

बहुधैवंविलप्याहंब्राह्मणंशरणंगता ॥ ब्रह्मण्यंवेदविद्वांसंतस्यराज्ञःपुरोहितम् ॥ २७ ॥ सहिपृष्टोमयारक्षःकथंमेनिष्कृतिर्भवेत् ॥ पापस्यास्यद्विजश्रेष्ठकथंयास्यामिसद्गतिम् ॥ २८ ॥ स्वेनैवकर्मणातप्तांवराकींदीनमानसाम् ॥ पापपंकनिमग्नांत्वंमामुद्धरकचग्रहैः ॥ ॥ २९ ॥ मयिकारुण्यजंवारिवर्षहर्षदृशाद्विज ॥ सज्जनेसाधवःसर्वेसाधुःसाधुरसज्जने ॥ ३० ॥ इत्यसौमद्वचःश्रुत्वाचकारानुग्रहं मयि ॥ ऊचेप्रीतिकरंवाक्यंसर्वधर्ममयंद्विजः ॥ ३१ ॥ ॥ द्विज उवाच ॥ ॥ निषिद्धाचरणंजानेसर्वंतेऽहंवरानने ॥ कुरुमेसत्वरं वाक्यंयाहिक्षेत्रंप्रजापतेः ॥ ३२ ॥ तत्रगत्वाकुरुस्नानंतेनपापक्षयस्तव ॥ सर्वंमनोगतंभद्रेत्वदीयंशोचितंमया ॥ ३३ ॥ नाहम न्यत्प्रपश्यामियत्तेपापप्रणाशनम् ॥ प्रायश्चित्तंपरंतीर्थेस्नानंचऋषिभिःस्मृतम् ॥ ३४ ॥

बुरे सबपर कृपा करते हैं ॥ ३० ॥ इस प्रकार मेरे वचन सुन ब्राह्मणने मेरे ऊपर कृपा की और सब धर्मके सम्मित वचन मुझसे कहे ॥ ३१ ॥ ब्राह्मण बोले, हे वरानने! मैं तुम्हारे सब निषिद्ध आचरणको जानता हूं, तू मेरा वचन शीघ्र मानकर प्रजापतिके क्षेत्रको गमन कर ॥ ३२ ॥ वहां जाकर स्नानकर, उस्से तेरा पापक्षय होजायगा; हे भद्रे! मैंने सब तेरे मनकी बात शोचली ॥ ३३ ॥ तीर्थस्नानके सिवाय और तेरे पापोंका

१ पापपंके निमग्नांचमांसमुद्धरकोविद। २ कुरुकारुण्यजंवारिदग्धाहंकिंनिरीक्ष्यसि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दूर करनेवाला प्रायश्चित्त मैं नहीं देखताहू. यह स्नान ऋषियोंद्वारा कथित है ॥ ३४ ॥ हे भीरु ! परन्तु तीर्थोंमें मनसेभी अशुभका चिन्तन न करै प्रयागस्नान कर शुद्ध हो, तू अवश्य स्वर्गको जायगी ॥ ३५ ॥ इसमें सन्देह नहीं, प्रयागस्नान करतेही मनुष्य स्वर्गको प्राप्त होताहै. हे भामिनी ! और स्थानके किये पाप ॥ ३६ ॥ प्रयागमें नष्ट होतेहैं, जो कि तीर्थ स्थानमें नहीं किये हैं हे भीरु ! सुन पहले इन्द्रने गौतम ऋषिकी

किंतुतीर्थेत्यजेद्भीरुमनसाऽप्यशुभंकृतम् ॥ प्रयागस्नानशुद्धात्वंस्वर्गंयास्यसिनिश्चितम् ॥ ३५ ॥ प्रयागस्नानमात्रेणनृणांस्वर्गोनसंशयः ॥ अन्यदेशकृतंपापंतत्क्षणादेवभामिनि ॥ ३६ ॥ प्रयागेविलयंयातिपापंतीर्थकृतंविना ॥ शृणुभीरुपुराशक्रोगौतमस्यमुनेर्वधूम् ॥ ३७ ॥ दृष्ट्वाकामवशंप्राप्तस्तांगतोगुप्तकामुकः ॥ उग्रेणतेनपापेनतदैवजनितंफलम् ॥ ३८ ॥ ऋषिस्त्रीगंतुरिंद्रस्यतस्याश्चपुरतस्तदा ॥ कुत्सितंगर्हितंजातमितिलज्जाकरंवपुः ॥ ३९ ॥ तद्भर्तुःशापमाहात्म्यात्सहस्रभगचिह्नितम् ॥ अधोमुखस्ततोभूत्वादेवराजोविनिर्गतः ॥ ४० ॥ निनिंदस्वकृतंकर्मसोऽभिभूतःसलज्जितः ॥ मेरोःशिरसितोयाढ्येशतयोजनविस्तृते ॥ ४१ ॥

स्त्रीको ॥ ३७ ॥ देखकर कामवश हो गुप्तरूपसे उसके निकट जानेकी इच्छा करी उस उग्र पापका उसी समय फल मिला ॥ ३८ ॥ ऋषिकी स्त्रीके समीप गमन करनेसे इन्द्रका शरीर अति लज्जायुक्त होगया ॥ ३९ ॥ अर्थात् उसके स्वामी के शाप देनेके कारण उसके शरीरमें सहस्र भग होगये तब नीचेको मुखकर इन्द्र वहांसे निकले ॥ ४० ॥ और लज्जित हो अपने कर्मकी निन्दा करने लगे सुमेरु पर्वतपर एक सुन्दर जलसे युक्त सौ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

योजनके विस्तारमें ॥ ४१ ॥ जहां सुवर्णके कमल खिल रहेथे वहां प्रविष्ट होगया, वहां स्थित हो अपनी और कामदेव की निन्दा करने लगा ॥ ४२ ॥ तत्काल पातक देनेवाली कामात्माको लोकमें धिक्कार है, जिसके कारण सर्वलोकसे निन्दित हो यह प्राणी नरकको जाता है ॥ ४३ ॥ आयु कीर्ति यश धर्म धैर्यकी ध्वंस करनेवाली यह कामकी दुराचार रूपिणी आपत्ति स्थितही है ॥ ४४ ॥ यह देहमें स्थित असन्तुष्ट दुर्दम शत्रु अवश्य है इस

तत्रगत्वाप्रविष्टस्तुहेमांभोरुहकोरके ॥ तत्रस्थोगर्हयन्नित्यमात्मानंमन्मथंतथा ॥ ४२ ॥ धिक्तांकामात्मतांलोकेसद्यःपातकदा यिनीम् ॥ ययाहिनरकंयातिसर्वलोकविगर्हितः ॥ ४३ ॥ आयुःकीर्तियशोधर्मधैर्यध्वंसकरीतथा ॥ धिङ्मन्मथंदुराचार मापदांनियतंपदम् ॥ ४४ ॥ देहस्थंदुर्दमंशत्रुमसंतुष्टंसदावशम् ॥ इत्थंवादिनिप्रच्छन्नेवासवेपद्मसद्मनि ॥ ४५ ॥ आखंडलं विनाभीरुदेवलोकोनशोभते ॥ ततोदेवाःसगंधर्वालोकपालाःसकिन्नराः ॥ ४६ ॥ शच्यासहसमागम्यपप्रच्छुस्तेबृहस्पतिम् ॥ भगवन्बलभिद्देवंनैवजानीमहेवयम् ॥ ४७ ॥ क्वतिष्ठतिगतःकुत्रकुत्रवामृगयामहे ॥ ननाकःशोभतेतेनविनादेवगणैःसह ॥ ४८ ॥ सुपुत्रेणविनायद्वत्कुलंश्रीमद्गुणान्वितम् ॥ उपायश्चित्यतांसद्यःस्वर्लोकोयेनशोभते ॥ ४९ ॥

प्रकार कमलमें छिपे हुए इन्द्र कथन करता है ॥ ४५ ॥ हेभीरु ! परन्तु इन्द्रके विना देवलोककी शोभा नहीं है तब देवता गंधर्व लोकपाल किन्नर ॥ ४६ ॥ शचीके सहित आकर बृहस्पतिजीसे पूछने लगे कि, हे भगवन्! इन्द्र कहां है ? यह वार्ता हम नहीं जान्ते हैं ॥ ४७ ॥ कहां हैं, कहां गये कहां उनका खोज करें ? उनके विना स्वर्ग शोभित नहीं होता है ॥ ४८ ॥ जिस प्रकार सुपुत्रके विना श्रेष्ठ कुल शोभित नहीं होता है, सो उपाय

१ कोटरे इति पाठः । २ दुराचारं निर्लज्जं पापदायिनमिति पाठः । ३ लक्ष्म्या विनागुणाइति पाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शीघ्र विचारो जिस्से स्वर्गलोककी शोभा हो ॥ ४९ ॥ जिससे यह लक्ष्मीयुक्त सनाथ हो जाय अब विलम्ब करनेका काम नहीं है. उनके यह वचन सुन गुरु बोले ॥ ५० ॥ मैं जानताहूं जहां वह अपराधी होनेके कारण लज्जासे स्थित हैं, बिना विचारे कार्य करनेका इन्द्र फल भोगते हैं ॥ ॥ ५१ ॥ नीति त्यागनेसे मनुष्योंको इस का भयंकर फल होता है, यह अपने राज्यमें मत्त हो कृत्य अकृत्यके विचारसे रहित रहा ॥ ५२ ॥ दृष्ट

सनाथःसुश्रियायुंक्तोनविलंबोऽत्रयुज्यते ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वागुरुर्वचनमब्रवीत् ॥ ५० ॥ जानेऽहंस्वापराधेनलज्जयायत्रतिष्ठति ॥ रभसालब्धकार्यस्यभुंक्तेसमधवाफलम् ॥ ५१ ॥ नृणांनीतिपरित्यागाद्विपाकाःस्युर्भयंकराः ॥ अहोराज्यमदैर्मत्तःकृत्याकृत्यम चिंतयन् ॥ ५२ ॥ कृतवान्निंद्यमानंहिदृष्टादृष्टक्षयंकरम् ॥ कुर्वतिबालिशायत्रदैवोपहतबुद्धयः ॥ ५३ ॥ अपराधाद्यथाजन्मस्या दिहामुत्रनिष्फलम् ॥ अधुनातत्रगच्छामोयत्रशक्रःसतिष्ठति ॥ ५४ ॥ इत्युक्तानिर्गताःसर्वेबृहस्पतिपुरोगमाः ॥ दृष्ट्वासरसिविस्ती र्णेस्वर्णपंकजकाननम् ॥ ५५ ॥ तुष्टुवुर्देवराजानंप्रबोधोयेनजायते ॥ ततोगुरोःप्रबोधेननिर्गतःपद्मकुड्मलात् ॥ ५६ ॥

अदृष्ट क्षयकारी निंद्यकर्म करता रहा प्राणी दैवसे हतबुद्धि हो बड़े २ मूर्खताके कर्मको करते हैं ॥ ५३ ॥ यजमानके अपराधसे दोनों लोकके फल नष्ट होजाते हैं, अब हम वहां जाते हैं जहां इन्द्र स्थित हैं ॥ ५४ ॥ ऐसे कह सब बृहस्पति आदि चले, सुवर्णके कमल खिले एक सरोवरका दर्शन किया ॥ ५५ ॥ वहां इन्द्रको प्रसन्न करने लगे जिस्से उसको प्रबोध होय तब गुरुके प्रबोधसे कमलकलीसे इन्द्र निर्गत हुए ॥ ५६ ॥

१ युक्ता भवाह्यधुनावयम् इति पाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हीन मुख रूपरहित लज्जासे कुंचितनेत्र इन्द्रने गुरुके चरण ग्रहण किये ॥५७॥हे बृहस्पते गुरु!मेरी रक्षा करो, इस पापसे मेरी निष्कृति कहो.देव राजके वचन सुन बृहस्पतिने कहा ॥ ५८ ॥ हे इन्द्र! सुनो पापनाशका उपाय कहताहूं. प्रयागके स्नान मात्रसे उसी समय पापसे ॥ ५९ ॥ छूट जाओगे सो तुम्हारे सहित हम वहां चलें. तब इन्द्र पुरोहितके साथ वहां गये ॥ ६० ॥ और प्रयागमें स्नान करनेसे बहुत शीघ्र पापोंसे मुक्त होगये, तब देव

दीाननोविरूपस्तुव्रीडाकुंचितलोचनः ॥ जग्राहचरणाविंद्रोगुरोस्तस्याग्रजन्मनः ॥ ५७ ॥ त्राहिमांनिष्कृतिंब्रूहिपापस्या स्यबृहस्पते ॥ देवराजवचःश्रुत्वाजगौविप्रोबृहस्पतिः ॥ ५८॥ शृणुदेवेंद्रवक्ष्येहमुपायंपापनाशनम् ॥ प्रयागस्नानमात्रेणतत्क्षणा देवपातकात् ॥ ५९ ॥ मुच्यसेदेवराजत्वंतत्रयामःसहैवते ॥ अथपुरोधसासार्द्धमागत्यबलमर्दनः ॥ ६० ॥ सस्नौसितासिते तीर्थेसद्योमुक्तोह्यघैस्ततः ॥ अथदेवगुरुस्तस्मैप्रसन्नस्तुवरंददौ ॥ ६१ ॥ प्रयागस्नानमात्रेणक्षीणंपापंत्वयाऽनघ ॥ क्षीणपाप स्यतेशक्रमत्प्रसादेनसत्वरम् ॥ ६२ ॥ सहस्रमेतद्योनीनांसहस्रंस्याद्दृशांतव ॥ तदैवद्विजवाक्येनशुशुभेचशचीपतिः ॥ ६३ ॥ लोचनानांसहस्रेणपंकजैरिवमानसम् ॥ अथवृंदारकैःसर्वैर्ऋषिभिश्चाभिपूजितः ॥ ६४ ॥ गंधर्वैःस्तूयमानस्तुगतःशक्रोमरावतीम् ॥ इत्थंसद्योविपापोऽभूत्प्रयागेपाकशासनः ॥ ६५ ॥

गुरुने प्रसन्न हो इन्द्रको वर दिया ॥ ६१ ॥ हेपाप रहित ! तुम प्रयाग स्नानसे क्षीण पाप हुए हो, हे इन्द्र! हमारे प्रसादसे क्षीण पाप होनेसे ॥ ६२ ॥ शरीरमें जो लज्जाके चिह्न हैं यह सहस्र नेत्र होजांयगे. तब उसी समय ब्राह्मणके वाक्यसे इन्द्र शोभित हुए ॥ ६३ ॥ सहस्र नेत्र ऐसे शोभित हुए जैसे कमलोंसे मानस सरोवर. तब सब देवता और ऋषियोंने उनकी पूजा की ॥ ६४ ॥ और गन्धर्वोंसे स्तुतिको प्राप्त हो इन्द्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमरावती पुरीको गये इस प्रकार प्रयाग स्नान करनेसे इन्द्र शीघ्रही पाप रहित होगया ॥ ६५ ॥ हे कल्याणी! तूभी प्रयाग सेवन करनेको जा शीघ्र पापनाश होकर स्वर्गकी प्राप्ति होगी ॥ ६६ ॥ इस प्रकार इतिहास सहित उसका सुमंगल नाम श्रवण करकै उसी समय ब्राह्मणके चरणोंको नमस्कार करके संभ्रमको प्राप्त हुई ॥ ६७ ॥ सब बंधुजन दास दासी और घरको त्यागन करके तथा सब पापोंको विषके ग्रास की समान त्यागन

याहित्वमपिकल्याणिप्रयागंदेवसेवितम् ॥ सद्यःपापविनाशायतथास्वर्गतयेदृढम् ॥ ६६ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वासेतिहासंसमंगलम् ॥ तदैवसंभ्रमापन्नानत्वापादौद्विजस्यतु ॥ ६७ ॥ त्यक्त्वाबंधुजनंसर्वान्दासदासीगृहंतथा ॥ सकलान्विषयान्राक्षोविषग्रासानिवस्फुटम् ॥ ६८ ॥ वपुश्चक्षणविध्वंसिपश्यंतीनिर्गताह्यहम् ॥ नरकार्णवसंपातदारुणांतरवह्निना ॥ ६९ ॥ हृदयेकुणपव्याघ्रतदात त्तप्यमानया ॥ मयागत्वाकृतंस्नानंमाघेमासिसितासिते ॥ ७० ॥ तस्यस्नानस्यमाहात्म्यंशृणुवृद्धनिशाचर ॥ त्र्यहात्पापक्षयो जातःसप्तविंशतिभिर्दिनैः ॥ ७१ ॥ शेषैर्मेयदभूत्पुण्यंतेनदेवत्वमागता ॥ रममाणातुकैलासेगिरिजायाःप्रियासखी ॥ ७२ ॥

करकै ॥ ६८ ॥ हे राक्षस! क्षणविध्वंसी शरीरको देख कर मैं घरसे निकली जो नरकरूप सागरका गिरानेवाला अग्निके समान लेलिहान ॥ ६९ ॥ हृदयरूपी निर्जीव दुःखरूप व्याघ्रसे तप्यमान हुई मैंने माघमासमें प्रयागमें जाकर स्नान किया ॥ ७० ॥ हे बृद्ध निशाचर! सुन उस स्नानके माहात्म्य से तीन दिनमें तो मेरे पाप दूर होगये और सताईस दिनके ॥ ७१ ॥ शेष पुण्यसे मैं देवता होगई. कैलासमें गिरिजाकी प्रिय सखी होकर विहार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करूंगी ॥ ७२ ॥ और प्रयाग स्नानके कारणही मुझको जातिका स्मरण बनारहा. प्रयागका माहात्म्य स्मरण कर प्रत्येक माघमें स्नानको जाती हूं॥ ७३ ॥
इति श्रीमाघमाहात्म्ये कांचनमालिनीरक्षःसम्वादो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ कांचन मालिनी बोली, हे राक्षस! विस्मित चित्तसे जो तैने पूछा सो मैंने तुम्हारी प्रीतिके निमित्त सब कहा॥ १ ॥हे राक्षस! मेरी प्रीतिके निमित्त तुम अपना चरित्र कहो किस कर्मसे तुम भयंकर और विरूप हुए हो?॥ २॥

जातिस्मरातथाजाताप्रयागस्यप्रभावतः ॥ स्मृत्वाप्रयागमाहात्म्यंमाघेमाघेव्रजाम्यहम् ॥ ७३ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेकांचनमालिनीरक्षःसंवादोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ छ ॥ ॥ कांचनमालिन्युवाच ॥ ॥ इति राक्षसयत्पृष्टंत्वयाविस्मितचेतसा ॥ तन्मयाकथितंसर्वंचरितंप्रीतयेतव ॥ १ ॥ मत्प्रीतयेचरित्रंस्वंत्वंब्रूहिममराक्षस ॥ कर्मणा केनजातोसिविरूपोऽतिभयंकरः ॥ २ ॥ श्मश्रुलोदीर्घदंष्ट्रश्चक्रव्यादोगिरिगह्वरे ॥ ॥ राक्षसउवाच ॥ ॥ इष्टंददातिगृह्णातिगुह्यं वदतिपृच्छति ॥ ३ ॥ प्रीत्याहिसज्जनोभद्रेतच्चसर्वंत्वयिस्थितम् ॥ त्वयासंभावितोनूनंमन्येऽहंवामलोचने ॥ ४ ॥ भाविनीनिष्कृतिः सद्यस्त्वयास्यक्रूरकर्मणः ॥ अतोवक्ष्यामितेभद्रेदुष्कृतंयत्स्वयंकृतम् ॥ ५ ॥ निवेद्यसज्जनेदुःखंततःसर्वःसुखीभवेत् ॥ शृणुसुश्रो ण्यहंकाश्यांवह्वृचोवेदपारगः ॥ ६ ॥

डाढ़ी मूछोंवाले बड़ी डाढ़ें क्रव्यादरूपसे पर्वतके गह्वरमें स्थित हो? राक्षस बोला, जो इष्ट देवता ग्रहण करता गुप्त देता और पूछता है॥ ३॥ हे भद्रे! यह सज्जनोंकी प्रीतिहै, सो सब तुझमें स्थित है, हे वामलोचने! मैं तुझसे अपनेको सत्कृत मानता हूं ॥ ४ ॥ तुझसे इस क्रूर कर्मकी निष्कृति होनी है हे भद्रे! तुझसे मैं अपने दुष्कृतको कहताहूं जो मैंने स्वयं किया है ॥ ५ ॥ सज्जनसे दुःख निवेदन करके मनुष्य सुखी होता है. हे सुश्रोणी! सुनो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैं काशीका बहृच वेदपारगामी ॥ ६ ॥ निर्मल ब्राह्मणके कुलमें उत्पन्न हुआहूं, हे भीरु ! राजा दुष्कृती शूद्र तथा वैश्य ॥ ७ ॥ इनसे काशीमें मैंने घोर परिग्रह लिया, बहुतवार निषिद्ध कुत्सित वस्तु ग्रहण की ॥ ८ ॥ दुष्टप्रतिग्रह मैंने चाण्डालकाभी त्यागन नहीं किया, औरभी मुझ मूढमतिसे अनेक पातक हुए ॥ ९ ॥ ऐसा कोई पापकर्म नहीं जो मैंने न कियाहो; हे वरवर्णिनी ! और क्षेत्रका दोष श्रवण करो ॥ १० ॥ अविमुक्तक्षेत्रमें अणुमात्र पाप करनेसे मेरुकी तुल्य होजाता है, उस जन्ममें मैंने कुछभी धर्म संचित नहीं किया ॥ ११ ॥

जातःपुराद्विजःश्रेष्ठःकुलेमहतिनिर्मले ॥ राज्ञांदुष्कृतिनांभीरुशूद्राणांचतथाविशाम् ॥ ७ ॥ वाराणस्यांकृतोघोरोमयादुष्टप्रतिग्रहः ॥ बहुधाबहुधावारंनिषिद्धःकुत्सितोबहु ॥ ८ ॥ चांडालस्यापिनत्यक्तोमयादुष्टप्रतिग्रहः ॥ अन्यच्चपातकंतत्रममाभून्मूढचेतसः ॥ ९ ॥ तन्नास्तिदुष्कृतंकर्ममयायत्रनयत्कृतम् ॥ अन्यच्चश्रूयतांदोषःक्षेत्रस्यवरवर्णिनि ॥ १० ॥ अविमुक्तेऽणुमात्रंयत्तदघंमेरुतांव्रजेत् ॥ नधर्मस्तुमयाकश्चित्संचितस्तत्रजन्मनि ॥ ११ ॥ ततोबहुतिथेकालेमृतस्तत्रैवशोभने ॥ अविमुक्तप्रभावेणनचाहंनरकंगतः ॥ १२ ॥ अविमुक्तेमृतःकश्चिन्नरकंनेतिकिल्बिषी ॥ अविमुक्तेकृतंकिंचित्पापंवज्रीभवेद्दृढम् ॥ १३ ॥ वज्रलेपेनपापेनतेनमेजन्मराक्षसम् ॥ रौद्रंक्रूरतरंपापंसंभूतंहिमपर्वते ॥ १४ ॥

हे शोभने ! बहुत दिनोंके उपरान्त वहीं मृत्युको प्राप्त हुआ, काशी क्षेत्रके प्रभावसे मैं नरकको नहीं गया ॥ १२ ॥ अविमुक्तमें मरनेवाला कोईभी पापी नरकको नहीं जाता है और इस अविमुक्तक्षेत्रमें किया हुआ किंचित् पापभी वज्रके समान दृढ होजाता है ॥ १३ ॥ उस वज्रलेप पापके कारण मेरा जन्म राक्षस हुआ, रौद्र क्रूर पापसे युक्त इस हिमवान् पर्वतमें हुआ ॥ १४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इससे पहले दोबार गृध्र, तीन बार व्याघ्र, दोबार सरीसृप हुआ; एकबार उलूक एकबार विड्वराह हुआ॥ १५॥हे भामिनि ! यह दशमा जन्म मेरा राक्षस का है, मेरे जन्मको सहस्रों वर्ष बीतगये ॥ १६ ॥ हेभद्रे! इस दुःखसागरसे मेरा निस्तारा नहीं है. हे सुभ्रू! तीन योजनतक यह स्थान मैंने जन्तुओंसे हीन करदिया है ॥ १७ ॥ विनापराध बहुतसे जन्तुओंका क्षय किया है, हे सुभ्रू! इस कर्मसे सदा मेरा अन्तर जलता रहताहै ॥ १८ ॥ तुम्हारे

द्विर्जातोगृध्रयोनौप्राक्त्रिर्व्याघ्रोद्विःसरीसृपः ॥ एकवारमुलूकस्तुविड्वराहस्ततःपरम् ॥ १५ ॥ इदंतुदशमंजन्मराक्षसंममभामिनि ॥ अतीतानिसहस्राणिवर्षाणिममजन्मनः ॥ १६ ॥ नास्तिमेनिष्कृतिर्भद्रेएतस्माद्दुःखसागरात् ॥ अत्रत्रियोजनंसुभ्रूर्निर्जंतुहिमयाकृतम् ॥ १७ ॥ अनागसांचभूतानांबहूनांचकृतःक्षयः ॥ कर्मणातेनमेसुभ्रूर्दह्यतेसततंमनः ॥ १८ ॥ त्वद्दर्शनसुधासिक्तंगतंशैत्यंमनोमम ॥ तीर्थफलतिकालेनसद्यःसाधुसमागमः ॥ १९ ॥ अतःसत्संगतिंसुभ्रूःप्रशंसंतिमनीषिणः ॥ एतत्तेकथितंसर्वंस्वदुःखंहृद्गतंमया ॥ २० ॥ विरलःसज्जनःसुभ्रूःस्वात्मायस्यनखिद्यते ॥ जानास्यत्रोचितंत्वंहिकिंचिन्नोवच्म्यतःपरम् ॥ २१ ॥ अस्यदुःखोदधेःपारंकथंयामीतिचिंतयन् ॥ सज्जनानांसमाभूतिःसर्वेषामुपजीवनम् ॥ २२ ॥

दर्शनरूप सुधाके सिंचनसे मेरे मनका शीत गया, तीर्थ कालमें फल देते हैं साधुसमागम शीघ्र फल देता है ॥ १९ ॥ हे सुभ्रू! इससे महात्मा सत्संगतिकी प्रसंशा करते हैं, यह मैंने अपने हृदयका सब दुःख तुमसे कहा है ॥ २० ॥ हे सुभ्रू! ऐसे कोई विरलेही हैं जिनकी आत्मा खेदित न हो, इसका उत्तर तुम जानतीहो जो उचित है. इस कारण मैं कुछ नहीं कहताहूं ॥ २१ ॥ उस दुःखसागरसे कैसे पार हूंगा इसी प्रकार विचार करता हुआ

१ वर्षाणां पञ्चसप्ततिरिति पाठः । २ यामिसुलोचने इतिपा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रहताहूं, सज्जनोंका ऐश्वर्य दूसरोंको उपकारके निमित्त होता है ॥ २२ ॥ क्षीरसागर दूध और हंसके निमित्त नव्यशरीर देता है. दत्तात्रेय बोले उसके इस प्रकार वचन सुन दयासे आर्द्र मन होकर ॥ २३ ॥ धर्म दानमें मति कर. कांचनमालिनीने कहा, हे राक्षस ! मैं तेरा निस्तार करूंगी तू शोच मतकरै ॥ २४ ॥ दृढ प्रतिज्ञा कर तेरी मुक्तिके निमित्त यत्न करूंगी मैंने प्रत्येक वर्षमें यथाविधि बहुतसे माघ किये हैं ॥ २५ ॥ हे भद्र !

क्षीरार्णवःपयोदत्तेहंसायनवकायकिम् ॥ ॥ दत्तात्रेयउवाच ॥ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वादयार्द्रीकृतमानसा ॥ २३ ॥ धर्मदाने मतिंकृत्वाजगौकांचनमालिनी ॥ करिष्येनिष्कृतिंरक्षइदानींखलुमाशुचः ॥ २४ ॥ प्रतिज्ञांतुदृढांकृत्वायतिष्येतवमुक्तये ॥ बहवोहिकृतामाघावर्षैवर्षेयथाविधि ॥ २५ ॥ श्रद्धापूर्वमयाभद्रब्रह्मक्षेत्रेसितासिते ॥ तांवदामितुसंख्यांतितस्यधर्मस्यराक्षस ॥ २६ ॥ गूढोधर्मोहिकर्तव्यइत्यूचुर्विबुधाजनाः ॥ आर्तेदानंप्रशंसंतिमुनयोवेदवादिनः ॥ २७ ॥ सागरेवर्षतोभद्रकिंमेघस्यफलंभवेत् ॥ अनुभूतंमयारक्षःस्वयंतत्पुण्यजंफलम् ॥ २८ ॥ तत्तुदास्यामितेमित्रसद्यःपापविनाशनम् ॥ निष्पीड्याथततोवस्त्रंजलं कृत्वाकरांबुजे ॥ २९ ॥

श्रद्धा पूर्वक प्रयाग ब्रह्मक्षेत्र सेवन किये हैं, हे राक्षस ! उस धर्मकी संख्या कथन करतीहूं ॥ २६ ॥ पंडित जनोंने कहा है धर्मको गूढरूपसे करना चाहिये, दुःखीको दान करनेकी वेदवादियोंने प्रसंशा की है ॥ २७ ॥ हे भद्रे ! समुद्रमें बर्षनेसे मेघका क्या फलहोता है ? हे राक्षस ! उस पुण्यका फल मैंने स्वयं अनुभव किया है॥ २८॥ हे मित्र ! वह पापनाशी पुण्यफल मैं शीघ्र तुझको देतीहूं तब वस्त्रको निचोड़ उसका जल हाथमें लेकर॥ २९॥

१ नानुवक्तुं समर्थाहं संख्यां धर्मस्य राक्षसेति पाठान्तरम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उस वृद्धराक्षसके निमित्त उसने माघका पुण्य दिया, हे राजन् ! सुनो माघस्नानका फल विचित्र है ॥ ३० ॥ उस पुण्यको प्राप्त हो वह राक्षसी शरीरसे मुक्त हुआ. देवताके आकार तेजमें सूर्यकी समान हुआ ॥ ३१ ॥ देवताओंके विमानमें चढा प्रसन्नतासे फूले नेत्र आकाशमें प्रकाशमान कान्तिसे दिशाओंको प्रकाश करता ॥ ३२ ॥ दिव्य रूपधारे दूसरे सूर्यकी समान शोभित हुआ. तब उस कांचनमालिनीकी

ददौसामाघजंपुण्यंतस्मैवृद्धायरक्षसे ॥ शृणुराजन्विचित्रंहिप्रभावंमाघधर्मजम् ॥ ३० ॥ तदैवंप्राप्यतत्पुण्यंविमुक्तोराक्षसीतनुः ॥ संभूतोदेवताकारस्तेजोभास्करविग्रहः ॥ ३१ ॥ देवयानंसमारूढःसहर्षोत्फुल्ललोचनः ॥ द्योतमानस्तदाव्योम्निभासयन्प्रभया दिशः ॥ ३२ ॥ दिव्यरूपधरोरेजेद्वितीयइवभास्करः ॥ ततोऽभिनंदयामाससतांकांचनमालिनीम् ॥ ३३ ॥ भद्रेवेत्तीश्वरोदेवः कर्मणांयःफलप्रदः ॥ तत्त्वयोपकृतंसर्वंयत्रमेनास्तिनिष्कृतिः ॥ ३४ ॥ इदानीमपिकारुण्यात्प्रसीदानुग्रहंकुरु ॥ शिक्षांविधे हिमेदेविसर्वनीतिमयींशुभाम् ॥ ३५ ॥ सर्वधर्मकरीनूनंनकुर्वेपातकंतथा ॥ तांश्रुत्वात्वदनुज्ञातःपश्चाद्यामिसुरालयम् ॥ ३६ ॥ ॥ दत्तात्रेयउवाच ॥ ॥ एतन्निशम्यतेनोक्तंप्रियंधर्ममयंवचः ॥ अतिप्रीत्याऽब्रवीद्धर्मराजन्कांचनमालिनी ॥ ३७ ॥

बड़ाई करने लगा ॥ ३३ ॥ हे भद्रे ! कर्मका फलदाता ईश्वरही इस बातको जानता है, तैंने वह उपकार किया जिस्से मेरी निष्कृति नहीं होती ॥ ३४ ॥ अबभी कृपा करके मेरे ऊपर प्रसन्न हो अनुग्रह कर. हे देवी ! सर्वनीतिकी भरी परम पवित्र शिक्षा हमको दीजिये ॥ ३५ ॥ जो सब धर्मकी करनेवाली हो;जिससे मैं फिर पातकको न करूं, तुम्हारी आज्ञा पाय उसे सुनकर फिर देवस्थानको जाऊंगा ॥ ३६ ॥ दत्तात्रेय बोले—यह उसके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रिय और धर्ममय वचन सुनकर हे राजन् ! कांचनमालिनी बड़े प्रेमसे धर्म कथन करने लगी ॥ ३७ ॥ सदा धर्मका सेवन करो, प्राणियोंकी हिंसा त्यागो, साधु पुरुषोंका सेवन करो, काम शत्रुको जीतो, दूसरेके गुणदोष कहना त्यागो, सत्य बोलो, नारायणकी अर्चा कर देवलोकको जाओ ॥ ३८ ॥ देह अस्थि मांस रुधिरमें मतिको त्यागन करो, स्त्री पुरुषमें ममताको त्यागो, इस जगत्को रातदिन क्षणभंगुर देखो, वैराग्यके भावमें रसिक होकर योगनिष्ठावाले हो ॥ ३९ ॥ यह प्रीतिसे मैंने तुमसे धर्ममार्ग कहा यह सब चित्तमें रखकर शीलयुक्त हो, और

धर्मंभजस्वसततंत्यजभूताहिंसांसेवस्वसाधुपुरुषाञ्जहिकामशत्रुम् ॥ अन्यस्यदोषगुणकीर्तनमाशुहित्वासत्यंवदार्चयहरिंव्रजदेवलोकम् ॥ ३८ ॥ देहेऽस्थिमांसरुधिरेस्वमतिंत्यजत्वंजायासुतादिषुसदाममतांविमुंच ॥ पश्यानिशंजगदिदंक्षणभंगुरंहिवैराग्यभावरसिकोभवयोगनिष्ठः ॥ ३९ ॥ प्रीत्यामयानिगदितंतवधर्ममार्गंचित्तेनिधेहिसकलंभवशीलयुक्तः ॥ संत्यज्यराक्षसतनुंधृतदेवदेहो ज्योतिर्मयोव्रजयथासुखमाशुनाकम् ॥ ४० ॥ श्रुत्वाधर्मंततोहृष्टःसंतुष्टोराक्षसोऽब्रवीत् ॥ भवप्रमुदितानित्यंसर्वदाशिवमस्तुते ॥ ॥ ४१ ॥ आचन्द्रार्कंरमस्वत्वंकैलासेशिवसन्निधौ ॥ उमयाऽखंडितंप्रेमतवास्तुवरवर्णिनि ॥ ४२ ॥ धर्मनिष्ठातपोनिष्ठामातस्त्वंभवसर्वदा ॥ मास्तुलोभःशरीरेतेआपन्नार्तिंसदाहर ॥ ४३ ॥

राक्षसशरीर त्याग देवतादेह धारणकर यथासुख ज्योतिर्मय स्वर्गको गमन करो ॥ ४० ॥ यह धर्म सुन सन्तुष्ट हो राक्षस बोला, तू सदा प्रसन्न हो तुझको सदा मंगल हो ॥ ४१ ॥ चन्द्रसूर्यकी स्थितितक कैलासमें शिवके समीप रमणकर ! हे वरवर्णिनि ! पार्वतीसे तेरा अखण्ड प्रेमहो ॥ ४२ ॥ हे मातः ! तुम सदा धर्म और तपमें निष्ठावाली हो तेरे शरीरमें लोभ न हो सदा दुःख दूर करनेवाली हो ॥ ४३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐसा कहकर वह कांचनमालिनीको प्रणामकर गन्धर्वोंसे स्तुतिको प्राप्त हो स्वर्गको गया ॥ ४४ ॥ देवकन्याओंने आकर उसपर फूलोंकी वर्षा की उस कांचनमालिनीके ऊपर प्रेमसे पुष्पवर्षा की ॥ ४५ ॥ उसको आलिंगन कर देवकन्या प्रेमसे बोलीं—हे भद्रे ! तैने राक्षसकी विचित्र मुक्ति की ॥ ४६ ॥ इस दुष्टके भयसे कोई इस वनमें प्रवेश नहीं करता था, अब हम निर्भय हो यथा सुखसे विचरण करेंगी ॥ ४७ ॥ हे राजन् ! कांचनमालिनी उनके वचन सुनकर उस दानसे प्रसन्न हो कृतकृत्य हुई ॥ ४८ ॥ कांचनमालिनी गन्धर्वकन्या उस राक्षसकी मुक्तिकरके

इत्युक्तातुप्रणम्याथसतांकांचनमालिनीम् ॥ जगामराक्षसःस्वर्गंगंधर्वैर्बहुभिःस्तुतः ॥ ४४ ॥ देवकन्यास्तदागत्यववर्षुःपुष्पवृष्टिभिः ॥ तस्याःकांचनमालिन्यामूर्ध्निहर्षसमाकुलाः ॥ ४५ ॥ तामालिंग्यततःप्रोचुःकन्यकास्तुप्रियंवचः ॥ कृतंभद्रेत्वयाचित्ररांक्षसस्यविमोक्षणम् ॥ ४६ ॥ दुष्टस्यास्यभयात्कश्चिद्विशत्यस्मिन्नकानने ॥ अधुनानिर्भयाह्यत्रविचरामोयथासुखम् ॥ ४७ ॥ श्रुत्वातद्वचनंराजंस्तासांकांचनमालिनी ॥ हृष्टातेनैवदानेनकृतकृत्यातदासती ॥ ४८ ॥ तंराक्षसंकांचनमालिनीवरागन्धर्वकन्यापरिमोच्यसत्वरम् ॥ क्रीडंत्यसूमिःप्रययौहरालयंप्रीत्यासपूर्णाचपरोपकारया ॥ ४९ ॥ संवादमेनंवरकन्यकेरितंभक्त्यापरंयःशृणुयाच्चमानवः ॥ नबाध्यते जातुसदासराक्षसैर्धर्मेमतिस्तस्यभृशंहिजायते ॥ ५० ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमासमाहात्म्येदिलीपवसिष्ठसंवादेराक्षसमोक्षोनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ कथितंमाघमाहात्म्यंदत्तात्रेयेणभाषितम् ॥ अधुनाऽहंप्रवक्ष्यामिमाघस्नानस्ययत्फम् ॥ १ ॥

क्रीडा करती हुई शिवके स्थानको गई और परोपकारसे पूर्ण प्रीतिको प्राप्त हुई ॥ ४९ ॥ इस कन्याओंके सम्वादको जो मनुष्य परमभक्तिसे सुनते हैं वह राक्षसोंसे बाधाको प्राप्त नहीं होते, और उनकी धर्ममें मति सदा होती है ॥ ५० ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे माघमाहात्म्ये पंडित ज्वाला प्रसादमिश्रकृत भाषाटीकायां राक्षसमोक्षोनाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ वसिष्ठजी बोले—दत्तात्रेयका कहा माघमाहात्म्य वर्णन किया,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अब माघस्नानका फल कहताहूं ॥ १ ॥ सब यज्ञोंमें श्रेष्ठ सब दानोंका फल देनेवाला हे परंतप यह माघस्नान सम्पूर्ण व्रत और तप की तुल्य है ॥ २ ॥ माघस्नानसे विशुद्ध मन होकर दोनों कुलके पितरोंको स्वर्गमें स्थापन करकै स्वयं उज्वल मुख होकर स्वर्गको जाते हैं सुन्दर मनोहर कामगामी विमानोंपर स्थित होते हैं ॥ ३ ॥ जो मनुष्य सदा पाप करते हैं दुराचारी कुमार्गी हैं वे

सर्वक्रतुवरिष्ठंतुसर्वदानफलप्रदम् ॥ सर्वव्रततपस्तुल्यंमाघस्नानंपरंतप ॥ २ ॥ स्नानेनमाघस्यविशुद्धमानसाःपितॄन्दिविस्था प्यकुलद्वयस्यवै ॥ स्वर्गंप्रयांतिस्वयमुज्ज्वलाननावरैर्विमानैरुचिरैश्चकामगैः ॥ ३ ॥ येमानवाःपापकृतोपिसर्वदासदादुराचार रताविमार्गगाः ॥ स्नात्वाहिमाघेहरिमर्चयंतियेमुंचंतितेपीहमहाघसंचयम् ॥ ४ ॥ सत्येनहीनाःपितृमातृदुःखदाह्यनाश्रमस्थाः कुलधर्मवर्जिताः ॥ येदांभिकास्तेपिनराःसतांगतिंस्नानैःप्रयांत्यत्रहिमाघसंभवैः ॥ ५ ॥ पुण्येषुतीर्थेषुचमाघमासेस्नानंनराणाम तिदुर्लभंभुवि ॥ तस्माद्यतोब्रह्मविदांपदंनरैःसंप्राप्यतेनात्रविचारणामम ॥ ६ ॥ माघेतपोदानजपप्रसेवनंस्थानंहरेःपूजनमक्षयं नृप ॥ तस्माद्यथाशक्तिनरैःप्रयत्नतःस्नात्वाप्रदेयंवसनान्नकांचनम् ॥ ७ ॥

भी माघस्नानकर नारायणका अर्चन करनेसे महापापसे छूट जाते हैं ॥ ४ ॥ जो सत्यसे हीन माता पिताके दुःख देनेवाले आश्रम और कुलके धर्मसे वर्जित हैं जो पाखंडी पापी हैं वेभी स्नानसे श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥ माघमासमें पुण्य तीर्थोंमें स्नान मिलना भूमिमें परम दुर्लभ है इससे मनुष्योंको ब्रह्मविदोंका पद प्राप्त होता है इसमें सन्देह वा विचारकी बात नहीं है ॥ ६ ॥ माघमें तप दान जपका करना

१ अत्रचरणाधिक्यं ' दिनानि सप्तापिचपंचमानवाः ' इति केषुचित्पुस्तकेषु लभ्यते । २ वसनाग्निकांचनम्—ङ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हरिका पूजन स्नान अक्षय होता है, इस कारण स्नान करके यथाशक्ति मनुष्योंको वस्त्र अन्न सुवर्ण देना चाहिये ॥ ७ ॥ माघमें अन्नदान करनेवाला देवलोकमें अमृत पाता है, सुवर्णका देनेवाला इन्द्रके समीप जाता है, दीप अग्नि वस्त्रका देनेवाला सूर्यके समीप कान्तिमान् होकर निवास करता है ॥ ८ ॥ यज्ञदान और उज्वल तप करके ब्रह्मचर्य अर्चा योग सेवासे प्राणी ऐसे शुद्ध नहीं होते जैसे माघके स्नान करनेसे प्राणी शुद्ध होते हैं

माघेऽन्नदाताऽमृतपःसुरालयेहेम्नश्चदाताबलभित्समीपगः ॥ दीपाग्निवासांसिददन्नरःसदासूर्यस्यलोकेवसतिप्रभामयः ॥ ८ ॥ यज्ञैः सुदानैःसुतपोभिरुज्ज्वलैःसुब्रह्मचर्यार्चनयोगसेवया ॥ शुद्धाभवंतीहतथानपापिनःस्नानैर्यथापुण्यभवैस्तुमाघजैः ॥ ९ ॥ दुःखौघसंतप्तिमसह्ययातनांयाम्यांनतेयांत्यपिपापकारिणः ॥ येमाघमासेवरतीर्थमज्जनंकुर्वंतिचार्धोदितसूर्यमंडले ॥ १० ॥ स्नात्वाचमाघे हरिमर्चयंतियेस्वर्गच्युताभूपतयोभवंति ॥ भव्याःसुरूपाःसुभगाःप्रियंवदाधर्मान्विताभूरिधनाःशतायुषः ॥ ११ ॥ दीप्तानले काष्ठचयोयथाहुतोभस्मावशेषोभवतीहतत्क्षणात् ॥ स्नानेनमाघस्यतथाविलीयतेक्षुद्रोपिपापौघमहाघसंचयः ॥ १२ ॥

॥ ९ ॥ जो असह्ययातनासे दुःखी होकर वेयमयातनाको प्राप्त नहीं होते जो माघमासमें श्रेष्ठ तीर्थमें मज्जन करते हैं जब कि सूर्यबिम्ब आधा उदित होता है ॥ १० ॥ माघमासमें स्नान करके जो नारायणको अर्चन करते हैं वे स्वर्गसे च्युत होकर राजा होते हैं. श्रेष्ठ सुरूप सुभग प्यारे बोलनेवाले धर्मयुक्त बड़े धनी सौवर्षवाले होते हैं ॥ ११ ॥ दीप्ताग्निमें जिसप्रकार काष्ठसमूहकी आहुति दी जाती है और वह तत्काल भस्म होती

---

१ तीर्थभवैश्च माघजैः—इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है इसी प्रकार माघस्नानसे छोटे बड़े सब पाप क्षय हो जाते हैं ॥ १२ ॥ वचन मन कायाके पाप जानकर अथवा अनजानकर वा अज्ञात जो मनुष्योंने किये हैं वह माघमासमें कहीं तीर्थमें स्नान करनेसे विष्णु भगवान् हृदयमें प्राप्त हुए सब भस्म कर देते हैं ॥ १३ ॥ हे राजन् ! पापके फलके भोगनेवाले कभी प्रसादसेभी माघस्नान करले तो उनके सब पाप कट जाते हैं ॥ १४ ॥ हे नृप ! गन्धर्वकी कन्या शापसे पापके महाफलको भोगती हुई माघमासमें स्नानकर लोमशके वचन मान पापसे मुक्त होगई ॥ १५ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे माघमाहात्म्ये

कायेनवाचामनसापिपातकंज्ञातंयदज्ञातमलंकृतंनरैः ॥ स्नानंचमाघेवरतीर्थसंभवंसर्वंदहेद्विष्णुरिवाशुहृद्गतः ॥ १३ ॥ संभुज्यमानाघफलंहिपार्थिवप्रमादतोपीहनृणांकदाचन ॥ स्नानंहिमाघस्ययतःप्रसज्यतेतदैवतत्संक्षयमेतिनिश्चितम् ॥ १४ ॥ गंधर्वकन्याःपृथिवीशशापजंसंभुज्यमानाघफलंदुरत्ययम् ॥ स्नानाद्विमुक्ताःखलुमाघमासजाद्वाक्यात्पुरालोमशजातमद्भुतम् ॥ १५ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ श्रुत्वैतत्पार्थिवःप्रीत्यानत्वातत्पादपंकजम् ॥ श्रद्धयापरयानम्रस्तंपप्रच्छपुरोधसम् ॥ १ ॥ भगवन्ब्रूहिकन्याभिःशापोह्यभिगतःकुतः ॥ कस्यापत्यानितास्तासांनाम किंकीदृशंवयः ॥ २ ॥ कथंलोमशवाक्येनविपाकाच्छापसंभवात् ॥ विमुक्ताःकुत्रताःसन्तुर्मासंताःकतिसंख्यया ॥ ३ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ श्रूयतांराजशार्दूलधर्मगर्भाकथांपराम् ॥ यथाऽरणिर्वह्निगर्भाधर्मसूर्वह्निसूरिव ॥ ४ ॥

भाषाटीकायां चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ सूतजी बोले राजाने यह सुन प्रसन्न हो गुरुके चरणोंको प्रणामकर परम श्रद्धासे नम्र होकर पुरोहितसे यह कहा ॥ १ ॥ हे भगवन् ! कहिये कन्याओंको शाप कहां हुआ ? वह किसकी कन्याथीं और उनके क्या नाम थे ? कितनी उमर थी ? ॥ २ ॥ लोमशके वाक्यसे किस प्रकार शापान्तको प्राप्त हुईं ? वे कहां स्नानकर मुक्त हुईं और कितनी थीं ? ॥ ३ ॥ वसिष्ठजी बोले, हे राजन् ! सुनो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैं धर्मयुक्त कथा तुमसे कहताहूं जैसे अरणीके गर्भमें अग्नि ऐसे धर्म और अग्निकी सन्तानकी समान ॥ ४ ॥ सुखसंगीती गन्धर्व की प्रमोदिनी कन्या थी सुशीलकी सुशीला और स्वरवेदीकी सुस्वरा थी ॥ ५ ॥ चन्द्रकान्तिकी सुतारा, सुप्रभकी चंद्रिका हे राजन् ! उन अप्सराओं के ये श्रेष्ठ नाम थे ॥ ६ ॥ ये पांचों कुमारीअवस्थामें समान थीं चन्द्रमासे निकली हुई चन्द्रिकाके समान उज्वल थीं ॥ ७ ॥ चन्द्रमुखी सुकेशी चन्द्रके अमृतके समान रसयुक्त थीं नेत्रोंको आनंद करनेवाली थीं जैसे बबूलोंको कौमुदी ॥ ८ ॥ लावण्य (सुन्दरता) के पिण्डसे सम्भूत

गंधर्वःसुखसंगीतिस्तस्यकन्याप्रमोदिनी ॥ सुशीलस्यसुशीलाचसुस्वरास्वरवेदिनः ॥ ५ ॥ सुताराचंद्रकांतस्यचंद्रिकासुप्रभस्यच ॥
इमानिवरनामानितासामप्सरसांनृप ॥ ६ ॥ कुमार्यःपंचसर्वास्तावयसासुसमाःपुनः॥चंद्रादिवविनिष्क्रांताश्चंद्रिकेवसमुज्ज्वलाः॥७॥
चंद्राननाःसुकेशिन्यश्चंद्रामृतरसाधराः ॥ नेत्रेष्वानंदकारिण्यःकौमुदीकुमुदेष्विव ॥ ८ ॥ लावण्यपिंडसंभूताश्चारुरूपामनोहराः ॥
उद्भिन्नकुचकुंभिन्यःपद्मिन्यइवमाधवे ॥ ९ ॥ उन्मील्ययौवनंकांतंवल्लीवनवपल्लवैः ॥ हेमगौराश्चहेमाभाहेमालंकारभूषिताः ॥ १० ॥
हेमचंपकमालिन्योहेमच्छविसुवाससः ॥ स्वरग्रामावलीहासुविविधामूर्च्छनासुच ॥ ११ ॥ तालदानविनोदेषुवेणुवीणाप्रवादने ॥ मृदं
गनादसंभिन्नंलास्यमार्गलवेषुच ॥ १२ ॥ चित्रादिषुविनोदेषुकलासुचविशारदाः ॥ एवंभूतास्तुताःकन्यासुमुहुःक्रीडनेवने ॥ १३ ॥

सुन्दर रूपवाली मनोहर उठे कुचकुंभवाली वैशाखमें खिली कमलिनी की समान शोभित थीं ॥ ९ ॥ मनोहर यौवनसे उठी मानों वनके पल्लवों की लता है, सुवर्णके समान गौरवर्ण सुवर्णही की कान्तिवाली सुवर्णके अलंकारोंसे भूषित ॥ १० ॥ सुवर्णके चम्पोंकी माला पहरे सुवर्णकी छवि के वस्त्र पहरे स्वरग्राम लीला मूर्च्छना ॥ ११ ॥ तालविनोद वीणाबजाना मृदंगनाद लास्यनृत्य विशेष मार्ग लव ॥ १२ ॥ चित्र विचित्र विनोद और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कलाओंमें सब कुशल थीं. इस प्रकारकी वे कन्या वनमें वारंवार क्रीडा करती थीं ॥ १३ ॥ पिताओंसे लालित हुईं कुबेरके स्थानमें विचरती थीं एक समय वैशाखमासमें सब कौतुकसे मिलकर इस वनसे उस वनमें मंदारके फूलोंको तोडतीं ॥ १४ ॥ गौरीके आराधन करनेको वे श्रेष्ठ अंगना अच्छे जलके सरोवरके निकट गईं. सुवर्णकमल और जल कमलोंको लेकर ॥ १५ ॥ वैडूर्यमणिके समान शुद्ध स्फटिक छबिवाले तथा मूंगे जड़े सरोवरमें स्नान करके वस्त्र पहर मौन होकर स्थल पिण्डिकाकी अर्थात् सुवर्णसिकताकी गौरीकी मूर्ति बिनाई ॥ १६ ॥ चंद्र चन्दन कुंकुम कमलादिसे गौरीका

पितृभिर्लालिताःसत्यश्चेरुश्चधनदालये ॥ कौतुकादेकदापंचमिलित्वामासिमाधवे॥कन्यामंदारपुष्पाणिविचिन्वंत्योवनाद्वनम् ॥१४॥
गौरींसमाराधयितुंवरांगनाःकदाचिदच्छोदसरोवरंययुः ॥ हेमांबुजानिप्रवराणिताःपुनस्तस्मादुपादायवरोत्पलैःसह ॥ १५ ॥ वैडूर्य
शुद्धस्फटिकाच्छविद्रुमेस्नात्वातडागेपरिधायचांबरम् ॥ मौनेनचस्थंडिलपिंडिकामयींस्वर्णस्यसिक्ताभिरुमांविनिर्ममुः ॥ १६ ॥ सम
र्चितांचंदनचंद्रकुंकुमैरभ्यर्च्यगौरींवरपंकजादिभिः ॥ नानोपचारैश्चसुभक्तिभावितास्तालप्रयोगैर्ननृतुःकुमारिकाः ॥ १७ ॥ गांधारमा
श्रित्यवरंस्वरंततोगेयंसुतारध्वनिभिःसुमूर्च्छितम् ॥ एणीदृशस्ताःप्रजगुःकलाक्षरंचारुप्रबंधंगतिभिस्तुसुस्वरम् ॥१८॥ तस्मिन्नसुना
देरसवर्षहर्षदेकन्यास्वलंनिर्भरनृत्यवृत्तिषु ॥ अच्छोदतीर्थप्रवरेतदागतःस्नातुंमुनेर्वेदनिधेःसुतोऽग्निपः ॥ १९ ॥

पूजनकर अनेक उपचार कर सुन्दर भक्तिमें भावित होकर तालप्रयोगसे वे कुमारी नृत्य करने लगीं ॥ १७ ॥ फिर गांधार स्वरका आश्रय करकै उच्च ध्वनीसे मूर्च्छनाके सहित गान करने लगीं. इस प्रकार ये मृगलोचनी मनोहर अक्षरोंसे गाने लगीं जो कि सुन्दर बंध और मनोहर गतिसे सुस्वरराग था ॥ १८ ॥ इस रसकी वर्षा और हर्षके देनेवाले उस सुन्दर नादमें वे कन्या नृत्यगीत करती हुईं अच्छोद तीर्थके समीप स्नान करनेको गईं, जिस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थानमें वेदनिधि मुनिके पुत्र अग्निप ऋषि थे ॥ १९ ॥ रूपमें सीमारहित अनन्त सुन्दर मुखकमल लोचन चौड़ी छाती युवा सुन्दर भुजा श्याम छवि दूसरे कामदेवके समान सुन्दर ॥ २० ॥ शिखा सहित वह ब्रह्मचारी विराजमान हो रहेथे. दण्डसे युक्त धनुष लिये कामदेवके समान मृगचर्म ओढ़े सुन्दर सूत्र यज्ञोपवीत धारण किये सुवर्णके समान मूंजकी कटिसूत्र और मेखला धारण कियेथे ॥ २१ ॥ उन ब्राह्मणको देखकर वे सब बाला सरोवरके किनारे कौतुकको प्राप्त हो प्रसन्न हुईं यह हमारे नैनोंको कौन अतिथि प्राप्त हुआ ? ॥ २२ ॥ वह

रूपेणनिःसीमतरोवराननःसरोजपत्रायतलोचनोयुवा ॥ विशालवक्षाःसुभुजोऽतिसुंदरःश्यामच्छविःकामइवापरोहिसः ॥ २० ॥ सब्रह्मचारीसशिखोविराजतेदंडेनयुक्तोधनुषैवमन्मथः ॥ एणाजिनप्रावरणःसुसूत्रधृग्वेमाभमौंजीकटिसूत्रमेखलः॥२१॥ तंदृष्ट्वाब्राह्मणं बालास्तास्तत्रसरसस्तटे ॥ जहर्षुःकौतुकाविष्टाःकोयंनोनयनातिथिः ॥ २२ ॥ संत्यक्तनृत्यगीतास्तास्तस्यालोकनतत्पराः ॥ हरिण्योलुब्धकेनेवविद्धाःकामेनसायकैः ॥ २३ ॥ पश्यपश्येतिजल्पंत्योमुग्धाःपंचसुसंभ्रमम् ॥ तस्मिन्विप्रवरेयूनिकामदेवभ्रमं ययुः ॥ २४ ॥ पुनःपुनस्तमभ्यर्च्यनयनैःपंकजैरिव ॥ पश्चाद्विचारयामासुस्ताश्चकन्याःपरस्परम् ॥ २५ ॥ यद्ययंकामदेवो हिरतिहीनःकथंव्रजेत् ॥ अथायमश्विनौदेवौतौनूनंयुग्मचारिणौ ॥ २६ ॥

गीत नृत्यको त्यागकर उन्हींको देखने लगीं; जैसे हरिणी कामरूपी लुब्धकके बाणसे विद्ध हो जाती हैं ॥ २३ ॥ वे पांचों मुग्धा संभ्रमसे कहने लगीं कि अरी ! देखो तो, "उस युवा ब्राह्मणमें उनको कामदेवका भ्रम होगया" ॥ २४ ॥ नेत्ररूपी कमलोंसे मानों उसको वारंवार अर्चनाकी पीछे वह कन्या विचार करने लगीं ॥ २५ ॥ जो यह कामदेव है तो रतिके विना कैसे गमन करेगा ? जो यह देव अश्विनीकुमार होते तो दोनों साथ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होते ॥ २६ ॥ यह कोई गन्धर्व किन्नर वा सिद्ध कामरूप बनाये हैं, अथवा कोई ऋषि वा मनुष्यका पुत्र हैं ॥ २७ ॥ अथवा कोई हो इसे विधाताने हमारे निमित्त बनाया है जैसे भाग्यवानोंको पूर्वकर्मसे धन मिलता है ॥ २८ ॥ इसी प्रकार, हम कुमारियोंको गौरीने यह वर प्राप्त किया है करुणा जलकी तरंग और प्लुवसे गीले चित्तवाली ॥ २९ ॥ उनके यह वचन कि, मैंने वरा तैंने वरा, तुझ मुझसे यह वरागया. इस प्रकार पांचों कन्या ओंके कहनेमें हे राजन् ! ॥ ३० ॥ उनके वचन सुनकर मध्याह्नकी क्रिया करके उन्होंने मनमें विचारा कि यह बड़ा विघ्न आनकर

गंधर्वःकिन्नरोवाथसिद्धोवाकामरूपधृक् ॥ ऋषिपुत्रोथवाकाश्चित्कश्चिद्वामानुषोत्तमः॥ २७ ॥ अस्तुवाकश्चिदेवायंधात्रासृष्टोहिनः कृते ॥ यथाभाग्यवतामर्थेनिधानंपूर्वकर्मभिः ॥ २८ ॥ तथाऽस्माकंकुमारीणांगौर्यानीतोवरोत्तमः ॥ करुणाजलकल्लोलप्लुवार्द्रीकृत चित्तया ॥ २९ ॥ मयावृतस्त्वयाचायंत्वयावृत्तस्तथामया ॥ एवंपंचसुकन्यासुवदंतीषुनृपोत्तम ॥ ३० ॥ श्रुत्वातद्वचनंतत्रकृत्वामाध्याह्निकीःक्रियाः ॥ आलोच्यहृदयेसोपिविघ्नमेतदुपस्थितम्॥३१॥ब्रह्मविष्णुगिरिशादयःसुरायेचसिद्धमुनयःपुरातनाः॥ तेपियोगबलिनोविमोहितालीलयातदबलाभिरद्भुतम्॥३२॥योषितांनयनतीक्ष्णसायकैर्भ्रूलतासुदृढचापनिर्गतैः ॥ धन्विनामकरकेतुनाहतःकस्य नोपततिहामनोमृगः ॥३३॥ तावदेवनयधीर्विराजतेतावदेवजनताभयंभजेत्॥तावदेवदृढचित्तताभृशंतावदेवगणनाकुलस्यच ॥३४॥

उपस्थित हुआ ॥ ३१ ॥ ब्रह्मा विष्णु गिरीश आदि देवता और जो पुरातन सिद्ध मुनि हैं वेभी लीलासेही अबलाओंपर मोहित होगये. यह अद्भुत है ॥ ३२ ॥ स्त्रियोंके नयनही तीक्ष्ण बाण भ्रूलतारूप दृढ धनुषसे निकले हुए कामरूपी धन्वीके छोड़े बाणोंसे किनकामी जनोंका मनरूपी मृग नहीं विद्ध होताहै ? ॥ ३३ ॥ जभीतक नीति और बुद्धि है तभीतक जनोंका भय है और तभीतक दृढ चित्तता है, तभीतक कुलकी गणना है ॥ ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तभीतक तपकी प्रगल्भता है तभीतक मनुष्योंको यमादिका धारणा है जबतक स्त्रीके तीक्ष्ण बाणोंसे मनुष्योंके मन नहीं मोहित होते ॥ ३५ ॥ यह रागियोंको मोहित और मदयुक्त करती हैं इनके मनोहर विलास हैं यह मुझे भी मोहितकर मदता करती हैं किन गुणोंसे धर्मकी रक्षा होगी ॥ ३६ ॥ मांस वीर्य मल मूत्र सेवने निर्घृण अपवित्रा स्त्रियोंके शरीरमें कामीजन मनोहरताकी कल्पना करके मूढ चित्त हो रमण न करैं तो

तावदेवतपसःप्रगल्भतातावदेवयमधारणंनृणाम् ॥ यावदेववनितेक्षणबाणैर्मोहयंत्युरुमदैर्नमानुषाः ॥ ३५ ॥ मोहयंतुमदयं तुरागिणांयोषितःसुललितैर्मनोहरैः ॥ मोहयंतिमदयंतिमामिमंधर्मरक्षणपरंहिकैर्गुणैः ॥ ३६ ॥ मांसशुक्रमलमूत्रनिर्मितेयोषितां वपुषिनिर्घृणेशुचौ ॥ कामिनश्चपरिकल्प्यचारुतांमारमंतुसुविमूढचेतसः ॥ ३७ ॥ दारुणोहिपऽरिकीर्तितोंगनासान्निधिर्विमलबु द्धिभिर्बुधैः ॥ यावदत्रनसमीपगाइमास्तावदेवहिगृहंव्रजाम्यहम् ॥ ३८॥ समीपंतस्ययावद्धिनागच्छंतिवरांगनाः ॥ वैष्णवेनप्रभावे णतावदंतर्दधेद्विजः ॥ ३९ ॥ तस्ययोगबलाद्भूपगतस्यादर्शनंतदा ॥ दृष्ट्वातदद्भुतंकर्मऋषिपुत्रस्यधीमतः ॥ ४० ॥ वित्रस्तन यनाबालाःकुरंग्यइवकातराः ॥ संभ्रांतनयनाःशून्यादृशुस्तादिशोदश ॥ ४१ ॥

अच्छा है ॥ ३७ ॥ बुद्धि सम्पन्न निर्मल चित्तवालोंके निकट स्त्रियोंका रहना महात्माओंने दारुण कहा है जबतक यह धीरे न आवें तबतक मैं घरको चला जाऊं ॥ ३८ ॥ जबतक उनके समीप वे सुहासिनी न आवैं तबतक वैष्णव प्रभावसे ब्राह्मण अन्तर्धान होगये ॥ ३९ ॥ हे राजन् ! जब यह योगबलसे अदृष्ट हुए तब ऋषिपुत्रका यह अद्भुत कर्म देखकर ॥ ४० ॥ घबडाये नेत्रवाली वे बाला हरिणीकी समान कातर होगईं संभ्रान्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नेत्रवाली दशों दिशा शून्य देखने लगीं ॥ ४१ ॥ यह इन्द्रजाल अथवा मायाको जान्ता है यह देखने से कैसे अदृष्ट रूप हुए इस प्रकार परस्पर बोलीं ॥ ४२ ॥ विरहाग्नि से उनका हृदय सदा व्याप्त रहने लगा वह स्निग्ध और सघन वन जब जलता सा दीखने लगा ॥ ४३ ॥ तब बोलीं हे कान्त इन्द्र ! जाल की विद्याको त्यागकर शीघ्रदर्शन दो पहलेही ग्रास में मक्षिका की समान तुम अपनेको हमसे पृथक् मतकरो ॥ ४४ ॥ हा ! कष्टहै विधाताने तुमको दिखाकर फिर क्यों छिपा दिया जाना तुमसे हमको सन्ताप पाना निमित्त किया है ॥ ४५ ॥ या तुम्हाराचित्त निर्दयी है या हमपर तुम्हारा

इंद्रजालंस्फुटंवेत्तिमायांजानातिवापुनः ॥ दृष्टोऽप्यदृष्टरूपोऽभूदित्यूचुश्चपरस्परम् ॥ ४२ ॥ व्याप्तंतुहृदयंतासांसदैवविरहाग्निना ॥
ज्वलद्दावानलेनेवसुस्निग्धंसांद्रकाननम् ४३ त्यक्त्वैंद्रजालिकींविद्यांकांतदर्शयसत्वरम्॥स्वात्मानंनोमनोयुक्तंप्राग्ग्रासेमक्षिकोपमम्॥
॥४४॥ हाकष्टंदर्शितःकस्माद्धात्रात्वंघटितःपुनः ॥ ज्ञातंमहानुसंतापहेतोर्नस्त्वंविनिर्मितः॥ ४५॥ कच्चित्तेनिर्दयंचेतःकच्चिदस्मासुनो
मनः॥कच्चिद्धूर्तोसिहेकांतकच्चिन्मुष्णासिनोमनः ॥४६॥कच्चिन्नप्रत्ययोऽस्मासुकच्चिदस्मान्परीक्षसे॥ कच्चिन्नर्मकलाशीलःकच्चिन्माया
विशारदः॥४७॥कच्चिच्चित्तेप्रवेष्टुंचवेत्तिसविज्ञानलाघवम्॥कच्चिन्निष्क्रमणोपायंनजानासिकुतःपुनः ४८कच्चिद्विनाऽपराधंतुत्वमस्मासु
प्रकुप्यसे॥कच्चिद्दुःखंविजानासिपरेषांविप्रलंभनम्॥४९॥त्वद्दर्शनंविनानूनंहृदयेश्वरसांप्रतम् ॥नजीवामोथजीवामःपुनस्त्वद्दर्शनाशया५०

मन नहीं है हे कान्त ! क्या धूर्त हो जो हमारे मनको चुरातेहो ॥ ४६ ॥ या हमारा विश्वास नहीं या हमारी परीक्षा लेतेहो क्या तुम मनोहर कलावान् या मायामें विद्वानहो ॥ ४७ ॥ या चित्त में प्रवेश करनेसे विज्ञानमें लघुता समझते हो फिर क्या निकलनेका उपाय नहीं जान्ते ॥ ४८ ॥ क्या विनाहीं अपराध तुम हमसे कुपित होते हो क्या दूसरोंके वंचितकरने का दुःख जान्ते हो ॥ ४९ ॥ हे प्राणेश्वर ! इस समय तुम्हारे दर्शन के विना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हम नहीं जियेंगी, जियेंगी तो तुम्हारे दर्शन से॥ ५०॥ हमकोभी शीघ्र वहां लेजाओ जहां तुम गये हो विधाताने तुम्हारा दर्शन हरकर हमे शूल दिया॥ ५१॥ सब प्रकार दया कर हमको दर्शनदो सज्जन मनुष्य अन्तावस्था को नहीं देखते हैं ॥५२॥ इस प्रकार वह कन्या विलापकर और बहुतकाल प्रतीक्षा कर फिर पिताके भयसे शीघ्रतासे घरको चलने लगी ॥ ५३ ॥ उसके प्रेमरूपी निगड से बंधी और अत्यन्त विरहसे व्याकुल किसी प्रकार धीर्यको

अस्मांश्चनीयतांतत्रयत्रशीघ्रंगतोभवान् ॥ त्वद्दर्शनहरोधाताव्यदधादंकुरच्छिदम् ॥ ५१ ॥ सर्वथादर्शनंदेहिकारुण्यंभजसर्वथा ॥ पर्यंतंनप्रपश्यंतिसर्वथासज्जनाजनाः॥५२॥इत्थंविलप्यताःकन्याःप्रतीक्ष्यचबहुक्षणम् ॥ पितुर्भियागृहंगंतुंशीघ्रमारेभिरेगतिम्॥५३॥ तत्प्रेमनिगडैर्बद्धाभृशंविरहविक्लवाः ॥ कथंचिद्धैर्यमालंब्यताःस्वंस्वंगृहमागताः ॥ ५४ ॥ आगत्यपतिताःसर्वाजलयंत्रसमीपतः ॥ किमेतन्मातृभिःपृष्टाःकुतःकालात्ययोऽभवत् ॥ ५५ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येदिलीपवसिष्ठसंवादेगंधर्वकन्याविरह प्राप्तिर्नामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ कन्याऊचुः ॥ ॥ क्रीडंत्यःकिन्नरीभिस्तुसार्धंसंगीतकंमुदा ॥ संस्थितास्तेननज्ञातंदिवसा दिसरोवरे ॥ १ ॥पथिश्रांतावयंमातःसंतापस्तेननस्तनौ ॥ मोहेनमहतावक्तुंनकेनाप्युत्सहामहे ॥ २ ॥

धारण कर वे अपने २ घरको गईं ॥५४॥ और आकर सब फुहारेके समीप गिर पड़ीं यह क्या ऐसा उनकी माताओंने पूंछा कि तुमको इतना विलम्ब क्यों हुआ ॥ ५५ ॥ ॥ इति श्रीप० भा० टी० गन्धर्व कन्या विरह प्राप्तिर्नामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ कन्या बोली गंधर्वियोंके संग आनंद से संगीतकी क्रीडा करते स्थित होने से हमने समय न जाना ॥ १ ॥ हे माता! हम मार्गमें शान्तहैं इस कारण हमारे स्तनमें संताप हुआ है मोहसे हम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुछभी कहने का उत्साह नहीं करती ॥ २ ॥ ऐसा कह वे कुमारी मणिभूमिमें लोटने लगीं और आकार छिपाकर माताओंसे जल्पना करने लगीं ॥ ॥ ३ ॥ कोई क्रीडा करके मयूरों से नहीं खेलतीथीं कोई कुतूहल से पींजरे के तोतेभी न पढाती थीं ॥ ४ ॥ नकुल का लालन सारिका का उल्लास छोड दिया और अति मुग्धा होकर सारसोंसे क्रीडा नहीं करती हैं ॥५॥ नविनोद करती और न मंदिरमें रमण करतीथीं न बांधवोंसे बोलती न वीणा बजातीथीं ॥ ६ ॥ जो कल्प वृक्षके फल रस वाले अमृत की समान तथा मंदारके फूलों की गंधि और मधुभी पान नहीं करती थीं ॥

इत्युक्तालुलुठुस्तत्रमणिभूमौकुमारिकाः ॥ आकारंगोपयंत्यस्तामुग्धाजल्पंतिमातृभिः ॥३॥काचिन्नर्तयतिक्रीडामयूरंनमुदातदा ॥
नपाठयतितंकीरंपंजरेऽन्याकुतूहलात् ॥ ४ ॥ लालयेन्नकुलंनान्यानोल्लासयतिसारिकाम् ॥ अपरातीवसंमुग्धानैवक्रीडतिसारसैः ॥
॥ ५ ॥ भेजिरेनविनोदांस्तारेमिरेनैवमंदिरे ॥ ऊचिरेबांधवैर्नालंवीणावाद्यंनचक्रिरे ॥ ६ ॥ कल्पद्रुमप्रसूनंयद्रसवत्तुसुधोपमम् ॥
मंदारकुसुमामोदिनपपुर्मधुरंमधु ॥७॥ योगिन्यइवताःकन्यानासाग्रन्यस्तलोचनाः ॥ अलक्ष्यध्यानसंतानाःपुरुषोत्तममानसाः ॥८॥
चंद्रकांतमणिच्छन्नेस्रवद्वारिकणद्रवे॥क्षणंवातायनेस्थित्वाजलयंत्रेक्षणंक्षणात्॥९॥रचयंतिक्षणंशय्यांदीर्घिकांभोजिनीदलैः॥ वीज्यमा
नासखीभिस्ताःशीतलैःकदलीदलैः॥१०॥इत्थंयुगसमांरात्रिमन्वानास्तावरास्त्रियः॥ कथंचिद्धोरतांकृत्वाविह्वलाःसज्वराइव ॥ ११ ॥

॥ ७ ॥ योगिनीकी समान वे कन्या नासाके अग्र भागमें नेत्र रक्खे अलक्ष्य ध्यान किये उस पुरुष श्रेष्ठमें मन लगाये ॥ ८ ॥ चन्द्रकान्ति मणिसे छन्न वारि कण पसीना जिनके चूरहा, क्षण मात्रको झरोखोंमें और क्षण मात्रको फुहारे के समीप स्थित होतीथीं ॥ ९ ॥ क्षण मात्रमें कमलिनी दलों से शय्या रचतीथीं सखी उनकी शीतल कदली दल से बयार करती थीं ॥ १० ॥ इस प्रकार उन्होंने उस रात्रिको युगकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समान जाना किसी प्रकार धीरताको धारण कर विह्वल ज्वर की समान ॥ ११ ॥ प्रातःकाल सूर्यको देख अपना जीवन मानकर अपनी २ माताओंसे पूंछकर गौरी पूजनको चलीं ॥ १२ ॥ उसी विधिसे स्नान कर फूल गंधसे यथा तथा पूजा कर गान करने लगीं ॥ १३ ॥ इस समय वह ब्राह्मण भी स्नान करनेको आये अपने पिताके आश्रम से अच्छोदके समीप आये ॥ १४ ॥ उस मित्रको देखकर रात्रिके अन्त में खिली कमलिनीकी समान प्रसन्न हुई उस ब्रह्मचारीको देख उनके नेत्र फूलगये ॥ १५ ॥ उसी समय वे कन्या उस ब्रह्मचारीके समीप गईं और

प्रातव्योंममर्णिदृष्ट्वामन्यमानाःस्वजीवितम् ॥ विज्ञाप्यमंतारस्वांस्वांगौरींपूजयितुंगताः ॥ १२ ॥ स्नात्वातेनविधानेनपुष्पैर्धूपैर्यथातथा ॥ विधायपूजनंदेव्यागायंत्यस्तत्रतास्थिताः ॥ १३ ॥एतस्मिन्नंतरेविप्रःस्नातुंसोपिसमागतः ॥ पित्राश्रमपदात्तस्मादच्छोदेचसरोवरे ॥ १४ ॥ मित्रंदृष्ट्वैवराऽयंतेनलिन्यइवकन्यकाः॥उत्फुल्लनयनाजातास्तंदृष्ट्वाब्रह्मचारिणम् ॥१५॥गत्वातदैवताःकन्याःसमीपंब्रह्मचारिणः॥सव्यापसव्यबंधेनभुजपाशंचचक्रिरे॥१६॥गतोसिधूर्तपूर्वेद्युर्गतुमद्यनशक्यसे॥वृतस्त्वंनूनमस्माभिर्नात्रतेस्तुविचारणा ॥ १७॥इत्युक्तोब्राह्मणःप्राहप्रहसन्बाहुपाशगः॥युष्माभिरुच्यतेभद्रमनुकूलंप्रियंवचः॥१८॥प्रथमाश्रमनिष्ठस्यकिंतुनाद्यापिमेव्रतम् ॥ वेदाभ्यसनशीलस्यपारंयातिगुरोःकुले॥१९॥आश्रमेयत्रयोधर्मोरक्षणीयःसपंडितैः॥विवाहोऽयमतोमन्येनधर्मइतिकन्यकाः ॥ २० ॥

चारों ओरसे उनको घेरलिया ॥ १६ ॥ हे धूर्त! कल तो तुम चलेगये आज जा नहीं सकोगे हमने तुमको वरण किया है अब इसमें तुमको विचार करना नहीं चाहिये ॥ १७ ॥ यह सुनकर वह ब्राह्मण हँसते हुए बोले हे भद्रे! तुम अनुकूल और प्रियवचन कहती हो ॥ १८ ॥ परन्तु मैं प्रथम आश्रममें निष्ठा वालाहूं यह मेरा व्रत नहीं हैं गुरुकुलमें रहकर पहले वेदाभ्यासके पार होते हैं ॥ १९ ॥ जिस आश्रमका जो धर्म है विद्वानोंको उसकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रक्षा करनी चाहिये हे कन्यकाओ ! इस कारण इस समय मैं विवाह करना धर्म नहीं मान्ता ॥ २० ॥ उनके वचन सुन वे कन्या बोली मानो वैशाखमें कोकिला बोलती हो ॥ २१ ॥ धर्म से अर्थ अर्थ से काम काम से धर्म फलका उदय होता है इस कारण बुद्धिमान् निश्चित शास्त्र का वर्णन करते हैं ॥ २२ ॥ हम सकाम और धर्म की अधिकता से तुम्हारे समीप आकर प्राप्त हुई हैं अनेक भोगोंसे इस स्वर्ग भूमिकी सेवा करो ॥ २३ ॥ उनके यह वचन सुन

आकर्ण्यतस्यवाक्यानितमूचुस्तावचस्ततः ॥ सकलध्वनिसोत्कंठाःकोकिलाइवमाधवे ॥ २१ ॥ धर्मादर्थोर्थतःकामःकामाद्धर्म फलोदयः ॥ इत्येवंनिश्चितंशास्त्रंवर्णयंतिविपश्चितः ॥ २२ ॥ सकामोधर्मबाहुल्यात्पुरस्तेसमुपागतः ॥ सेव्यतांविविधैर्भोगैःस्वर्गभूमिरियंततः ॥ २३ ॥ श्रुत्वातद्वचनंतासांप्राहगंभीरयागिरा ॥ तथ्यंवोवचनंकिंतुसमाप्येहस्वकंव्रतम् ॥ २४ ॥ प्राप्यानुज्ञांगुरोः सर्ववैवाहंकर्मनान्यथा ॥ इत्युक्तापुनरूचुस्ताःस्फुटंमूढोसिसुन्दर ॥ २५ ॥ दिव्यौषधंब्रह्मरसायनंचसिद्धिर्निधेःसाधुकलावरांगनाः ॥ मंत्रस्तथासिद्धिरसश्चधर्मतोनेमानिषेध्याःसुधियासमागताः ॥ २६ ॥ कार्यैहिदैवाद्यदिसिद्धमागतंतस्मिन्नुपैक्षान्नचयातिनीतिगः ॥ यस्मादुपेक्षानपुनःफलप्रदातस्मान्नदीर्घीकरणंप्रशस्यते ॥ २७ ॥

ब्राह्मण गंभीर वाणीसे बोले यह तुम्हारा वचन सत्य है किंतु मैं अपना व्रत समाप्त करके ॥ २४ ॥ गुरुकी आज्ञा लेकर सबसे विवाह करूंगा इसमें अन्यथा नहीं हैं यह सुनकर वे बोली हे सुन्दर ! तुम अवश्यही अज्ञ हो ॥ २५ ॥ दिव्य ओषधि दिव्य रसायन, सिद्धि निधि साधु कला सुन्दर स्त्री मंत्र तथा धर्म सिद्धि यह आनेपर इनका निषेध किसीको करना न चाहिये ॥ २६ ॥ दैवसे यदि कार्य सिद्धि हो जाय नीति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जान्नेवालेको उसकी उपेक्षा करनी न चाहिये क्योंकि उपेक्षा करनेसे फल नहीं मिलता इस कारण उपेक्षा न करै ॥ २७ ॥ घने अनुराग वली कुल जन्मसे निर्मल स्नेहसे आई चित्त सुन्दर वाणीवाली स्वयंवरकी इच्छावाली स्वरूपवान् यौवनवाली रूपवती कन्या धन्य पुरुषही प्राप्त करते हैं दूसरे नहीं ॥ २८ ॥ कहां हम सुन्दरी और कहां यह तपस्वी बटु दुर्घटके विधानमें ही हम जान्ते हैं विधाता पंडित है ॥ २९ ॥ इस कारण आप हमारे इस मंगलको स्वीकार करो गन्धर्व विवाह करो अन्यथा हमारा जीवन न होगा ॥ ३० ॥ उनके यह वचन सुन धर्मात्मा ब्राह्मण बोले हे मृग

सांद्रानुरागाकुलजन्मनिर्मलाःस्नेहार्द्रचित्ताःसुगिरःस्वयंवराः ॥ कन्याःसुरूपाःखलुचारुयौवनाधन्यालभंतेत्रनरास्तुनेतरे ॥ २८ ॥
क्वयंवरसुन्दर्यःक्वचायंतापसोबटुः ॥ दुर्घटस्यविधानेहिमन्येधातातिपंडितः ॥ २९ ॥ तस्मादस्मादिदानींतुस्वीकुर्यान्मंगलं भवान् ॥ गांधर्वेणविवाहेनह्यन्यथानोनजीवितम् ॥ ३० ॥ श्रुतवाक्यस्ततःप्राहब्राह्मणोधर्मवित्तमः ॥ भोमृगाक्ष्यःकथंत्याज्यो धर्मोधर्मधनैर्नरैः ॥ ३१ ॥ धर्मश्चार्थश्चकामश्चमोक्षश्चैतच्चतुष्टयम् ॥ यथोक्तंसफलंज्ञेयंविपरीतंतुनिष्फलम् ॥ ३२ ॥ नाकालेऽहं व्रतीकुर्यांदलोदारपरिग्रहम् ॥ नक्रियाफलमाप्नोतिक्रियाकालंनवेत्तियः ॥ ३३ ॥ यतोधर्मविचारेस्मिन्प्रसक्तंममामानसम् ॥ तस्माच्छृणुतहेकन्यानसमीहेस्वयंवरम् ॥ ३४ ॥

लोचनी यो ! धर्मात्मा मनुष्य अपना धर्म कैसे त्यागन कर सकते हैं ॥ ३१ ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष यह चार यथोक्त कर सफल होते हैं और विपरीत से निष्फल होते हैं ॥ ३२ ॥ बिना समय मैं व्रतके कारण स्त्री परिग्रह नहीं करूंगा जो क्रिया के समयको नहीं जान्ता वह क्रिया के फलको नहीं प्राप्त होता ॥ ३३ ॥ इस कारण मेरा मन धर्म विचारमें लगाहै इस कारण हे कन्याओ ! सुनो मैं स्वयंवरकी इच्छा नहीं करता ॥ ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह उसका आशय जानकर वे परस्पर एक दूसरीको देखने लगीं हाथसे हाथ छोडकर उनके चरण पकड लिये ॥ ३५ ॥ और उन सुशीलाओंने आतुर होकर उनकी भुजा ग्रहण करलीं सुताराने आलिंगन कर उसका चन्द्र मुख चूम लिया ॥ ३६ ॥ तो भी यह प्रलय अग्निके समान निर्विकार रहे तब ब्रह्मचारीने क्रोध से मूर्च्छित होकर उनको शाप दिया ॥ ३७ ॥ तुम पिशाचियों की समान मुझे लिपटी हो इस कारण पिशाचिनी होगी ऐसा शाप देतेही वे उसे छोडकर सन्मुख स्थित हुईं ॥ ३८ ॥ हे पापिष्ठ! निरपराध जनाको क्यों शाप दिया यह तुम्हारी क्या चेष्टा है, प्रियकरनेमें

एवंज्ञात्वाशयंतस्यसमीक्ष्यैताःपरस्परम्॥करात्करंविमुच्याथजग्राहांघ्रीप्रमोदिनी॥३५॥भुजौजग्राहतुस्तस्यसुशीलासुस्वरातथा ॥ आलिलिंगसुताराचचुचुंबेचंद्रिकामुखम्॥३६॥तथापिनिर्विकारोसौप्रलयानलसन्निभः ॥ शशापब्रह्मचारीताःक्रोधेनात्यंतमूर्च्छितः ॥ ॥३७॥ पिशाच्यइवमांलग्नास्तत्पिशाच्योभविष्यथ॥एवंतेनाशुशप्तास्तास्तंसंत्यज्यपुरःस्थिताः ॥ ३८ ॥ किमेतच्चेष्टितंपापह्यनागसिजनेत्वया ॥ प्रियेकृत्येऽप्रियंकृत्वाधिक्तांधर्मज्ञतांतव ॥३९॥ अनुरक्तेषुभक्तेषुमित्रेषुद्रोहकारिणः॥ पुंसोलोकद्वयेसौख्यंनाशंयातीतिनःश्रुतम् ॥४०॥ तस्मात्त्वमपिनःशापात्पिशाचोभवसत्वरम् ॥ इत्युक्त्वोपरतावालानिःश्वसंत्यःक्षुधाकुलाः ॥४१ ॥ तदाचान्योन्यसंरंभात्तस्मिन्सरसिपार्थिव ॥ ताःकन्याब्रह्मचारीससर्वेपैशाचमागताः ॥ ४२ ॥

अप्रिय किया तुम्हारी धर्मज्ञताको धिक्कार है ॥ ३९ ॥ अनुरक्त भक्तों और मित्रों में जो द्रोह करते हैं उन पुरुषों के दोनों लोक नष्ट होते हैं ऐसे हमने सुना है ॥ ४० ॥ इस कारण तुमभी हमारे शापसे पिशाच होगे, इस प्रकार कह वह बाला निवृत हुईं और क्षुधाके कारण श्वास लेने लगीं ॥ ४१ ॥ हे राजन् ! फिर उस सरोवरमें एक दूसरेके संरंभसे वह कन्या और ब्रह्मचारी पिशाच और पिशाचिनी हुए ॥ ४२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह पिशाच पिशाचिनी दारुण शब्द करने लगे और उस अपने कर्मका विपाक बिताने लगे ॥ ४३ ॥ पूर्व उपार्जन किया कर्म समय पर ही फलता है और हे राजन् ! वह अपनी इच्छासे होता है देवताभी इसको निवृत्त नहीं करसकते ॥ ४४ ॥ उनके माता पिता जहां तहां विलाप करने लगे, बालाओंको प्रमाद नहींथा परन्तु प्रारब्धको कोई मेट नहीं सकता ॥ ४५ ॥ तब वे पिशाच भोजनके निमित्त बडे दुःखी हुए इधर उधर धावमान हो सरोवरके किनारे रहते थे ॥ ४६ ॥ इस प्रकार बहुत दिन बीतनेपर मुनिश्रेष्ठ

पिशाच्यःसपिशाचश्चक्रंदमानाःसुदारुणम् ॥ क्षपयंतिविपाकंतंपूर्वोपात्तस्यकर्मणः ॥ ४३ ॥ स्वकालेतुफलत्येवपूर्वोपात्तंशुभाशुभम् ॥ स्वच्छायाइवदुर्वारंदेवानामपिपार्थिव ॥ ४४ ॥ क्रंदंतिपितरस्तासांमातरस्तत्रतस्यच ॥ अप्रमादश्चबालानांदैवंहिदुरतिक्रमम् ॥ ४५ ॥ ततऊर्ध्वंपिशाचास्तेआहारार्थंसुदुःखिताः ॥ इतस्ततश्चधावंतोवसंतिसरसस्तटे ॥ ४६ ॥ एवंबहुतिथेकालेलोमशोमुनिसत्तमः ॥ पौषमासिचतुर्दश्यामच्छोदेस्नातुमागतः ॥ ४७ ॥ दृष्ट्वातंब्राह्मणंसर्वेपिशाचाःक्षुत्समाकुलाः ॥ धावंतोहंतुकामास्तेमिलित्वायूथवर्तिनः ॥ ४८ ॥ दह्यमानाःसुतीव्रेणतेजसालोमशस्यच ॥ असमर्थाःपुरःस्थातुंसर्वेतेदूरतःस्थिताः ॥ ४९ ॥ तत्रवेदनिधिर्विप्रस्तदैवहिसमागतः ॥ समीक्ष्यलोमशंराजन्साष्टांगंप्रणिपत्यसः ॥ ५० ॥ उवाचसूनृतांवाचंबद्धाशिरसिचांजलिम् ॥ महाभाग्योदयेविप्रसाधूनांसंगतिर्भवेत् ॥ ५१ ॥

लोमशजी पौषमासकी शुक्ल चतुर्दशीको अच्छोद सरोवरको स्नान करनेके निमित्त आये ॥ ४७ ॥ उन ब्राह्मणको देखकर वे सब पिशाच पिशाचिनी भूंखसे व्याकुल हो इकट्ठे हो उनके मारनेकी इच्छासे धावमान हुए ॥ ४८ ॥ परन्तु लोमशके तेजसे वे दह्यमान होने लगे आगे आनेको असमर्थ हो दूर स्थित हुए ॥ ४९ ॥ वेदनिधि ब्राह्मण उसी समय वहां आये लोमशको देखकर उसने साष्टांग प्रणाम किया ॥ ५० ॥ शिरपर अंजली बांध मनोहर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वचन कहे अहोभाग्यसेही आज महात्माकी संगतिहुईहै ॥ ५१ ॥ जोमनुष्य सदा गंगादि तीर्थमें स्नान करता है और जो सत्संगति करताहै उस में सत्संगति श्रेष्ठहै॥५२॥ हे भगवन् गुरुजनों की संगति भूमिमें दृष्टअदृष्ट फलदायक स्वर्ग दायक रोग हारकहै किन्तु कुछ उपद्रव युक्त है ॥५३॥ऐसा कहकर पूर्व अद्भुतवृत्तान्तको वर्णन किया कि यह वह गंधर्वकी कन्याहै, और यह वो मेरा पुत्र ब्रह्मचारीहै ॥५४॥ यह सबपरस्पर शापदेनेके कारण पिशाचरूपसे मोहितहैं हे मुनिश्रेष्ठ तुम्हारे सन्मुख दीन हुए खडे हैं ॥ ५५ ॥ तुम्हारे दर्शन से इनबालकोंका आज निस्तार होजायगा, जैसे सूर्यके

गंगादिसर्वतीर्थेषुयोनरःस्नातिसर्वदा ॥ यःकरोतिसतांसंगंतयोःसत्संगतिर्वरा ॥ ५२ ॥ गुरूणांसंगमोविप्रदृष्टादृष्टफलोभुवि ॥ स्वर्गदोरोगहारीचकिंतुसोपद्रवोमतः ॥ ५३ ॥ इत्युक्त्वाकथयामासपूर्ववृत्तांतमद्भुतम् ॥ इमागंधर्वकन्यास्तावदुःसोयंममात्मजः ॥ ५४ ॥ सर्वेपिशाचरूपेणमिथःशापविमोहिताः ॥ दीनाननास्तुतिष्ठंतितवाग्रेमुनिसत्तम ॥ ५५ ॥ त्वद्दर्शनेनबालानां निस्तारोऽद्यभविष्यति ॥ सूर्योदयेतमःस्तोमःकिंनलीयेतगह्वरे ॥ ५६ ॥ श्रुत्वातल्लोमशोराजन्कृपार्द्रीकृतमानसः ॥ प्रत्युवाच महातेजास्तंमुनिंपुत्रदुःखितम् ॥५७॥ मत्प्रसादाच्चबालानांस्मृतिःसपदिजायताम् ॥ धर्मंचवच्मितंयेनमिथःशापोलयंव्रजेत्॥५८॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेगंधर्वकन्याशापप्रदानंनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ वेदनिधिरुवाच ॥ महर्षेकथ्यतांधर्मोमुच्यंतेयेनबालकाः ॥ नायंकालोविलंबस्यशापाग्निर्दारुणोयतः ॥ १ ॥

उदय होनेसे अंधकार समूह गुहाओंमें लीन होजाता है ॥५६॥ हे राजन् लोमशजी यह बात सुन दयासे आर्द्र चित्तहो वह महा तेजस्वी पुत्रके दुःखी ब्राह्मणसे बोले ॥ ५७ ॥ मेरे प्रसाद से इन बालकोंको शीघ्रही स्मृति होगी और वह धर्म कहताहूं जिस्से इनका शाप परस्पर लोप होजायगा ॥५८॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्ये भाषाटीकायां षोडषोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ वेदनिधि बोले हेमहर्षे वह धर्म कहो जिस्से बालक शापसे मुक्तिको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राप्त होजांय यह समय देरका नहीं कारण कि शापाग्नि बडी दारुण है ॥ १ ॥ लोमशजी बोले ! यह मेरे साथ विधिसे माघस्नान करैं तो माघके अन्तमें इनका उद्धार होजायगा और प्रकारसे निष्कृति नहोगी ॥ २ ॥ हे विप्र ! पापका फल और शाप माघस्नानसेही दूर होते हैं और प्रकार नहीं यह मुझे निश्चय है ॥ ३ ॥ सात जन्मका किया पाप और वर्तमान जन्मका पाप यह सब माघका स्नान नष्ट करदेता है विशेष कर पुण्य तीर्थमें ॥ ४ ॥ हे मुनीश्वरो ! मैं जिस पापका प्रायश्चित्त नहीं देखताहूं वह पातकभी पुण्य तीर्थमें माघस्नान करनेसे नाश होजाता है

लोमशउवाच ॥ ॥ मयासार्धंप्रकुर्वंतुमाघस्नानंविधानतः ॥ शापान्मुच्यंतिमाघांतेनान्यथानिष्कृतिर्भवेत् ॥ २ ॥ शापःपापफलं विप्रपापनाशोभवेन्नृणाम् ॥ माघस्नानेनतोर्थेचइतिमेनिश्चितामतिः ॥ ३ ॥ सप्तजन्मकृतंपापंवर्तमानंचपातकम् ॥ माघस्नानं दहेत्सर्वंपुण्यतीर्थेविशेषतः ॥ ४ ॥ प्रायश्चित्तंनपश्यंतियस्मिन्पापेमुनीश्वराः ॥ पातकंपुण्यतीर्थेषुनश्येत्तदपिमाघतः ॥ ५ ॥ ज्ञानकृन्मानसेमाघस्तस्मान्मोक्षफलप्रदः ॥ हिमवत्पृष्ठतीर्थेषुसर्वपापप्रणाशनः ॥ ६ ॥ इंद्रलोकप्रदोऽच्छोदेनिर्दिष्टोवेदवादिभिः ॥ सर्वपापहरोमाघोमोक्षदोबदरीवने ॥ ७ ॥ पापहादुःखहारीचसर्वकामफलप्रदः ॥ रुद्रलोकप्रदोमाघोनार्मदेपापनाशनः ॥ ८ ॥ यामुनःसूर्यलोकायभवेत्कल्मषनाशनः ॥ सारस्वतोऽघविध्वंसीब्रह्मलोकफलप्रदः ॥ ९ ॥

॥ ५ ॥ जानकर पाप करनेसेभी माघस्नानसे छूट जाता है हिमालयके तीर्थोंमें स्नान करनेसे सब पाप छूटते हैं ॥ ६ ॥ अच्छोदमें स्नान करनेसे इन्द्र लोककी प्राप्तिहोती है ऐसा वेदवादी कहते हैं बदरीवनमें माघमासमें स्नान करनेसे सब पाप दूरहोते हैं ॥ ७ ॥ पापहारी दुःख नाशक सब काम फलका दाता नर्मदामें माघस्नान रुद्र लोकका फल देता है ॥ ८ ॥ यमुनाके स्नानसे पाप नाशहो सूर्य लोक मिलता है सर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वतीका जल पाप दूर कर ब्रह्म लोक देता है ॥ ९ ॥ विशालामें माघस्नान बड़ा फल देता है यह पाप रूपी ईंधनको दावाग्नि और गर्भके कारणको दूर करता है ॥ १० ॥ गंगामें स्नानसे विष्णु लोककी प्राप्ति और मुक्ति होती है सरयू गंडकी सिंधु चन्द्र भागा कौशिकी ॥ ११ ॥ तापी गोदावरी भीमा पयोष्णी कृष्णा वेणी कावेरी तुंगभद्रा तथा और समुद्रगामिनी ॥ १२ ॥ इनमें माघस्नान करनेसे मनुष्य शीघ्रही पाप रहित होजाता है,

विशालफलदोमाघोविशालायांद्विजोत्तम ॥ पातकेंधनदावाग्निर्गर्भहेतुक्रियापहः ॥१०॥ विष्णुलोकायमोक्षायजाह्नवःपरिकीर्तितः ॥ सरयूगंडकीसिंधुश्चंद्रभागाचकौशिकी ॥ ११ ॥ तापीगोदावरीभीमापयोष्णीकृष्णवेणिका ॥ कावेरीतुंगभद्राचअन्यायाश्चसमुद्रगाः ॥ १२॥ आशुमाघीनरोयातिस्वर्गलोकंविकल्मषः ॥ नैमिषेविष्णुसायुज्यंपुष्करेब्रह्मणोंतिकम् ॥ १३ ॥ आखंडलस्यलोको हिकुरुक्षेत्रेतुमाघतः ॥ माघोदेवह्रदेविप्रयोगसिद्धिफलप्रदः ॥१४॥ प्रभासेमकरादित्येस्नानाद्रुद्रगणोभवेत् ॥ देवक्यांदेवतादेहोनरो भवतिमाघतः ॥१५॥ माघस्नानेनभोविप्रगोमत्यांनपुनर्भवः ॥ हेमकूटेमहाकालेओंकारेअमरेश्वरे ॥१६ ॥ नीलकंठेर्बुदेमाघाद्रुद्रलो केमहीयते ॥ सर्वासांसरितांविप्रसंगमेमकरेरवौ ॥ १७ ॥

नैमिषारण्यमें विष्णुका सायुज्य पुष्कर में ब्रह्मकी समीपता ॥ १३ ॥ और कुरुक्षेत्रमें स्नान करनेसे विष्णुकी समीपता प्राप्त होती है देवह्रदमें माघ स्नान करनेसे योग्य सिद्धिका फल मिलता है ॥ १४ ॥ प्रभासक्षेत्रमें माघस्नानसे रुद्रका गण होताहै देवकी में स्नानसे देवता होता है ॥ १५ ॥ हे विप्र ! गोमती में स्नान करनेसे फिर जन्म नहीं होता हेमकूट महाकाल ओंकारेश्वर अमरेश्वर ॥ १६ ॥ नीलकंठ अर्बुद में माघस्नानसे रुद्रलोक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

में प्राप्त होता है हे विप्र मकरके सूर्य में सब नदियोंके ॥ १७ ॥ स्नानसे मनुष्योंको सब कामनाकी प्राप्ति होती है हे द्विज श्रेष्ठ प्रयागमें माघ स्नान बडे भाग्योंसे प्राप्त होता है गंगा यमुनाका जल मुक्ति देता है ॥ १८ ॥ स्वर्गमें स्थित देवता इस बातको कहते हैं कि प्रयागमें माघ स्नान करनेसे फिर जन्म नहीं होता वे नरकको नहीं जाते और स्वर्गमें देवताओंकी समान विचरण करते हैं ॥ १९ ॥ जो पापी मनुष्यभी माघमें

स्नानेनसर्वकामानामवाप्तिर्जायतेनृणाम् ॥ माघस्तुप्राप्यतेधन्यैःप्रयागेद्विजसत्तम ॥ अपुनर्भवदंतत्रसितासितजलंयतः ॥ १८ ॥
गायंतिदेवाःसततंदिविस्थामाघःप्रयागेकिलनोभविष्यति ॥ स्नानान्नरायत्रनगर्भवेदनांपश्यंतितिष्ठंतिचविष्णुसन्निधौ ॥ १९ ॥
मज्जंतियेपित्र्यहमत्रमानवास्तीर्थेप्रयागेबहुपापकंचुकाः ॥ व्रजंतितेनोनिरयेषुधर्मिणःस्वर्गेशुभेचारुचरंतिदेववत् ॥ २० ॥ तीर्थै
व्रतैर्दानतपोभिरध्वरैःसार्धंविधात्रातुलयाधृतंपुरः ॥ माघेप्रयागस्यतयोर्द्वयोरभून्माघोगरीयानतएवसोऽधिकः ॥ २१ ॥ वातां
बुपर्णाशनदेहशोषणैस्तपोभिरुग्रैश्चिरकालसंचितैः ॥ योगैश्चसंयांतिनरानतांगतिंस्नानेनमाघस्यहियांतियांगतिम् ॥ २२ ॥
स्नाताश्चयेमकरभास्करोदयेतीर्थप्रयागेसुरसिंधुसंगमे ॥ तेषांगृहद्वारमलंकरोतिकिंभृंगावलिःकुंजरकर्णताडिता ॥ २३ ॥

तीन दिन स्नान करते हैं वे नरकको नहीं जाते और स्वर्गमें देवताकी समान निवास करते हैं ॥ २० ॥ तीर्थ व्रत दान तप यज्ञ इनको विधाताने एक ओर तुलापर धारण किया, एक ओर माघमें प्रयाग स्नान रक्खा उनमें माघस्नानही गरिष्ठ रहा ॥ २१ ॥ जल पवन सेवन पर्ण भोजनादिकरके जो तपका फल चिर कालमें संचित किया है तथा जो योगका फल है वह फल प्रयागमें माघस्नानसे मिलता है ॥ २२ ॥ जो मकरके सूर्यमें प्रयागमें

१ स्नानात्प्रयागस्यहि यातियांगतिमितिपाठः । २ स्नातानराये मृशभास्करोदये इति च पाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्नान करते हैं उनके घरके द्वारपर हस्तिकर्णताडित भृंगावली क्या करैगी अर्थात् वे महा धन सम्पन्न होंगे यही सिंधु सागर संगमका फल है ॥ २३ ॥ जो राजसूय अश्वमेधका फल है स्नानका फल इससे कहीं अधिक है उसमे वह सब पाप दूर करने वाले प्रयागका सेवन क्यों न किया जाय ॥ २४ ॥ पहले अवन्तिदेशका एक राजा वीरसेन था उसने नर्मदाके किनारे आकर अश्वमेध यज्ञ किया ॥ २५ ॥ सुवर्णके मार्गसे युक्त सोलह अश्वमेध किये जो सुवर्णके भूषणोंसे युक्त यथाक्त शोभितथे ॥ २६ ॥ ब्राह्मणोंके

योराजसूयाद्धयमेधयज्ञतःस्नानात्फलंसंप्रददातिचाधिकम् ॥ पापानिसर्वाणिविलोप्यलीलयानूनंप्रयागःसकथंनसेव्यते ॥ २४ ॥
अवंतिविषयेराजावीरसेनोऽभवत्पुरा ॥ नर्मदातीरमागत्यराजसूयंचकारसः ॥ २५ ॥ षोडशैरश्वमेधैश्चस्वर्णवाटविराजतैः ॥
स्वर्णभूषणयूपाढ्यैरीजेसोपियथाविधि ॥ २६ ॥ प्रददौधान्यराशींश्चद्विजेभ्यःपर्वतोपमान् ॥ वदान्योदेवताभक्तोगोप्रदःसुवर्णदः
॥ २७ ॥ ब्राह्मणोभद्रकोनाममूर्खोहीनकुलस्तथा ॥ कृषीबलोदुराचारःसर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ २८ ॥ कृषिकर्मसमुद्विग्नोबंधुभि
श्चाप्यसंस्कृतः ॥ इतस्ततःपरिभ्रम्यनिर्गतःक्षुत्प्रपीडितः ॥ २९ ॥ दैवतःसार्थमाविश्यप्रयागंससमागतः ॥ महामाघीपुरस्कृ
त्यससस्नौतत्रदिनत्रयम् ॥ ३० ॥ अनघःस्नानमात्रेणभूत्वेहसद्विजोत्तमः ॥ प्रयागाच्चलितस्तत्रपुनर्यस्मात्समागतः ॥ ३१ ॥

निमित्त बहुतसे रत्न धान्यदिये बडादानी देवताका भक्त गौ और सुवर्णका देनेवाला था ॥ २७ ॥ एक ब्राह्मण भद्रकनाम मूर्ख और कुलसेरहित खेती करनेवाला दुराचारी सब धर्मों से बहिष्कृत ॥ २८ ॥ कृषि कर्ममें समुद्विग्न बंधुओंसे असेवित इधर उधर घूमता क्षुधा से पीडितहो निर्गत हुआ ॥ २९ ॥ ज्योतिषियों के साथमें प्रयागमें चलाआया महामघकी संक्रान्ति होने पर तीन दिन वहां स्नान किया ॥ ३० ॥ स्नान मात्रसे वह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मण पाप रहित होकर प्रयाग से फिर अपने स्थानको प्राप्त हुआ ॥ ३१ ॥ वह राजा और ब्राह्मण एकही दिन मृतक हुए मैंने इन्द्रके समीप उन दोनों की बराबर गति देखी ॥ ३२ ॥ तेजरूप बल स्त्री देव यान भूषण पारिजातकी माला नृत्य गीत समानथे ॥ ३३ ॥ उस क्षेत्रका माहात्म्य क्या कहा जाय हे विप्र माघमास में प्रयाग स्नान राजसूयकी समानहै ॥ ३४ ॥ गंगा यमुनाके संगम में तीन सै धनुषतक माघमें स्नान करने से मुक्ति हो

सराजासोपिविप्रश्चविपन्नावेकदातदा ॥ तयोर्गतिःसमादृष्टामयाशक्रस्यसन्निधौ ॥ ३२ ॥ तेजोरूपंबलंस्त्रैणंदेवयानंविभूषणम् ॥ पारिजातमयीमालानृत्यंगीतंतयोःसमम् ॥ ३३ ॥ इतिदृष्टंहिमाहात्म्यंक्षेत्रस्यकथमुच्यते ॥ माघःसितासितेविप्रराजसूयैःसमोमतः ॥ ३४ ॥ धनुस्त्रिंशतविस्तीर्णेसितनीलांबुसंगमे ॥ अपुनरावृत्तिर्मार्गीराजसूयीपुनर्भवेत् ॥ ३५ ॥ माघमासीयवातोपिसितासितजलंस्पृशेत् ॥ अधर्म्यैनस्पृशेन्नूनंमहापातकहाहिसः ॥ ३६ ॥ किमत्रबहुनोक्तेनश्रूयतांद्विजनिश्चितम् ॥ समुद्भूतफलंपापंतीर्थे माघःप्रणाशयेत् ॥ ३७ ॥ अत्रतेकथयिष्यामिसावधानमतिःशृणु ॥ पिशाचमोचनंनामइतिहासंपुरातनम् ॥ ३८ ॥ शृण्वंत्वप्सरसो बालाःशृणोतुत्वत्सुतस्तथा ॥ मत्प्रसादात्स्मृतिर्लब्ध्वापैशाच्यान्मुक्तिकामिनः ॥ ३९ ॥

जाती है इसमें सन्देह नहीं और राजसूय करके तो फिरभी संसार में आता है ॥ ३५ ॥ जो माघमास की पवन भी गंगा यमुनाको स्पर्श करै उसके लगने से अधर्म स्पर्श नहीं करता यह महापातक की हरनेवाली है ॥ ३६ ॥ बहुत कहने से क्या है हे द्विजो यह निश्चय सुनिये कहींके तीर्थका उत्पन्न हुआ पाप माघस्नानसे दूर हो जाता है ॥ ३७ ॥ सावधान होकर सुनो इस स्थलमें पिशाचमोचन नाम एक इतिहास तुमसे कहताहूं ॥ ३८ ॥ यह बालक गंधर्वी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और तुम्हारा पुत्र भी सुने मेरे प्रसादसे स्मृतिको प्राप्त हो यह कामी मुक्त होजायँगे॥ ३९ ॥ पहले एक देवद्युतिनाम वेद पारगमी वैष्णव ब्राह्मण करुणापर वश हो पिशाच को मुक्त कर चुकाहै ॥ ४० ॥ इति श्रीपाद्मे माघ माहात्म्ये पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र कृतभाषाटीकायां सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ दिलीप बोले वह कहांके निवासी किसके पुत्र थे उनका नियम क्या था जप कैसा था कैसी वैष्णवी वृत्ति थी कौन पिशाच को मुक्त किया ॥ १ ॥ हेमहामुने !

पुरादेवद्युतिर्विप्रोवैष्णवोवेदपारगः ॥ पिशाचान्मोचयामासकरुणाप्लुतमानसः ॥ ४० ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठ दिलीपसंवादेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ दिलीपउवाच ॥ ॥ कुत्रस्थितःकस्यपुत्रोनियमःकोऽस्यवाजपः ॥ केनवावै ष्णवोवृत्तःकेपिशाचाश्चमोचिताः ॥ १ ॥ एतद्विस्तरतःसर्वंकीर्तयस्वमहामुने ॥ कौतूहलंमहापुण्यंशृणुमस्त्वत्प्रसादतः ॥ २ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ प्लक्षप्रस्रवणेपुण्येसरस्वत्यास्तटेशुभे ॥ तत्राश्रमपदंतस्यशैलमाश्रित्यशोभनम् ॥ ३ ॥ शालैस्तालै स्तमालैश्चबिल्वैर्बकुलपाटलैः ॥ तिंतिडीचिरिबिल्वैश्चचूतचंपककांचनैः ॥ ४ ॥ करंजैःकोविदारैश्चकेसरैःकुंजराशनैः ॥ तिल कैःकर्णिकारैश्चकुंभैःखादिरतिंदुकैः ॥ ५ ॥ वानीरैःसाल्वजंबीरैःपीलूदुंबरवेतसैः ॥ शाकोटैरटरूषैश्चकरहाटैर्वटद्रुमैः ॥ ६ ॥

यह सब विस्तार से कहिये हम आपके प्रसाद से सुनतेहैं इस पुण्यकथा में मुझे बडा कुतूलहै ॥ २ ॥ वसिष्ठ बोले प्लक्षके पवित्र स्रोत सरस्वतीके सुन्दर तटमें पर्वतको आश्रय किये ब्राह्मणका पवित्र सुन्दर आश्रम था ॥ ३ ॥ शाल ताल तमाल बेल बकुल पाटल इमली चिरवेल आम चंपक कांच न ॥ ४ ॥ करंज कोविदार केसर कुंजर अशन तिलक कर्णिकार कुंभ खैर तेंदू ॥ ५ ॥ वानीर साल्व जंभीरी पीलू गूलर वेत शाखोट आडू

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करहाट वटके पेड़ ॥ ६ ॥ घोंटा कुटज ढाक, शोक हरनेवाले अशोक जामुन नीम कदम्ब क्षीरिका कर्मर्दक ॥ ७ ॥ विजोरा, नारंगी, केलोंके समूहसे विराजमान रसवाले पनस कटहल तथा नारियलों से व्याप्त ॥ ८ ॥ सप्तच्छद त्रिपत्र, शिरस, आमले, कर्कन्धू, लकुच, अखरोट, पारिभद्र, वचादि से युक्त ॥ ९॥ केतकी, सिन्धुवार, तगर, कुन्दमल्ली, कमल, नील कमल, कल्हार, मालती, चमेली ॥ १० ॥ मालती, मोगरी, जायफलों से विराजित नाग

घोंटाकुटजपालाशैरशोकैःशोकहारिभिः ॥ जंबूनिंकदंबैश्चक्षीरिकाकरमर्दकैः ॥ ७ ॥ बीजपूरैःसनारिंगैरंभाराजिविराजितैः ॥
पनसैरसवद्भिश्चनारिकेलैःसदाफलैः ॥ ८ ॥ सप्तच्छदैस्त्रिपत्रैश्चशिरीषामलकैःशुभैः ॥ कर्कंधूलकुचैरक्षैःपारिभद्रैर्वचादिभिः ॥ ९ ॥
केतकैःसिंदुवारैश्चतगरैःकुन्दमल्लिकैः ॥ पद्मेन्दीवरकह्लारमालतीयूथिकादिभिः ॥ १० ॥ मालतीमोगरैश्चैवजातीफलविराजितैः ॥
पुन्नागैःकिंशुकैश्चैववर्बरीतुलसीद्रुमैः ॥११॥ आश्रमोरमणीयःसद्रुमैर्नानाविधैर्नृप ॥ वनमध्येनदीयातिपुण्यतोयासरस्वती ॥ १२ ॥
कूजंतिसारसास्तत्रमदस्निग्धकलंसदा ॥ नदंतिकोकिलाःशब्दंगुंजंतिचमधुव्रताः ॥ १३ ॥ बहुकोलाहलंभूपतद्वनंशुकसारिभिः ॥
चरंतिश्वापदास्तत्रविविधाःकाननोत्तमे ॥ १४ ॥ सदाफलंसदापुष्पंपरागकणधूसरम् ॥ आच्छन्नंकाननंसर्वंमधुवृक्षैःसमंततः॥१५॥

केशर, टेसू, बर्बरी तुलसी ॥ ११ ॥ हेराजन् ! अनेक प्रकार के वृक्षों से वह आश्रम मनोहर होरहा था वनके बीचमें पुण्य जला सरस्वती वहन करती थी ॥ १२ ॥ मद से स्निग्ध सारस यहां गुंजार करतेथे कोकिला शब्द करतीं और भौंरे गुंजारतेथे ॥ १३ ॥ हे राजन् तोते मैनाओंसे वह वन बडा कोलाहल कररहा था उस उत्तम वनमें अनेक वनके जीव सिंहादि विचरतेथे ॥ १४ ॥ सदा फल फूल से व्याप्त पराग से धूसर सब ओर मधु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वृक्षों से वह वन व्याप्त था ॥ १५ ॥ नये पत्ते और मंजरीसे वेलैं भरी हुई चारोंओर वृक्षों से लिपटी ऐसी शोभित होती थीं जैसे प्रियासे वल्लभ शोभित होताहै॥ १६॥ उसके शापके भयसे पवन मंद मंद चलती थी न मेघों से कभी ओले पडते न सूर्य विशेष जल शोषता था॥ १७॥ उपद्रव रहित वह वन सदा सिद्धोंसे सेवित था चैत्ररथ वनकी समान सदा आनंददायक था ॥ १८॥ उसमें धर्मात्मा देवताओंकी समान कान्तिमान् ब्राह्मण निवास

नवपल्लवसंजातमंजरीभरवल्लिभिः ॥ आश्लिष्टमभितोरम्यंप्रियाभिरिववल्लभः ॥ १६ ॥ तस्यशापभयात्त्रस्तोवातोवातिसमं ततः ॥ नवर्षत्यश्मभिर्मेघानशोषयतिभास्करः ॥ १७ ॥ वनंनोपद्रवंतद्धिसदासिद्धनिषेवितम् ॥ आह्लादजनकंनित्यंवनंचैत्ररथं यथा ॥ १८ ॥ तस्मिन्वसतिधर्मात्मादेवद्युतिर्द्विजोत्तमः ॥ पुत्रःसुमित्रोविप्रस्यलब्धोलक्ष्मीपतेर्वरात् ॥ १९ ॥ नियमःश्रूयतां तस्यसर्वदानियतात्मनः ॥ ग्रीष्मेपंचतपानित्यंसूर्यन्यस्तविलोचनः ॥ २० ॥ वर्षत्कादंबिनीयावद्वर्षास्वभ्रावकाशगः ॥ वातेप्रवाते निष्कंपोदुःसहोहिमवानिव ॥ २१ ॥ वसत्यप्सुसहेमंतेह्रदेसारस्वतेद्विज ॥ उपस्पृशतिकालेसत्रिवारंवारिनिर्मलम् ॥ २२ ॥ पितॄन्देवानृषीन्नित्यंसंतर्पयतिश्रद्धया ॥ ब्रह्मयज्ञपरोनित्यंसत्यवादीजितेंद्रियः ॥ २३ ॥

करता था यह सुमित्र ब्राह्मणकापुत्र भगवानसे वरपाये था ॥ १९ ॥ उसके नियम सुनो कि वह सदा नियममें तत्पर ग्रीष्ममें सूर्यकी ओर नेत्रकर पंचाग्नितापता था ॥२०॥ मेघोंके वर्षते में मैदानमें बैठकर तपकरता था पवन चलनेपर हिमवानकी समान निष्कंप रहता था ॥२१॥ हे विप्र ! हेमन्त (अगहनपौष) में सारस्वत ह्रदमें बैठकरतपकरता और तीन वार निर्मल जल स्पर्श कर संध्या करता ॥ २२ ॥ श्रद्धासे देवता पितरोंका नित्य तर्पण

१ त्रस्ता गंगावाताः भवंति नेतिपाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करता नित्य ब्रह्म यज्ञ करता सत्य वादी जितेन्द्रिय रहताथा ॥ २३ ॥ भूमिमें शयन कर भगवान्का ध्यान और प्रार्थना करता अग्निहोत्र कर श्रद्धा से अतिथि सत्कार करता ॥ २४ ॥ सदा चान्द्रायण के विधान से समयको व्यतीत करता था और आप स्वयं गिरेहुए पत्तोंसे अपनी आजीविका करता था ॥ २५॥ उद्वेग रहित हो तप करता वेदवेदाङ्ग का पारगामी नाडी दीख रहीं अस्थि मात्र जिसका शरीर स्थित था॥ २६ ॥इस प्रकार वनमें उसको सहस्र वर्ष बीत गये तब उसके तेजसे वह पर्वत प्रज्वलित हो उठा ॥ २७ ॥ उस माहात्माके तेजको कोई प्राणी न सहसका वह ब्राह्मण

भूमौविश्रम्यविश्रांतःप्रदध्यौप्रार्थयन्हरिम् ॥ वन्यैर्जुहोत्यग्निहोत्रंश्रद्धयातिथिपूजकः ॥ २४ ॥ चांद्रायणविधानेनकालंनयतिसर्वदा ॥
स्वयंविगलितैःपत्रैःफलैर्वृत्तिंसमीहते ॥ २५ ॥ अनुद्विग्नस्तपोनिष्ठोवेदवेदांगपारगः ॥ धमनीविकरालोसावस्थिमात्रकलेवरः ॥२६॥
इत्थंजगामवर्षाणांसहस्रंतस्यकानने ॥ तदाजज्वालशैलोऽसौतपसस्तस्यतेजसा ॥ २७॥ सोढुंनशक्यतेभूतैस्तेजस्तस्यमहात्मनः ॥
वैश्वानरइवाभातिप्रज्वलंस्तपसाद्विज ॥२८॥ गतवैराणिभूतानिसमजायंततद्वने ॥ मृगव्याघ्राखुमार्जारामिथःक्रीडंतिनिर्भयाः॥२९॥
अन्योपिनियमस्तस्यश्रूयतामतिदुर्लभः ॥ नारायणंत्रिकालंससंपूजयतिनित्यशः ॥ ३० ॥ पुष्पाणांतुसहस्रेणविकचेनसुगंधिना ॥
वेदसूक्तविधानेनविष्णुध्यानपरायणः ॥३१॥ विष्णोःसंप्रीतयेविप्रःकुरुतेकर्मचाखिलम् ॥ दधीचेर्वरदानात्ससंजातोवरवैष्णवः॥३२॥

तपसे अग्निकी समान दीखतेथे ॥ २८ ॥ उस वनमें वैर रहित हो सब प्राणी विहार करते थे मृग व्याघ्र मूषक मार्जार निर्भय हो परस्पर वैर त्याग विचरते थे ॥ २९ ॥ और भी उसका अति दुर्लभ नियम सुनो तीनों कालमें नारायणका वह पूजन करताथा ॥ ३० ॥ और सहस्र पुष्प खिले हुए सुगंधिके चढाताथा वेद सूक्तके विधानसे विष्णुका ध्यान करताथा ॥ ३१ ॥ हे ब्राह्मणो ! विष्णुकी प्रीतिके निमित्त ही वह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सब कर्म करताथा दधीचिके वरदानसे वह उत्तम वैष्णव हुए॥ ३२॥ एक समय वैशाखमास एकादशीके दिन वह महामुनि भगवानकी पूजाकर विचित्र स्तुति करनेलगा ॥ ३३ ॥ उसी समय देवदेव भगवान गरुडके ऊपर चढकर उसकी स्तुतिसे प्रसन्न हो उसके समीप आये ॥ ३४ ॥ उनश्याममेघ की छविवाले भगवान्‌को गरुडपर चढे चार भुजा बडे नेत्र सब अलंकारोंसे भूषित देख ॥ ३५ ॥ ब्राह्मण पुलकायमान हो गया आनंदका जल नेत्रोंमें भरि आया और कृतकृत्य हो भूमिमें प्रणाम किया ॥ ३६ ॥ और हर्षताके कारण ब्रह्माण्डमें उदरवालेको न जानसका उसने अपने

एकदामासिवैशाखेएकादश्यांमहामुनिः ॥ पूजांकृत्वाहरेरम्यांविचित्रामकरोत्स्तुतिम् ॥३३॥ तदैवखगमारुह्यदेवदेवोहरिःस्वयम् ॥
आजगामपुरस्तस्यतयास्तुत्यातिहर्षितः॥३४॥तंदृष्ट्वागरुडारूढंप्रत्यक्षंजलदच्छविम् ॥चतुर्बाहुंविशालाक्षंसर्वालंकारभूषितम्॥३५॥
उद्भूतपुलकोविप्रःसानंदजललोचनः ॥ जगामशिरसाभूमौकृतकृत्यमनास्तदा ॥३६॥ नममौतेनहर्षेणसब्रह्मांडोदरेपिहि ॥ नसस्मार
निजंदेहंब्रह्मभूतइवाभवत् ॥ ३७ ॥ ततःसंभाषितःप्रीत्याहरिणावैष्णवोमुनिः ॥ देवद्युतेविजानामिमद्भक्तस्त्वंमदाश्रयः ॥ ३८ ॥
संन्यस्ताखिलकर्मासिमद्भावोमन्मनाःसदा ॥ वरंब्रूहिप्रसन्नोस्मिस्तोत्रेणानेनचानघ ॥ ३९ ॥ इतिश्रुत्वाहरेर्वाक्यंप्रत्युवाचसतापसः ॥
देवदेवारविंदाक्षस्वमायाधृतविग्रह ॥ ४० ॥ त्वद्दर्शनात्सदादेवदुर्लभोनापरोवरः ॥ ब्रह्मादयःसुराःसर्वेयोगिनःसनकादयः ॥ ४१ ॥

देहको स्मरण न किया ब्रह्मरूपही होगया ॥ ३७ ॥ तब भगवान् प्रसन्न हो वैष्णव मुनिसे बोले हे देवद्युति मैं जान्ताहूं तुम मेरे भक्त और मेरे आश्रय हो ॥ ३८ ॥ सब कर्मोंका फल त्यागे सदामुझमें मन लगाये हो इस स्तोत्रसे मैं प्रसन्न हूं हे पापरहित वर मांगो ॥ ३९ ॥ यह भगवान्‌के वचन सुन वह तपस्वी बोला हे देवदेव कमल लोचन अपनी मायासे शरीर धारण करनेवाले ॥ ४० ॥ आपका दर्शन सदा दुर्लभ है सो प्राप्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुआ अब इससे अधिक और वर न चाहिये ब्रह्मादि सब देवता सनकादि योगी ॥ ४१ ॥ और कपिलादि सिद्ध आपसे साक्षात् करनेकी इच्छा करते हैं अहंकार ममत्वके जो लोभ मोह शुभ अशुभ पाश हैं ॥ ४२ ॥ जो कारण जन्मके हैं वह आप परावर के दर्शनसे दग्ध होजाते हैं मेरे जन्म कर्म और बुद्धिका फल प्राप्त हुआ ॥ ४३ ॥ हे जगत्पति ! जो आपका दर्शन हुआ अब इससे अधिक क्या मांगूं हे देवेश ! हृदयमें

त्वांसाक्षात्कर्तुमिच्छंतिसिद्धाश्चकपिलादयः ॥ अहंममेतिपाशायेमोहलोभाःशुभाशुभाः ॥४२॥ सहेतुकाश्चदह्यंतेदृष्टेत्वयिपरावरे ॥ जन्मनःकर्मणोबुद्धेराविर्भूतंफलंमम ॥ ४३ ॥ यद्दृष्टोसिजगन्नाथप्रार्थयेकिमतःपरम् ॥ नवरार्थोहिदेवेशत्वत्पादपंकजंहृदि ॥ ४४ ॥ चिंतयामिसदाभक्त्यात्वद्भक्तेनांतरात्मना ॥ इममेववरंयाचेत्वद्भक्तिरचलाममम ॥ ४५ ॥ अस्तुवैकमलानाथप्रार्थयेनापरंवरम् ॥ इति श्रुत्वावचस्तस्यप्रसन्नवदनोहरिः ॥४६॥ प्रत्युवाचप्रसन्नात्माएवमस्तुद्विजोत्तम ॥ अन्यस्तेतपसःकश्चित्प्रत्यूहोनभविष्यति ॥४७॥ एतच्चत्वत्कृतंस्तोत्रंयेपठिष्यंतिमानवाः ॥ तेषांमद्विषयाभक्तिर्निश्चलाचभविष्यति ॥ ४८ ॥

आपके चरण कमल वरके निमित्त नहीं है ॥ ४४ ॥ सदा भक्तिसे आपमें मन लगाये मैं तुम्हारा चिंतन करताहूं यही मैं वर मांगताहूं कि आपकी अचल भक्ति मुझमें निवास करै ॥ ४५ ॥ हे कमलानाथ ! यही हो और वरकी इच्छा नहीं करताहूं यह ब्राह्मणके वचन सुन भगवान् प्रसन्न होकर ॥ ४६ ॥ प्रसन्नतासे ऐसाही होगा तेरे तपमें कोई भी विघ्न न होगा ॥ ४७ ॥ और इस तुम्हारे किये स्तोत्रको जो मनुष्य पढेंगे उनकी

---

१ देहस्य मोहमूलाः शुभाशुभाइतिपाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरेमें निश्चल भक्ति होगी ॥ ४८ ॥ जो कुछ धर्म कार्य है वह सांग और सम्पूर्ण होगा और उनकी निश्चल ज्ञानमें पूरी निष्ठा होगी ॥ ४९ ॥ ऐसा कह भगवान् वहांही अन्तर्धान होगये देवद्युति उसी समयसे नारायणके ध्यानमग्न हुए ॥ ५० ॥ ॥ इति श्रीमाघमाहात्म्ये पण्डितज्वाला प्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायां देवद्युति वरप्रदानंनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ दिलीपबोले हे महर्षे ! पवित्र कथा सुनाकर मुझे कृतकृत्य

धर्मकार्यंचयत्किंचित्सांगंसर्वंभविष्यति ॥ ज्ञानेचपरमानिष्ठातेषांस्थास्यतिनिश्चला ॥ ४९ ॥ इत्युक्तांतर्हितस्तत्रदेवदेवोजनार्दनः ॥ देवद्युतिस्तदारभ्यनारायणपरोऽभवत् ॥ ५० ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेदेवद्युतिवरप्रदानंनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ दिलीपउवाच ॥ ॥ महर्षेऽनुगृहीतोस्मिकथयापावनीकृतः ॥ अनयाविष्णुसंगत्यागंगयेवाहमद्यवै ॥ १ ॥ किंतत्स्तोत्रंसमाख्याहिप्रसन्नोयेनमाधवः ॥ तस्यानघस्यविप्रस्यमहत्कौतूहलंमम ॥ २ ॥ त्वत्प्रसादादहंविप्रमन्येप्राप्तंमनोरथम् ॥ महतांसंगतिःकस्यमहत्त्वायनकल्पते ॥ ३ ॥ कथयस्वप्रसादेनविष्णोःस्तोत्रमनुत्तमम् ॥ येनतुष्टःसभगवान्ददौतस्यचदर्शनम् ॥ ४ ॥

करदिया इन विष्णु भगवान्‌की संगतिसे आज मैं गंगाकी समान पावन हुआ ॥ १ ॥ आप कहिये वह कौनसा स्तोत्र है जिस्से भगवान् प्रसन्न होते हैं उस पवित्र ब्राह्मणके चरित्रोंमें मुझे बडी लालसा है ॥ २ ॥ हे विप्र ! आपके प्रसादसे मैं अपने पूर्ण मनोरथ मानूं हूं महात्माओंकी संगतिसे कौन बडा नहीं होता है ॥ ३ ॥ कृपाकर उत्तम विष्णुका स्तोत्र कहिये जिस्से प्रसन्न हो भगवान्‌ने उसे दर्शन दिया ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वसिष्ठजी बोले मैं तुमसे यह गुप्त कथा कहताहूं जो उत्तम स्तोत्र जपनेके योग्य है पहले इसको गरुडजीने ग्रहण किया था उनसे मेरेपास आयाहै ॥ ५ ॥ यह अध्यात्मगर्भका सार और महाउदयका करनेवाला है हे राजन् ! सब पापका हरनेवाला और आत्मज्ञानका अधिक करनेवाला है ॥ ६ ॥ ओंनमोवासुदेवाय जगत्के स्वरूप सबमें व्याप्त विश्वरूप चक्रधारी भक्तोंके प्रिय कृष्णजगत्पति शार्ङ्गधारीके निमित्त नमस्कार है ॥ ७ ॥ स्तुति करनेवाले स्तुतिके योग्य और स्तुति यह सब जगत् जबकि विष्णुरूप है तब किससे स्तुति की जाय भक्ति मनुष्योंको आनंदकी करनेवाली है ॥ ८ ॥ जिस देवके

॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ कथयामिरहस्यंतेयज्जप्तंस्तोत्रमुत्तमम् ॥ प्राग्गृहीतंसुपर्णेनगरुडान्मयिचागतम् ॥ ५ ॥ अध्यात्मगर्भसारंतन्महोदयकरंशुभम् ॥ सर्वपापहरंभूपस्वात्मज्ञानकरंपरम् ॥ ६ ॥ ओंनमोवासुदेवायनमोविश्वायचक्रिणे ॥ भक्तप्रियायकृष्णायजगन्नाथायशार्ङ्गिणे ॥ ७ ॥ स्तोतास्तुत्यः स्तुतिः सर्वंजगद्विष्णुमयंयदा ॥ तदासंस्तूयतेकेनभक्तिर्मोदकरीनृणाम् ॥ ८ ॥ यस्यदेवस्यनिःश्वासोवेदाःसांगाःससूत्रकाः ॥ कास्तुतिःप्रमुदेतस्यभक्त्याऽहंमुखरोऽभवम् ॥ ९ ॥ चक्रवद्भ्रमतेसर्वं त्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ अतस्त्वंगीयतेदेवचक्रपाणिवरायुध ॥ १० ॥ वेदोनवक्तियंसाक्षान्नचवाग्वेत्तिनोमनः ॥ मद्विधस्तंकथंस्तौतिभक्तिमान्वाकथंभवेत् ॥ ११ ॥

श्वाससे सांग सूत्र सहित वेद हुए हैं उसको कौनसी स्तुति प्रसन्न करेगी केवल भक्तिसे मैं वाचालता करताहूं ॥ ९ ॥ जिसकी महिमासे त्रिलोकी चक्रकी समान भ्रमण करती है इस कारण हे देव ! हे चक्रपाणि ! आपही जगत्में गाये जाते हो ॥ १० ॥ जिसको साक्षात् वेद नहीं कह सकता जिसको न वाणी और न मन जान्ताहै मुझ सरीका उनकी स्तुति कैसे करसके और किस प्रकार भक्तिमान् हो सकताहै ॥ ११ ॥ ब्रह्माकी आदि वा ब्रह्माविष्णुरूप तुमहो तुमही सबके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आश्रय सबके स्रष्टा ब्रह्माकेभी आदि कारण शुद्ध ब्रह्म आपहीहो॥ १२॥ हे व्यापक ! वह आपकी काया क्या है जो भेदकर कायाका स्पर्श करती है आप कायाके दोषसे सूंघेभी नहीं गये आप योगीके निमित्त नमस्कार है ॥ १३ ॥ आप देवभावसे सदा जागते हैं आत्मस्वरूपसे कभी निद्रा नहीं लेतेहो जो सुख संदोहकी बुद्धि है हे विष्णो ! वह आपमें है इसमें संदेह नहीं ॥ १४ ॥ महत्व आदि महाभाव और पंचभूतोंके गुण हे नाथ !

ब्रह्मादिब्रह्मविष्णुस्त्वंत्वमेवसकलाश्रयः ॥ स्रष्टाब्रह्मनिदानंचशुद्धंब्रह्मत्वमेवच ॥ १२ ॥ कोयंकायस्तवविभोभित्त्वास्पृशतिकायिनम् ॥ कायदोषैर्नचाघ्रातस्तस्मैनमोस्तुयोगिने ॥ १३ ॥ देवभावेनजागर्तिनानिद्रातिनिजात्मनि ॥ सुखसंदोहबुद्धिर्यासात्वं विष्णोनसंशयः ॥ १४ ॥ महदादयोमहाभावास्तथावैकारिकागुणाः ॥ त्वमेवनाथतत्सर्वंनानात्वंमूढकल्पना ॥ १५ ॥ केशकेशवरूपाभिःकल्पनातिसृभिस्तथा ॥ त्वमेवकल्पसेब्रह्मपुमानिवसुतादिभिः ॥ १६ ॥ विदोषंविगुणंचैकंचिन्मूर्तिरखिलंजगत् ॥ कवीनांभातियत्तत्त्वंतंविष्णुंनौमिनिर्मलम् ॥ १७ ॥ यस्यज्ञानेनकुर्वंतिकर्मापिश्रुतिभाषितम् ॥ निरीषणाजगन्मित्राःशुद्धं ब्रह्मनमामितत् ॥ १८ ॥

वह सब कुछ आपही हो यह नानात्व मूढ कल्पना है ॥ १५ ॥ केश और केशव रूप तीन कल्पनाओंसे हे भगवन् ! पुत्रोंको पिता जैसे आपही सबकी कल्पना करतेहो ॥ १६ ॥ आपकी चिन्मूर्तिने सब जगतको विदोष और गुण रहित कर रक्खा है; जिसका तत्व कवियोंको प्रकाशित होता है उस निर्मलतत्वको प्रणाम करताहूं ॥ १७ ॥ जिसके ज्ञानसे श्रुति भाषित कर्म किये जाते हैं उस इच्छारहित जगतके मित्र शुद्ध

१ महदादिद्विधाभावाः—इ०पा० । २ निरीक्षणे जगन्मित्रमितिपाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मको प्रणाम करते हैं ॥ १८ ॥ आकाशमें व्याप्त सन्मात्र जिसके प्रबोधसे उपासना होती है योगी सब भूतोंमें जिसको जान्ते हैं उस सद्रूपहरिको प्रणाम करताहूं ॥ १९ ॥ जिसको एक जान कर ब्राह्मणमें ब्रह्महूं ऐसा गान करते हैं आपकी समान अपनेको मान्ते हैं उन माधवकोमैं प्रणाम करताहूं ॥ २० ॥ माया मोहकी विचित्रता और ममता तथा मनुष्योंके जो पाप नाश करता है उस चिदात्माके निमित्त नमस्कार है ॥ २१ ॥

ध्वंस्तेतरच्चसन्मात्रंयत्प्रबोधादुपासते ॥ योगिनःसर्वभूतेषुसद्रूपंनौमितंहरिम् ॥ १९ ॥ ब्रह्माहमितिगायंतियंज्ञात्वैकंवराद्विजाः ॥ पश्यंतोहित्वयातुल्यंदेवंतंनौमिमाधवम् ॥ २० ॥ माययामोहवैचित्र्यंतथाहंममतांनृणाम् ॥ योनाशयतिपापौघान्नमस्तस्मैचिदात्मने ॥ २१ ॥ प्रयाणेवाप्रयाणेचयन्नामस्मरतांनृणाम् ॥ सद्योनश्यंतिपापौघान्नमस्तस्मैचिदात्मने ॥ २२ ॥ महानलल ज्ज्वालाज्वलल्लोकेषुसर्वदा ॥ यत्पादांभोरुहच्छायांप्रविष्टश्चनदह्यते ॥ २३ ॥ यस्यस्मरणमात्रेणनमोहोनैवदुर्गतिः ॥ नरोगानै वदुःखानितमनंतंनमाम्यहम् ॥ २४ ॥ कामयंतेप्रजानैवधिषणाभ्यःसमुत्थिताः ॥ लोकमात्मैवपश्यंतियंबुद्धैकचराजनाः ॥ २५ ॥

प्रयाण वा अप्रयाणमें जिसका नाम स्मरण मनुष्योंके पाप शीघ्र नाश करदेता है उस चिदात्माके निमित्त नमस्कार है ॥ २२ ॥ मोहकी पवनसे तृष्णाकी ज्वाला सदा प्रचण्ड रहती है और जिसके चरण कमलकी छायाको प्राप्त होकर फिर नहीं जलाती उसको नमस्कार है ॥ २३ ॥ जिसके स्मरण मात्रसे मोह और दुर्गति नहीं होती रोग दुःख नहीं होते उनकी मैं नमस्कार करताहूं ॥ २४ ॥ जिसको पाय प्रजा

१ सं (खं) खेचरंतामिति पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किसी इच्छाकी कामना नहीं करती जिसको जानकर यह प्राणी केवल आत्माहीकी इच्छा करते हैं ॥ २५ ॥ शब्दार्थ और ज्ञान यदि विष्णुके नाममें तत्पर होतो सत्यही उसको संसार स्पर्श नहीं करसकता ॥ २६ ॥ जगद्व्यापी नारायण यदि वेदादि शास्त्रके सम्मत हैं तो इस सत्यसे निर्विघ्न विष्णु भक्ति मुझे प्राप्तहो ॥ २७ ॥ जो विना बीजके बीज नहीं बीजमें जो बीजसे भावित है वह भगवान् विष्णु मेरे संसारका बीज विद्यारूपी खड्गसे छेद न करै ॥ २८ ॥ जो नटकी समान तीन शरीर धारण कर सृष्टि पालन और लय करता है जो गुणोंसे कार्योंमें होते हैं

शब्दार्थःसंविदर्थश्चविष्णोर्नामपरोयदि ॥ सत्येनतेनसंसारोमासंस्पृशतुमाधव ॥ २६ ॥ नारायणोजगद्व्यापीयदिवेदादिसंमतः ॥ सत्येनतेननिर्विघ्नाविष्णुभक्तिर्ममास्तुवै ॥ २७ ॥ योन्वबीजंविनाबीजंबीजेयोबीजभावितः ॥ सविष्णुर्भवबीजंमेशितविद्यासिनाद्यंतु ॥ २८ ॥ त्रितनुर्नटवद्यस्तुसृष्टिस्थितिलयेषुच ॥ गुणैर्भवतिकार्येषुसप्रसीदतुमेहरिः ॥ २९ ॥ दशधेहावतीर्णोयोधर्मत्राणायकेवलम् ॥ अभ्यर्थितःसुरैःसर्वैःसप्रसीदतुमेहरिः ॥ ३० ॥ ब्रह्मादिस्तंबपर्यंतंप्राणिहृन्मंदिरेऽमलः ॥ एकोवसतियोदेवःसप्रसीदतुमेहरिः ॥ ३१ ॥ इच्छांचक्रेसदेवाग्रेएकश्चैवबहुस्तथा ॥ प्रविष्टोदेवताःस्रष्टासप्रसीदतुमेहरिः ॥ ३२ ॥

वह भगवान् मुझसे प्रसन्न हों ॥ २९ ॥ जो केवल धर्मकी रक्षा करनेके निमित्त दशरूपसे अवतार धारण करते हैं, जो देवताओंसे प्रार्थित हो उनके कार्य सिद्ध करते हैं, वे भगवान् मेरे ऊपर प्रसन्न हों ॥ ३० ॥ ब्रह्मासे लेकर स्तम्ब पर्यन्त प्राणियोंके निर्मल हृदयमें जो देव एकही निवास करते हैं, वे मेरे ऊपर प्रसन्न हों ॥ ३१ ॥ आगे उसी देवने इच्छाकीथी कि मैं एक बहुत रूपहोजाऊं देवताओंको निर्माणकर उसमें प्रविष्ट

१ दो अवखण्डने लोट् द्यतु नाशयत्वित्यर्थः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होगये सो मेरे ऊपर प्रसन्नहों ॥ ३२ ॥ हृदयमें विहारी, आकाशकी समान आकाशकीसी आदि, आकाशसे परे आकाशमें क्रियावाले आकाशचारी खंब्रह्म आकाशकी समान व्याप्त आकाशका विषय भोगी, आकाश मूर्ति यज्ञ भोगी ॥ ३३ ॥ जिनकी कान्ति जगतमें भासमान है, जिनकी मायासे जगत मोहित है, और जड़ता और असत्यता दुःखदेती है, वही भगवान् तन्मय हो मेरी रक्षा करै ॥ ३४ ॥ आपका निर्मित

हृत्खगःखसमःखादिखातीतःखक्रियःखगः ॥ खंब्रह्माखादिभुक्चांतेखमूर्तिस्त्वंमखाशनः ॥ ३३ ॥ यद्भासायन्मुदायस्यमाययास ज्जतेजगत् ॥ जाड्यंदुःखमसत्यंचसभवानेवतन्मयः ॥ ३४ ॥ त्वत्सृष्टंमोदतेविश्वंत्वत्त्यक्तमशुचिभवेत् ॥ तत्संगतोप्यसं गस्त्वंविकारस्तेनतेनहि ॥ ३५ ॥ भूतयोगजचैतन्यंचार्वाकायमुपासते ॥ सौगतान्नुवतेतकैंस्त्वांबुद्धिंक्षणभंगुराम् ॥ ३६ ॥ शरीरपरिमाणंत्वांमन्यंतेजिनदेवताः ॥ ध्यायंतिपुरुषंसांख्यास्त्वामेवप्रकृतेःपरम् ॥३७॥ जन्मादिरहितःपूर्वैयःस्यादानंदलक्षणम् ॥ त्वामेवोपनिषद्ब्रह्मचिंतयंतिपरस्परम् ॥ ३८ ॥

विश्व आनंद करता है, त्यागतेही अशुचि होजाता है, उसके संग करते हुएभी तुम असंगहो इस कारण तुममें कोई विकार नहीं है ॥ ३५ ॥ पंचभूतके योगसे चैतन्य मान्नेवाले चार्वाकभी आपहीकी उपासना करते हैं सौगत बुद्धिसे तुमको क्षणभंगुर मान्ते हैं ॥ ३६ ॥ जिन देवतावाले तुमको शरीरका परिणामी मान्ते हैं, सांख्यवाले प्रकृतिसे परे तुमहींको पुरुष मान्ते हैं ॥ ३७ ॥ जो पूर्वजोंके कहे जन्मादिसे रहित आनंद

१ सत्तयासंततं–इ०पा० । २ पूर्ण चित्सदानंदलक्षणम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्षण है उसीको उपनिषद् वाले ब्रह्मनामसे विचार करते हैं ॥ ३८ ॥ आकाश पंचमहाभूत देह मन बुद्धि इन्द्रिय विद्या अविद्या सब आपही, आपसे भिन्न कुछ नहीं है ॥ ३९ ॥ आपही सब प्राणियोंके विधाता आपही मुझे शरण देनेवाले अग्नि हवि इन्द्र होता मंत्र क्रिया फल सब तुमहो ॥ ४० ॥ अस्ति नास्ति वैकुंठ तुमहो तुम्हारी मैं शरणको प्राप्तहूं, तुमकर्म फलके दाता दीक्षितोंके क्रिया फलहो ॥ ४१ ॥ तुम सब भूतोंके हेतु और तुमहीं मुझे शरण देनेवालेहो, युवतियोंको जैसे तरुणमें तरुणको जैसे तरुणीमें ॥ ४२ ॥ मनकी प्रीति होती है, इसी प्रकार

खादिभूतानिदेहश्चमनोबुद्धींद्रियाणिच ॥ विद्याविद्येत्वमेवात्रनान्यत्त्वत्तोऽस्तिकिंचन ॥ ३९ ॥ त्वंधातासर्वभूतानांत्वमेवशरणंमम ॥ त्वमग्निस्त्वंहविःशक्रोहोतामंत्रःक्रियाफलम् ॥ ४० ॥ त्वमस्तिनास्तिवैकुंठत्वामहंशरणंगतः ॥ त्वंकर्मफलदाताचदीक्षितानां क्रियाफलम् ॥ ४१ ॥ त्वंहेतुःसर्वभूतानांत्वमेवशरणंमम ॥ युवतीनांयथायूनियूनांचयुवतौयथा ॥ ४२ ॥ मनोऽभिरमते तद्वत्प्रीतिर्मेरमतांत्वयि ॥ अपिपापंदुराचारंनरंत्वत्प्रणतंहरे ॥ ४३ ॥ नेक्षंतेकिंकरायाम्याउलूकास्तपनंयथा ॥ तापत्रयमघौघश्चतावत्पीडयतेजनम् ॥ ४४ ॥ यावत्स्मरतिनोनाथभक्त्यात्वत्पादपंकजम् ॥ ४५ ॥ यंनस्पृशंतिगुणजातिशरीरधर्मायं नस्पृशंतिगतयस्त्वखिलेंद्रियाणाम् ॥ यंचस्पृशंतिमुनयोगतसंगमोहास्तस्मैनमोभगवतेहरयेकरोमि ॥ ४६ ॥

मेरी तुममें प्रीति है, हे हरे यदि पापी दुराचारी आपको प्रणाम करै ॥ ४३ ॥ उसको यमके दूत इस प्रकार नहीं देखसकते जैसे उल्लू सूर्यको, यह तीन ताप और पाप समूह जभीतक मनुष्यको पीड़ा देते हैं ॥ ४४ ॥ हे नाथ ! जबतक भक्तिसे आपके चरण कमल का स्मरण नहीं करता ॥ ४५ ॥ जिसको गुण जाति शरीरके धर्म स्पर्श नहीं करते जिसको सम्पूर्ण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन्द्रियोंकी गति स्पर्श नहीं करतीं जिसको संग रहित मुनि मोह को त्याग स्पर्श करते हैं उन भगवान् हरिके निमित्त नमस्कार है ॥ ४६ ॥ स्थूल को करणमें करणको निदान में विलीन करके उसके कारण साधक कारणसे वर्जित कर मुनि इस प्रकार विलीन करके उसमें प्रवेश करते हैं उन मुनि से वित हरि भगवान्के निमित्त नमस्कार है ॥ ४७ ॥ जिनके ध्यान धारणसे अन्तःकरण वशी करके ऐश्वर्यसे सुन्दर सुख भोग लक्ष्मीको प्राप्त होतेहैं अर्थात् यहां आत्मसुख को प्राप्त हो मुक्तिको आलिंगन किये सोते हैं उन मुनि सेवित हरिके निमित्त नमस्कारहै ॥४८॥ जन्मादि भावसे विकृत

स्थूलंविलाप्यकरणेकरणंनिदानेतत्कारणंकरणकारणवर्जितेच ॥ इत्थंविलाप्यमुनयःप्रविशंतितत्रतस्मैनमोऽस्तुहरयेमुनिसेविताय ॥४७॥यद्ध्यानसंवहनघूर्णवशीकृतांतामैश्वर्यचारुगुणिनींसुखमोक्षलक्ष्मीम्॥ आलिंग्यशेरतइहात्मसुखैकभाजस्तस्मैनमोस्तुहरयेमु निसेविताय॥४८॥जन्मादिभावविकृतेर्विरहस्वभावेयस्मिन्नयंपरिधुनोतिषडूर्मिवर्गः॥यंतापयंतिनसदामदनादिदोषास्तंवासुदेवममलं प्रणतोऽस्मिहार्दम् ॥४९॥ यद्ध्यानसंगतमलंविजहात्यविद्यांयद्ध्यानवह्निपतितंजगदेतिनाशम् ॥ यज्ज्ञानमुल्लसदसिद्यतिसंशयारिं तंत्वांहरिंविशदबोधघनंनमामि ॥ ५० ॥ चराचराणिभूतानिसर्वाणिचहरेर्वशे ॥ यथाऽव्रतेनसत्येनपुरस्तिष्ठतुमेहरिः ॥ ५१ ॥

विरह स्वभाव वाले जिसमें कि यह काम क्रोधादिषड्वर्ग शान्तिको प्राप्त होजाता है, तथा जिसको कामादिदोष कभी ताप नहीं देते हैं उन निर्मल वासु देव को मनसे प्रणाम करताहूं ॥ ४९ ॥ जिनके ध्यानकी संगतिसे अविद्याका मल शांत होताहै; जिसके ध्यानकी अग्निसे जगत् नश्वर होजाताहै जिसके ज्ञानकी तलवार संशय रूपी शत्रुको मारती है उन विषदबोध दुःखहारी भगवान्को प्रणाम करताहूं ॥ ५० ॥ सब चराचर जीव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हरिके वशमें हैं, जैसे यहां तौ इसी सत्य से भगवान् सन्मुख हो मुझे दर्शन दें ॥ ५१ ॥ जैसे नारायण सब स्थावर जंगम जगत्को व्याप्तकर रहे हैं उसी सत्यसे केशव मुझे दर्शन दें ॥५२॥ जैसे नारायण में और उनसे अधिक गुरुमें मेरी भक्ति है तौ इस सत्य से नारायण मुझको दर्शन दें ॥५३॥ इस प्रकार शपथोंसे उसकी भक्ति विचारते हुए पुरुषोत्तम भगवान् ने प्रसन्न हो दर्शन दिया ॥ ५४ ॥ फिर उसको वर दे मनोरथ पूर्णकर ब्राह्मण

यथानारायणःसर्वंजगत्स्थावरजंगमम् ॥ तेनसत्येनमेरूपंप्रदर्शयतुकेशवः॥५२॥भक्तिर्यथाहरौमेऽस्तितद्वरिष्ठागुरौयदि ॥ममास्तितेनसत्येनस्वंदर्शयतुकेशवः ॥ ५३ ॥ तस्यैवंशपथैःसत्यैर्भक्तिंतस्यानुचिंतयन् ॥ दर्शयामासचात्मानंसप्रीतःपुरुषोत्तमः ॥ ५४ ॥ ततोदत्त्वावरंतस्यपूरयित्वामनोरथम् ॥ जगामकमलाकांतःस्तुत्याविप्रेणतोषितः ॥५५॥ कृतकृत्योद्विजःसोऽपिवासुदेवपरायणः ॥ शिष्यैःसार्धंजपन्स्तोत्रंतस्मिन्नास्तेतपोवने ॥५६॥ कीर्तयेद्यइदंस्तोत्रंशृणुयाद्योऽपिमानवः ॥ अश्वमेधस्ययज्ञस्यप्राप्नोतिविपुलंफलम् ॥ ५७ ॥ आत्मविद्याप्रबोधंचलभतेब्राह्मणःसदा ॥ नपापेजायतेबुद्धिर्नैवपश्यत्यमंगलम् ॥ ५८ ॥ बुद्धिस्वास्थ्यंमनःस्वास्थ्यं स्वास्थ्यमैंद्रियकंतथा ॥ नृणांभवतिसर्वेषामस्यस्तोत्रस्यकीर्तनात् ॥ ५९ ॥

की स्तुतिसे प्रसन्न हो भगवान् गये ॥ ५५ ॥ कृत कृत्य हो वह ब्राह्मण भी वासुदेव परायण हुआ और शिष्योंके सहित उस स्तोत्र को जपता उस आश्रम में रहनेलगा ॥ ५६ ॥ जो इस स्तोत्र को कहते वा जो मनुष्य सुनते हैं उनको अश्वमेध यज्ञका बड़ा फल मिलता है ॥ ५७ ॥ वह ब्राह्मण सदा आत्म विद्या के प्रबोध को प्राप्त होता है, न पापमें बुद्धि होती न अमंगल देखता है ॥ ५८॥ बुद्धि मन इंन्द्रिय स्वस्थ होतीहैं उन सब मनुष्यों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

की जो इस स्तोत्र का पाठ करते हैं ॥ ५९ ॥ जो मनुष्य श्रद्धासे अर्थ विचारकर तत्पर हो जपते हैं वह यहां पापोंको दूरकरके वैष्णव पदको प्राप्त होते हैं ॥ ६० ॥ पुत्र पौत्र पशु तथा वांछित कामनाको प्राप्त होते हैं दीर्घ आयु बल वीर्य पाठ करनेसे सदा मिलता है ॥ ६१ ॥ सहस्रतिलपात्र और सहस्रगोदानका जो फल है वह इस स्तुतिके कीर्तन करनेवालेको प्राप्त होता है ॥ ६२ ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष जिस जिस वस्तुकी इच्छा

विचार्यार्थंजपेद्यस्तुश्रद्धयातत्परोनरः ॥ सविधूयेहपापानिलभतेवैष्णवंपदम् ॥ ६० ॥ लभतेवांच्छितान्कामान्पुत्रपौत्रान्पशूंस्तथा ॥ दीर्घमायुर्बलंवीर्यंलभतेससदापठन् ॥ ६१ ॥ तिलपात्रसहस्रेणगोसहस्रेणयत्फलम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतियइमांकीर्तयेत्स्तुतिम् ॥ ६२ ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांयंयंकामयतेसदा ॥ अचिरात्तमवाप्नोतिस्तोत्रेणानेनमानवः ॥ ६३ ॥ आचारेविनयेधर्मेज्ञानेतपसिसन्नये ॥ नृणांभवतिनित्यंधीरिमांसंशृण्वतांस्तुतिम् ॥ ६४ ॥ महापातकयुक्तोवायुक्तोवाह्युपपातकैः ॥ सद्योभवतिशुद्धात्मास्तोत्रस्यपठनात्सकृत् ॥६५॥ प्रज्ञालक्ष्मीयशःकीर्तिज्ञानधर्मविवर्धनम् ॥ दुष्टग्रहोपशमनंसर्वाशुभविनाशनम् ॥६६॥ सर्वव्याधिहरंपथ्यंसर्वारिष्टनिषूदनम् ॥ दुर्गतेस्तरणंस्तोत्रंपठितव्यंद्विजातिभिः ॥ ६७ ॥

करै वह इस स्तोत्रसे बहुत शीघ्र प्राप्त होते हैं, इसमें सन्देह नहीं ॥ ६३ ॥ आचार विनय धर्म ज्ञान तप नीति बुद्धि इसके सुननेसे मनुष्योंको नित्य होती है ॥ ६४ ॥ महापातक वा उपपातकसे युक्त इस स्तोत्रके पढनेसे शीघ्र शुद्ध होता है ॥६५॥ प्रज्ञा (बुद्धि) लक्ष्मी यश कीर्ति ज्ञान धर्म वृद्धि होती है दुष्ट ग्रहका फल और सब अशुभ शीघ्र निवारण होते हैं ॥ ६६ ॥ सब व्याधिका हरनेवाला पथ्य रूप सब अरिष्टका नाशक कठिना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ईसे तारनेवाला स्तोत्र ब्राह्मणोंको पढना चाहिये ॥ ६७ ॥ नक्षत्र ग्रह पीडा राजचोर भय अग्निचोर भयमें शीघ्र इसको पढै ॥ ६८ ॥ सिंह व्याघ्र और अभिचार (टोटका) का भय नहीं होता भूत प्रेत पिशाच राक्षसों से भय नहीं होता ॥ ६९ ॥ पूतना जृंभक तथा अन्य विघ्नों से उनको भय नहीं होता जो इस स्तोत्रको पढते हैं७०जो वासुदेवकी पूजा कर इस स्तोत्रको पढै वह पातकोंसे लिप्त नहीं होता जैसेपद्मपत्र जलसे॥ ७१ ॥ गंगादि पुण्यतीर्थों

नक्षत्रग्रहपीडासुराजचोरभयेषुच ॥ अग्निचोरनिपातेषुसद्यःसंकीर्तयेदिदम् ॥ ६८॥ सिंहव्याघ्रभयंनास्तिनाभिचारभयंतथा ॥ भूत प्रेतपिशाचेभ्योराक्षसेभ्यस्तथैवच॥६९॥ पूतनाजृंभकेभ्यश्चविघ्नेभ्यश्चैवसर्वदा ॥ नृणांक्वचिद्भयंनास्तिस्तवेह्यस्मिन्प्रकीर्तिते ॥७०॥ वासुदेवस्यपूजांयःकृत्वास्तोत्रमुदीरयेत् ॥ लिप्यतेपातकैर्नासौपद्मपत्रमिवांभसा॥७१॥गंगादिपुण्यतीर्थेषुयास्नानैर्नाप्यतेगतिः॥तांग तिंसमवाप्नोतिपठन्पुण्यामिमांस्तुतिम्॥७२॥एककालंद्विकालंवात्रिकालंवापियःपठेत् ॥ सर्वदासर्वकालेषुसोऽक्षयंसुखमश्नुते॥७३॥ चतुर्णामपिवेदानांत्रिरावृत्त्याचयत्फलम्॥ तत्फलंलभतेस्तोत्रमधीयानःसकृन्नरः॥७४॥अक्षय्यंधनमाप्नोतिस्त्रीणांभवतिवल्लभः॥पूजां विंदतिलोकेऽस्मिञ्छ्रद्धयासंस्मरन्हरिम्॥७५॥सर्वदासंपदायुक्तोविपदंनैवगच्छति॥गोभिर्नेंद्रियतेस्तोत्रंनित्यंयःकीर्तयेद्धियत्॥७६॥

में स्नान से जोगति मिलती है वह गति इस स्तुतिके पाठसे मिलती है ॥ ७२ ॥ एक दो तीन वा सर्व कालमें जो इसको पढै वह अक्षय सुख पाता है ॥७३॥ चार वेदोंकी तीन आवृत्तिका जो फल है वह फल एकवार इस स्तोत्रके पढने से मनुष्य को प्राप्त होताहै ॥७४॥ अक्षय धन प्राप्त होकर स्त्री जनों का प्यारा होताहै श्रद्धा से नारायण को स्मरण करने से इस लोकमें सत्कार पाते हैं ॥ ७५ ॥ सदा सम्पति से युक्त होकर विपत्ति को प्राप्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं होता इस स्तोत्र का पढनेवाला इन्द्रियोंके वशीभूत नहीं होता ॥ ७६ ॥ अलक्ष्मी काल कर्णी दुःस्वप्न दुर्विचिन्तना इस स्तोत्रके सुन्तेही यह भक्तों की व्याधी दूर होती है ॥ ७७ ॥ प्रातःकाल उठ विष्णु परायणहो पवित्रतासे जो इसको पढते हैं इस लोक और परलोक में अक्षय्य सुख को लेते हैं ॥ ७८ ॥ यह देवद्युतिका निर्मित विष्णुकी प्रीति करनेवालाहै विष्णुकी प्रसन्नता और उन के दर्शन करानेवाला है ॥ ७९ ॥ यह योगसार नामक

अलक्ष्मीकालकर्णीचदुःस्वप्नंदुर्विचिंतितम् ॥ सद्योनश्यंतिभक्तानामेतंसंशृण्वतांस्तवम् ॥ ७७ ॥ प्रातरुत्थाययोऽधीतेशुचिर्विष्णुपरायणः ॥ अक्षय्यंलभतेसौख्यमिहलोकेपरत्रच ॥७८॥ देवद्युतिप्रणीतंवैविष्णुप्रीतिकरंशुभम् ॥ विष्णुप्रसादजननंविष्णुदर्शनकारकम् ॥ ७९ ॥ योगसारमिदंनामस्तोत्रंपरमपावनम् ॥ यःपठेत्सततंभक्त्याविष्णुलोकंसगच्छति ॥ ८० ॥ इतितेकथितंस्तोत्रंगुह्यंपापप्रणाशनम् ॥ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिपिशाचस्यविमोचनम् ॥ ८१ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेयोगसारस्तोत्रकथनंनामएकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ श्रूयतांयेपिशाचाश्चमोचितास्तेनतद्वने ॥ आसीद्राजाचित्रनामाद्राविडेविषयेपुरा ॥ १ ॥

परम पावन स्तोत्र है जो निरन्तर भक्तिसे पढै वह विष्णुलोकको जाता है ॥ ८० ॥ इस प्रकार यह स्तोत्र गुह्य और पापका नाशक है अब इसके आगे पिशाचमोचन कहता हूं ॥ ८१ ॥ इतिश्रीपाद्मे माघमाहात्म्ये पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकायां योगसारस्तोत्रकथन नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ वसिष्ठजी बोले सुनो जो पिशाच उसने वनमें मुक्त किया पहले द्रविडदेशमें चित्ररथ नामवाला एक राजा था॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह चंद्रवंशी महावीर शूरशस्त्र अस्त्रका पारगामी गजवाजी रथोंके समूहसे सम्पन्न सदा विक्रमी ॥ २ ॥ जिसका कोश सुवर्ण और नाना रत्नोंसे पूर्ण था सहस्र नारियोंके बीचमें सदा क्रीडा करताथा ॥ ३ ॥ स्त्रीलुब्ध कामी लोभी महाक्रोधी वह राजा मंत्रियोंके कहे धर्म युक्त वचन कभी नहीं मान्ता था ॥ ४ ॥ विष्णुकी निंदा विष्णु भक्तोंका सदा द्वेष करताथा, कौन विष्णु किसने देखा है कहां है कौन उसको

सोमान्वयेमहावीरःशूरःशस्त्रास्त्रपारगः ॥ गजवाजिरथौघैश्चसंपन्नोविक्रमीसदा ॥ २ ॥ स्वर्णैर्नानाविधैरत्नैःपूर्णकोशोमहाधनः ॥ मध्येनारीसहस्रस्यसदाक्रीडतितत्परः ॥ ३ ॥ स्त्रैणःकामीसदालुब्धश्चंडकोपःसपार्थिवः ॥ नकरोतिवचोधर्म्यंसचिवैःसमुदीरितम् ॥ ४ ॥ विष्णुंनिंदतिसोऽत्यर्थंवैष्णवान्द्वेष्टिसर्वदा ॥ कोऽसौविष्णुःक्वदृष्टोऽसौकचास्तेकेनकीर्त्यते ॥ ५ ॥ इत्थंनसहते विष्णुंसराजादैवमोहितः ॥ नारायणंभजंतेयेतान्पीडयतिकोपितः ॥ ६ ॥ नब्राह्मणान्नवेदांश्चवैदिकंकर्मनव्रतम् ॥ नदानंमन्यते दातुंपाखंडास्थितिसंस्थितः ॥ ७ ॥ अनीत्याचंडदंडैश्चप्रजापीडांकरोतिसः ॥ निष्ठुरोनिर्दयःक्रूरःपुण्यकार्यपराङ्मुखः ॥ ८ ॥ च्युताचारोऽच्युतद्वेष्टाच्युताग्निश्चच्युतक्रियः ॥ सोऽनुशास्तिजनंभूपःकालरूपइवापरः ॥ ९ ॥

कहता है ॥५॥ इस प्रकार दैव मोहित हुआ वह राजा विष्णुको नहीं सहसकता था, जो नारायणका भजन करते उनको पीडा देताथा क्रोध करताथा ॥६॥ न ब्राह्मण न वेद न वैदिक कर्म न व्रत न दानदेनेवालेको मानै इस प्रकार पाखंडास्थितिमें स्थित था॥७॥अनीतिसे कठिन दण्ड देकर प्रजाको पीडित करताथा निठुर निर्दयी क्रूर पुण्यकर्मसे पराङ्मुख ॥ ८ ॥ आचारहीन हरि द्वेषी अग्निहोत्र तथा क्रियासे हीन दूसरे कालकी समान वह अपने प्रजाकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शासना करताथा ॥ ९ तब बहुत दिनोंके उपरान्त राजा मृत्युको प्राप्त हुआ वैदिक विधानसे उसकी ऊर्ध्व देहिक क्रिया न हुई ॥ १० ॥ तब यमराजके दूत समूहोंसे पीडित हुआ लोहेकी कीलोंवाले मार्गमें जहां जलता रोता पूर्ण था ॥ ११ ॥ सूर्यकी किरणें जहां ताप देतीथीं वृक्षोंकी छायासेहीन तप्त अंगारसे पूर्ण अग्निकी ज्वालासे समाकुल ॥ १२ ॥ लोह तुण्ड और दारुण काकोलसे वारंवार पीडित कराल डाढोंवाले वृक और घोर कुत्तोंसे भक्षित ॥ १३ ॥ जहां दूसरे

ततोबहुतिथेकालेसराजापंचतांगतः ॥ वैदिकेनविधानेनलेभेनैवोर्ध्वदैहिकम् ॥ १० ॥ अथकिंकरयूथेनपीड्यमानोभृशंतदा ॥ अयःकीलमयेमार्गेतप्तसिक्ताप्रपूरिते ॥ ११ ॥ चंडार्करश्मिसंतप्तेवृक्षच्छायाविवर्जिते ॥ तप्तांगारप्रपूर्णेचवह्निज्वालासमाकुले ॥ १२ ॥ लोहतुंडैश्चकाकोलैर्हन्यमानःसुदारुणैः ॥ वृकैर्दंष्ट्राकरालैश्चश्वभिर्घोरैश्चभक्षितः ॥ १३ ॥ शृण्वन्क्रंदितमन्येषां नृणांकिल्विषकारिणाम् ॥ जगामपार्थिवोलोकमंतकस्यभयावहम् ॥ १४ ॥ शृणुभूपगतिंतस्यतस्मिँल्लोकेसुदुःसहाम् ॥ निरया न्निरयंयातःपर्यायेणसभूपतिः ॥ १५ ॥ आदौप्रयातस्तामिस्रेदारुणेभूरिदुःखदे ॥ पुनश्चैवांधतामिस्रेयत्रदुःखंनिरंतरम् ॥ १६ ॥ गतोऽनंतरमत्युग्रंमहारौरवरौरवम् ॥ नरकंकालसूत्रंचमहानरकमेवच ॥ १७ ॥ पश्चान्मग्नःसभूपालोदुस्तरेदुःखमूर्छितः ॥ संजीवनेमहावीचौतापनेसंप्रतापने ॥ १८ ॥

पापियोंका घोर शब्द सुनाई आताथा, इस प्रकार वह राजा यमलोकको गया ॥ १४ ॥ हेराजन् ! उस लोककी उसकी दुस्सह गति सुनो क्रमसे वह राजा नरक से नरकको गया ॥ १५ ॥ प्रथम महा दुःखदायक तामिस्र नरकको गया, फिर निरन्तर दुःखवाले अंधतामिस्रमें गया ॥ १६ ॥ फिर महारौरव रौरवनामक महानरकमें गया, कालसूत्र और महानरक में गया ॥ १७ ॥ फिर दुस्तर दुःखमें मग्न होनेसे वह राजा मूर्छित हुआ फिर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चैतन्य होने पर तापन संप्रतापन नरकको गया ॥ १८ ॥ दुःखकी अग्नि से व्याकुल हो राजा नरकोंमें पडा, प्रपात संपात काकोल कुडमल पूति मृत्तिका ॥ १९ ॥ लोहशंकु मृगीयंत्र शाल्मलीमार्ग शाल्मलीनदी फिर महा भीम दुर्गम मार्गमें प्रविष्ट हुआ ॥ २० ॥ असिपत्र वन लोहचारक इत्यादि सभी नरकोंमें वह पापी राजा गया ॥ २१ ॥ और नरकोंमें घोर यातनाको प्राप्त हुआ विष्णुके द्वेष से इक्कीसयुग तक ॥ २२ ॥ यातना भोग कर

पपातनरकंराजादुःखाग्निप्लुष्टमानसः ॥ संतापंचसकाकोलंकुड्मलंपूतिमृत्तिकम् ॥ १९ ॥ लोहशंकुंमृगीयंत्रंपंथानंशाल्मलिंनदीम् ॥ प्रविष्टोऽथमहाभीमंदुर्दर्शंदुर्गमंपुनः ॥ २० ॥ असिपत्रवनंचैवलोहचारकमेवच ॥ एवमेतेषुसर्वेषुपतित्वापापकृन्नृपः ॥ २१ ॥ अविंदन्नरकेघोरेसंतापंयातनामयम् ॥ विष्णुप्रद्वेषघोषेणयुगानामेकविंशतिः ॥ २२ ॥ भुक्त्वायातनांयाम्यांनिस्तीर्णनरको नृपः ॥ समयाद्गिरिराजेतुपिशाचोऽभूत्तदामहान् ॥ २३ ॥ सभ्राम्यतिदिशःसर्वावनेतस्मिन्बुभुक्षितः ॥ नपश्यत्यशनंतोयंमेरावपिसदागिरौ ॥ २४ ॥ कदाचित्पर्यटन्सोऽथपिशाचःशोकपीडितः ॥ प्लक्षप्रस्रवणारण्यंप्रविष्टोभाविसत्फलम् ॥ २५ ॥ विभीतकतरुच्छायांसमाश्रित्यसुदुःखितः ॥ हाहतोस्मीतिचाक्रंदद्घोरमुच्चैःपुनःपुनः ॥ २६ ॥

नरकसे निकला गिरिराजपर महापिशाच योनिको प्राप्त हुआ ॥ २३ ॥ उस वनमें भूंखा हुआ सब दिशाओंमें फिरताथा उसको मेरुसे पर्वतमें भी तो भोजन जल नहीं दीखताथा॥ २४ ॥ एक समय वह शोक पीडित पिशाच भ्रमण करता हुआ कोई होनहार सत्फलके प्राप्त करनेको प्लक्षप्रस्रवण वनमें प्रविष्ट हुआ ॥ २५ ॥ बहेडेके पेडकी छायामें वह दुःखी आश्रय होकर हाय ! मैं मरा ऐसे घोर शब्द करने लगा ॥ २६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षुधा तृषासे व्याकुल होनेके कारण मेरा सब प्राणियोंसे द्रोह है इस दुरंत जन्मका अन्त किस प्रकार होगा ॥ २७ ॥ प्रथम इस दुःख समूह भरे पापके समुद्रमें डूबते हुए कौन मुझको हाथका अवलम्बन देगा ॥ २८ ॥ ॥ इति श्रीपाद्मे माघमाहात्म्ये भाषाटीकायां विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ वसिष्ठजी बोले इस प्रकार उस पिशाचका दीन स्वरसे रोदन वेद पाठ करते हुए देवद्युतिने सुना ॥ १ ॥ तब वहां आकर उसने पिशाचको देखा, विकराल मुख

क्षुत्तृड्भ्यांमुह्यमानस्यसर्वभूतद्रुहोमम ॥ जन्मनोस्यदुरंतस्यकथमंतोभविष्यति ॥ २७ ॥ आदौपापसमुद्रेस्मिन्दुःखकल्लोलमालिनी ॥ करावलंबनंकोऽद्यनिमग्नस्यप्रदास्यति ॥ २८ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेपिशाचाख्यानं नामविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ इत्थंतस्यपिशाचस्यरोदनंदीनचेतसः ॥ देवद्युतिरधीयानःशुश्रावकरुणामयम् ॥ १ ॥ समागम्यततस्तत्रतंपिशाचंददर्शसः ॥ विकरालमुखंभीमंपिशंगनयनंकृशम् ॥ २ ॥ ऊर्ध्वमूर्धजकृष्णांगंयमदूतमिवापरम् ॥ ललज्जिह्वंचलंबोष्ठंदीर्घजंघंशिराकुलम् ॥ ३ ॥ दीर्घांघ्रिशुष्कतुंडंचगर्ताक्षंशुष्कपंजरम् ॥ अथासुंकौतुकाविष्टःपप्रच्छमुनिपुंगवः ॥ ४ ॥ ॥ देवद्युतिरुवाच ॥ ॥ कोसित्वंभीषणाकारःकुतोरोदिषिदारुणम् ॥ अवस्थेयंकुतोब्रूहिकिंचाहंकरवाणिते ॥ ५ ॥ ममाश्रमप्रविष्टाहिदुःखभाजोनजंतवः ॥ मोदंतेकेवलंसर्वेवैष्णवेभवनेयथा ॥ ६ ॥

भयंकर नेत्र कृश शरीर ॥ २ ॥ ऊपरको जिसके बाल कृष्ण शरीर दूसरे यमदूतकी समान चलायमान जीभ और ओष्ठ दीर्घ जंघा और शिरसे व्याप्त ॥ ३ ॥ दीर्घ अंघ्रि सूखी तुण्ड गढेकी समान आंखें सूखा पंजर शरीर था कौतुकसे प्राप्त होकर मुनिने उससे पूंछा ॥ ४ ॥ देवद्युति बोले तुम भीषण आकारवाले कौन हो क्यों दारुण रोते हो यह अवस्था क्यों हुई कहो मैं तुम्हारा क्या प्रिय करूं ॥ ५ ॥ मेरे आश्रममें प्रविष्ट होकर प्राणी दुःख नहीं पातेहैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैष्णव भवन की समान सब आनंद करते हैं ॥ ६ ॥ हे भद्र! तुम शीघ्र इस दुःखका कारण कहो बुद्धिमान् अर्थके प्राप्त होनेमें कालक्षेप नहीं करते हैं ॥ ७ ॥ वशिष्ठ बोले यह वचन सुनकर वह पिशाच रोदन त्याग कर दीन और नम्र होकर यह वचन कहने लगा ॥ ८ ॥ पिशाच बोला मेरे सम्पूर्ण अंगमें व्यापी तापको तुम्हारे वचनने हरण कर लिया॥९॥कोई मेरा बडा सुकृत् है इस कारण तुम्हारा दर्शन हुआ विना पूर्व जन्मके पुण्यके सत्पुरुषोंका

वदत्वंसत्वरंभद्रदुःखस्यैतस्यकारणम् ॥ कालक्षेपंनकुर्वंतिप्राप्तेर्थेहिमनीषिणः ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ श्रुत्वैतद्वचनंप्रीतः पिशाचस्त्यक्तरोदनः ॥ उवाचदीनयावाचाप्रश्रयावनतस्तदा ॥ ८ ॥ ॥ पिशाचउवाच ॥ ॥ सर्वांगव्यापिसंतापंजहारत्वद्वचो मयि ॥ ग्रीष्मेदावानलोद्भूतंवर्षन्मेघइवाचले ॥ ९ ॥ यन्मेऽस्तिसुकृतंकिंचित्तेनदृष्टोऽसिमेद्विज ॥ नह्यसंचितपुण्यानांसद्भिरे कत्रसंगमः ॥ १० ॥ इत्युक्त्वाकथयामासपूर्ववृत्तांतमात्मनः ॥ विष्णुद्वेषप्रदोषेणदशामेतामहंगतः ॥ ११ ॥ यन्नामप्राणान्मुक्तो हिस्मृत्वाविष्णुपदंव्रजेत् ॥ पापिष्ठोहिहरौतस्मिन्ममद्वेषोभवद्विज ॥ १२ ॥ यःपालयतिभूतानिधर्मंयातिजगत्त्रये ॥ योंतरा त्माचभूतानांतस्मिन्द्वेषोममाभवत् ॥ १३ ॥ कर्मणांफलदोयोत्रसर्ववेदेषुगीयते ॥ तपोभिरिज्यतेविप्रैःसमेद्वेषवशंगतः ॥ १४॥

दर्शन नहीं होता ॥ १० ॥ ऐसा कह अपना पूर्व वृत्तान्त कथन करता हुआ, कि विष्णु भगवान् से द्वेष करनेके निमित्त मैं इस दशाको प्राप्त हुआ हूं ॥ ११ ॥ प्राणान्तके समय जिनका नाम स्मरणकर मनुष्य मुक्त हो जाते हैं हे द्विज ! मुझ पापिष्ठीका सदा उन हरिसे द्वेष रहा ॥ १२ ॥ जो प्राणियोंको पालन करता है जिससे त्रिलोकीमें धर्म प्राप्त होता है जो भूतोंका अन्तरात्मा है उसमें मेरा द्वेष हुआ ॥ १३ ॥ जो कर्म का फल वे दोमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गाया जाता है जो तप द्वारा ब्राह्मणोंसे यजन किया जाता है उनसे मैंने द्वेष किया ॥ १४ ॥ क्रिया त्यागी वनवासी निस्संगचारी वेदान्ति पतियोंसे जो चिन्तनीय हैं उन हरिभगवान्से मैंने द्वेष किया ॥ १५ ॥ ब्रह्मादि सब देवता योगी सनकादिक मुक्तिके निमित्त जिनका चिन्तनकरते हैं उन हरीसे मैंने द्वेष किया ॥ १६ ॥ आदि मध्य अंतमें जो विष्णु विधाता सनातन हैं, जिसके आदि मध्य अंत नहीं है उनसे मैने द्वेष किया ॥ १७ ॥

त्यक्तक्रियैःप्रियारण्यैर्निःसंगैकचरैश्चयः ॥ वेदांतेयतिभिश्चित्यःसमेद्वेषीहरिर्द्विज ॥ १५ ॥ ब्रह्मादयःसुराःसर्वेयोगिनःसनकादयः ॥ मुक्त्यर्थमर्चयंतीहसविष्णुर्द्वेषितोमया ॥ १६ ॥ आदौमध्येऽवसानेयोविश्वधातासनातनः ॥ यस्यनैवादिमध्यांताःसमेद्वेषपदं ययौ ॥ १७ ॥ यन्मयासुकृतंकर्मकृतंप्राक्तनजन्मनि ॥ विष्णुद्वेषाग्निनादग्धंतत्सर्वंभस्मसादभूत् ॥ १८ ॥ कथंचिदस्य पापस्यसीमांद्रक्ष्यामिचेदहम् ॥ मुक्त्वानारायणंनान्यमर्चयिष्यामिदेवताम् ॥१९॥ विष्णुद्वेषाच्चिरंभुक्त्वामयानरकयातनाम् ॥ निरया न्निःसृतःसोऽहंपैशाचींयोनिमागतः ॥ २० ॥ अधुनाकर्ममंत्रैःकैरथानीतस्त्वदाश्रमम् ॥ यत्रत्वद्दर्शनार्कान्मेनष्टंदुःखमयंतमः ॥२१॥

जो मैंने पूर्व जन्ममें सुकृत किया वह विष्णुके द्वेषकी अग्निसे सब भस्म होगया ॥ १८ ॥ किसी प्रकार यदि मैं इस पापका अंत देखूं तो नारायण को छोडकर फिर कभी अन्य देवताका पूजन नहीं करूं ॥ १९ ॥ विष्णुके द्वेषसे मैंने बहुत कालतक नरक यातना भोगी, अब नरकसे निकलकर मैं पिशाची योनिको प्राप्त हुआ ॥ २० ॥ अब कर्म मंत्रसे तुम्हारे आश्रममें प्राप्त हुआ हूं,जो तुम्हारे दर्शन रूप सूर्यसे दुःखमय अंधकार दूर हो गयाहै ॥ २१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जहां मरण प्राप्त हो बंधन लक्ष्मी सुख वधूहो इन स्थानोंपर कर्म गलेमें भुजा डालकर ले जाता है ॥ २२ ॥ इस समय आप पिशाच नाशक उत्तम कर्म कहिये, परोपकार करनेमें देर करनेवाले धन्य नहीं होते ॥ २३ ॥ देवद्युति बोले–अहो ! यह माया देवता, असुर, मनुष्य, सबको मोहित करती है सबकी स्मृतिको नष्ट करती है, कि जिनका देवताओंसे भी धर्म नाशी द्वेष होता है ॥ २४ ॥ जगत्‌के पालन उत्पत्ति नाशक महेश्वर

प्राप्यतेमरणंयत्रबंधनंश्रीःसुखंवधूः ॥ सतत्रनीयतेस्वेनकर्मणागलहस्तिना ॥ २२ ॥ इदानीमुचितंकर्मब्रूहिपैशाच्यनाशनम् ॥
परोपकारकार्येहिनधन्यामंदगामिनः ॥ २३ ॥ ॥ देवद्युतिरुवाच ॥ ॥ अहोमुष्णातिमायेयंदेवासुरनृणांस्मृतिम् ॥ ययादे
वेष्वपिद्वेषोजायतेधर्मनाशनः ॥ २४ ॥ स्रष्टापालयिताहंताजगतांयोमहेश्वरः ॥ आत्माचसर्वभूतानांतंमूढोद्वेष्टिकःकथम् ॥ २५ ॥
भवंतिसर्वकर्माणिसफलानियदर्पणात् ॥ तद्भक्तिविमुखोमर्त्यःकोनयातीहदुर्गतिम् ॥ २६ ॥ श्रुतिस्मृतिसदाचारविहितंकर्म
केवलम् ॥ सेवितव्यंचतुर्वर्णैर्भजन्नारायणंसदा ॥ २७ ॥ अन्यथानिरयंयांतिविनाह्यागमसेवनात् ॥ अतोवेदविरुद्धार्थशास्त्रोक्तंकर्म
संत्यजेत् ॥ २८ ॥ स्वबुद्धिरचितैःशास्त्रैःप्रतार्येहतुबालिशान् ॥ विघ्नंतिश्रेयसोमार्गंलोकनाशायकेवलम् ॥ २९ ॥

जो कि सब भूतोंके आत्माहैं मूढ उनसे भी द्वेष करते हैं॥ २५॥ जिनके अर्पण करनेसे सब कर्म सफल होतेहैं उनकी भक्तिसे विमुख होकर कौन मनुष्य दुर्गतिको प्राप्त नहीं होता है ॥ २६ ॥ श्रुति, स्मृति, सदाचारसे जो कर्म विधान किया है नारायणका भजन करते सब वर्णोंको वह सेवन करना चाहिये ॥ २७ ॥ अन्यथा विना शास्त्रकी सेवासे वह नरकको जाताहै इस कारण वेदविरुद्ध ग्रन्थोक्त कर्मको त्याग दे ॥ २८ ॥ अपनी बुद्धिके कल्पित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्रन्थ मूर्खोंको छलते हैं, वह कल्याणके मार्गमें विघ्न करते केवल लोक नाशके निमित्त हैं ॥ २९ ॥ जो विष्णु वेद तप सद्ब्राह्मणोंकी निन्दा करते हैं, इस कारण वे असद्ग्रन्थोंके सेवन करनेसे नरकको जाते हैं ॥ ३० ॥ अहो सन्मार्गमें निष्ठावाले सतचरित राजाको विधि वशसे कुमार्ग आकुलनी मति प्राप्त हुई ॥ ३१ ॥ असत्पुरुषोंकी संगतिसे किसको विपत्ति नहीं प्राप्त होती श्रुतिस्मृति सदाचारसे जो परम शाश्वत कहा है ॥ ३२ ॥ श्रेयकी इच्छा करनेवाला अपने २ धर्ममें सदा आचरण करै मूर्ख अपनी बुद्धिके रचे ग्रन्थोंसे मनुष्य जनोंको मोहित करते हैं ॥ ३३ ॥ जहां पापी हरि शंकरमें

विष्णुंनिंदंतिवेदांश्चतपोनिंदंतिसद्विजान् ॥ तेनतेनरकंयांतिह्यसच्छास्त्रनिषेवणात् ॥३०॥ अहोसन्मार्गनिष्ठस्यसच्चरित्रस्यभूपतेः ॥ जातविधिवशाद्दुष्टाकुमार्गाकुलिनीमतिः ॥ ३१ ॥ असतांसंगतिःकस्यमूलंनविपदांभवेत् ॥ श्रुतिस्मृतिसदाचारविहितंशाश्वतंपरम् ॥ ३२ ॥ स्वस्वधर्मप्रयत्नेनश्रेयोर्थीहसदाचरेत् ॥ स्वबुद्धिरचितैःशास्त्रैर्मोहयित्वाजनंजडाः ॥ ३३ ॥ हरिशंकरयोःपापायत्रभेदं हिकुर्वते ॥ हरेहरौचधर्मात्मानभेदस्तदयंचरेत् ॥ ३४ ॥ अयमेवयथाराजाद्रविडोनिरयंगतः ॥ द्विषन्नारायणंदेवंदेवदेवंजगत्प्रभुम् ॥ ३५ ॥ तस्माद्वेषंहिदेवेषुब्राह्मणेषुविशेषतः ॥ संत्यजेत्पुण्यकामोत्रवेदबाह्यांक्रियांत्यजेत् ॥ ३६ ॥ इत्युक्काकथयामासपिशाचाय हितंमुनिः ॥ प्रयागंगच्छभोभद्रमाघमासंविचारय ॥ ३७ ॥ यत्रतेनिश्चितामुक्तिपैशाच्यान्नात्रसंशयः ॥ तत्राप्लुतादिवंयांतिश्रुतिरेषासनातनी ॥ ३८ ॥

भेद करते हैं वे हरिहरमें भेदकारी पापी हैं धर्मात्माको चाहिये कि हरिहरमें भेद चिन्ता न करै ॥ ३४ ॥ इसीसे द्रविडका राजा नरकको गया यह नारायण देवके द्वेष करने का कारण है ॥ ३५ ॥ इस कारणसे देवता और विशेषकर ब्राह्मणोंमें पुण्यकी इच्छा करने वाला द्वेष और वेदबाह्य क्रियाको त्यागन करै ॥ ३६ ॥ ऐसा कह मुनिने पिशाचको हितकर वचन कहे हे भद्र माघमासमें तुम प्रयागको गमन करो ॥ ३७ ॥ वहां तुम पिशाच

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वसे अवश्य मुक्त होगे इसमें सन्देह नहीं, वहां स्नान करने से स्वर्गकी प्राप्ति होतीहै, यह सनातनी श्रुतिहै ॥ ३८ ॥ वहां मनुष्यके पूर्व जन्मके किये पापनाश होतेहैं, प्रयागस्नानसे अधिक और कहीं पुण्य नहीं है ॥ ३९ ॥ प्रायश्चित्त तप दानरूप क्रियात्मक योग और योगसे भी अधिक सिद्धि प्रयागमें पापियोंको मिलती है ॥ ४० ॥ यह पृथ्वीमें स्वर्ग अपवर्गका खुलाहुआ द्वारहै, गंगा यमुनाके संगमको छोड भूमिमें अन्य पवित्र स्थान ऐसा नहीं ॥ ४१ ॥ पापरूपी निगड़में बँधेको छेदन करनेको यह एक कुल्हाड़ी है कहां तौ विष्णु सूर्य तेज अग्नि गंगा यमुना का संगम ॥ ४२ ॥ और कहां

विजहातिनरस्तत्रप्राक्तनंकर्मदुष्कृतम् ॥ प्रयागस्नानतोनास्तिक्वाप्यन्यदधिकंपरम् ॥ ३९ ॥ प्रायश्चित्ततपोरूपंदानरूपंक्रियात्मकम् ॥ यागयोगाधिकंविद्धिप्रयागंपापिनामपि ॥ ४० ॥ स्वर्गापवर्गयोर्द्वारंतत्पृथिव्यामपावृतम् ॥ सितासितोदवेणीयातां हित्वाभुविनापरा ॥ ४१ ॥ पापनैगडबद्धस्यछेदनैककुठारिकाः ॥ क्वविष्णुःसूर्यतेजोग्निर्गंगायामुनसंगमः ॥ ४२ ॥ क्वराकीनृणां तुच्छापापराशितृणाहुतिः ॥ मलीमसघनध्वंसेयथाशरदिचंद्रमाः ॥ ४३ ॥ भातिपापक्षयादूर्ध्वंनरोवेणीजलाप्लुतः ॥ सितासितस्य माहात्म्यमहंवक्तुंनतेक्षमः ॥ ४४ ॥ यत्तोयकणसंस्पृष्टोमुक्तःकेरलकोद्विजः ॥ इतिवाक्यमृषेःश्रुत्वापिशाचस्तुष्टमानसः ॥४५॥ मुक्तदुःखइवप्रीतःपप्रच्छप्रणयान्मुनिम् ॥ कथंकेरलदेशीयोद्विजोमुक्तोमहामुने ॥ ४६ ॥

उसमें मनुष्योंके पापरूपी तृण समूहकी आहुति, घने अंधकारके दूर होनेसे जैसे चन्द्रमा ॥ ४३ ॥ प्रकाशित होता है इसी प्रकार वेणीमें स्नान करने से मनुष्य पाप रहित होताहै मैं तुझसे गंगा यमुनाका माहात्म्य नहीं कह सकता ॥ ४४ ॥ जिसके जल कणके स्पर्शसे केरल वासी ब्राह्मण मुक्त होगया यह ऋषिके वचन सुन पिशाच परम संतुष्ट मन होकर ॥४५॥ दुःख रहित की समान प्रसन्न हो मुनिसे बोला हे महामुने! केरल देशी ब्राह्मण कैसे मुक्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होगया॥ ४६॥ मेरे ऊपर कृपाकर यह वृत्तान्त कहो ॥ ४७॥ इति श्रीपाद्मे महापुराणे माघमाहात्म्ये भाषाटीकायां पिशाचाख्यानं नाम एकविंशतितमोऽध्यायः॥ २१॥ देवद्युति बोले हे पिशाच! सुन मैं पवित्र और पुण्य कथा कहताहूं केरल देशमें वसुनामवाला वेदपारगामी ब्राह्मण था॥ १॥ हिस्सेदार कुटुम्बियोंने उसका धन हरलिया इस्से वह निर्धन और बंधुवर्जित था जन्म भूमिको त्याग महादुःखसे दुःखी हुआ॥ २॥ देशसे देशमें भ्रमण करता कुछ काल

एतंकथयवृत्तांतंसंश्रित्यकरुणांमयि ॥ ४७ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येव० दि०सं०पिशाचाख्यानंनामएकविंशतितमोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ देवद्युतिरुवाच ॥ ॥ पिशाचशृणुपुण्यांमेकथांकथयतःशुभाम् ॥ केरलेवसुनामात्रब्राह्मणोवेदपारगः ॥ १ ॥ दायादैर्हृतवित्तस्तुनिर्धनोबंधुवर्जितः ॥ जन्मभूमिंपरित्यज्यमहादुःखेनदुःखितः ॥ २ ॥ देशाद्देशंपरिभ्राम्यकालेनमहतापुनः ॥ प्रविश्यसमहारण्यमीषद्व्याधिप्रपीडितः ॥ ३ ॥ गच्छंस्तीर्थांतरंश्रांतःक्षुत्क्षामोविंध्यपर्वते ॥ दुर्भिक्षेणमृतिंलेभे नदाहंचौर्ध्वदेहिकम् ॥ ४ ॥ तेनकर्मविपाकेनतत्रैवगिरिगह्वरे ॥ प्रेतीभूताश्चिरंकालमुवासनिर्जनेवने ॥ ५ ॥ शीतातपपरिक्लिष्टो निराहारोनिरूदकः ॥ दिगंबरोव्युपानत्कोगिराहाहेतिनिःश्वसन् ॥ ६ ॥ इतस्ततःपरिभ्राम्यवायुभूतःसकेरलः ॥ द्विजोनशरणंलेभे नसुखंकुत्रचित्तदा ॥ ७ ॥

में कुछ व्याधिसे पीडित होकर महावनमें प्रवेश किया॥ ३॥ तीर्थादिमें गमन करता थका भूखसे दुर्बल विंध्याचल पर्वतमें दुर्भिक्षके कारण मृत्युको प्राप्त हुआ उसका दाह वा और्ध्वदेहिक क्रिया भी न हुई॥ ४॥ इस कर्म विपाकसे उसी सघन पर्वतमें निर्जन वनमें चिरकालतक प्रेतरूप होकर निवास करता रहा॥ ५॥ शीत और धूपसे क्लेशित निराहार जल रहित दिगंबर उपानद् रहित पर्वतमें हाहाकार करता हुआ श्वासलेता॥ ६॥ वायु रूपसे वह इधर उधर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भ्रमण करताथा उस ब्राह्मणको न कहीं शरण और न सुखकी प्राप्ति हुई ॥ ७ ॥ दुःखसे व्याकुल हुआ शोच करताथा कहीं सद्गतिकी प्राप्ति नहीं देखी सदा दान न देनेके अपने कर्मके फलको भोगता था ॥ ८ ॥ जो अग्निमें आहुति नहीं देते गोविन्दका पूजन नहीं करते जो आत्म विद्याको भजन नहीं करते और सुतीर्थोंसे जो विमुख हैं ॥ ९ ॥ सुवर्ण वस्त्रताम्बूल मणि अन्न फल जल दुःखीजनोंको जो नहीं देते वे सब हीन कृत्य

संशोचतिस्मदुःखार्तोनैवपश्यतिसद्गतिम् ॥ सर्वदादत्तदानंसभुंक्तेस्वंकर्मणःफलम् ॥ ८॥ हविर्जुह्वतिनाग्नौयेगोविंदंनार्चयंतिये ॥
भजंतेनात्मविद्यांयेसुतीर्थंविमुखाश्चये ॥९ ॥ सुवर्णवस्त्रतांबूलंमणिमन्नंफलंजलम् ॥ आर्तेभ्योनप्रयच्छंतिसर्वेतेकृतहीनकाः ॥१०॥
ब्रह्मस्वंचपरस्वंचस्त्रीधनानिहरंतिये ॥ बलेनछद्मनावापिधूर्ताश्चपरवंचकाः ॥ ११ ॥ दांभिकाःकुहकाश्चौरायेचपावकवृत्तयः ॥
बालवृद्धातुरस्त्रीषुनिर्दयाःसत्यवर्जिताः ॥१२॥ अग्निदागरदायेचयेचान्येकूटसाक्षिणः ॥ अगम्यागामिनःसर्वेयेचान्येग्रामयाजिनः ॥
॥ १३ ॥ पितृमातृसुषापत्यस्वदारत्यागिनश्चये ॥ येकदर्याश्चलुब्धाश्चनास्तिकाधर्मदूषकाः ॥ १४ ॥

हैं॥ १० ॥जो ब्राह्मणका धन दूसरोंका धन तथा स्त्री जातिका धन हरण करते हैं, बल वा छलसे वे धूर्त दूसरोंको ठगने वाले हैं ॥ ११ ॥ दांभिक कुहुक चोर जो अग्निकी वृत्तिवाले हैं बालक बूढे स्त्रीजनोंमें जो निर्दयता करते हैं सत्य वर्जित ॥ १२ ॥ अग्निलगाने वाले विषदेने वाले तथा और जो झूंठी साक्षी देते हैं, जो अगम्यागामी तथा ग्राम वालोंको यजन कराते हैं॥ १३ ॥माता पिता भगिनी सन्तान और अपनी स्त्रीके त्याग करनेवाले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो डरपोक नास्तिक और धर्म दूषक हैं॥ १४॥ जो युद्धमें स्वामीका त्याग करते हैं, शरणागतको छोड़ते हैं गौ भूमिके हत करनेवाले रत्नोंको दूषण देने वाले ॥ १५ ॥ पराई निन्दा करनेवाले पापी देवता और गुरुओंकी निन्दा करनेवाले महाक्षेत्रोंमें प्रतिग्रहके लेनेवाले ॥ १६॥ पराये द्रोही प्राणियोंके हिंसक कुत्सित दान लेनेवाले वारंवार जन्म लेते हैं ॥ १७ ॥ प्रेत राक्षस पिशाच तिरछे चलनेवाले वृक्षोंकी योनिवालोंको इस लोक और परलोकमें सुखका लेशभी नहीं है ॥ १८ ॥ इस कारण निषिद्ध कर्मको त्यागकर विहित कर्म करना चाहिये, यज्ञ दान तप तीर्थ देवगुरुका भजन करना

त्यजंतिस्वामिनंयुद्धेत्यजंतिशरणागतम् ॥ गवांभूमेश्चहंतारोयेचान्येरत्नदूषकाः ॥ १५ ॥ परापवादिनःपापादेवतागुरुनिंदकाः ॥
महाक्षेत्रेषुसर्वेषुप्रतिग्रहरताश्चये ॥ १६ ॥ परद्रोहरतायेचतथाचप्राणिहिंसकाः ॥ कुप्रतिग्राहिणःसर्वेतेभवंतिपुनःपुनः ॥ १७ ॥
प्रेतराक्षसपैशाचतिर्यग्वृक्षकुयोनिषु ॥ नतेषांसुखलेशोस्तिइहलोकेपरत्रच ॥ १८ ॥ तस्मात्त्यक्त्वानिषिद्धार्थंविहितंकर्मचाचरेत् ॥
यज्ञंदानंतपस्तीर्थंमंत्रंदेवंगुरुंभजेत् ॥१९॥ विपाकंकर्मणांदृष्ट्वायोनिकोटिषुदुस्तरम् ॥ चतुर्भिरपिवर्णैश्चसेव्योधर्मोनिरंतरम् ॥२०॥
इतिप्रेतगतिंदृष्ट्वापापबीजोत्थितांहिसः ॥ कृत्वाधर्मोपदेशंचपुनस्तस्मैद्विजोब्रवीत् ॥ २१ ॥ इत्थंसकेरलःप्रेतोवर्तमानोगिरौतदा ॥
अतिवाह्यचिरंकालमपश्यत्पथिकंपथि ॥२२॥ वहंतंद्वौकरंडौचवेणीजलयुतौतथा ॥ गायंतंप्रमुखादेवंपुण्यश्लोकंजनार्दनम् ॥२३॥

चाहिये ॥ १९ ॥ कर्मोंका विपाक अनेक योनियोंमें दुस्तर जानकर चारों वर्णोंको निरन्तर धर्मका सेवन करना चाहिये ॥ २० ॥ इस प्रकार प्रेतकी गति देख पापके बीजसे उसको हुआजान धर्मोपदेशकर उस्से ब्राह्मणने कहा ॥ २१ ॥ इस प्रकार वह केरलप्रेत पर्वतमें स्थित हुआ बहुत काल बीतनेपर मार्गमें पथिकको देखता हुआ ॥ २२ ॥ वेणीके जलकी दो कुंडी लिये हुए पुण्य श्लोक जनार्दनका चरित्र गाताथा ॥ २३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उसको देखतेही प्रेतने आनकर मार्ग रोका और अपने शरीरको दिखाकर कहा डरना मत ॥ २४ ॥ हे कामरथी मैं तुझसे जल पान करनेकी इच्छा करताहूं जो मुझे जल न पिलावेगा तो मेरे प्राण जायँगे ॥ २५ ॥ प्रेतके यह वचन सुन कुतूहलसे वह पथिक बोला तू महाकृश मलीनरूप नग्न कौन है ॥ २६ ॥ जीव शेष मरनेकी इच्छा, किये विकृत दर्शन भयकारी नये धूमकी समान आकारवाला चण्ड चंचल नेत्र

तंदृष्ट्वासहसाप्रेतोमार्गरोधंचकारसः ॥ दर्शयामासचात्मानंमाभैषीरित्युवाचसः ॥२४॥ पानीयंपातुमिच्छामित्वत्तःकार्पाटिकोत्तम ॥ नपास्यसिजलंचेन्मांप्राणायास्यंतिमेदृढम् ॥२५॥ इतिप्रेतवचःश्रुत्वापांथःप्रत्याहकौतुकात् ॥ ॥ कार्पाटिकउवाच ॥ ॥ कस्त्वंदुः खाभिभूतस्तुकृशोम्लानोदिगंबरः ॥ २६ ॥ जीवशेषोमुमूर्षुश्चविकृतोभयवर्धनः ॥ नवधूममयाकारश्चंडश्चंचललोचनः ॥ २७ ॥ पद्भ्यामस्पृष्टभूमिस्त्वंनिर्मांसोदरबाहुकः ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वाप्रेतोवाक्यमथाब्रवीत् ॥ २८ ॥ ॥ प्रेतउवाच ॥ ॥ शृणुधर्मिष्ठते वच्मियेनाहमीदृशोभवम् ॥ ब्राह्मणोऽदत्तदानोहंलोभीचमलिनक्रियः ॥२९॥ परान्नंचसदाभुक्तमेकाकीमिष्टभोजनः ॥ मयादत्तान भिक्षापिहंतकारोनपुष्कलः ॥ ३० ॥ नकृतोवैश्वदेवस्तुप्रक्षिप्तोनबहिर्बलिः ॥ भूतानांतुतृपार्तानांनहतापयसाचतृट् ॥ ३१ ॥

किये ॥ २७ ॥ पृथ्वीको चरणोंसे न छुए हुये उदर बाहुमें मांससेहीन है यह उसके वचन सुन कर प्रेत वचन बोला ॥ २८ ॥ प्रेतने कहा हे धर्मात्मा सुनो मैं तुमसे कहताहूं कि जिस कारणसे ऐसी दशाको प्राप्त हुआहूं मैं दान न देने वाला लोभी मलिनक्रिय ब्राह्मणहूं ॥ २९ ॥ परान्नही सदा खाता और इकलाही मीठा भोजन करता न मैंने कभी भिक्षादी न हन्तकार दिया ॥ ३० ॥ न वैश्वदेव किया न कभी बलिदी और न कभी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्यासे प्राणियोंको जलही दिया ॥ ३१ ॥ और पृथ्वीपर विचरण करते कभी अपने पितरोंको तृप्त नहीं किया, न कभी श्राद्ध किया न देवताओंका पूजन किया ॥३२॥ न कभी छत्री और न पादत्राण प्रदान किये, जल पात्र ताम्बूल औषधि कभी प्रदान न की॥३३॥ न किसीको घरमें ठहराया न कभी किसीका अतिथि सत्कार किया, अन्न वृद्ध अनाथ दीनोंको जलादिसे कभी संतुष्ट न किया ॥३४॥न गौओंको ग्रास दिया न कभी किसी रोगीको

कदाचित्पितरोनैवतार्पिताअटतामहीम् ॥ नचश्राद्धंकृतंक्वापिपूजितानैवदेवताः ॥ ३२ ॥ वर्षातपपरित्राणंनदत्तंपादरक्षणम् ॥ जलपात्रंनदत्तंचतांबूलंनौषधंमया॥३३॥नगृहेवसतिर्दत्तानातिथ्यंकस्यचित्कृतम् ॥ अंधवृद्धाधनानाथदीनाःपानान्नतोषिताः॥३४॥ गवांग्रासोनदत्तोवैनरोगीपरिमोचितः ॥ नदत्तानहुताविप्रपवित्राश्चतिलामया ॥ ३५ ॥ पृथिव्यांतिलदातारोनभवंतितुमद्विधाः ॥ व्यतीपातेनदत्तंहिकिञ्चित्स्वर्णंमहाफलम् ॥ ३६ ॥ संक्रांतावुपरागेचनदत्तंसूर्यचन्द्रयोः ॥ पर्वाण्यन्यानिसर्वाणिजग्मुःशून्यानिमे द्विज ॥ ३७ ॥ तिथयःकार्तिकेमुख्याजातावंध्याःसदामम ॥ पितृभ्योनैवदत्तंवाअष्टकासुमघासुच ॥ ३८ ॥ द्विजानांनकृताग्नी तिर्मन्वादिषुयुगादिषु ॥ नदत्तस्तिलतैलेनप्रदीपःकार्तिकेमया ॥ ३९ ॥

मुक्त किया पवित्र तिलादिसे कभी ब्राह्मणोंको तृप्त न किया ॥ ३५ ॥ पृथ्वीमें तिलके देनेवाले मेरी समान न होंगे, व्यतीपातमें भी मैंने कुछ भी सुवर्णका दान न दिया ॥ ३६ ॥ संक्रान्ति वा सूर्य चंद्रके ग्रहणमें भी मैंने कुछ दान न दिया सम्पूर्ण पर्वही मेरे शून्य रूपसे बीत गये ॥ ३७ ॥ कार्तिककी मुख्य तिथिभी मैंने शून्यतासे विताईं आठौ मघा आदि में पितरोंके निमित्त भी मैंने कुछ नहीं दिया ॥ ३८ ॥ मन्वादि और युगादिमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणोंकी प्रीतिके निमित्त कुछ न किया कार्तिकमें तिल तैलके सहित मैंने दीपक नहीं दिया ॥ ३९ ॥ सौभाग्यरूप और कामनाके देनेवाल माघमासका मैंने स्नान नहीं किया न वेदपाठी ब्राह्मणके निमित्त गौतमी नदीपर सिंहकी बृहस्पतिमें ॥ ४० ॥ पूर्व जन्ममें मैंने संकल्प कर द्रव्य नहीं दिया कन्याकी बृहस्पतिमें कभी मैंने पवित्र वेणीमें स्नान नहीं किया ॥ ४१ ॥ पौष माघमें स्नान करनेवालोंको तापने के निमित्त कभी काष्ट नहीं दिया शीत से दुःखियों के निमित्त कभी वस्त्रादि नहीं दिया ॥ ४२ ॥ वैशाख आदि महीनेमें कभी किसीको शीतल जल

नस्नातोमाघमासेहंरूपसौभाग्यकामदे ॥ द्विजायवेदविदुषेगौतम्यांसिंहगेगुरौ ॥ ४० ॥ मयासंकल्पितंद्रव्यंनदत्तंपूर्वजन्मनि ॥ नस्नातोहंकृष्णवेण्यांतथाकन्यागतेगुरौ ॥ ४१ ॥ अग्निंप्रज्वाल्यकाष्ठौघैःस्नातानांपौषमाघयोः ॥ शीतार्तानांचविप्राणांनकृतोजाड्य निग्रहः ॥ ४२ ॥ माधवादिषुमासेषुनदत्तंशीतलंजलम् ॥ मयानारोपितोश्वत्थोन्यग्रोधोनैववर्धितः ॥ ४३ ॥ बंदीगृहान्मयामुक्तिर्न कृताप्राणिनांक्वचित् ॥ नप्राणिभयसंत्रस्तोरक्षितःशरणागतः ॥ ४४ ॥ नोपोष्यात्रित्रिरात्राणितोषितोमधुसूदनः ॥ कृच्छ्रातिकृ च्छ्रपाराकंतथाचांद्रायणंद्विज ॥ ४५ ॥ अथान्यत्तप्तकृच्छ्रंचतथासांतपनानिच ॥ व्रतान्येतानिपुण्यानिजुष्टानींद्रादिभिःसुरैः ॥ ४६ ॥ चरित्वानमयातानिदेहःसंशोषितःपुरा ॥ इत्थंपूर्वभवोवंध्योममजातोद्विजोत्तम ॥ ४७ ॥

तक नहीं दिया न मैंने पीपल लगाया न वट लगाया ॥ ४३ ॥ कभी किसी प्राणी की मैंने बंधन से मुक्ति न की प्राणियों के भयसे कभी शरणागत की रक्षा नकी ॥ ४४ ॥ तीन रात्रितक एकादशी व्रत करके कभी मधुसूदनको प्रसन्न नहीं किया कृच्छ्र अति कृच्छ्र तथा चान्द्रायण कभी नहीं किया ॥ ४५ ॥ तप्त कृच्छ्र तथा सांतपन अति कृच्छ्र और इन्द्रादि देवता ओंके सेवित व्रत ॥ ४६ ॥ मैंने कभी न सेवन करके देहको शुष्क किया, इस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकार से पूर्व चरित्र मेरा है ॥ ४७ ॥ हे ब्राह्मण देखिये इस जन्ममें मेरी कैसी क्रूरता यह ज्ञान रहित गति पूर्व जन्मके क्रूर कर्मके कारण मुझे प्राप्त हुई है ॥ ४८ ॥ मार्गोंमें वृष व्याघ्रके खाये हुए मांसादिहै तोते आदिके खाये फल इस पर्वतमें हैं ॥ ४९ ॥ पुण्य गंधी और रस वाले फल हैं सुभक्ष मृदु और मधुर मूल हैं ॥ ५० ॥ विविध प्रकारके और भी बहुत से मृदु मधुर हैं स्रोत निर्झर और जल बहुत है ॥ ५१ ॥ सब पदार्थ इस पर्वतमें सुलभ हैं

पश्यद्विजमहाक्रूरामद्भुतामत्रजन्मनि ॥ गतिंदूरप्रबोधांतुममपूर्वस्यकर्मणः ॥ ४८ ॥ संतिमांसानिमार्गेषुवृकव्याघ्रहतानिवै ॥ फलान्यन्यानिशैलेस्मिञ्छुकैस्त्यक्तानिसर्वतः ॥ ४९ ॥ पुण्यानिचसुगंधीनिफलानिरसवंतिच ॥ मूलानितुसुभक्ष्याणिमृदूनिमधुराणिच ॥ ५० ॥ नानाविधानितिष्ठंतिमधूनिसुबहून्यपि ॥ स्रोतसांनिर्झराणांचसंतिवारीणिसर्वशः ॥ ५१ ॥ सुलभेषुपदार्थेषुसर्वेष्वेतेषुपर्वते ॥ नेक्षेहमशनंक्वापिदैवेनापिहतंसदा ॥ ५२ ॥ वाताहारेणजीवामियथाजीवंतिपन्नगाः ॥ पुनर्जीवामिभोविप्रदेवयोनिप्रभावतः ॥ ५३ ॥ बलेनप्रज्ञयानित्यंमंत्रपौरुषविक्रमैः ॥ सहायैश्चैवमित्रैश्चनालभ्यंलभतेनरः ॥ ५४ ॥ लाभालाभेसुखेदुःखेविवाहेमृत्युजीवने ॥ भोगेरोगेवियोगेचदैवमेवहिकारणम् ॥ ५५ ॥ कुरूपाःकुकुलामूर्खाःकुत्सिताचारानिंदिताः ॥ शौर्यविक्रमहीनाश्चदैवाद्राज्यानिभुंजते ॥ ५६ ॥

परन्तु दैवसे हत होनेके कारण मैं कुछभी नहीं खासकता॥५२॥सर्पोंकी समान पवनके आहारसे जीताहूं फिर हे विप्र देवयोनिके प्रभावसे जीताहूं॥५३॥ बल प्रज्ञा और मंत्र पौरुष विक्रम तथा मित्रोंके सहायसे भी मनुष्य अलभ्य पदार्थको प्राप्त नहीं करसकता ॥ ५४ ॥ लाभालाभ सुख दुःख विवाह मृत्यु जीवन भोग रोग वियोगमें एक दैवही कारण है ॥ ५५ ॥ कुरूप कुकुल निंदित मूर्ख कुत्सित आचार सम्पन्न तथा शूरता विक्रमसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हीन दैवके दिये राज्योंको भोगते हैं ॥ ५६ ॥ काने गंजे अभव्य नीतिहीन दुर्गुणसम्पन्न नपुंसकभी प्रारब्धसे राज्यपर स्थित दीखते हैं ॥ ५७ ॥ जिन्होंने तिल गौ सुवर्ण वस्त्र दिये हैं जिन्होंने गौरी कन्या और वसुंधरा दानकी है ॥ ५८ ॥ शय्या भोजन ताम्बूल मंदिर धन भक्ष्य भोज्य चंदन अगर जिन्होंने दिये हैं ॥ ५९ ॥ वनमार्ग पर्वतका अग्रभाग गांव वा नगरमें आगे २ उनके भोग स्थित हैं ॥ ६० ॥ इस पर्वतपर और भी बडे बली

काणाःखंजाअभव्याश्चनीतिहीनाश्चदुर्गुणाः ॥ नपुंसकाश्चदृश्यंतेदैवाद्राज्येप्रतिष्ठिताः ॥५७॥यैर्दत्ताश्चतिलागावोहिरण्यंवसनानिच॥
गौरीकन्याचयैर्दत्तायैर्दत्ताचवसुंधरा॥५८॥ शय्यासनानितांबूलंमंदिराणिधनानिच॥भक्ष्यभोज्यानिदत्तानिचंदनान्यगरूणिच॥५९॥
अटव्यांपर्वताग्रेचग्रामेवानगरेपिवा ॥ पुरःपुरश्चतिष्ठंतितेषांभोगाःप्रयत्नतः ॥ ६० ॥ संत्यत्रपर्वतेन्येपिराक्षसाबलवत्तराः ॥ राक्षसा
श्चपिशाचाश्चपिशाच्यश्चातिदारुणाः ॥ ६१ ॥ कदाचिच्चकथंचिच्चक्वापियत्रस्वकर्मणा ॥ लभंतेचान्नपानानिपर्यटंतोवनेवने ॥ ६२ ॥
इतिश्रुत्वात्रतेभ्यश्चमाभयंभवतांभवेत् ॥ शुचिंगोविंदभक्तंत्वांनतेद्रष्टुमपिक्षमाः ॥ ६३ ॥ विष्णुभक्तितनुत्राणंनारायणपरायणम् ॥
नस्पृशंतिनपश्यन्तिराक्षसाःप्रेतपूतनाः ॥ ६४ ॥ भूतवेतालगंधर्वाःशाकिन्यश्चार्यकाग्रहाः ॥ रेवत्योवृद्धरेवत्योमुखमंड्यस्तथा
ग्रहाः ॥ ६५ ॥ यक्षाबालग्रहाःक्रूराडुष्टावृद्धग्रहाश्चये ॥ तथामातृग्रहाभीमाग्रहाश्चान्येविनायकाः ॥ ६६ ॥

राक्षस हैं राक्षस पिशाच पिशाची बडी दारुण हैं ॥ ६१ ॥ कभी किसी प्रकार कोई अपने कर्मसे वनमें फिरते हुए अन्नपान प्राप्त करते हैं ॥ ६२ ॥ उनसे यह वचन सुनकर कि तुमको भय नहो पवित्र गोविन्दके भक्त तुमको वे देखभी नहीं सकते ॥ ६३ ॥ विष्णु भक्तिके रक्षाका वर्म नारायण के भक्तको राक्षस प्रेत पूतना न छू सकते न देख सक्ते हैं ॥ ६४ ॥ भूत वेताल गंधर्व शाकिनी ग्रह रेवती वृद्ध रेवती मुखमण्डग्रह ॥ ६५ ॥ यक्ष क्रूर बाल ग्रह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुष्ट वृद्धग्रह तथा मातृकाग्रह भयंकर तथा विनायकादिग्रह ॥ ६६ ॥ कृत्या सर्प कूष्माण्ड और दूसरे दुष्ट जन्तु हे विप्र पवित्र वैष्णव ब्राह्मणको नहीं देखते हैं ॥ ६७ ॥ पवित्रकी सब प्राणी रक्षा करते हैं उसको पीडा नहीं देतेहैं ग्रह नक्षत्र देवता पवित्रकी सदा रक्षा करते हैं॥ ६८ ॥ जिसकी जिह्वामें गोविन्दका नाम हृदयमें वेद स्थित है पवित्र और दान शील है उसको कहीं भय नहीं है ॥६९॥ हे ब्राह्मण इस प्रकार कर्मोंका फल भोगता हुआ

कृत्याःसर्पाश्चकूष्मांडायेचान्येदुष्टजंतवः ॥ नपश्यंतिपरंविप्रवैष्णवंब्राह्मणंशुचिम् ॥ ६७ ॥ शुचिंरक्षंतिभूतानिधर्मिष्ठंपीडयंतिन ॥
रक्षंतिचशुचिंनित्यंग्रहनक्षत्रदेवताः ॥६८॥ गोविंदनामजिह्वाग्रेहृदिवेदस्तुसंस्थितः ॥ शुचिश्चदानशीलश्चत्वंसर्वत्राकुतोभयः॥६९॥
एवंब्राह्मणतिष्ठामिभुंजानःकर्मणःफलम् ॥ नशोचामीतिमत्वाहंविमृश्यचपुनःपुनः ॥ ७० ॥ नदुनोमितथातावद्यावज्जंबालिनीतटे ॥
सारसोदीरितंवाक्येश्रुतंपर्यटतामया ॥ ७१ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेपिशाचबोधोनामद्वाविंशोऽ
ध्यायः ॥२२॥ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ ॥ सारसोदीरितंवाक्यंकीदृशंहिश्रुतंत्वया ॥ तदहंश्रोतुमिच्छामिब्रूहित्वंप्रेतसत्वरम् ॥१॥
॥ प्रेतउवाच ॥ ॥ ब्रवीमिसारसंवाक्यंशृणुकार्पाटिकोत्तम ॥ धूसरानामकक्षेस्मिन्नदीगिरिसमुद्भवा ॥ २ ॥

यहां स्थित हूं वारंवार विचारकर शोच नहीं करताहूं ॥७०॥ जम्बालिनीके किनारे विचरते हुए सारसके वचन सुनकर मैं दुःखी नहीं होता हूं॥७१॥
इति श्रीपाद्मे महापुराणे पिशाचबोधोनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ब्राह्मण बोले सारसके कहे वचन तैंने किस प्रकार सुने हैं हे प्रेत वह मेरे सुन्नेकी
इच्छा है सो तुम शीघ्र कहो ॥ १ ॥ प्रेत बोला हे कामरथी मैं सारसके वचन कहताहूं तुम सुनो इस धूसर नाम कक्षसे एक नदी निकलती है॥ २॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिसके श्रेष्ठ जलाशय ताल वृक्ष परिमित अथाह जलवाले हैं जहां मतवाले हाथी रहते हैं. महाककुभ शोभासे युक्त, स्निग्ध जामनसे मनोहर ॥ ३ ॥ घन वनमें विचरता मैं उस नदीके समीप प्राप्त हुआ, मैं वहां फल भोजन कामनासे स्थित था॥ ४॥ वनान्तरसे उडकर एक सारसका जोडा वहां आया बहुत पक्षियोंसे सेवित नदीके तटको प्राप्त होकर ॥ ५ ॥ वहां पानी पी भार्याके साथ रमण करके बायें पंखमें शिर और मुख प्रवेशकर सोगया

सदाजलाशयोत्तालामत्तदंतिकुलाकुला ॥ महाककुभशोभाढ्यास्निग्धजंबूमनोहरा ॥ ३ ॥ तस्यास्तीरमहंप्राप्तोगाहमानोवनं घनम् ॥ मयितिष्ठतिवैतत्रफलभोजनकाम्यया ॥ ४ ॥ वनांतरात्समुड्डीयसारसोलक्ष्मणायुतः ॥ आगत्यपुलिनंनद्याःसेवितं बहुपक्षिभिः ॥ ५ ॥ पीत्वातत्रैवपानीयंरमित्वाभार्ययासह ॥ सुप्तःपक्षपुटेवामेप्रवेश्यचशिरोमुखम् ॥ ६ ॥ एतस्मिन्नंतरेदृष्टःपादपा दवतीर्यच ॥ रक्ताननःसुरक्ताक्षोदंडीदृढनखावलिः ॥ ७ ॥ लोमशोदीर्घलांगूलश्चलचेष्टोहिवानरः ॥ यत्रासौसारसःसुप्तस्तत्रवेगे नचागतः ॥ ८ ॥ समागत्यचजग्राहसारसंचरणेदृढम् ॥ कराभ्यांक्रूरयाबुद्ध्यापश्यतांबहुपक्षिणाम् ॥ ९ ॥ उड्डीयोड्डीयतेसर्वे गताश्चान्यत्रखेचराः ॥ सारसीभीतभीताचविरावान्कुर्वतीस्थिता ॥ १० ॥ सारसोभग्ननिद्रस्तुत्रासाच्चलितलोचनः ॥ अवलोकि तवाञ्छीघ्रंतदोत्ताम्यशिरोधराम् ॥ ११ ॥

॥ ६ ॥ इसी समय वृक्षसे उतरकर लालमुख लालनेत्र दंड हाथमें लिये दृढ नख ॥ ७ ॥ बडे रोमवाला बडीपूंछ चंचल स्वभाव वानर जहां सारस सो रहाथा वहां बडे वेगसे आया ॥ ८ ॥ और आकर दृढतासे सारसका चरण पकडलिया यह बहुत पक्षियोंके देखते क्रूर बुद्धिसे दृढता पूर्वक पकडा ॥ ९ ॥ वे सब पक्षी उड उडकर अन्यत्र चले गये और सारसी महाडरसे रोती हुई वहां स्थित हुई ॥ १० ॥ सारसकी नींद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

टूटी डरसे उसके नेत्र चलायमान होगये शिर उठाकर पृथ्वीको देखता हुआ॥ ११॥ उस मारनेकी इच्छा करनेवाले दारुण वानरको देखकर मधुरवाणीसे सारस कहने लगा ॥ १२ ॥ हे शाखामृग अपराधके विना तुम मुझको क्यों बाधा देते हो अपराधी मनुष्योंको तो राजाही बांधते हैं ॥ १३ ॥ तुम सरीखे उत्तम पुरुष किसीको पीडा नहीं देते हैं हम अहिंसक साधू पराईवृत्तिसे विमुख हैं ॥ १४ ॥ जलशैवालके खानेवाले आकाशचारी वनवासी

विलोक्यवानरंदुष्टंहंतुकामंसुदारुणम् ॥ तदासंभाषयामासगिरामधुरयाखगः ॥ १२ ॥ अपराधंविनामांत्वंकिंशाखामृगबाधसे ॥ सापराधाजनालोकेवध्यंतेभूमिपैरपि ॥ १३ ॥ नपीडयितुमर्हंतित्वादृशाउत्तमाजनाः ॥ अस्मानहिंसकान्साधून्परवृत्तिपराङ्मुखान् ॥ १४ ॥ जलशैवालभक्षांश्चखेचरान्वनवासिनः ॥ स्वदाररतिशीलांश्चपरदाराभिवर्जितान् ॥ १५ ॥ नपीडयितुमर्हंतित्वाद्विधावानरोत्तम ॥ परापवादपैशुन्याद्विजान्परमसेवकान् ॥ १६ ॥ शाखामृगविमुंचाशुसर्वथामामनागसम् ॥ जानामितवजन्माहं नत्वंवेत्सितुमामकम् ॥ १७ ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यमुमोचसारसंतदा ॥ चपलोवानरःशीघ्रमाहदूरेव्यवस्थितः ॥ १८ ॥ ॥ वानरउवाच ॥ ॥ ब्रूहिरेत्वंकथंवेत्सिममजन्मपुरातनम् ॥ त्वंपक्षीज्ञानहीनश्चतिर्यक्चाहंवनेचरः ॥ १९ ॥

अपनीही स्त्रीसे प्रेम करनेवाले दूसरों की स्त्रीसे विमुख हैं ॥ १५ ॥ हे वानरश्रेष्ठ ऐसे को आपसरीखे पीडा नहीं देते हैं पराये अपवादमें निपुण परम सेवक पक्षियोंको ॥ १६ ॥ और उनमें सर्वथा मुझ निरपराधीको हे वानर शीघ्र छोडदो, मैं तुम्हारा जन्म जान्ताहूं तुम मुझको नहीं जान्ते ॥ १७ ॥ यह वचन सुन वानरने सारसको छोड दिया और दूर स्थित होकर वह चपल वानर कहने लगा॥ १८॥ वानर बोला हे सारस कह तू मेरे पुरातन जन्मको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ सारसउवाच ॥ ॥ जानेहंतावकंजन्मजातिस्मरमितिस्फुटम् ॥ त्वंहिविंध्याधिपोराजाप्राग्भवेपर्वतेश्वरः ॥ २० ॥ अहंपूज्य तमोविप्रस्तववंशेपुरोहितः ॥ तेनप्रत्यभिजानामित्वांसम्यग्वानरोत्तम ॥ २१ ॥ इमांपालयताभूमिंप्रजाःसर्वाःप्रपीडिताः ॥ त्वयाविवेकहीनेनभृशंसंचयताधनम् ॥ २२ ॥ प्रजापीडनतापोत्थवह्निज्वालैस्तुवानर ॥ प्राक्त्वंदग्धःपुनःक्षिप्तःकुंभीपाकेऽतिदारुणे ॥ २३ ॥ पुनःपुनश्चदग्धेनजातेनचपुनःपुनः ॥ नारकेणशरीरेणसमास्त्रिंशद्गतंत्वया ॥२४॥ कुर्वतादारुणाञ्छब्दान्रुदताचपुनःपुनः ॥ कुंभीपाकानलेतीव्राह्यनुभूताश्चयातनाः ॥ २५ ॥ निस्तीर्णनरकोभूयःपापशेषेणसांप्रतम् ॥ प्राप्तोसिवानरंजन्मयेनमांहंतुमिच्छसि ॥ २६ ॥ विप्रस्योपवनात्पूर्वंपक्वरंभाफलानिवै ॥ अननुज्ञाप्यभुक्तानित्वयापहृत्यपौरुषात् ॥ २७ ॥

कैसे जान्ता है,तू पक्षी ज्ञानहीन और वनचारी है मैं तिर्यक् चारीहूं ॥ १९ ॥ सारसने कहा मैं तुम्हारा जन्म जान्ताहूं मैं जाति स्मरहूं तुम प्रथम विंध्याचल पर्वत के राजा थे ॥ २० ॥ और मैं पूजनीय ब्राह्मण तुम्हारे वंशका पुरोहित था हे वानर इससे तुमको भली भांति जान्ताहूं ॥ २१ ॥ इस भूमिकी पालना करते तुमने सब प्रजाको पीडा दी तुम विवेकहीनने केवल धन संग्रह करनेमें मन लगाया ॥ २२ ॥ हे वानर प्रजा पीडनके तापसे उठी अग्निकी ज्वालासे तुम पहलेही दग्ध हो चुके थे फिर पीछे दारुण कुंभीपाकमें डाले गये ॥ २३ ॥ वारंवार दग्ध होने और जन्म लेनेसे नारकी शरीरमें तीस वर्ष तुम्हारे बीत गये ॥ २४ ॥ दारुण शब्द करते वारंवार रुदन करते कुंभीपाककी तीव्र ज्वाला और अनेक बाह्य यातना भोगी ॥ २५ ॥ उस नरकसे निकलकर शेष पापसे अब वानर जन्मको प्राप्त हुए कि मुझको मारनेकी इच्छा करतेहो ॥ २६ ॥ पहले ब्राह्मणके वनके पक्के केलेके फल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विना आज्ञाके बलसे तुमने भक्षण करलिए ॥ २७ ॥ देखो उस कर्मका महाफल पाकको प्राप्त होताहै हे वानर ! उसीसे तुम वनवासी होकर वर्तते हो॥ २८॥ अशुभ शुभ पहले किये कर्मका प्राणियोंमें भोग क्रीडा करता है वह देवताभी उल्लंघन नहीं कर सकते॥ २९॥ इस प्रकारसे यथावत् हेतु सहित तुम्हारे जन्मको जान्ताहूं मैं सारसदेहको प्राप्त होकरभी ज्ञानसे मोहित नहीं हुआ॥ ३०॥ प्रेत बोला यह वचन सुन वानरने सारससे कहा आप ठीक

विपाकःकर्मणस्तस्यफलतेपश्यदारुणः ॥ वानरस्त्वंवनेवासोह्यधुनातेनवर्तसे ॥ २८ ॥ अशुभस्यशुभस्यापिपुराविहितकर्मणः ॥ भोगःक्रीडतिभूतेषुनोल्लंघ्यस्त्रिदशैरपि ॥ २९ ॥ इत्थंत्वज्जन्मजानामियथावत्तुसहेतुकम् ॥ प्राप्तःसारसदेहोपिज्ञानेनापरिमोहितः ॥ ३० ॥ ॥ प्रेतउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाकथांविप्रवानरोप्याहसारसम् ॥ सम्यग्वेत्तिभवान्नूनंकथंत्वंपक्षितांगतः ॥ ३१ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेवानरजन्मकथनंनामत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ छ ॥ ॥ सारसउवाच ॥ कथयिष्यामितत्कर्मयेनाहंदुर्गतिंगतः ॥ पक्षियोनिंगतोयेनतत्सर्वंश्रोतुमर्हसि ॥ १ ॥ धान्यंखारिशतंसाग्रमुत्सृष्टंहित्वयापुरा ॥ बहुभ्योब्राह्मणेभ्यश्चनर्मदायांरविग्रहे ॥ २ ॥ पौरोहित्यमदाल्लोभाद्वंचयित्वाद्विजांस्तथा॥किंचिद्दत्त्वातुतेभ्यश्चगृहीतमखिलंमया॥३॥

जान्ते हो परन्तु यह तो कहो तुम पक्षी कैसे हुए? ॥ ३१ ॥ ॥ इति श्रीपाद्मे माघमाहात्म्ये भाषाटीकायां त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ सारसने कहा यह कर्म कहताहूं जिस्से मेरी दुर्गति हुई जिस्से पक्षियोनिको प्राप्त हुआ हूं वह सब सुनो ॥ १ ॥ पहले तुमने धान्य की सौखारी परिमाण नर्मदा नदी के किनारे सूर्य ग्रहणमें बहुतसे ब्राह्मणोंके निमित्त दी थी ॥ २ ॥ मैंने पुरोहितके मद और लोभसे उन ब्राह्मणोंको वंचित करके उन्हैं कुछ एक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देकर शेष सब मैंने लेलीं ॥ ३ ॥ ब्राह्मणोंके साधारण द्रव्य हरण करनेके पातकसे काल सूत्र और रक्त कर्दम नाम नरकमें मैं पतित हुआ ॥ ४ ॥ चलायमान क्रिमियोंसे पूर्ण दुर्गंध रादसे अनिल पवनसे पूर्ण नरकमें नाभिपर्यन्त नीचेको मुखकर मग्न किया गया वही भोजन मिला ॥ ५ ॥ उसके ऊपर महा गृध्र और काक मुझको खाते थे, मेरा देह निरन्तर कीडोंसे नोचा जाताथा ॥ ६ ॥ तब उस शोणितकी पंकमें मैं श्वास रहित होगया एक मुहूर्तभी महाकल्पके समान बीतता था ॥ ७ ॥ तीस सहस्र वर्षतक मुझको यातना भोगनी पड़ी हे वानर नरकका दुःख मैं

विप्रसाधारणद्रव्यग्रहणोत्पन्नपातकात् ॥ पतितःकालसूत्रेहंनरकेरक्तकर्दमे ॥ ४ ॥ चलत्क्रिमिसुसंपूर्णेदुर्गंधेपूयफेनिले ॥ आनाभेस्तत्रमग्नोस्मिलिहन्पूयमधोमुखः ॥ ५ ॥ तथोपरिमहागृध्रैर्भक्ष्यमाणस्तुवायसैः ॥ क्रिमिभिस्तुद्यमानस्तुममदेहोनिरंतरम् ॥ ६ ॥ तस्मिञ्छोणितपेकंहंनिरुच्छ्वासोऽभवंतदा ॥ मुहूर्तोपिमहाकल्पसमोजातोममात्रवै ॥ ७ ॥ यातनाश्चानुभूताश्चसमास्त्रिंशयुतंमया ॥ वक्तुंचतन्नशक्नोमिदुःखंवानरनारकम् ॥ ८ ॥ पौरोहित्यंमहाघोरंपापदंचस्वभावतः ॥ देवोपजीवनं यत्रब्राह्मणस्योपजीवनम् ॥ ९ ॥ राज्ञःप्रतिग्रहोघोरस्तेनदग्धाद्विजातयः ॥ तेषामपिहरेद्द्रव्यंपुरोधास्तेननारकी ॥ १० ॥ राजायत्कुरुतेपापंपुरादेहेनधीयते ॥ तस्यतेनपुरोधाश्चगीयतेतत्वदर्शिभिः ॥ ११ ॥

कह नहीं सकताहूं ॥ ८ ॥ पौरोहित्य कर्म महा घोर और स्वभावसेही पापका देनेवाला है देवके द्वारा जीवका ब्राह्मणके द्वारा जीवका ॥ ९ ॥ विशेषकर राजाका दान महाघोर है उससे द्विजाति दग्ध होजाते हैं उनकाभी धन पुरोहित हरण करताहै इस्से वह नरकको जाता है ॥ १० ॥ राजा जो पापकरताहै पहले देहसे उसको यह धारण करताहै इस कारण इसकी पुरोहित संज्ञा है ऐसा तत्ववादी कहते हैं ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर मैंने प्रारब्धसे किसी प्रकार नरक सागरके पारभी होकर मैंने फिर प्रारब्धवशसे पक्षीका जन्म पाया ॥ १२ ॥ पहले भगिनीके घरसे कांसेका बरतन हरणकर आक्षिक (पासाखेलनेवाला) के निमित्त मैंने दियाथा इस कारण मैं सारस हुआ ॥ १३ ॥ और यह सारसी पहले ब्राह्मणी थी इसने दारुण कांसेकी चोरीकी इस कारण यह सहधर्मिणी मेरी भार्या हुई ॥ १४ ॥ हे वानर ! इस प्रकार तुझसे मैंने सब कर्मका फल कथन किया वर्तमान

दैवात्कथमपिप्राप्तउत्तारोनरकांबुधेः ॥ मयादौदैवयोगेनशकुनित्वमुपस्थितम् ॥ १२ ॥ अपहृत्यपुराकांस्यभाजनंभगिनीगृहात् ॥ आक्षिकायमयादत्तंतेनमेसारसीगतिः ॥ १३ ॥ इयंचब्राह्मणीपूर्वंकांस्यचोरीसुदारुणा ॥ तेनेयंसारसीजातामममभार्यासधर्मिणी ॥ ॥ १४ ॥ इत्थंवानरतेसर्वंकथितंकर्मणःफलम् ॥ वृत्तंचवर्तमानंचभविष्यंशृणुसांप्रतम् ॥ १५ ॥ अहंहंसोभविष्यामित्वंचहंसो भविष्यसि ॥ हंसीयमपिमद्भार्यासारसीचभविष्यति ॥ १६ ॥ देशेचकामरूपेवैस्थास्यामोवैयथासुखम् ॥ योगिनींभाविकल्याणीं यास्यामस्तदनंतरम् ॥ १७ ॥ ततश्चमानुषंजन्मप्राप्स्यामोदुर्लभंपुनः ॥ श्रेयस्तद्विपरीतंचप्राणिभिर्यत्रसाध्यते ॥ १८ ॥ एवंसर्वाञ्छिवोजंतून्मोहयित्वास्वमायया ॥ सुखैर्भुनक्तिदुःखैश्चनास्मानेवतुकेवलम् ॥ १९ ॥

वृत्त यह है अब भविष्य सुन ॥ १५ ॥ आगेको मैं और तू दोनों हंस होंगे और यह मेरी भार्या सारसीभी हंसी होंगी ॥ १६ ॥ हम यथा सुखकाम रूप देशमें निवास करेंगे फिर कल्याणी योगिनीको प्राप्त होंगे ॥ १७ ॥ फिर हम दुर्लभ मानुषी जन्मको प्राप्त होंगे जहां प्राणी मंगल और उसके विपरीत पनको साधन करते हैं ॥ १८ ॥ इस प्रकार शिव सब प्राणियोंको अपनी मायासे मोहित करते हैं केवल हमहीको नहीं सब जगत्को सुख

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुःखसे संयुक्त करते हैं ॥ १९ ॥ इस लोकमें प्रवृत्तिके निमित्त अनेक मार्ग हैं जो धर्म अधर्म करनेवालोंको सुख दुःख देता है ॥ २० ॥ सब प्राणियोंको वारंवार धर्मका सेवन करना चाहिये, हे नरव्याघ्र देवता असुर कृमि कीट जलचर ॥ २१ ॥ किसीसे भी यह दुःखके कंटकका मार्ग अतिक्रमण नहीं होसकता, विना वेदान्तके पारगामी योगी और विरक्तोंके कोई इस्से नहीं छूटा ॥ २२ ॥ अणु वा गुरु जैसे पुण्य पाप हो ईश्वर उसका

अयंलोकेप्रवृत्तश्चमार्गोविविधनिर्मितः ॥ धर्माधर्ममयोऽत्यर्थंसुखदुःखफलात्मकः ॥ २० ॥ सेवितःप्राणिभिःसर्वैःसर्वदावापुनःपुनः ॥ देवासुरनरव्याघ्रकृमिकीटजलेचरैः ॥२१॥ नातिक्रांतोहिकेनापिपंथाऽयंदुःखकंटकः ॥ विरक्तान्योगिनोध्यायंविनावेदांतपारगान्॥ ॥ २२ ॥ अणोर्वापिगुरोर्वापिपुण्यापुण्यस्यकर्मणः ॥ ददातीहफलंज्ञात्वादेशंकालंमहेश्वरः ॥ २३ ॥ इत्थंविधिविधानज्ञांमायां ज्ञात्वेश्वरस्यच ॥ नशोचंतिनतप्यंतिनव्यथंतिमहाधियः ॥२४॥ नान्यथाशक्यतेकर्तुंविपाकःपूर्वकर्मणाम् ॥ उपायैःप्रज्ञयावापिशाखामृगसुरैरपि ॥ २५ ॥ पुरात्वंभूपतिर्जातःपश्चाज्जातोसिनारकी ॥ अधुनावानरोभूयोजन्मप्राप्स्यसितादृशम् ॥ २६ ॥ इतिमत्वा विशोकस्त्वंशाखामृगयथासुखम् ॥ प्रतीक्षांकुरुकालस्यरममाणोऽत्रकानने ॥ २७ ॥

फल जानकर देश काल अनुसार देता है ॥ २३ ॥ इस प्रकार विधिविधानके ज्ञाता ईश्वरकी माया जानकर शोच ताप और व्यथा नहीं करते हैं कारण कि बुद्धिमान् होते हैं ॥ २४ ॥ पूर्व कर्मों का फल कोई मेट नहीं सकता, उपाय बुद्धिसे हे वानर ! देवताभी नहीं मेट सकते ॥ २५ ॥ पहले तू राजा हुआ फिर नरकमें पडा अब वानर हुआ आगे भी ऐसे ही योनिमें प्राप्त होगा ॥ २६ ॥ ऐसा मानकर हे वानर ! शोक मतकर इस वनमें

१ कलेवरैरितिपाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विचरता हुआ सुखसे कालकी प्रतीक्षा कर ॥ २७ ॥ और मैंभी ईश्वरकी मायामें बद्ध होकर धैर्यको धारणकर यहां समय व्यतीत करताहूं ॥२८॥ वानरने कहा मैंने तुम्हारी पहले पूजाकी थी अबभी मैं तुमको प्रणाम करताहूं तुम जातिस्मर होनेसे पूर्व देहकी बात सब जान्ते हो ॥ २९ ॥ हेसारस ! आनन्दपूर्वक रहो सदा तुम्हारा मंगल हो तुम्हारे वाक्यसे मोह रहित हो मैं भी विचरण करूंगा ॥ ३० ॥ प्रेत बोला हे ब्राह्मण ! यह परम

अहमप्येवमीशानमायाबद्धोवनेवने ॥ क्षपयिष्यामिवैजन्मधैर्यमास्थायसारसम् ॥ २८ ॥ ॥ वानरउवाच ॥ ॥ मयात्वं पूजितःपूर्वंनौमित्वामधुनाप्यहम् ॥ जातिस्मरोऽसिजानामिसर्वंमत्पूर्वदैहिकम् ॥२९॥ तिष्ठसारससारस्याशिवमस्तुसदातव ॥ त्वद्वाक्याद्गतमोहोऽहंविचरिष्यामिसर्वदा ॥३०॥ ॥ प्रेतउवाच ॥ ॥ इमंरम्यंविचित्रंचपावनंपरमंद्विज ॥ पक्षिवानरसंवादंश्रुतंयावन्नदीतटे ॥ ३१ ॥ तावन्ममापिबोधोभूत्तेनशोकःक्षयंगतः ॥ इदानींजाह्नवीतोयमाहात्म्यंपरमाद्भुतम् ॥ ३२ ॥ दृष्ट्वात्रब्राह्मणश्रेष्ठत्वां याचेजाह्नवीजलम् ॥ प्रेतत्वंतर्तुकामोहंतीव्रातृष्णाप्रपीडितः ॥ ३३ ॥ अस्मिन्नेवाचलेदृष्टंमयाश्चर्यंचवैद्विज ॥ गंगातोयस्यतावद्विपातुमिच्छामितज्जलम् ॥ ३४ ॥ पारियात्रोद्भवःकोपिब्राह्मणोग्रामयाजकः ॥ अयाज्ययाजनाद्विंध्येसंभूतोब्रह्मराक्षसः ॥ ३५ ॥

मनोहर परम विचित्र पक्षी और वानरका सम्वाद मैंने नदीके किनारे सुना ॥ ३१ ॥ तब मुझको भी बोध हुआ और शोकक्षय हुआ अब गंगाजलका परम अद्भुत माहात्म्य ॥ ३२ ॥ देखकर हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! तुमसे गंगाजल मांगताहूं बडी तृष्णासे व्याकुल हुआ प्रेतत्व दूर करनेकी इच्छा करताहूं ॥ ॥ ३३ ॥ हे ब्राह्मण ! इसी पर्वतपर मैंने आश्चर्य देखा इस कारण मैं गंगाजलपान करनेकी इच्छा करताहूं ॥ ३४ ॥ एक ग्रामयाजक पारियात्रका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उत्पन्न हुआ यजनके अयोग्योंको यजन करानेसे ब्रह्मराक्षस हुआ ॥ ३५॥ हमारी संगतिके लोभ में वह आठ वर्षतक रहा हे ब्राह्मण ! उसकी अस्थि उसके पुत्रने संचितकी थीं॥ ३६ ॥और लाकर निर्मल कनखल तीर्थके बीचमें डालीं उसी क्षण वह कठिन राक्षसत्वसे छूट गया ॥ ३७ ॥ इस प्रकार गंगाजल स्नानकी बडी अद्भुत महिमा है यह मैंने साक्षात् देखी इस कारण मैं गंगाजलकी प्रार्थना करताहूं ॥ ३८ ॥ पहले जो मैंने तीर्थोंपर बडे

अस्मत्संगस्यलोभेनस्थितोसौहायनाष्टकम् ॥ तस्यास्थीनिसुपुत्रेणसंचितानिद्विजोत्तम ॥ ३६ ॥ क्षिप्तान्यानीयगंगायांतीर्थेकनखलेऽमले ॥ तत्क्षणादेवमुक्तोऽसौराक्षसत्वात्सुदारुणात् ॥३७॥ इतिगंगाजलस्नानमहिमामहदद्भुतम् ॥ साक्षाद्दृष्टोमयातेनगांगेयंप्रार्थितं जलम् ॥ ३८ ॥ पुरस्ताद्यत्कृतस्तीर्थेमयाभूरिपरिग्रहः ॥ नकृतस्तुप्रतीकारस्तस्यजाप्यादिलक्षणः ॥३९॥ तेनमेप्रेतरूपस्यदुर्लभोदकभोजनम् ॥ सहस्रंयत्रवर्षाणामतीतंविंध्यपर्वते ॥ ४० ॥ इतितेकथितंसर्वंहित्वालज्जांगरीयसीम् ॥ इदानींधार्मिकश्रेष्ठजलदानेनसत्वरम् ॥ ४१ ॥ संतर्पयममप्राणान्कंठमात्रावलंबितान् ॥ दुर्लभंप्रेतभावेपिजीवितंप्राणिनामिह ॥ ४२ ॥ शरीररक्षणीयंहि सर्वथासर्वदानरैः ॥ नहीच्छंतितनुत्यागमपिकुष्ठादिरोगिणः ॥ ४३ ॥

दान लिये थे और जपादि करके उसका प्रतीकार नहीं किया ॥ ३९ ॥ इस कारण मुझ प्रेतको जल और भोजनभी दुर्लभ होगया इस विंध्यपर्वत पर मुझे सहस्र वर्ष बीत गये ॥ ४० ॥ यह सब कथा लज्जाको छोड़ तुमसे वर्णन की हेधार्मिकश्रेष्ठ ! इस समय शीघ्र जल दान से ॥ ४१ ॥ कंठमें आये हुए मेरे प्राणोंको तृप्त करो प्रेतभावमें भी प्राणियोंको जीवन दुर्लभ है ॥ ४२ ॥ सब प्रकार सदा प्राणियोंको शरीरकी रक्षा करनी उचित है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुष्ठादि रोगी भी शरीर त्यागकी इच्छा नहीं करते ॥ ४३ ॥ देवद्युति बोले इस प्रकार उसके वचनको सुन परम विस्मयको प्राप्तहो प्रेत पर कृपालु हो वह पथिक विचारने लगा ॥ ४४ ॥ लोकोंको पाप पुण्यका फल प्रत्यक्ष दीखताहै देव दानव मनुष्य तिरछे चलनेवाले जीव कृमिकीट ॥ ४५ ॥ अनेक योनियोंमें जन्म अनेक व्याधियोंकी पीड़ा बालवृद्धोंका मरण अंधा और कुबडापन होना ॥ ४६ ॥ धनी दरिद्र पण्डिताई-मूर्खता यह रचना

॥ देवद्युतिरुवाच ॥ ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वाविस्मयंपरमंगतः ॥ पथिकश्चिंतयामासकृपांप्रेतेसमुद्वहन् ॥ ४४ ॥ पापपुण्यफलं लोकेप्रत्यक्षंदृश्यतेखलु ॥ देवदानवमानुष्यंतिर्यक्त्वंक्रिमिकीटकम् ॥ ४५ ॥ नानायोनिषुजन्मानिनानाव्याधिप्रपीडनम् ॥ मरणं बालवृद्धानामंधत्वंकुब्जतातथा ॥ ४६ ॥ ऐश्वर्यंचदरिद्रत्वंपांडित्यंमूर्खतातथा ॥ एताश्चरचनालोकेभवंतिकथमन्यथा ॥ ४७ ॥ तेधन्याःकर्मभूमौयेन्यायमार्गार्जितंधनम् ॥ सत्पात्रेभ्यःप्रयच्छंतिकुर्वंतिचात्मनोहितम् ॥ ४८ ॥ भूमिरत्नहिरण्यानिगावोधान्यं गृहंगजाः ॥ रथाश्चवसनग्रामाःसिद्धमन्नंफलंजलम् ॥ ४९ ॥ कन्यादिव्यौषधमन्नंछत्रोपानद्वरासनम् ॥ शय्यातांबूलमाल्या नितालवृंतंवरासनम् ॥ ५० ॥ सर्वमेतत्प्रदातव्यंलोकत्रयजिगीषुभिः ॥ दत्तंहिप्राप्यतेस्वर्गेदत्तमेवहिभुज्यते ॥ ५१ ॥

लोकमें नहीं तो कैसे होती ॥ ४७ ॥ इस कर्मभूमिमें वे धन्य हैं जो न्याय मार्गसे धन अर्जन करते हैं और सत्पात्रोंको देकर अपना हित साधन करते हैं ॥ ४८ ॥ भूमि रत्न सुवर्ण गौ धान्य गृह हाथी रथ घोडे ग्राम सिद्ध अन्न फल जल ॥ ४९ ॥ कन्या दिव्य औषधी अन्न छत्र उपानह श्रेष्ठ आसन शय्या ताम्बूल माला तालके पंखे श्रेष्ठ आसन ॥ ५० ॥ त्रिलोकी जीतनेकी इच्छा करनेवालोंको यह सब देना चाहिये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दियाहुवाही स्वर्गमें प्राप्त होता और दियाहुवाही भोगाजाता है ॥ ५१ ॥ छत्र चमर यान अच्छे घोडे हाथी महल सुन्दर शय्या गौ महिषी सुन्दर स्त्री ॥५२॥ अन्न वा रत्न भूषण मोती पुत्र दासी महाकुलमें अन्न आयु आरोग्य ऐश्वर्य कला सब विद्याओंमें कुशलता॥५३॥दानकाही सब फल भूमिमें मनुष्योंको प्राप्त होताहै इस कारण यत्नसे देना चाहिये विना दिया नहीं मिलसकता ॥ ५४ ॥ धर्मनिष्ठ पथिक इस गाथाको गाता हुआ

छत्रचामरयानानिवराश्ववरवारणाः ॥ हर्म्याणिवरशय्याश्चगोमहिष्योवरस्त्रियः ॥ ५२ ॥ अन्नभूषणमुक्ताश्चपुत्रादास्योमहा कुलम् ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यंकलाविद्यासुकौशलम् ॥ ५३ ॥ दानस्यैवफलंसर्वंप्राप्यतेभुविमानवैः ॥ तस्माद्देयंप्रयत्नेननादत्तमुप तिष्ठति ॥ ५४ ॥ धर्मिष्ठेनतुपांथेनगाथेयंसमगायत ॥ इतिश्रुत्वापुनःप्रेतःप्रोवाचह्यार्तमानसः ॥ ५५ ॥ मन्येधर्मज्ञकल्पो सिपांथत्वंनात्रसंशयः ॥ देहिमेजीवनंवारिचातकायघनोयथा ॥ ५६ ॥ एतस्मिन्प्राणदानेहिमाविलंबंकृथाबहु ॥ ततःप्रत्याहपां थस्तुवचनंन्यायगर्भितम् ॥ ५७ ॥ भृगुक्षेत्रेशृणुप्रेतपितरौममतिष्ठतः ॥ तदर्थंतीर्थराजस्यमयावारिसमाहृतम् ॥ ५८ ॥ तत्सितासीतपानीयंमध्येचप्रार्थितंत्वया ॥ नजानेधर्मसंदेहःकिमत्रममयुज्यते ॥ ५९ ॥

यह वचन सुन प्रेत बडा आर्त होकर बोला ॥५५॥हे पथिक इसमें सन्देह नहीं तुम बडे माहात्मा हो तुम मुझे जीवन जलदो जैसे मेघ चातकको देताहै ॥ ५६ ॥ इस प्राण दानमें बहुत देर मतकरो तब पथिक न्याय युक्त वचन बोला ॥ ५७ ॥ हे प्रेत भृगुक्षेत्रमें मेरे माता पिता स्थित हैं उन के निमित्त यह तीर्थ राजका जल मैं लायाहूं ॥ ५८ ॥ सो बीचमें तैने गंगा यमुनाके जलकी प्रार्थना की है न जाने इस धर्मसन्देह में क्या होगा ॥ ५९ ॥

१ रत्न—इ० पा० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बलाबलको विचारकर प्रबल विधि का अनुष्ठान करूंगा मैं केवल वेद और शास्त्र के मानसेही नहीं॥६०॥ किन्तु अश्वमेध यज्ञ तथा और सब से ऋषि और देवताओंसे भी अधिक मैं प्राणियों के प्राणकी रक्षा मान्ताहूं ॥ ६१ ॥ इस प्रकार श्रेष्ठ जल देकर इस प्रेत की रक्षा कर पिता के निमित्त और पवित्र जल लेकर जाऊंगा ॥ ६२ ॥ यही विधि मुझको शुद्ध और प्रबल विदित होती है परोपकारके करनेके समान और कोई कार्य नहीं

बलाबलंविचारार्थंकरिष्येप्रबलंविधिम् ॥ वेदेभ्योधर्मशास्त्रेभ्योनाहंमानेनकेवलम् ॥ ६० ॥ हयमेधादियज्ञेभ्यःसर्वेभ्योप्यधिकंमतम् ॥ ऋषिभिर्देवताभिश्चप्राणिनांप्राणरक्षणम् ॥ ६१ ॥ इतिदत्वावरंवारिकृत्वाप्रेतस्यरक्षणम् ॥ पित्रर्थंपुनरादायजलंनेष्यामिपावनम् ॥ ६२ ॥ एषमेप्रबलोभातिशुद्धधर्मप्रदोविधिः ॥ परोपकरणादन्यत्सर्वमल्पंस्मृतंबुधैः ॥ ६३ ॥ परोपकारिभिर्दत्ताअपिप्राणनृभिर्मुदा ॥ अद्भिःपरोपकारस्यात्किनलब्धंमयापुनः ॥ ६४ ॥ दधीचिनापुरागीतःश्लोकोयंश्रूयतेभुवि ॥ सर्वधर्ममयःसारःसर्वधर्मज्ञसंमतः ॥ ६५ ॥ परोपकारःकर्तव्यःप्राणैरपिधनैरपि ॥ परोपकारजंपुण्यंतुल्यंक्रतुशतैरपि ॥ ६६ ॥ इत्युक्काप्रददौतोयंगंगायामुनसंभवम् ॥ प्रेतायप्राणरक्षार्थंसधर्मिष्ठोवरोद्विजः ॥ ६७ ॥

ऐसा पंडित कहते हैं और सब इससे न्यून है ॥ ६३ ॥ परोपकारियोंने प्रसन्नता से अपने प्राण देदिये हैं जो जल से परोपकार होजाय तो मैंने क्या नहीं पाया ॥ ६४ ॥ दधीचि का कहा यह श्लोक भूमिपर गायाजाता है जो सब धर्म मय सार और सब धर्मात्माओंका सम्मत है ॥ ६५ ॥ कि धन और प्राण से भी पराया उपकार करना चाहिये परोपकार का पुण्य सौ यज्ञों की समानहै ॥६६॥ ऐसा कह गंगा यमुनाके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थान का जल उसको देदिया उस श्रेष्ठ ब्राह्मणने प्रेतके प्राण रक्षाको जल दिया तौ ॥ ६७ ॥ प्रेतने प्रसन्न हो जल पिया और उसको शिरपर छिडका उसी समय वह प्रेत देहको छोडकर दिव्य देह होगया ॥ ६८ ॥ उस बडे आश्चर्यको देखकर वह केरल ब्राह्मण बोला अहो वेणीके किंचित जलसे यह प्रेतत्वसे छूटगया ॥ ६९ ॥ मैं जान्ताहूं इस जलके गुण ब्रह्माभी नहीं कहसकते नहीं तो भला गंगा जलको महादेवजी क्यों धारण करते और फिर यह अन्यथा कैसे होसकता है ॥ ७० ॥ गंगाजल अचिन्त्य महिमावाला है जो तिलमात्रभी पीता है वह

प्रेतःप्रीतोजलंपीत्वाह्यभिषिच्यशिरस्तथा ॥ प्रजहौप्रेतदेहंतंदिव्यदेहोभवत्क्षणात् ॥ ६८ ॥ तदाश्चर्यंमहद्दृष्ट्वानिजगादसकेरलः ॥ अहोविमुक्तःप्रेतत्वाद्वेणीपानीयबिंदुभिः ॥ ६९ ॥ ब्रह्मापिनैवशक्नोतिमन्येवक्तुमपांगुणम् ॥ गङ्गातोयंमहादेवोधत्तेकेकथमन्यथा ॥ ॥ ७० ॥ अचिंत्यशक्तिर्गंगांभस्तिलमात्रंतुयःपिबेत् ॥ देवोभवेत्ससिद्धोवागर्भेनैवचसंविशेत् ॥ ७१ ॥ नगंगासदृशीसिद्धिर्नगंगा सदृशीमतिः ॥ नगंगासदृशीमुक्तिर्गंगासर्वाधिकायतः ॥ ७२ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनमहाभक्त्याचधार्मिक ॥ करस्थंतस्यकैवल्यं योगंगांसेवतेसदा ॥ ७३ ॥ आयुष्मान्भवपांथत्वंमाधर्मविरतोभव ॥ त्वयाहंतारितःसद्योगंगांबुकणदानतः ॥ ७४ ॥ इत्युक्त्वाप्र स्थितोनाकंपिशाचस्तुसकेरलः ॥ आशीर्भिरभिनंद्याथपांथंबंधुवरंनरम् ॥ ७५ ॥

देवता वा सिद्ध होकर फिर गर्भमें नहीं आता ॥ ७१ ॥ गंगाकी समान सिद्धिमति और मुक्ति नहीं है कारण कि गंगा सबसे अधिकहै ॥ ७२ ॥ हे धार्मिक इस कारण सम्पूर्ण यत्न और महाभक्तिसे जो गंगाको सेवन करते हैं उनके हाथमें मुक्ति है ॥ ७३ ॥ हे पथिक ! तुम्हारी बडी आयु हो तुम कभी धर्मसे विरत न होना गंगाजल कुछ दान करके तैंने मुझे तार दिया ॥ ७४ ॥ ऐसा कह पिशाच तो स्वर्गको गया और वह केरल उसका पथिक बंधु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आशिर्वादसे प्रसन्न होकर ॥ ७५ ॥ इस प्रेतकी मुक्ति कर लौटकर फिर जल लाकर तीर्थके जलकी महिमा स्मरण करता उसी मार्गसे गया ॥ ७६ ॥ वसिष्ठजी बोले इस प्रकार प्रयाग का माहात्म्य सुन उन मुनीश्वरको नमस्कार कर वह पिशाच माघमासमें तत्काल प्रयागमें स्नान करनेको गया ॥ ७७ ॥ हेब्राह्मण ! माघमासमें वह वेणीमें स्नान करने से क्षीण पाप होकर पिशाची शरीरको त्यागता हुआ ॥ ७८ ॥ वह इविडपति दिव्य देह होकर

प्रेतंविमोक्षपांथोपिपुनरादायतज्जलम् ॥ गतस्तेनैवमार्गेणस्मरंतीर्थोदकौतुकम् ॥ ७६ ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ ॥ इत्थंप्रयाग माहात्म्यंश्रुत्वानत्वाचतंमुनिम् ॥ प्रयागंसहसामाघेपिशाचः सत्वरंगतः ॥ ७७ ॥ स्नात्वासितासितेसोपिमाघमासेद्विजोत्तम ॥ पिशाचःक्षीणपापस्तुपैशाचींविजहौतनुम् ॥ ७८ ॥ दिव्यदेहस्ततोभूत्वाद्राविडोभूपतिस्तदा ॥ स्तुवन्नारायणंदेवंभक्त्यादोषविव र्जितः ॥ ७९ ॥ गंधर्वैस्तूयमानस्तुनाकनारीसुपूजितः ॥ उत्तमेनविमानेनपुरंदरपुरंययौ ॥ ८० ॥ इतितेकथितंविप्रपूर्व वृत्तंसकौतुकम् ॥ इतिहासंद्विजश्रेष्ठसद्यःपातकनाशनम् ॥ ८१ ॥ ज्ञानदंमोक्षदंविप्रश्रुतंदुर्गतिनाशनम् ॥ ८२ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ७ ॥ ॥ इतितेकथितंसर्वंपुरावृत्तंसकौतुकम् ॥ इतिहासंद्विजश्रेष्ठश्रुतंदुर्गतिनाशनम् ॥ १ ॥

दोष रहित हो भक्ति से नारायण देवकी स्तुति करता हुआ ॥ ७९ ॥ गंध से स्तुतिको प्राप्त होकर देवांगनाओंसे पूजित हो उत्तम विमानमें बैठ इन्द्रलोकको गया ॥ ८० ॥ हे विप्र! यह तुमको पूर्ववृत्तान्त कहा हे द्विज श्रेष्ठ यह इतिहास शीघ्र पाप नाश करती है ॥ ८१ ॥ यह ज्ञान और मोक्ष देती तथा दुर्गति नाश करती है ॥ ८२ ॥ ॥ इति श्रीपाद्मेमाघमाहात्म्ये भाषाटीकायां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ यह सब तुम से पुरातन वृत्तान्त कौतुक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहित कहा हे द्विजश्रेष्ठ यह दुर्गति नाशक इतिहास आपने सुना॥ १ ॥अबमेरे साथ यह कन्या और तुम्हारा यह पुत्र और तुम सद्गतिके निमित्त प्रयागको चलो॥ २॥वहां देवताओंको भी दुर्लभ माघस्नान करैंगे और वहां यह पाप से उत्पन्न हुए पिशाचपनको त्यागन करैंगे ॥ ३॥महेश बोले इसप्रकार वशिष्ठ जीके मुखकमलसे मधुर रस भरी कथा परम प्रेमसे पान कर वे सब नरक सागरसे निस्तीर्ण हुये॥ ४॥उनकेसाथ वे प्रसन्न हो आकाशमार्गसे चले हे दिली

अधुनातुमयासार्धमिमाःकन्याःसुतश्चते ॥ त्वंचायातुप्रयागंवैसर्वेसद्गतिमीप्सवः ॥ २ ॥ माघस्नानंप्रकुर्मोऽत्रदेवानामपिदुर्लभम् ॥ तत्रमोक्ष्यंतिपैशाच्यंसद्यःपापसमुद्भवम् ॥ ३ ॥ ॥ महेशउवाच ॥ ॥ एवंवसिष्ठवक्त्राब्जकथामधुरसंमुदा ॥ पीत्वाप्रमुदिताःसर्वेनिस्तीर्णानरकार्णवात् ॥ ४ ॥ प्रस्थितास्तेनसार्धंतेसत्वरंव्योम्निहर्षिताः ॥ दिलीपशृणुतत्सर्वंतत्तीर्थंतुसितासितम् ॥५॥ सत्वरंव्योममार्गेणकाममासाद्यदुःसहाः ॥ समागम्यतदातत्रसंहृष्टहृदयाश्चते ॥ ६ ॥ अथोचेलोमशस्तत्रसदयंगगनांगणे ॥ पश्यंतुश्रद्धयासर्वेतीर्थराजमिमंभुवि ॥ ७॥ विनाज्ञानंप्रयागेस्मिन्मुच्यतेसर्वजंतवः ॥ इष्ट्वात्रैवमहायज्ञंस्रष्टुकामःप्रजापतिः ॥ ८॥ अवापसृष्टिसामर्थ्यंततःसृष्टिंचकारसः ॥ अत्रनारायणःसस्त्रौपत्नीकामःसितासिते ॥ ९ ॥

प ! सितासित तीर्थकी महिमा श्रवण कीजिये ॥५॥ शीघ्रही वे अपने दुःसहकामनाकी प्राप्तिके निमित्त आकाशमार्गमें प्राप्त होकर प्रसन्नमनसे उस स्थानमें पहुँचगये ॥ ६ ॥ तब दयापूर्वक आकाशमें स्थित ही लोमशजीने कहा श्रद्धासे सब कोई तीर्थराजका दर्शन करो ॥ ७ ॥ इस प्रयागमें ज्ञानके विनाही सबकी मुक्ति होती है यहां देखकरही ब्रह्माजीने महायज्ञ करनेकी इच्छा की थी ॥८॥ और यज्ञ करके सृष्टि रचनाकी सामर्थ्य प्राप्त की थी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मीकी इच्छासे इसी तीर्थमें नारायणने स्नान कियाथा ॥९॥ इसीसे अमृत मंथनके समय उनको लक्ष्मीभार्याकी प्राप्ति हुई यहां छःमहीने निवास कर यथेच्छासे वेणी में स्नानकर ॥ १० ॥ तीन बाणसे शिवजीने त्रिपुरको वध कियाथा यह जो अग्निके कुण्ड निरन्तर दीप्त रहते हैं ॥ ११ ॥ यह तृप्तिको प्राप्त हुई अग्नि जिस किसीसे पुष्ट होती है यहीं तेंतीस देवता प्रसन्न होकर तृप्त हुए आनंद करते हैं ॥ १२ ॥ यहीं कपालधारी महेश नीलकंठ प्रगट हुए हैं निरन्तर सुर असुर जिनकी सेवा करते हैं बटु अंजलिके निमित्त प्राप्त होते हैं ॥ १३ ॥ मृकण्डके पुत्र मार्कण्डेयजी कल्पान्तमें

अतःसलब्धवान्लक्ष्मींभार्यांममृतमंथने ॥ उषित्वाचात्रषण्मासंस्नात्वावेण्यांयथेच्छया ॥ १० ॥ त्रिपुरंघातयामासत्रिबाणेनत्रिशूल भृत् ॥ इमानित्रीणिकुंडानिदीप्तान्यजस्रवह्निभिः ॥ ११ ॥ एषतृप्तिंगतोवह्निर्यःकेनापिचपुष्यति ॥ अत्रदेवास्त्रयस्त्रिंशत्तृप्तामुमुदिरे भृशम् ॥ १२ ॥ आविर्भूतोमहेशोत्रनीलकंठःकपालभृत् ॥ अनिशंससुरैःसेव्यआयातोंजलयेबटुः ॥ १३ ॥ मृकंडसूनुनाकल्पे प्रविश्ययन्मुखेस्थितम् ॥ लोकेज्वालाकुलेसोयंयोगरूपीजनार्दनः ॥ १४ ॥ सेयंभागीरथीशंभोःसर्वदुःखापहारिणी ॥ सिद्ध्यर्थं सेव्यतेसिद्धैर्भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥ १५ ॥ अनिशंभूतिदायाचस्वर्गमार्गह्यनुत्तमा ॥ स्वर्गहेतुश्चयादेवीसेयंभागीरथीनदी ॥ १६ ॥ यदंभःस्नानमात्रेण कर्तनसलोकताम् ॥ लभंतेप्राणिनःसर्वेनदीसायमुनास्वयम् ॥ १७ ॥

जिनके मुखमें ज्वालासे व्याप्त लोकहोने में जिनके मुखमें प्रविष्ट हुए वही यह योगरूपी जनार्दन हैं ॥ १४॥ वही यह भागीरथीभी शंभके सब दुखःकी हरने वाली है भक्ति मुक्तिकी फलदात्री है सिद्धिके निमित्त सिद्धजन इनका सवन करते हैं ॥ १५ ॥ यह निरन्तर ऐश्वर्यकी दाता और स्वर्गका एकही उत्तम माग है जो स्वर्गकी कारण ह वही यह गंगा नदी है ॥ १६ ॥ जिसके स्नान मात्रसे पाप दूरहोकर मुक्ति होती है सब प्राणी मनोरथको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राप्त होते हैं वही यह यमुना नदी है ॥ १७ ॥ हे मुने ! इन दोनों नदियोंका संगम सुखदायक और पुण्यवर्धक है, इनमें स्नान कर ज्ञानी हो फिर नरकमें नहीं पडते हैं ॥ १८ ॥ इस प्रयागमें ज्ञानके विनाही सब प्राणी मुक्त होजाते हैं हे विप्र ! औरभी पुरातन इतिहास सुनो ॥ १९ ॥ जो सुने वालोंके सब पाप और सब रोगको दूर करती है, ऋषिके शापसे एक गन्धर्व वायस होगयाथा ॥ २० ॥ वह सितासितके जलमें स्नान करके तत्काल

अनयोःपुण्यनद्योश्चसंगमाःसुखदोमुने ॥ अत्रस्नातानपच्यंतेनरकेज्ञानभाविताः ॥१८॥विनाज्ञानंप्रयागेस्मिन्मुच्यंतेसर्वजंतवः॥अन्य च्चश्रूयतांविप्रइतिहासंपुरातनम् ॥ १९ ॥ शृण्वतांसर्वपापघ्नंसर्वरोगविनाशनम् ॥ ऋचीकेनपुराशप्तोगंधर्वोवायसोभवत् ॥ २० ॥ शापंसमोचसोत्रैवस्नातःसद्यःसितासिते ॥ वासवस्यतुशापेनस्वर्गाद्भ्रष्टाप्सरोर्वशी ॥ २१ ॥ स्वर्गकामाचसासस्नौलेभेस्वर्गततो चिरात् ॥ पुत्रंचशंकरंलेभेययातिर्नाहुषोमुने ॥ २२ ॥ पुत्रकामःप्रयागेहिस्नात्वापुण्येसितासिते ॥धनकामःपुराशक्रःसुस्नातोऽत्रद्धि जोत्तम ॥ २३ ॥ धनदस्यनिधीन्सर्वाञ्जहारसचमायया ॥ कश्यपोऽत्रतपस्तेपेशिवाराधनतत्परः ॥२४॥अस्मिंस्तीर्थेभरद्वाजोयोग सिद्धिमवाप्तवान् ॥ अस्मिंस्तीर्थेपुराविप्रयोगेशाःशांतमानसाः ॥ २५ ॥

पापसे छूटगया, एक समय इन्द्रके शापसे उर्वशी स्वर्गसे भ्रष्ट हुई ॥ २१ ॥ वहभी स्वर्गकी कामनासे यह स्नान कर स्वर्गको गई नहुषपुत्र ययातिने यहां स्नानकर मंगलदायक पुत्रको पाया पहले इन्द्रने धनकी कामनासे यहां स्नान कियाथा ॥ २२ ॥ २३ ॥ तब मायासे कुबेरकी ऋद्धि सब हरण करली शिव जीका आराधन पूर्वक कश्यपजीने यहां तप कियाथा ॥ २४ ॥ इसी तीर्थमें भरद्वाजजी योग सिद्धिको प्राप्त हुएथे, हेविप्र इसी तीर्थमें शान्तमन योगेश्वर २५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सनकादिकोंने योगकी फलभूमि प्राप्त की थी, माघमासमें जो गंगा यमुना के संगममें न्हावे ॥ २६ ॥ वे सब तारारूप हैं, उनसे वह सब जगत् व्याप्त है, कामी कामनाओंको और मुमुक्षु मुक्तिको प्राप्त होते हैं॥ २७॥हेद्विज श्रेष्ठ!प्रयागमें साधक सिद्धिको प्राप्त होते हैं, इस समय मुक्ति की कामना से यह कन्या और तुम्हारा पुत्र ॥ २८ ॥ मेरे वचनसे यह सब और तुम भी इस संगममें स्नान करो वेणी के जलकी सामर्थ्य से पूर्व समयका पाप नष्ट

योगस्यफलभूमिंतुलेभिरेसनकादयः ॥ अस्मिन्माघेतुयेस्नातागंगायामुनसंगमे ॥ २६ ॥ तारारूपाश्चतेसर्वेतैर्व्याप्तंसकलंजगत् ॥ विंदंतिकामिनःकामान्मुक्तियांतिमुमुक्षवः ॥ २७ ॥ विंदंतिसाधकाःसिद्धिंप्रयागेहिंद्विजोत्तम ॥ सांप्रतंमुक्तिकामास्तुकन्याश्चापिसुतश्चते ॥ २८ ॥ मद्वाक्यादत्रमज्जंतुसर्वेत्वंचसितासिते ॥ प्राक्कालीनाघविध्वंसिवेणीजलबलेनतु ॥ २९ ॥ लभंतामखिलांलक्ष्मीं प्राप्तशापमहाफलाम् ॥ एवमार्षवचःसत्यमतींद्रियमलंघनम् ॥ ३० ॥ श्रुत्वाचोत्कंठचित्तास्तेसर्वेस्नानायचोद्यताः ॥ प्रयागंप्राप्य दुष्प्राप्यंपैशाच्यंविजहुःक्षणात्॥३१॥विमुक्ताःशापदुःखेनतनुंस्वांस्वांचलेभिरे ॥ दृष्ट्वावेदनिधिःपुत्रंताःकन्यादिव्यरूपिणीः ॥३२॥ तुष्टावलोमसंप्रीत्याप्रसन्नेनांतरात्मना ॥ त्वदनुग्रहमात्रेणोत्तीर्णःपापमहार्णवः ॥ ३३ ॥

हो जायगा ॥ २९ ॥ इस शापके महा फल की अखिल लक्ष्मीको प्राप्त होंगे इस प्रकार ऋषिके सत्य वचन जो अतीन्द्रिय और अलंघनीय हैं ॥ ३० ॥ सुनकर उत्कंठितहो वे सब स्नान करनेको उद्यत हुए दुष्प्राप्य प्रयागको प्राप्त होकर क्षण मात्रमें पिशाचत्व छोड़ते हुए ॥ ३१ ॥ शापके दुःखसे छूटकर अपने २ शरीरको प्राप्त हुए, वेदनिधि अपने पुत्र और उन दिव्य रूप वाली कन्याओंको देखकर॥ ३२॥ प्रसन्नमन हो लोमशको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रसन्न करने लगे हे ऋषे ! आपके अनुग्रहसेही यह पापमहासागरके पार हुए ॥ ३३ ॥ हे ऋषि श्रेष्ठ ! इस समय इन बालकोंके योग्य वचन कहिये लोमशजी बोले यह कुमार वेद पढकर अपना नियम समाप्त कर चुका तथा युवा है ॥ ३४ ॥ इन अनुराग करने वाली कन्याओंका पाणिग्रहण करै, तब लोमश और अपने पिताके वचनसे ॥ ३५ ॥ विवाहकी विधिसे ब्रह्मचारी धर्मात्माने शुभद्रव्य और मंत्रों द्वारा ऋषियोंसे मंगलको प्राप्तहो ॥ ३६ ॥ धर्मसे पांचौं कन्याओंका पाणिग्रहण किया तब वे सब कन्या पूर्ण मनोरथ होकर

इदानीमुचितंब्रूहिबालानामृषिसत्तम ॥ लोमशउवाच ॥ कुमारोधीतवेदोऽयंसमाप्तनियमोयुवा ॥ ३४ ॥ आसांतुसानुरागाणांगृह्णा तुकरपंकजम् ॥ ततोलोमशवाक्येनस्वपितुर्वचनात्तदा॥३५॥ विवाहविधिनाचाशुब्रह्मचारीसधार्मिकः ॥ शुभद्रव्यैश्चमंत्रैश्चऋषिभिः कृतमंगलः ॥ ३६ ॥ पंचानामपिकन्यानांपाणिंजग्राहधर्मतः ॥ आनंदिन्यस्तदासर्वाःकन्याःपूर्णमनोरथाः ॥ ३७ ॥ बभूवुःसकुमार श्चसंतुष्टश्चबभूवह ॥ दत्त्वानुज्ञांमुनिःसोथलोमशस्तैर्नमस्कृतः ॥३८॥ जगामस्वाश्रमंमेरुपर्वतंसुरसेवितम् ॥ ततोवेदनिधीराजन्सुषाः पंचसुतंतथा ॥ पुरस्कृत्यमुदायुक्तोधनदस्यपुरंययौ ॥३९॥ इतिनृपवरमाघेस्नानसंजातपुण्यान्मुनिवरवचसाद्राक्तीर्थराजप्रयागे ॥ सकलकलुषमुक्ताःपंचगंधर्वकन्याअलमभिगतलाभात्प्राप्यतर्षेचजग्मुः ॥ ४० ॥

प्रसन्न हुईं ॥ ३७ ॥ और कुमारभी प्रसन्न हुआ वह लोमश मुनि उनको आज्ञा दे और उनसे नमस्कृत हो ॥ ३८ ॥ देवताओंसे सेवित मेरुपर्वतपर अपने आश्रमको गये हे राजन् ! तब वेदनिधि अपने पुत्र और पांचों बहुओंको लेकर प्रसन्नतासे कुबेरके पुरको गये ॥ ३९ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! इस प्रकार यह माघस्नानका फल तीर्थराज प्रयागमें एकही बार स्नानसे होता है सो मुनि वचनसे जाना गन्धर्वोंकी पाँचों कन्या सब पापोंसे मुक्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होगईं और अपने मनोरथोंको प्राप्त हो अपने स्थानको गईं ॥ ४० ॥ यह तीर्थ महिमा संयुक्त इतिहास परम पावन है पापनाशका हेतु है जो इसको नित्य सुन्तेहैं उनके सब काम पूर्ण होते हैं और धर्मयुक्त हो दुर्लभ वैकुंठको जाते हैं॥ ४१ ॥इस पवित्र इतिहासको सुनकर जो वक्ताका पूजन करते हैं गौ

परमिममितिहासंपावनंतीर्थभूतंवृजिनविलयहेतुंयःशृणोतीहनित्यम् ॥ सभवतिखलुपूर्णःसर्वकामैरभीष्टैर्व्रजतिचसुरलोकेदुर्लभोधर्मयुक्तः ॥ ४१ ॥ इतिहासमिमंश्रुत्वापूजयेद्यस्तुपाठकम् ॥ गोभिर्हिरण्यवस्त्रैश्चब्रह्मतुल्योयतोहिसः ॥ ४२ ॥ वाचकेपूजितेयस्मा द्विष्णुर्भवतिपूजितः ॥ तस्मात्प्रपूजयेन्नित्यंयदीच्छेत्सफलंभवम् ॥ ४३ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादे गंधर्वकन्यापरिणयोनामपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ छ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

सुवर्ण वस्त्र देते हैं वह ब्रह्मतुल्य होते हैं॥ ४२॥ वाचकके पूजनसे वह विष्णुरूप होते हैं जो सफलताकी इच्छा करै वह वक्ताको नित्य पूजन करै॥ ४३॥ इति श्रीपद्मपुराणे माघमाहात्म्ये वशिष्ठदिलीपसंवादे पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकायां गन्धर्वकन्यापरिणयोनामपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

दोहा—उन्निससेचौअनसुभग, चैत्रकृष्णशशिवार ॥ बुधज्वालाप्रसादने, पूरचोग्रंथविचार ॥ १ ॥
नितप्रतिभजियेरामको, सुमिरणकीजेराम ॥ महावीरभजियेबहुरि, सिद्धहोतसबकाम ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इदं पद्मपुराणोत्तरखण्डस्थमाघमाहात्म्यं भाषाटीकान्वितं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्म
जेन खेमराजेन स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।
संवत् १९५५, शके १८२०.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाम.	की. रु. आ.
एकादशीमाहात्म्य भाषाटीकासह	१–०
एकादशीमाहात्म्य टिप्पणसहित	०–८
भागवतमाहात्म्य भाषाटीका	०–६
कार्तिकमाहात्म्य बडा (पद्मपुराणका)	०–८
कार्तिकमाहात्म्य भाषाटीका सह	०–१२
चातुर्मास्यमाहात्म्य	०–८
मार्गशीर्षमाहात्म्य	०–६
पौषमाहात्म्य	०–६
माघमाहात्म्य मूळ	०–८
माघमाहात्म्य भा० टी० समेत	१–४

नाम.	की. रु. आ.
फाल्गुनमासमाहात्म्य	०–८
वैशाखमासमाहात्म्य	०–१०
श्रावणमाहात्म्य	०–८
भाद्रपदमाहात्म्य	०–६
पुरुषोत्तममाहात्म्यमूल	०–१०
पुरुषोत्तममाहात्म्य भाषाटीका (पद्म पु०)	१–०
बदरीनारायणमाहात्म्य भाषाटीका	०–८
मलमासमाहात्म्य	०–६
अयोध्यामाहात्म्य	०–१०
वृन्दावनमाहात्म्य (पद्मपुराणान्तर्गत)	०–८

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–मुंबई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

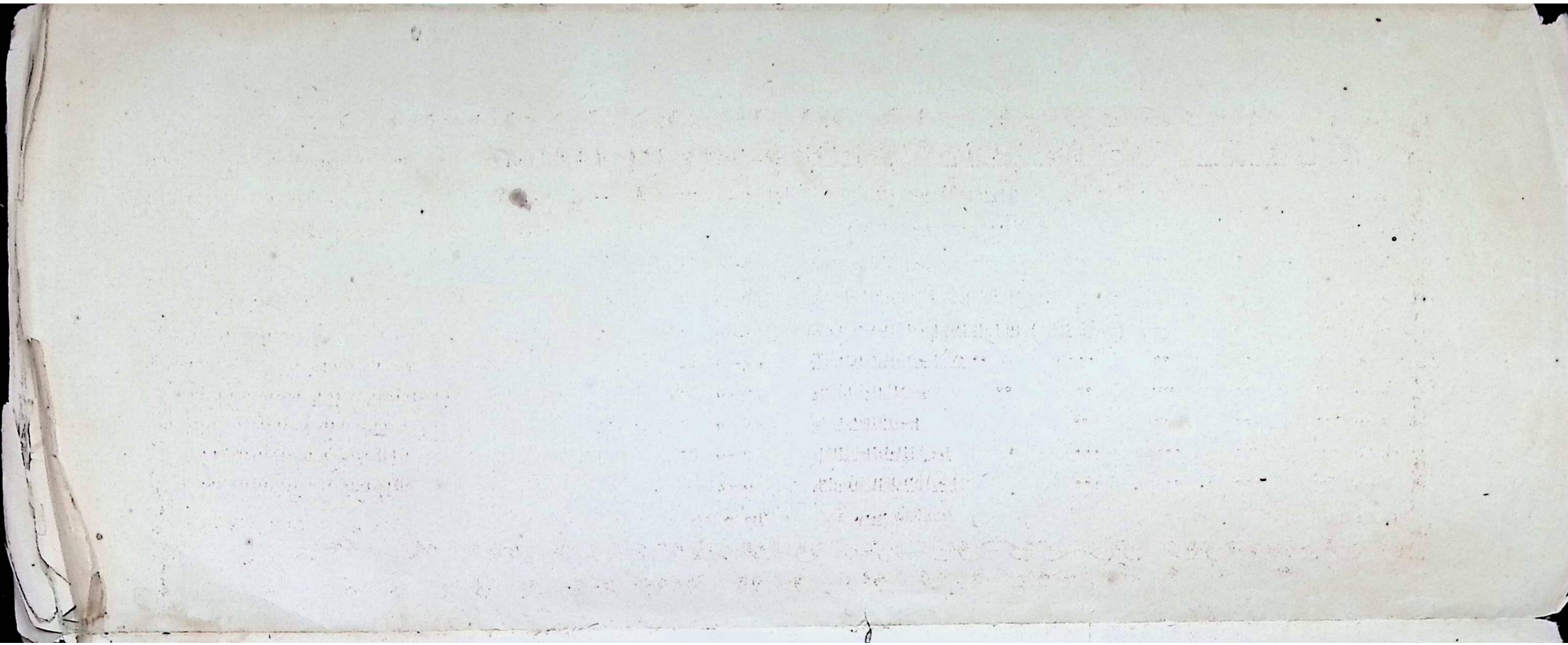

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

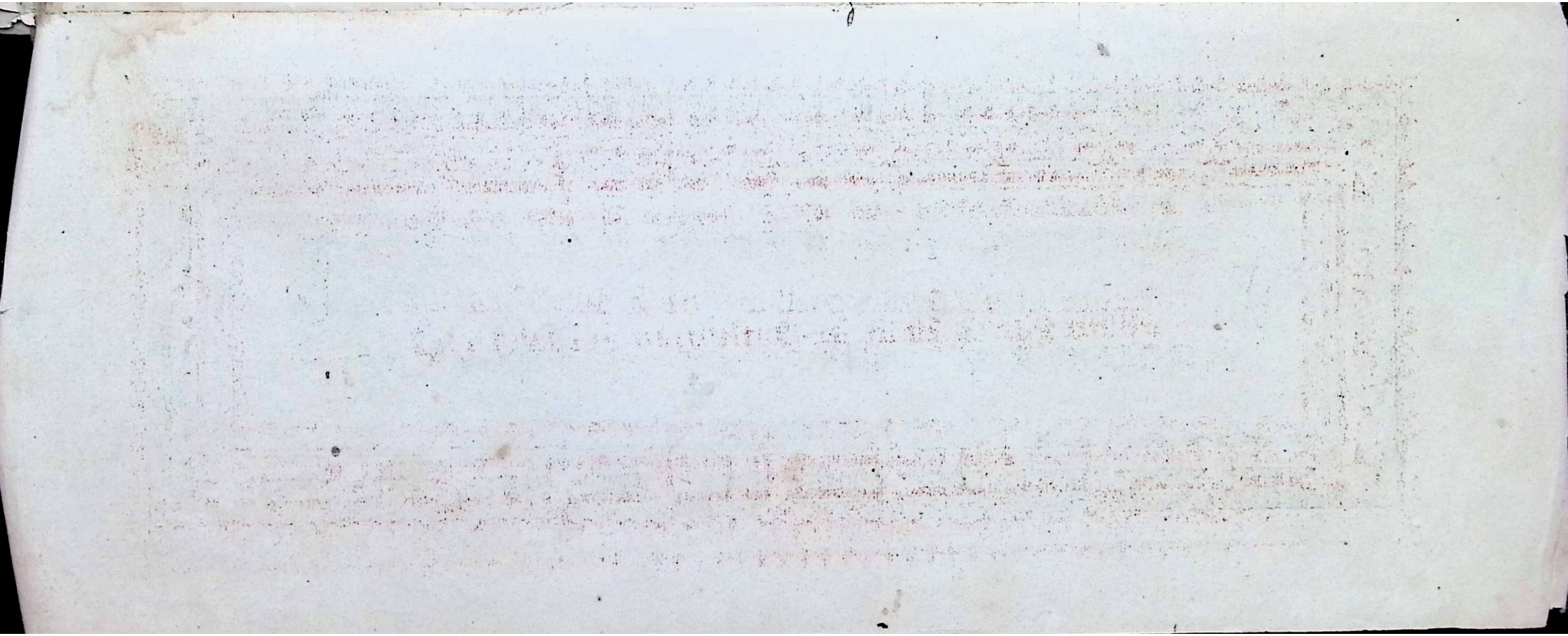

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ इति पद्मपुराणोक्तं माघमासमाहात्म्यं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection